

॥ श्री ॥

शैतानी-पंजा

सचित्र जासूसी उपन्यास।

लेखक :—

देवबली सिंह।

प्रकाशक :—

रिखबदास बाहिती,

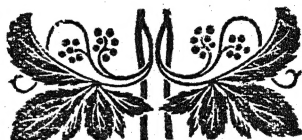
प्रोप्राईटर :—“दुर्गा प्रेस” और

आर० डी० बाहिती एण्ड को०,

नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता।

प्रथम बार } सन् १६२४ { मूल्य २॥) रेशमी ३)

प्रकाशक :—
रिखबदास बाहिती,
आर० डी० बाहिती एण्ड को०,
नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता।



मुद्रक—
रिखबदास बाहिती,
"दुर्गा प्रेस"
नं० ४, चोरबगान,
कलकत्ता।

वक्तव्य.

परब्रह्म परमेश्वरकी असीम कृपा और अपने प्रिय पाठकोंके आशातीत अनुग्रह और प्रोत्साहनसे आज मैं पुनः नवीन आशासे, नवीन कृति लेकर उपस्थित हो रहा हूँ। यदि यह पुस्तक पाठकोंका कुछ भी आनन्द-वर्द्धन कर सकी तो मेरा श्रम सार्थक होगा।

प्रस्तुत "शैतानी पञ्जा" अंग्रेजी भाषाके एक विख्यात उपन्यासका छायावलम्बन करके लिखा गया है। इसके संकलनमें मुझे आद्योपान्त बड़ी स्वतन्त्रतासे काम लेना पड़ा है। अनावश्यक समझकर मूल पुस्तकके अनेकों अंश छोड़ दिये गये हैं और अनेकों स्थानोंपर सम्पूर्ण स्वकीय कल्पनाका आश्रय लेना पड़ा है। इसलिये यदि इसमें कोई त्रुटि रह गयी हो तो वह मेरी है। और यदि यह पुस्तक प्रिय पाठकोंकी सहानुभूति आकर्षण कर सकी तो मैं अपना सब परिश्रम सफल समझूँगा।

सुजनापुर, बलिया—
ज्येष्ठी पूर्णिमा,
सं० १९८१

विनीत—
देवबली सिंह।

आर

आदर्श ग्रन्थमाला

यदि आपको उत्तमोत्तम

सचित्र ग्रंथ

उपन्यास, जीवनी, इतिहास प्रभृति

पढ़ना और अपनी

गृहस्थी सुखमयी, गुणमयी तथा

आदर्श बनाना हो, तो

॥) भेजकर

'सचित्र आदर्श-ग्रन्थमाला'

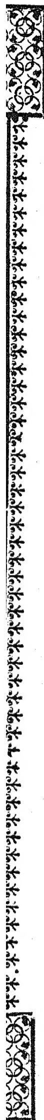
के

ग्राहक बन जाइये.

सब पुस्तकें पौने मूल्यमें मिलेंगी ।

आर० डी० बाहिती एण्ड कम्पनी,

नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता ।



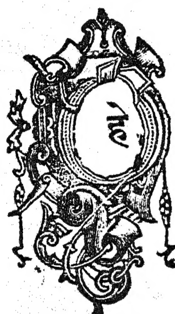


पीला पञ्जा सीधा रमणीके खुले गलेकी ओर सरक गया।

शैतानी-पंजा

पहला परिच्छेद.

लोमाभरणा रमणी ।



नरी लिरो लिखनेमें ऐसे तल्लीन हो रहे थे कि उन्हें दीन दुनियाकी खबर न थी। बिजली बत्तीकी रोशनीसे उनका कमरा जगमगा रहा था और बत्तीके रङ्गदार ढकनेकी छायासे कमरेकी फर्शपर, आंखोंको चौंधिया देनेवाले, नाना प्रकारके रंग प्रतिफलित हो रहे थे और टूलपर रखी हुई घड़ी टिक टिक करती हुई अपना अस्तित्व घोषित कर रही थी। धीरे धीरे उस घड़ीमें ११॥। बज गये।

इसी समय लेखकके रमणीय पाठागारको भेदकर गिरजा घड़ीका 'टन !' 'टन !!' 'टन !!!' शब्द सुनायी पड़ा। जिससे मालूम हो गया कि १२ बजनेमें अब पाव घंटेकी ही कसर रह

गयी है। यद्यपि बाहर-भीतर इतने शब्द हुए पर वे लेखकका ध्यान अपनी ओर आकर्षित न कर सके, वह अविराम गतिसे लेखनी चलाता ही रहा।

इस स्वनामख्यात औपन्यासिकके आकार-प्रकारमें कुछ विलक्षणता थी। सिरके-लटदार और बिखरे हुए केश ललाटपर लटक रहे थे। शरीरपर एक ऐसा ढीला-ढाला चोगा था; जिसमें दो चार आदमी आश्रय ले सकते थे। सारांश यह कि यह कदाकार बेढङ्गी मूर्त्ति, इस सुसज्जित कमरेमें न विराज कर, यदि किसी ताड़ीखानेमें जाकर बैठती तो अधिक संगत जँचती। अस्तु। एकाएक सदर-फाटककी घण्टी बज उठी। लिरो बहिर्ज्ञान शून्य होकर लगातार कलम घिसते ही रहे। इधर घंटीका बजना भी जारी रहा, अन्तमें उन्होंने झुंझलाकर पुकारा —"सोम ! सोम !! शैतानका बच्चा कहां गया ! दरवाजे-पर जाता क्यों नहीं ?"

परन्तु सोमने दर्शन नहीं दिया। अब घण्टीकी आवाजके साथ साथ लेटरबक्सकी भड़भड़ाहट भी शुरू हुई।

लिरो कलमको रखकर उठ खड़े हुए और अस्फुट-स्वरमें भुनभुनाने लगे—"सोम ! ओः ! वह तो बाहर गया है ! मेरी मति ही मारी गयी है !"

ढीले-ढाले चोगेको सम्हाल और उसकी बटनको कसकर उन्होंने कमरेका दरवाजा खोला और दालानको पारकर सदर फाटकपर पहुंचते ही देखा कि दो चमकती हुई आंखें किवाड़के

सूराखसे भीतरकी ओर झाँक रही हैं। उनके फाटकपर पहुंचते ही घण्टीका शब्द आना बन्द हो गया।

बाहरसे एक बालिकाकी आवाज आयी—"काममें बाधा डालनेके कारण तुम मुझपर नाराज तो नहीं हुए हो?"

लिरोने मुस्कुराते हुए कहा—"प्यारी हेलन, मैं नाराज होऊंगा? मुझे तो तुम्हें देखकर—नहीं नहीं, तुम्हारी बातें सुनकर अपार आनन्द हो रहा है। तुम तो जानती ही हो कि आज घरपर कोई नहीं है।

बालिकाने जोर देकर कहा—हाँ, मैं जानती हूं। यही नहीं, और भी कुछ जानती हूं। आज बाबूजी कहते थे कि तुम श्रीमती लिरोकी अनुपस्थितिमें खाने-पीनेकी कुछ भी सुध नहीं रखते। मैं थोड़ी काफी लायी हूँ।

दरवाजेकी ओर बढ़कर लिरोने खुशीसे कहा—तुम काफी लायी हो? अच्छा किया, मैं काफी बहुत पसन्द करता हूँ।

वह अपने बिखरे हुए बालों और ढीली-ढाली पोशाकपर हाथ फेरते हुए फाटक खोलनेमें हिचकिचाने लगे। उनके इस सङ्कोचको देखकर बाहर खड़ी हुई बालिका हँसीके मारे लोट-पोट होने लगी।

लिरोने सङ्कोचके साथ कहा—मेरी अशिष्टताके लिये बुरा न मानना भाई, मैं दरवाजा खोलना नहीं चाहता—परन्तु...

बीचहीमें बालिका बोल उठी—मैं खूब समझती हूँ। तुम बड़े

ही गन्दे आदमी हो ! इस बार मीराके आते ही मैं कहूंगा कि तुम्हें अकेला छोड़कर उसे कहीं जाना उचित नहीं। अब मैं ऊपर जाती हूँ । तुम खुशीसे बाहर निकलो और इस काफीको ले जाओ । देखना, यह ठंडी न होने पाये ।

लिरोने कहा—ठंडी क्यों होगी ! मैं इसे अभी पी जाऊँगा। तुम्हें इसके लिये धन्यवाद है।

काफी लेकर लिरो धीरे धीरे लिखनेके टूलपर आ बैठे और फिर अपने काममें लवलीन हो गये। अपनी कीतिमती सुयोग्य लेखनीके सामने वह कम्बरली कुमारी और उसकी काफीको एकबारगी भूल गये।

टूलकी घड़ी टिक टिक करती हुई अपनी चालसे चलने लगी और हेनरी लिरोकी लेखनी भी 'सर' 'सर' करती अविराम गतिसे "मार्टिन जिदा" 'क्रिमिनल साइनटिस्ट' इत्यादि उन अभिनव पुस्तकोंके कल्पना-राज्यमें विचरण करती रही, जिनकी धवलकीर्त्तिसे आज इस नवयुवक औपन्यासिकका नाम साहित्य संसारमें दीप्तिमान हो रहा था।

बारह बजनेमें अब केवल ५ मिनिटकी कसर थी। इतनेमें द्वार-घंटीकी आवाजसे फिर कमरेकी निस्तब्धता भङ्ग हुई।

लिरोकी लेखनी चलती रही और घंटीका बजना भी बन्द न हुआ। उसकी आवाजके साथ साथ अब किवाड़की खड़-खड़ाहट भी सुनायी पड़ने लगी।

लिरो झुंझलाकर बोल उठे—सोम! सूअर, दरवाजेपर क्यों नहीं जाता? पर सोम क्या वहाँ था, जो उत्तर देता।

अब कलमको टेबुलपर पटककर वह उठ खड़े हुए और चिल्लाकर बोले—लौटने दो, सूअरकी खाल खींच लेता हूँ! देखता हूँ, आज कल बदमाश एकदम आजाद हो गया है।

इतना कह, उन्होंने कमरेका दरवाजा खोला और अन्धकारमें टटोलते हुए दालानको पारकर सदर फाटकपर जा पहुंचे। इस समय सीढ़ीकी बत्ती बुझी हुई थी।

उस घोर अन्धकारमें जहांतक देख सकते थे उन्होंने देखा कि एक भय-विह्वल रमणी लड़खड़ाती और क्षण क्षण पीछे ताकती हुई दालानमें घुस रही है। उसके उदास पीले मुखपर दुःख-शोक और यन्त्रणाके कालिमालेपका चिह्न रहते हुए भी यह अनुमान करना कठिन न था कि वह अपरूप सुन्दरी है। बन-बिलावके दामी रोएंके लहंगे में उसका सारा बदन ढका है। लिरोने ज्योंही दरवाजा खोला वह रमणी काँपती हुई भीतर घुसकर सीधे दालानकी ओर बढ़ी। इस समय भी वह घूम घूमकर अगल-बगल और पीछेकी ओर, आंखें फाड़ फाड़कर देखती जा रही थी।

लिरो साहब विस्मयसे अवाक होकर आगन्तुकको घूर घूरकर देखने लगे। रमणी अन्धेरेमें टटोलती हुई पाठागारके दरवाजेपर आयी और किवाड़ खोलकर बड़ी आरामकुर्सीपर हाँफती हुई धड़ामसे गिर पड़ी।

लिरो साहब स्तम्भित होकर चुपचाप आगन्तुकके पीछे पीछे आ रहे थे। ज्योंही उन्होंने कमरेमें पैर रखा त्योंही वह रमणी भयसे काँप उठी और रोये के लहगे के भीतरसे उसकी एक खुली हुई बाँह और काँपती हुई नोकीली अङ्गुलियां निकल पड़ीं।

रमणी तीखी आवाजमें बोल उठी—"दरवाजा बन्द करो बन्द करो। वह पीछा कर रहा है......"

अब औपन्यासिकके आश्चर्य्यकी सीमा न थी, स्वप्नाविष्ट मनुष्यकी तरह पीछे हटकर उसने दरवाजा बन्द कर दिया और अपने सिरके बालों और दाढ़ीको नोचता हुआ टेबुलके पास आकर खड़े हो गये।

बारह बजनेमें अब केवल २ मिनट रह गये हैं। मशहूर वेस्ट मिनिस्टरकी विख्यात अट्टालिकामें प्रसिद्ध एक औपन्यासिकके सामने एक अज्ञात-कुल-शीला लोमाभरण-भूषिता सुन्दरी बाला भय-चकित नेत्रोंसे एक टक देख रही है! क्या ही अभिनव और विलक्षण दृश्य हैं! हेनरी लिरो यदि कल्पनादेवीका आश्रय लेकर ऐसे दृश्यका खाका खींचनेकी चेष्टा करते तो शायद ही सफल होते।

लड़खड़ाती हुई आवाजमें उन्होंने पुकारा—देवि!

रमणीने चट हाथ उठाकर चुप रहनेका संकेत किया। और साथही अपना परिचय देनेके लिये वह अपनेको सम्हालती हुई उठ बैठी। इसी समय लिरोने ध्यान देकर अपने अतिथिको देखनेका अवसर पाया।

अब उन्हें साफ मालूम हो गया, कि रमणीकी उम्र पच्चीस छब्बीससे अधिककी नहीं है। दुःख शोकके निर्मम आघातसे इसकी कान्ति नष्ट हो गयी है। चिबुक, कपोलोंपर झुर्रियां पड़ गयी हैं, विशाल नेत्रोंमें दीप्तिहीन पीताभ छाया आ गयी है और होठोंपर मुर्दोंसी सफेदी छायी हुई है।

अपने अभ्यागतके अंग-प्रत्यङ्गोंको निरीक्षण करती हुई लिरोकी दृष्टि पैरोंपर जाकर सहसा ठिठक गयी। उन्होंने आश्चर्य्यसे देखा कि लहँगेके नीचे रमणीकी घुट्ठियां बिल्कुल नंगी हैं। इससे उन्हें समझनेमें देर न हुई, कि रमणीके पैरोंमें जूते मोजे कुछ भी नहीं हैं।

इतनी देरके बाद रमणी निस्तब्धता भङ्ग करती हुई, काँपती आवाजमें बोली—लिरो साहब, मैं······अपनी जान······बड़ी जोखिममें······डालकर······आपके पास······इस रातको······आयी हूं······जो मैं······कहती······हूं·········उसे········· आप······"

उसकी दोनों भुजायें सहसा लहँगेके भीतरसे निकल पड़ीं और वह गले तथा छातीको थामकर चुपचाप बैठ गयी। ऐसा मालूम हुआ, कि उसका दम घुट रहा है।

लिरो साहब टेबुलसे कूदकर रमणीके पास दौड़े परन्तु हाथके इशारेसे मना करती हुई वह विकट्टहास्य करके बोल उठी—"तकलीफ करनेकी कोई जरूरत नहीं।"

लिरो साहब उत्कण्ठासे बोल उठे—देवि! मैं समझता हूं;

इस संगीन अवस्थामें एक प्याला बराण्डीके लिये, मुझ जैसे अपरिचितका अनुरोध करना क्षम्य हो सकता है।

"आप ला सकते हैं।" अस्फुट स्वरमें यह वाक्य कहती हुई रमणी आराम कुर्सीपर गिरकर मूर्च्छित हो गयी।



दूसरा परिच्छेद ।



निशीथ कालमें राजासाहब ।

लि रो साहब स्तम्भित होकर बहुत देरतक उस मरणोन्मुख जीवन-शिखाकी ओर शून्य दृष्टिसे ताकते रहे। इस लेखक महाशयको अपनी उपस्थित बुद्धिका बहुत गर्व था। परन्तु मौका पड़नेपर अक्सर मनकी बुद्धि हवा खाने चली जाती थी। लेखक महोदय यदि चाहते तो ऐसी कितनी ही घटनाओंकी अवतारणा करके 'मार्टिनजिदा' जैसी कितनी ही पुस्तकोंकी संख्या बढ़ा सकते थे। परन्तु इस दृश्यको आंखोंके सामने उपस्थित देखकर वह एक बारगी किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गये।

बहुत देरतक इसी मानसिक उत्तेजनामें रहनेपर एकाएक उन्हें एक बात सूझी। उन्होंने अस्फुट स्वरमें कहा—"डाकृर कम्बरली तो शायद घरपर ही होंगे। क्यों न मैं उन्हींको बुलाऊँ ?"

इस विचारके उठते ही उनकी असाड़ता जाती रही। मानों उनमें नयी शक्तिका आविर्भाव हो गया। एक छलांगमें वह कमरेसे बाहर निकले और सीढ़ीसे होकर दोतल्लेपर अपने मित्र डाकृर कम्बरलीके पास जा पहुंचे।

इधर पाठागारमें घड़ी टिक टिक करती हुई अपने निर्दिष्ट पथपर चलने लगी। अब ऐसा भास होता था कि १२ बजनेका

समय निकट जानकर वह घड़ी जल्दी जल्दी पैर बढ़ाकर अपना रास्ता तय कर लेना चाहती है। रंगदार आच्छादनीकी आभा ऊपर कमरेके कड़ी बरगोंपर पड़कर उन्हें लाल, पीले, नीले इत्यादि नाना प्रकारके रंगोंसे अनुरंजित कर रही थी और नीचे लिखी हुई कापीके बिखरे हुए पन्नोंपर पड़कर अक्षरोंको सुनहले रंगमें ढाल रही थी। औपन्यासिकके कमरेमें सभी चीजें मनोरम और नेत्रप्रिय थीं। यदि वहां कोई अरूचिकर और अशुभ वस्तु थी तो वह आराम कुर्सीपर पड़ी हुई रमणी थी। जो इस समय आंखें फाड़ फाड़कर दरवाजेकी ओर ताकती हुई घूरती और लम्बी सांसें खींचती थी। इस समय यदि वहां कोई सूक्ष्मदर्शी अनुभवी पुरुष होता तो वह स्त्रीके वस्त्रके भीतरसे चमकती हुई रेशमी चोलीकी बनतको देखकर अवश्य ही ताड़ जाता कि रमणीके शरीरपर नैश वस्त्रके सिवा दूसरा कोई आच्छादन नहीं—सिर पर न टोपी है, न पैरमें मोजा।

उस दिनके घटिका-यन्त्रके पूर्ण आवर्त्तनमें अब केवल ३० पल बाकी थे। इसी समय रमणीकी भुजायें असह्य पीड़ाके कारण इस तरह कांपने लगीं मानों रमणीको मृगीकी बीमारी हो गयी हो।

वह रोएँकी ओढनी उस नैश अभ्यागतकी छातीपर इतने जोरसे उठने और गिरने लगी, जिससे समझना कठिन न था कि रमणीकी छाती जोर जोरसे धड़क रही है।

अब रमणीके रुद्ध कण्ठसे एक अस्फुट चीख निकली, और

वह बहुत चेष्टा करके उठ खड़ी हुई। खड़े होते समय उसके बालोंकी चोटी खुल गयी, जिससे बाल फर्श तक लटकने लगे।

लहंगेको एक हाथसे सम्हालती और दूसरे हाथको आगे फैलाये हुए वह आगे बढ़ी और अन्धेकी तरह टटोलती हुई लिखनेके टेबुलके पास जा पहुंची। इस समय उसकी खुली हुई आँखोंकी पुतलियाँ कोनेमें धसी थीं। सारे अंग थर थर काँप रहे थे और शरीर पसीनेसे तर था। वह एक पीड़ा भरी आह भरकर अस्फुट स्वरमें बोली—"हा, भगवन्, मैं तो मरी। उन्हें कुछ कह भी न सकी।"

काँपते हुए हाथसे उसने कलम उठा ली और कापीके खुले हुए पन्ने पर जो कि लेखकके अपाठ्य महीन अक्षरोंसे भर गया था, उसने अपने वक्तव्यको लिखना आरम्भ किया। इस समय कलमके साथ साथ उसका सारा बदन हिल रहा था।

उसने टेढ़ी-मेढ़ी दो तीन सतरें लिखी थीं कि गिरजा-घड़ीमें बारहकी घण्टीका बजना आरम्भ हुआ।

लेखिकाने चौंककर पीछे देखा और अपनी रुकावटका कारण समझकर वह जल्दी जल्दी फिर हाथ चलाने लगी।

मिनिटकी सूई बारहपर आते ही बड़ी घड़ीने एक आवाज़ दी 'टन !' फिर लगा तार दो, तीन, चार !

इतनेमें दालानकी रोशनी बुझ गयी।

फिर आवाज हुई—पाँच !—छ !—सात !

एक पीला-पंजा और एक सफेद बाँहके थोड़ेसे अंशने

किवाड़के पल्लेको जरा हटाकर भीतर घुसते ही बिजलीके 'स्विच' को दबा दिया।

घण्टीकी आवाज हुई—आठ !........"

कमरेमें अंधेरा छा गया !

रमणीके वक्षस्थलको विदीर्ण करती हुई एक आह और एक यन्त्रणा सूचक चीख निकल पड़ी। रमणी तनकर खड़ी हुई और काँपते हुए ठंडे हाथमें कागजके टुकड़ेको दबाकर द्वारकी ओर ताकने लगी।

जंगलेके रंगदार शीशोंको भेदकर चन्द्रमाकी मधुर किरणें कमरेके अन्धकारको तलवारकी धारकी तरह दो भागोंमें बाँटती हुई टेबुलके पास खड़ी हुई रमणीके विवर्ण मुखपर प्रतिफलित हो रही थीं।

रमणीकी एक आहके साथ साथ घड़ीने बजाया—दस !

नुकीली अङ्गुलियोंको फैलाये हुए दो हाथ अन्धकारके भीतरसे चाँदनीमें आ कूदे।

एक गड़गड़ाती आवाजमें रमणीके मुखसे निकल पड़ा—"हा भगवन् ! राजा साहब !!"

पीले हाथ सीधे रमणीके खुले गलेकी ओर सरक गये। एक गड़गड़ाहटकी आवाज हुई फिर बिल्कुल सन्नाटा छा गया।

धीरे धीरे चुपचाप वह रमणी जमीनपर पड़ गयी। उसके गिरते ही एक काली छायामूर्त्ति उसके ऊपर झुकी। उसने चिट्ठीके टुकड़ेको उसके हाथसे खींच लिया। खींचते

समय कागजके फटनेके का शब्द हुआ। छायामूर्त्तिने ये सभी काम किये पर चाँदनीके प्रकाशमें वह एक वार भी नहीं आयी।

निशाचरकी तरह यह भीषणमूर्त्ति रोशनीको बचाती ही रही।

इतना काम एक क्षणमें हो गया। छायामूर्त्तिके अदृश्य होते ही बारहकी घण्टी बजी। साथही बाहर एक धड़ाकेकी आवाज हुई और उसके प्रत्युत्तरमें एक तुरहीका शब्द सुन पड़ा।

इसके वाद अखण्ड अन्धकार और निस्तब्धताके भीतर केवल चन्द्रमा ही इस लोमहर्षण काण्डका साक्षी रह गया।

शीघ्र ही निस्तब्धताको भंग करती हुई सीढ़ीपर पैरकी आहट सुन पड़ी जिसने जता दिया कि लिरो साहब, डाकृर कम्बरलीके साथ आ रहे हैं। वे दोनों बड़े उत्तेजित स्वरमें बातें कर रहे थे। खासकर लिरोकी आवाज बहुत चढ़ी हुई थी।

डाकृर साहबकी बगलकी कोठरीमें मिस्टर जान एक्सेल एम० पी० नामक एक सज्जन रहते थे। उन्होंने अभी बाहरसे लौटकर अपना दरवाजा खोलनेके लिये तालेमें चाभी लगायी ही थी कि इन लोगोंका गोल-माल सुना और वहींसे पुकारकर पूछा—लिरो ? क्या बात है ?

लिरोने चिल्लाकर कहा—एक्सेल ! बात पूछते हो ? यहां एक बड़ी आफत जुटी है भाई, दयाकर तुम भी इधर बढ़ आओ ! . ...

एक्सेलको भी बड़ा कौतूहल हुआ। उन्होंने जल्दी जल्दी सीढ़ीसे उतरकर लिरो और डाक्टर कम्बरलीका पीछा किया।

सीढ़ीकी स्विचको टटोलते हुए डाक्टर कम्बरलीने धीरेसे कहा—तुम सब अन्धेरे हीमें थे क्या ?

लिरोने लड़खड़ाती हुई आवाजमें कहा—किसीने बत्ती बुझा दी है। मैं इसे जलता ही छोड़ गया था।

डाक्टर कम्बरलीने सीढ़ीकी स्विचको दबा दिया। दालानमें प्रकाश फैलते ही लिरोने अपने कमरेमें प्रवेशकर भीतरकी स्विचको दबाया। वहां भी रोशनी हो गयी।

कमरेमें एक सरसरी निगाह दौड़ाते ही लिरो इस तरह चौंक कर पीछे हट गये जैसे उन्हें साँपने काट खाया हो।

• उन्होंने अस्फुट स्वरमें पुकारा—"कम्बरली! कम्बरली! इधर देखो!"

कम्बरलीने कहा—तुम तो कहते थे, कि वह आरामकुर्सी पर पड़ी है। और यहां यह फर्श पर लोटी पड़ी है ।

"हां, मैं तो उसे वहीं देख गया था किन्तु—" डाक्टर कम्बरली उस स्त्रीके पास घुटनोंके बल बैठकर उसकी परीक्षा करने लगे। उन्होंने उसके सादे मुखको रोशनीके सामने करके देखा कि आँखें खुली हुई हैं। छाती पर हाथ रखकर देखा कि श्वास-प्रश्वास एकदम बन्द है। शरीर ठण्डा पड़ गया है।

वह चौंककर उठ खड़े हुए और लिरोकी ओर तीव्र दृष्टिसे देखने लगे । इस समय लिरोके होठ काँप रहे थे।

लिरोने व्यग्रभावसे पूछा—क्या वह......क्या वह......

एक्सेलने तिरस्कारके स्वरमें कहा—तुम इतने विचलित क्यों होते हो ? तुम्हें क्या हो गया है ?

कम्बरलीने कहा—स्त्री शान्त हो गयी है ।

डाक्टर कम्बरली एक अनुभवी चिकित्सक थे । इसके सिवा उन्हें बाहरी बातोंका भी पूरा ज्ञान था। इस लिये लिरोके भय और आतंकको देखकर उन्हें समझनेमें देर न लगी कि मेरे समान वह भी इस दुर्घटनाके बारेमें बिल्कुल अन्धकारमें हैं।

उन्होंने लिरोको दिलासा देते हुए कहा—धीरजसे काम लो, डरनेकी क्या बात है ?

लिरोने हिचकिचाहटके साथ कहा—मैं अभी इसे यहाँ छोड़ गया था । इतने हीमें—

कम्बरलीने बीच हीमें बात काटकर कहा—मुझे सब मालूम हो गया है। अब तुम यह बताओ; कि मेरे यहां जाने-आनेमें तुम्हें कितना समय लगा है ?

एक्सेल इतनी देर तक स्तम्भित होकर उस लाशकी ओर एकटक देख रहे थे । वह सहसा बोल उठे—लिरो यह तो बिलकुल नंगी है ।

लिरो दोनों हाथोंसे बिखरे हुए बालोंको नोंचते हुए चिल्ला कर बोले—भाई एक्सेल ! मेरे प्यारे मित्र ! तुम इस शब्दका प्रयोग क्यों करते हो ? तुम कहते हो वह 'नङ्गी' है इसका

मतलब तो यह हुआ कि वह मुझसे परिचित है और मैं ही इस दुर्घटनाके लिये दायी हूँ ?

एक्सेलने सीधे खड़े होकर कहा—नहीं भाई, तुमने इस शब्दका दूसरा ही अर्थ लिया है। मैं तुमपर दोषारोपण करना नहीं चाहता।

डाक्टर कम्बरलीने कहा—नहीं एक्सेल, लिरोको पूरा विश्वास है कि तुम उनकी बुराई न सोचोगे, परन्तु ऐसी अवस्थामें निर्मूल आशङ्कायें हुआ ही करती हैं। तुम इसे समझ सकते हो।

एक्सेलने कहा—वास्तवमें यह घटना बड़ी ही भयानक है। हमी लोगों पर इसकी पूरी जिम्मेदारी है। कहो तो भाई लिरो, क्या मामला है।

लिरो पागलकी तरह चिल्ला उठे—कहूँ क्या मैं खाक ? मैं कुछ भी न कह सकूँगा। तुम मुझसे कुछ भी न पूछो।

कम्बरलीने ढाढ़स देते हुए कहा—देखो, लड़कपन न करो। मामला बड़ा ही नाजुक है। तुम्हें धीरजसे काम लेनेकी आवश्यकता है। एक्सेल इस मामलेके बारेमें कुछ जानते नहीं। तुम्हें जो जो मालूम है, कह दो।

एक्सेल बोल उठे—हां, मैं सुननेको बड़ा ही उत्सुक हूँ।

लिरो साहब क्रोधके आवेगमें कुछ कहना ही चाहते थे कि कम्बरलीने उन्हें पकड़कर कुर्सीपर बिठाया और एक बोतलसे थोड़ी शराब ढालकर उन्हें देते हुए कहा—यह शराब

पीकर कुछ शान्त हो और इस घटनाको सावधानीके साथ सिलसिलेवार कह सुनाओ।

एक्सेलने कम्बरलीकी ओर फिरकर कहा—पुलिसको टेलीफोन कर दो।

लिरो साहब शराब पीकर कुछ ठंडे हुए और प्यालेको टेबुलपर रखकर ठण्डी सांस लेते हुए बोले—एक्सेल, देखता हूं, तुम कानूनके बड़े पाबन्द मालूम होते हो। पर जरा सोचो तो, यदि यही घटना तुम्हारे कमरेमें हुई होती तो तुम्हारी क्या दशा होती।

एक्सेलने उद्दण्डतासे कहा—मैं नहीं सोच सकता।

कम्बरली—तुम्हें सोचनेकी शक्ति ही नहीं है। इधर आओ, हम दोनों मिलकर जरा कमरोंकी जाँच कर देख लें।

"कमरोंको जाँचोगे?"

कम्बरलीने हाथ उठाकर कहा—हाँ, जाँचनेका कारण है। देखो एक्सेल, तुम अभी बाहरसे आ रहे हो। खूब सम्भव है, इस दुर्घटनाके समय तुम इस मकानके आस पास ही रास्तेपर रहे होगे। जब तुम खूनीको निकलते हुए नहीं देख सके हो तो हो सकता है कि वह अभी यहीं कहीं छिपा है।

एक्सेल और लिरो दोनों साथ ही चिल्ला उठे—"यहीं छिपा है!"

कम्बरली—यदि तुमने बाहर निकलते हुए किसीको न देखा है तो मेरा अनुमान ठीक हो सकता है।

एक्सेलने जोर देकर कहा—नहीं, मैंने कुछ भी नहीं देखा।

कम्बरली—अच्छा, तो आओ। हम अपना काम शुरू कर दें। चलो, पहले ऊपरके कमरोंमें देख लें। तुम बत्ती जला दो।

एक्सेलने भुनभुनाते हुए कहा—उधर पीछे होगा। पहले नीचेका देख लिया जाय।

लिरो उठ खड़े हुए; परन्तु कम्बरलीने उन्हें पकड़कर बैठाया।

उन्होंने कहा—लिरो, तुम यहीं रहो। क्या हर्ज है। हम यहींसे आरम्भ करते हैं। पहले जड़को पकड़कर तब डालीको पकड़ा जाता है। हाँ, चलो एक्सेल।

एक्सेल डाक्टरके साथ हो लिये। अब खोज शुरू हो गयी। वे दोनों एक कमरेसे दूसरे कमरेमें घूम घूमकर देखने लगे। इधर लिरो साहब चुप चाप मन मारे हुए अपनी आराम कुर्सी पर पड़े रहे। कमरेमें निस्तब्धता छायी हुई थी।

पाँच छः मिनिट इसी हालतमें कट गये। लिरो उत्कण्ठित होकर प्रति मुहूर्त अपेक्षा कर रहे थे कि अब वह लोग एक साथ ही चिल्ला उठते हैं, परन्तु उन्हें बराबर निराश होना पड़ा। थोड़ी देरमें दोनों अनुसंधानकारी धीरे धीरे उसी कमरेमें लौट आये। इस समय कम्बरली बड़े ही उत्कण्ठित मालूम होते थे परन्तु एक्सेलको कोई चिन्ता ही न थी। वह मुखमें सिगरेट दबाये धीरे धीरे मुर्देको बचा कर टेबुलके पास दियासलाई लेने गये। वहां खड़े

होकर ज्योंही दिया सलाईको जलाना चाहा त्योंही उनकी दृष्टि लाशके हाथकी ओर पड़ी। उन्होंने चौंक कर कहा—लिरो, कम्बरली, इधर आओ इधर !

लिरो ज्यों के त्यों अपनी जगह पर ही बैठे रहे। परन्तु डाक्टर कम्बरली उनके पास दौड़ गये। एक्सेलके दिखानेपर डाक्टर साहबने उस लाशके हाथके पास झुककर देखा कि अंगुलियोंके बीच एक कागजका टुकड़ा चिपटा हुआ है। उस कागजको सावधानीसे निकालकर उन्होंने आँखके पास ले जा कर देखा पर चशमा न होनेके कारण वह कुछ भी न पढ़ सके। एक्सेलके हाथमें देकर बोले—देखो तो क्या लिखा है।

एक्सेलने भौंहें सिकोड़कर कहा—पढ़ तो सकता हूँ पर इसका कुछ माने नहीं निकलता है। यह किसी चिट्ठीका निचला हिस्सा है। अक्षर किसी औरतके हाथके लिखे हैं। इसमें लिखा है,—"तुम्हारी स्त्री......"

लिरो आवेशके साथ उठ खड़े हुए और कमरेमें इधरसे उधर टहलने लगे।

अस्फुट स्वरमें वह बार बार दुहराने लगे—स्त्री ! स्त्री ! क्या इसमें मेरी स्त्रीके बारेमें कुछ लिखा है !

एक्सेलने फिर कहा—इसमें नीचे तो लिखा है—'तुम्हारी स्त्री' और बीचका थोड़ा हिस्सा फट कर बच गया है उसमें लिखा है—"राजा साहब !"

लिरो एकबारगी चौंककर बोल उठे—राजा साहब ! मेरी

स्त्री ! राजा साहब ! हा भगवन ! मेरा सिर चक्कर खाने लगा !

डाकृर कम्बरलीने झिड़क कर कहा—बैठो न लिरो, तुम तो औरतसे भी गये गुजरे हो। तुम इतने अधीर क्यों होते हो ?

औपन्यासिक एक नादान बच्चेकी तरह डाकृरका हुक्म मान कर कुर्सीपर जा बैठा। और वहीं बैठा बैठा—"मेरी स्त्री !" "मेरी स्त्री !" की रट लगाने लगा।

एक्सेल और कम्बरली दोनों अवाक् हो कर एक दूसरेकी ओर ताकने लगे। इसी समय बाहर किसीके पैरकी आहट हुई। उन्होंने उधर फिरकर देखा तो हेलन कम्बरली हाथमें एक थाली लिये हुए मुस्कुराती हुई आ रही है। वह अपने पिताको न देख कर कमरेके बाहर हीसे कहती हुई आ रही थी—"क्यों, लिरो, तुमने काफी नहीं खायी ? अच्छा रहो, मीराको आने दो, तो मैं उससे तुम्हारा गुप्त—"

सहसा अपने पिताको देखकर वह ठिठक गयी।

हेलनकी आहट पाते ही एक्सेल बोल उठे—मिस्टर कम्ब-रली, लड़कीको रोकिये। वह भीतर आने न पावे।

परन्तु अब क्या ! अब तो वह बालिका दरवाजे पर आ गयी थी। मिस्टर एक्सेलको उस कमरेमें देख कर वह रुक गयी और कौतूहलसे कमरेको देखने लगी। इसके बाद उस रहस्य यवनिकाको देखते ही चौंककर पीछे हट गयी।

उसके हाथसे थाली छूटकर गिर पड़ी और काफीका प्याला चटाईपर जाकर झनझनाने लगा। बालिकाको डरके मारे थर

थर कांपते देख कर लिरो उसे पकड़नेको दौड़े परन्तु डाकृरने कहा—लिरो तुम रहने दो। मैं हेलनको अभी ऊपर पहुंचा कर लौट आता हूँ। एक्सेल, तुम भी अभी यहीं रहना।

इतना कहकर डाकृर अपनी लड़कीका हाथ पकड़कर बाहर चले गये।

एक्सेल एक सिगरेट जलाकर पीने लगे और लिरो अपने-आप गुन गुनाने लगे—मीरा—स्त्री—यह मेरी स्त्रीसे कहेगी! अच्छा!

जाते समय उस बालिकाने एक बार फिरकर लिरोकी ओर कटाक्षपात किया जिससे उनकी शिरा शिरामें बिजली खेल गयी—उस चितवनमें एक ऐसा जादू भरा था जिसने उनके दिलको हरा भरा बना दिया। उहोंने चट उठकर टेलीफोनको उठाया।



तीसरा परिच्छेद ।

इन्स्पेक्टर डनवरका नियोग ।



क पुलीस अफसरने लिरो साहबको कोठरीका दरवाजा खोलकर डाकृर कम्बरलीको नमस्कार किया और उनके हाथमें लन्दनके सी० आई० डी० विभागके प्रधान आफिस "स्काट लैंड यार्ड" का कार्ड दिया ।

कार्ड पर डिटेकृिव-इन्स्पेकृर डनवरका नाम देखकर डाकृर साहब चौंक पड़े पर शीघ्र ही अपनेको सम्हालकर उन्होंने आगन्तुकका आदरपूर्वक स्वागत किया और अपना परिचय देते हुए कहा— "मेरा नाम डाकृर कम्बरली है। मैं ऊपरके कमरेमें रहता हूं ।"

डिटेकृिवने डाकृरको ध्यानसे देखते हुए मुस्कुराकर कहा— डाकृर साहब, आपका परिचय पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई ।

कम्बरली—यह मेरे मित्र हेनरी लिरो हैं। इन्हें आप अच्छी तरहसे जानते होंगे ?

डनवर—नहीं, मुझे तो यह सौभाग्य अभी प्राप्त नहीं हुआ है।

कम्बरली—खैर, यह एक बड़े प्रसिद्ध औपन्यासिक हैं। दुर्भाग्यसे इन्हींके कमरेमें आज रातको एक भीषण दुर्घटना



हाँ खुशी है। फिर लिरोकी ओर फिरकर वह बोले—लिरो, आप डिटेक्टिव-इन्स्पेक्टर डनवर हैं। आप इस मुकद्दमेकी जाँच करने आये हैं।” फिर एक्सेलकी ओर देखकर डाकृरने कहा—“आपका नाम मिस्टर जान एक्सेल एम० पी० है।”

डनवर—महाशयो, आप लोगोंके परिचयसे मैं प्रसन्न हुआ।

लिरो अपनी आरामकुर्सीसे उठ खड़े हुए और अकबकाकर डिटेक्टिवकी ओर देखने लगे। एक्सेलकी भी यही अवस्था हुई।

डाकृरने आलमारीसे एक ग्लास शराब निकाल कर कहा—“इन्स्पेकृर साहब—थोड़ी स्काच और सोडा!”

डनवर—डाकृरके अनुरोधको मानना ही बुद्धिमानीका काम है।

डाकृर कम्बरलो ह्विस्की और सोडा उडेलने लगे और डनवर खड़े खड़े चारों ओर कमरेमें नजर दौड़ाकर बोले—डाकृर साहब, क्या घटनाके समय ही आपको खबर मिली थी?

कम्बरलो—ठीक उसी समय मिस्टर लिरो मेरे कमरेमें दौड़ते हुए गये और मुझे यहां इस औरतको देखनेके लिये बुला लाये।

“समय क्या था?”

“जब हम सीढ़ीसे उतर रहे थे उसी समय गिरजा-घड़ीने १२ की आखिरी घण्टी बजायी।

“आपको साथ लिवा लानेके लिये शायद मिस्टर लिरो आपके कमरेमें खड़े थे?”

"जी हाँ, जबतक मैं कपड़े पहनता रहा, वह वहीं खड़े रहे।"

एक्सेल बीचमें बोल उठे—"मैं बाहरसे आ रहा था।"

डनवरने हाथ उठा कर कहा—"अच्छा किया था। परन्तु कृपाकर बारी बारीसे बोलिये।"

एक्सेल पीछे हटकर डनवरकी ओर घूरने लगे।

डनवर—"शायद आप सोये थे?"

डाकृर—"जी हाँ, मैं सोया ही था। सहसा जोरसे मेरे घरकी घंटी बजी जिससे मेरी नींद टूट गयी। दरवाजा खोला तो मिस्टर लिरो घबड़ाये हुए कमरेमें आ घुसे!"

डनवर—"उन्होंने क्या कहा—उन्हींके शब्दोंमें कहिये।"

डाकृर—"उन्होंने कहा—कम्बरली! कम्बरली! ईश्वरके लिये जरा एक बार नीचे चलो! एक अजनबी औरत मेरे कमरेमें आयी है। वह एकदम मर रही है।"

डनवर—"फिर आगे?"

कम्बरली—"मैं अपने सोनेके कमरेमें दौड़ गया और खूंटी-से एक कोट खींचकर किसी तरह शरीरमें पहन दौड़ता हुआ लिरोके साथ नीचे उतरा-इस समय सीढ़ीकी बत्ती बुझी हुई थी। लिरो जोर जोरसे बातें कर रहे थे।"

"वह क्या कह रहे थे?"

"वह बता रहे थे कि एक औरत किस प्रकार उनके कमरेमें आयी और उसने क्या किया।" डनवरने हाथ उठाकर कहा—"आप उन्हींके शब्दोंमें कहिये।"

डाक्टर—अच्छा, जब हम नीचे फर्शपर उतर रहे थे, उसी समय एक्सेल बाहरसे लौट रहे थे। हम लोगोंका गोल-माल सुनकर उन्होंने पूछा—क्या माजरा है ?

लिरोने उत्तरमें कहा—माजरा पूछते हो एक्सेल, यहाँ एक बड़ी आफत जूटी हैं। भाई, दयाकर तुम भी इधर आ जाओ !"

"तब ?"

"एक्सेल हम लोगोंके साथ हो लिये।"

"इस कमरेका दरवाजा खुला था ?"

"हाँ, लिरो दरवाजा खुला हुआ छोड़कर ऊपर दौड़ गये थे। कमरे और सीढ़ीकी बत्ती बुझी हुई देखकर और मेरे कारण पूछने पर उन्होंने कहा था, कि वह उन्हें जलती हुई छोड़ गये थे।

"फिर ?"

"मैंने सीढ़ीकी बत्ती जला दी। और लिरोने कमरेमें प्रवेश कर भीतरकी बत्ती जलायी।"

"किसने लाशको पहले देखा था ?"

लिरोने हम दोनोंको पुकारकर कहा—"मैं इसे आराम कुर्सीपर देख गया था पर अब यह नीचे पड़ी है !"

"क्या आपने औरतकी परीक्षा की थी ?"

"जी हाँ, की थी। परन्तु स्त्री मर गयी थी। पहलेसे वह बीमार मालूम हुई और ऐसा मालूम हुआ कि वह किसी नशेकी आदी थी ; परन्तु उसकी मृत्युका प्रधान कारण चेष्टाकृत है। किसीने गला घोटकर उसे मार डाला है।

लिरोने लम्बी साँस लेकर कहा—हा ईश्वर!

डनवर—आपने रमणीके गलेमें कोई चिन्ह देखा था?

डाकृर—हाँ, एक बहुत ही हलका दाग था। इस रुग्नावस्थामें सम्भवतः अधिक जोर करनेकी जरूरत नहीं पड़ी थी।

डनवर—आपने लाशको हिलाया डुलाया तो नहीं था?

डाकृर—नहीं, सिर्फ उसके हाथमें चिपटे हुए एक कागजके टुकड़ेको खींच लिया था। लीजिये, वह कागज यह है।

डनवरने कागजको लेकर कहा—आपने अच्छा नहीं किया, आपको वह पत्र भी न छूना चाहिये था।

डनवरने अपनी नोट बुक निकालकर डाकृरकी गवाहीका सारांश लिख लिया और फिर एक्सेलकी ओर फिरकर बोले—अब कहिये महाशय, आप क्या सहायता दे सकते हैं?

एक्सेल—डाकृर साहबने मेरे लिये कहनेको कुछ भी नहीं रख छोड़ा है।

डनवर—डिटेक्टिवके सामने डाक्टरकी गवाहीसे आप लाभ नहीं उठा सकते। यह महासभाकी बैठक नहीं है।

एक्सेल इधर उधर कनखी काटते हुए बोले—अच्छा, तो आप क्या जानना चाहते हैं?

डनवर—पहले यह बताइये, उतनी रातको आप कहाँसे आ रहे थे?

एक्सेल—"हाउस आव कामन्ससे।"

डनवर—वहाँसे आप सीधे आ रहे थे ?

एक्सेल—हाँ, सर ब्रायन मालपासके साथ मैं लौटा आ रहा था। विक्टोरिया स्ट्रीटकी मोड़पर उनसे विदा होकर मैं सीधा घर चला आया। अपने दरवाजेपर पहुंचते ही मैंने १२ की घंटी सुनी।

डनवर—रास्तेमें आपने कोई आदमी या चीज देखी थी ?

एक्सेल—इस मकानके पास ही खाली टेक्सी देखी थी। इसके अलावा मुझे समूचे रास्तेमें कोई गाड़ी अथवा आदमी नहीं दीख पड़ा था।

डनवर—टेक्सी गाड़ी किधरसे आती थी ?

एक्सेल—गाड़ी इधर हीसे धीरे धीरे उत्तरको जा रही थी। ऐसा मालूम हुआ कि उसका एञ्जन अभी चलाया गया है क्योंकि उससे धुआँ और घड़घड़ाहटकी आवाज निकल रही थी।

डनवर—कोई दूसरी आवाज सुनी थी ?

एक्सेल—हाँ, सामनेके स्कायरकी मोड़पर जैसे ही मैं आया वैसे ही एक तुरहीकी धीमी आवाज सुनी। पर मैंने उसपर ध्यान नहीं दिया।

डनवर—अच्छा, मकानमें घुसते ही आपने इन दोनों महाशयोंका गोलमाल सुना था ?

एकसेल—हाँ, ठीक जब मैंने तालेमें चाबी लगायी थी।

डनवरने पूछा—क्या ठीक उसी समय जब आपने तालेमें चाबी लगायी थी ?

एक्सेल कुछ ठहरकर बोले—नहीं, मैं उस समय तालेकी चाबीको चुन रहा था। मेरे हाथमें बहुतसी चाबियोंका गुच्छा था।

इनवर—क्या आपका मुख किवाड़की तरफ था?

एक्सेल—नहीं, मेरा मुख बराबर सीढ़ीकी ओर था; क्योंकि सीढ़ीकी आवाजसे मेरा ध्यान उधर ही खिंच गया था।

इनवरने एक्सेलकी भी गवाही लिख ली। अब वह लिरोकी ओर फिरे।

औपन्यासिकके शुष्क मलिन मुखको देखकर डाकृर कम्बरलीने उनसे अनुरोध करते हुए कहा—पहले थोड़ा सोडावाटर पीकर ठंडे हो जाओ, तब अपनी गवाही देना।

लिरो—कुछ हर्ज नहीं। पहले यही हो जाने दीजिये।

इसी समय बाहर कमरेके किवाड़ खुलनेकी आहट हुई। सबकी आंखें उसी आहटकी ओर फिर गयीं। उन्होंने देखा कि एक हट्टा-कट्टा जवान कमरेका दरवाजा खोलकर भीतर घुस रहा है। उसके वदनपर नौकरों कीसी वर्दी थी। इससे डिटेक्टिवको यह समझनेमें देर न हुई, कि यह लिरोका नौकर है। उन्होंने लिरोसे पूछा—शायद यह आपहीका खानसामा है?

लिरो—जी हां, इसीका नाम सोम है।

इनवर—अभी यह कहां गया था?

लिरो—ईश्वर जाने। विना मेरी आज्ञाके ही वह लापता था।

इनवरने सोमकी ओर देख कर कहा—तुम उसी कमरेमें

जाकर चुपचाप बैठो। जब तुम्हें बुलाया जाये तब आना।

सोम अपनी टोपी दोनों हाथोंसे पकड़कर सलाम करता हुआ अपने कमरेमें चला गया।

डनवरने कम्बरलीकी ओर देखकर पूछा—उस कमरेसे निकलनेका कोई दूसरा रास्ता तो नहीं है?

कम्बरली—नहीं, कोई दूसरा रास्ता नहीं है। आप उसपर सन्देह मत कीजिये।

डनवर—मैं तो वेस्टमिनिस्टरके पादड़ीपर भी सन्देह करनेसे न चूकूंगा, इसकी कौन बात है। मिस्टर लिरो, आप रातमें यहाँ अकेले ही थे।

लिरो—जी हाँ, बिलकुल अकेलाही था। मेरी स्त्रीके न रहनेपर सभी नौकर चाकर बेअदब हो जाते हैं।

डनवर—आपकी स्त्री कहाँ गयी हैं?

लिरो—पैरिस गयी हैं।

डनवर—क्या वह फ्रेंच महिला हैं?

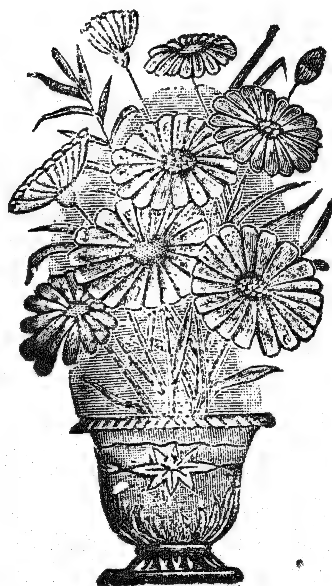
लिरो—जी नहीं, वह एक चित्रकार हैं। पैरिसमें ही उनसे मेरा प्रथम परिचय हुआ था। खैर, इन घरेलू मामलोंको जाननेकी आपको कोई आवश्यकता नहीं।

डनवर—मिस्टर एकसेल, यदि आप जानेको उत्सुक हों तो जा सकते हैं। और डाक्टर साहब, यदि—”

लिरो बीचमें ही बोल उठे—कम्बरलीसे मेरी कोई बात छिपी नहीं है। परन्तु

एक्सेल उनकी ओर एक तीव्र कटाक्ष करते हुए कमरेसे बाहर चले गये । फिर दरवाजे हीसे लौटकर वह बोले—लिरो, विश्वास रखो । मैं हर तरहसे तुम्हारी सहायता करनेको तैयार रहूँगा ।

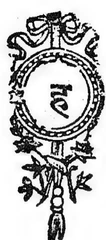
डनवरने फिर कहा—मिस्टर लिरो, अब आप अपना इतिहास शुरू कीजिये ।



चौथा परिच्छेद.



खिड़की खुली थी।



हेनरी लिरो कहने लगे—पहले पैरिसमें एक मित्र शिल्पीने मेरा मेरी स्त्रीसे परिचय करा दिया था। उस समय वह पैरिसके एक बड़े नामी स्टुडियो की हिस्सेदारिन थीं। उन्हें स्वयं भी चित्रकारीमें बड़ा अनुभव है। उनके बनाये हुए चित्र समय समयपर प्रदर्शनीमें भी जाया करते हैं। खैर, जब उनके साथ मेरे व्याहका सम्बन्ध ठीक हुआ था, तब उन्होंने मुझसे कह दिया था कि वह कभी कभी पैरिसमें अपने इष्ट मित्रोंसे भेट मुलाकात करने आया-जाया करेंगी। मैंने भी यह शर्त्त मान ली थी। माननेका कारण भी था। क्योंकि मैं स्वयं भी कुछ स्वतन्त्रता चाहता था। इस लिये हम दोनोंने एक दूसरेकी शर्त्तें मंजूर कर लीं और यही कारण था कि मैं उनके कामोंमें हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझता।

डाक्टर कम्बरलो बीचही में बोल उठे—समझा इन्स्पेक्टर साहब आपने? स्वामी स्त्रीकी यह जोड़ी सदा स्वतन्त्रता प्रिय है।

इसलिये जब कभी श्रीमती लिरोको खुशी होती है, तब वह सप्ताह दो सप्ताहके लिये पैरिस अपने बन्धु-बान्धवोंके पास चली जाती हैं-और वहाँ मिस्टर लिरो स्वूपकी तरह रात दिन

कलम घिस घिस कर मरते हैं। समयपर न सोने का ध्यान रहता है और न खाने का। कितनी ही रातें उन्निद्रा और उपवास हीमें बीत जाती हैं और इसीमें यह आनन्द अनुभव करते हैं।

डनवर—क्या वहां वह बहुत दिनोंतक रहा करती हैं?

लिरो—नहीं, एक सप्ताहका नियम बँधा था, परन्तु न मालूम इस वार इतनी देर क्यों हो रही है।

डनवर—मेरी अशिष्टताके लिये क्षमा कीजियेगा—मैं क्या मित्रवत पूछ सकता हूं कि वहाँ रहनेका खर्च वह कहाँसे पाती हैं?

लिरो—मैंने उनके लिये कुछ रुपये पैरिसके ल्यूनिस बैंकमें जमा कर दिये हैं।

डनवरने बैंकका नाम लिख लिया और पूछा—क्या वह अपने साथ कोई दासी नहीं ले जाती हैं?

लिरो—पहले एक दासी थी, पर एक बरससे वह कोई दासी नहीं रखतीं।

डनवर—इधर उनका कोई पत्र आया है?

लिरो—तीन दिन हुए, एक पत्र आया था। आज ही तो उसका उत्तर दिया है। सोम उसी पत्रको छोड़नेके लिये बाहर गया था।

डनवर—मुझे याद पड़ता है, आपने कहा था कि मैंने उसे कहीं नहीं भेजा था, अभी आप दूसरी ही बात कह रहे हैं।

लिरोने हिचकिचाते हुए कहा—हाँ, मैंने इसीलिये कहा था कि उसने वहुत देर कर दी थी। ५ मिनिटके कामके लिये उसने एक घंटा बाहर बिताया था।

डनवर—अच्छा, तो आज आप बिलकुल अकेले थे और इसी औरतने पहले आपकी निर्जनतामें वाधा पहुँचायी?

लिरो—ठीक ऐसा नहीं। हेलन पहले एक बार आयी थी।

डाकृरने समझाकर कहा—हाँ, मैंने ही अपनी लड़कीसे कह दिया था—कि आजकल ये महाशय खाने पीनेकी कुछ परवाह ही नहीं रखते। इसी लिये वह काफी लायी थी।

डनवर—कबतक वह यहाँ रही थी?

लिरो—वह बाहरसे बातकर तुरत चली गयी थी।

डनवर—मिस्टर लिरो, अब आपहीको सारी घटनाओंको दुहरा जाना होगा। सभी घटनाओंका ठीक ठीक समय भी आप बताते जाइयेगा।

लिरोने सारी घटनाएं आद्योपान्त विस्तारके साथ कह सुनायीं। उनका वक्तव्य शेष होनेपर डनवरने सोमको बुलानेके लिये कम्बरलीसे कहा। कम्बरलीने उस घरमें लगी हुई घंटीकी रस्सीको खींचा परन्तु उसका कोई उत्तर नहीं आया। सोमके आनेमें बिलम्ब होती देख उन्होंने फिर जोरसे घंटी बजायी पर उसका भी उत्तर नहीं आया तब कम्बरली दौड़कर सोमके कमरेमें गये। वहाँ जाकर देखा तो सोमका कहीं पता ही

नहीं। उन्होंने लौट कर डनवरको खबर दी—चिड़िया उड़ गयी !

अकस्मात् साँपके काट खानेसे आदमी जैसे चौंक उठता है, वैसे ही चौंककर डनवर बोल उठे—क्या भाग गया ! आप तो कहते थे कि दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है।

डाक्टर—जहाँतक मैं जानता हूँ, दूसरा कोई दरवाजा नहीं है।

डनवर—चलिये वह कमरा तो देखें !

डाक्टर, लिरो और डनवर तीनों उस कमरेमें गये। वहाँ जा कर उन लोगोंने देखा कि सन्दूक खुली हुई है और उसकी चीजें फर्शपर बिखरी पड़ी हैं।

कमरेको घूम घूम कर देखते हुए खिड़कीपर नजर फेरते ही डनवर चौंक पड़े। खिड़कीके दोनों पल्ले खुले हुए थे। डनवर कूदकर खिड़कीके पास गये और नीचे झुककर देखने लगे। उन्होंने देखा कि खिड़कीके सामने ही एक बाँसकी छोटी सी सीढ़ी रखी हुई है। अब उन्हें समझनेमें देर न लगी कि धूर्त्त नौकरने इसी सीढ़ीकी सहायता ली है।

डनवरने अपना कान पकड़कर कहा—मैंने बड़ी भूल की है। मुझे स्वयं कमरेको देख लेना चाहता था।

लिरो—एक आदमी तो इस खिड़की से बाहर निकल जा सकता है परन्तु गठरी-मोठरी लेकर कोई इधरसे नहीं जा सकता।

डनवर—ओः! आप निरे लेखक ही मालूम होते हैं। क्या आप अनुमान नहीं कर सकते, कि उसने पहले रस्सोके सहारे गठरी नीचे लटका दी होगी तब आप उतरा होगा।

लिरोने अपना सिर ठोककर कहा—हा ईश्वर! क्या मजरा है। कुछ समझमें ही नहीं आता। इसका क्या मतलब?

डनवर—मतलब है, हम लोगोंको अब हैरान होना पड़ेगा। हमें अपनी भूलका फल भोगना पड़ेगा।

फिर सब पाठागारमें लौट आये। इतनी देरके बाद डनवरने कागजके टुकड़ेको टेबुल परसे उठाकर देखा। उस कागजका एक हिस्सा लिरो साहबकी 'मार्टिनजिदा' की रचनासे भरा था और दूसरी ओर काँपती हुई दो सतरोंका थोड़ा थोड़ा हिस्सा बाकी था।

डनवरने अब रमणोके ऊपर झुककर कहा-क्या आश्चर्य्य है! इसके बदनपर नैश वस्त्रके सिवा और कुछ भी नहीं है! चेहरेसे मालूम होता है कि पहलेसे इसे कोई बीमारी थी!

कम्बरली—जी हाँ, इसे नशेकी टेव थी।

डनवर—किस नशेकी?

कम्बरलो—यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता पर खूब सम्भव अफीमका यह व्यवहार करती थी।

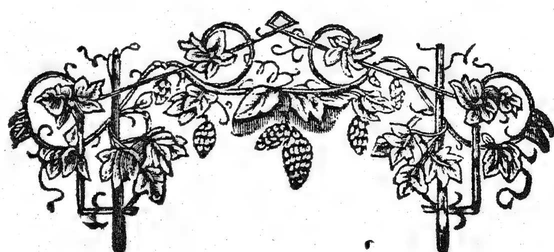
इसके बाद डिटेक्टिवने स्त्रीके सभी चीजोंकी एक सूची बना ली।

जब वह लिख चुके तब फिर एक बार टेबुलकी बत्तीको

उठाकर रमणीके पीले मुखके सामने रखा और ध्यानसे उसके खुले हुए मुखके भीतर देखते हुए बोले—डाक्टर साहब, देखता हूँ इस औरतके दाँत बेहद साफ हैं! मालूम होता है, यह दाँतकी सफाईपर बहुत ध्यान रखती थी।" कम्बरलीने सिर हिलाकर अपना मत प्रकट किया। इसके बाद चलते समय डिटेक्टिवने लिरोकी ओर फिरकर कहा—लिरो साहब, क्या मैं विश्वास कर लूं कि आपने इस स्त्रीको पहले कभी नहीं देखा था?

लिरो—जी हाँ, मैं शपथ कर कहता हूँ, कि मेरा और इसका यही प्रथम और अन्तिम परिचय है।

अपने नोट बुकको बन्दकर डिटेक्टिव उन लोगोंसे विदा हो गया।



पांचवां परिच्छेद.

चिकित्सकोंमें मतभेद।



क्टर कम्बरली धीरे धीरे अपने कमरेकी ओर चले। उनके मनमें इस समय नाना प्रकारके विचार उठ रहे थे। वह आजकी घटनाको आद्योपान्त एकएक कर विश्लेषण कर देखने लगे। वह सोचने लगे—क्या सोमही इस रमणीका हत्याकारी है। ऐसा तो विश्वास नहीं होता। परन्तु वह भागा क्यों? यदि उसने हत्या न भी की होगी तो भी इस घटनामें उसका हाथ तो जरूर ही है। उसे पकड़े जानेका डर था, इसी लिये तो वह रफूचक्कर हुआ है। अच्छा, पर यह रमणी कौन है? यही श्रीमती लिरो तो नहीं है। नहीं ऐसा तो नहीं हो सकता। उनका चेहरा बहुत कुछ इस स्त्रीसे मिलता जुलता है पर प्रभेद भी दोनोंमें कुछ कम नहीं। खैर, जो हो, यह तो निश्चय है, कि श्रीमती लिरोसे इस घटनाका जरूर कुछ सम्बन्ध है।

यही तर्क वितर्क करते हुए डाक्टर साहब अपने कमरेके दरवाजेपर आये। हेलन इतनी देरतक बड़ी उत्कण्ठासे उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उनको देखते ही वह बोल उठी—बाबूजी, कहो, वहाँ क्या हुआ है?

डाकृरने यह समझ कर कि यह बिना सुने जान न छोड़ेगी सभी घटनाएँ उसे समझाकर सविस्तर कह दीं। सारी बातें सुन कर हेलनने कहा—बाबूजी, मैं एक बात कहना चाहती हूँ।

डाकृर—कहो क्या कहती हो ?

हेलन—अभी मैंने जरासा उस रमणीके मुखकी ओर देखा है। वह मुख मुझे परिचित सा मालूम हुआ है। कह नहीं सकती कि मैंने उसे कहां देखा है। एक बार मैं उसे देखना चाहती हूँ।

डाकृर—पगली कहीं की ! तू क्या कहती है ? मुँहपर ऐसी बात भी न लाना।"

हेलन—"नहीं बाबूजी, मैं जोर देकर कह सकती हूं कि यह परिचित है। यह बहुत कुछ श्रीमती—परन्तु तुम तो इसे नहीं मानोगे ?"

डाक्टर—कभी नहीं; तुम इस खयालको मनसे निकाल दो।

हेलन—परन्तु एक बार उसे देखनेमें दोष क्या है ? तुम आपत्ति क्यों करते हो ?

डाक्टर—अच्छा तो चलो, परन्तु इन्स्पेक्टर तो शायद चले गये होंगे। पुलिस तो हम लोगोंको कमरेमें न जाने देगी।

हेलन—चलो, जल्दी चलो। वे लोग उसे लेकर चले न जायं।

दोनों साथ ही साथ सीढ़ीसे नीचे उतरे। डाक्टरने जाकर कमरेका दरवाजा खटखटाया तो एक सार्जेण्टने दरवाजा खोल दिया।

डाक्टरने पूछा—डिटेक्टिव इन्स्पेक्टर डनवर यहाँ हैं? हम उनसे भेंट करना चाहते हैं।

सार्जण्टने डनवरको बुला दिया।

डाक्टर कम्बरलीने इन्स्पेक्टरसे अपनी कन्याका परिचय कराते हुए कहा—हेलन कई पत्रोंकी सम्वाददात्रीका काम करती है। इस वसीलेसे उसे भिन्न भिन्न देशोंमें आना जाना पड़ता है। यह आपके काममें कुछ सहायता किया चाहती है।

डनवर—आइये, मिस हेलन, इस अनुग्रहके लिये मैं कृतज्ञ हूं। कहिये, इस रमणीसे आपका कैसा परिचय है?

हेलनने अपने पिताके कन्धेपर हाथ रखकर कहा—इन्स्पेक्टर साहब, मुझे खयाल होता है कि मैंने कहीं इस स्त्रीको देखा है, परन्तु कहाँ देखा है, सो ध्यानमें नहीं आता।

इन्स्पेक्टर—अच्छा, तो एक बार और उसे देख लीजिये शायद याद पड़ जाय।

हेलनका हाथ पकड़ कर डिटेक्टिवने कमरेमें प्रवेश किया।

डाक्टरने पीछेसे प्रवेशकर दरवाजा बन्द कर दिया।

इस समय कमरा पुलिसके लोगोंसे भरा था। चार कनस्टेबल तैनात थे और एक अफसर सादे लिबासमें उस लाशके पास बैठकर बड़े गौरसे उसे देखता हुआ कोई नया आविष्कार करनेकी चेष्टामें लगा हुआ था। इस समय लाश एक खाटपर रखी हुई थी और उसपर एक सफेद चद्दर उढ़ा दिया गया था। एक अनुभवी डाक्टर महाशय एक बगलमें बैठे हुए उस

कपड़ेको खोल खोलकर अपनी परीक्षाका प्रयोग कर रहे थे। इन्स्पेक्टरको देखते ही वह उठ खड़े हुए।

कम्बरलीसे उस डाक्टरका परिचय कराते हुए डनवरने कहा—आप पुलिस विभागके सरकारी चिकित्सक हैं, आपका शुभ नाम है—मिस्टर हिल्टन एम० आर० सी० एस०। साथ ही उन्होंने मिस्टर कम्बरली और उनकी कन्याका परिचय भी उस पुलिस डाक्टरसे करा दिया।

मिस्टर हिल्टनने इन दोनोंका स्वागत करते हुए कहा—मिस्टर कम्बरली, इस लाशकी परीक्षाके सम्बन्धमें क्या मैं आपकी सहायताकी आशा कर सकता हूं?

कम्बरलीने कहा—मैं खुशीसे आपको सहायता देनेको तैयार हूं। परन्तु अभी मेरी लड़कीने एक बखेड़ा खड़ा कर रखा है। मैं पहले उसे ऊपर रख आता हूँ तब आपसे बात होगी।

इधर इन्स्पेक्टर और हेलनने अपनी जाँच शुरू कर दी थी। रमणीका मुख खुलते ही हेलनने एक बार उसकी ओर ताक कर अपनी आँखें मूँद लीं। थोड़ी देरमें अपनेको सम्हालकर उसने डिटेक्टिवकी ओर देख कर कहा—"हाँ, मेरा अनुमान ठीक है। परन्तु अभीतक ख्यालमें नहीं आता कि इसे कहां देखा है आप अनुमान कर सकते हैं, कितने ही लोगोंसे मेरी देखा-देखी होती रहती है क्या सबका नाम याद रखना सम्भव है?"

डनवर—"हां, आपका कहना बिल्कुल सङ्गत है। कोई जल्दी नहीं। आप ख्याल करनेकी चेष्टा कीजिये परन्तु—" आगे

कहनेसे सकुचाते हुए वह सादे लिबासके अफसरकी ओर देखने लगे, जो इस समय एक खबरका कागज लेकर पढ़ रहा था।

इन्स्पेक्टरको अपनी ओर ताकते देखकर अफसरने कहा—आजके पत्रमें एक बहुतही बुरी खबर छपी है। कल शामको एक आदमीकी आकस्मिक मृत्यु हो गयी है। उसकी स्त्रीके बारेमें बहुतसी विचित्र बातें लिखी हैं। भरनन उस सज्जनका नाम है।

भरननका नाम सुनते ही हेलन चौंककर चिल्ला उठी—मिसेस भरनन! हाँ, यह मिसेस भरनन ही हैं! चीनके कस्टम हाउसमें इनसे मुझे देखा-देखी हुई थी।

डनवरने अपनी बड़ी नोटबुक निकालकर पूछा—क्या यह चीना है?

बालिका—नहीं, मुझे किसीने दूरहीसे दिखला दिया था कि यह मिसेस भरनन हैं। इनके साथ एक दुबला पतला और रोगी आदमी था। पूछनेपर मालूम हुआ कि वही इनका पति है। मुझे यह भी पता लगा था, कि मिस्टर भरनन एक अच्छे चित्रकार हैं, इससे अधिक मुझे कुछ भी मालूम नहीं।

जासूस डनवरने बालिकाकी बातें नोट करके कहा—आप क्या इससे अधिक इस स्त्रीके बारेमें कुछ भी नहीं जानतीं?

बालिका—जी नहीं, जो कुछ मैं जानती थी, उसे बिना पूछे ही कह दिया है।

डनवर—अच्छा तो आपके इतने ही अनुग्रहके लिये हमें कृतज्ञ रहना पड़ा। अब आप जा सकती हैं।

हेलनको लेकर कम्बरली जब जाने लगे तो पुलिस सार्जण्ट मिस्टर हिल्टन भी उनके साथ हो लिये। साथ साथ चलते हुए उन्होंने धीरेसे कहा—-कहिये, आपने इस घटनाके बारेमें क्या अनुमान किया है ?

कम्बरली—मैंने तो अच्छी तरह परीक्षा करके देखनेका अवसर नहीं पाया था। आपका विचार क्या है ?

मिस्टर हिल्टनने कम्बरलीके कानके पास मुख ले जाकर धीरेसे कहा—मैं तो समझता हूं किसोने इसे बिष दे दिया है।

डाकृर कम्बरलीने चौंककर सार्जण्टकी ओर देखते हुए कहा—क्या विष दे दिया है! कभी नहीं। यह अफीमका व्यवहार करती थी परन्तु आठ घंटेके पहले इसने अफीम न खायी, न छूयी है।

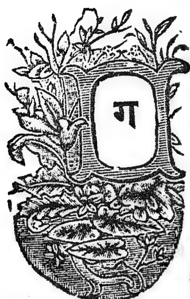
मिस्टर हिल्टननें धीरेसे कहा—नहीं, आज ही रातको इसे विष दिया गया है। विष खिलाया नहीं गया हैं। उसका नस्तर किया गया है। आप देखते नहीं उसकी बाँहमें नश्तरका साफ दाग है।

डाकृर कम्बरली क्रोधसे हिल्टनकी ओर देखते हुए आगे बढ़े। फिर कुछ दूर जाकर ठहर गये और पूछा—क्या उसके शरीरमें वैसा ही दूसरा कोई दाग नहीं है ?

मिस्टर हिल्टन—हां बाँयी बाँहमें भी वैसा ही एक और दाग है। परन्तु मेरे कहनेका मतलब यह है कि यह दाग आज ही रातका है और स्वच्छाकृत नहीं है।

छठा परिच्छेद

स्काटलैंड यार्ड



गत रातको वेस्टमिनिस्टरमें जो भीषण दुर्घटना हो गयी है उसकी पैरवीका भार हमारे पूर्व परिचित डिटेक्टिव-इन्स्पेक्टर डनवरको दिया गया है। इनके आफिसका नाम 'स्काट लैंड यार्ड' है, इस डिटेक्टिव आफिसके नामसे वेस्ट मिनि-स्टरके बच्चे बच्चे परिचित हैं। इसका नाम सुनतेही चोर डकैतोंका खून सूख जाता है और साधु जनोंका शरीर हर्ष उत्साहसे पुलकित हो जाता है। सबेरे नव दश बजेका समय है। हमारे पूर्व परिचित डिटेक्टिव साहब कुर्सीपर बैठे हुए ध्यानमें तल्लीन हैं, उनकी मुद्रासे मालूम होता है कि वह क्षण क्षण किसीके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ठीक दशकी घंटी बजी कि दुरवाजा खुला और एक मोटा ठिगना आदमी बड़ी ठाट बाटसे, मूछोंपर ताव फेरता, नीली आंखें चमकाता, अकड़ता हुआ कमरेमें उपस्थित हुआ। यह अजनबी महाशय इन्स्पेक्टर डनवरके सहायक थे, इनका नाम था सोर्बी। अपने सहायक कर्मचारीकी ओर देखकर डनवर सीधे होकर बैठ गये और बोले—क्या खबर है?

सोर्बीने कहा--टेक्सी गाड़ीके सभी अड्डोंपर मैंने खोज की है।

परन्तु अभीतक एक्सेलका बताया हुआ कोचवान नहीं मिला। परन्तु जिस तरहसे होगा आज मैं उसे अवश्य खोज निकालूंगा।

डनवर—हां, उसीपर हमारी सभी चेष्टायें अवलम्बित हैं।

सोर्बी—यदि वह नहीं मिला तो?

डनवर—तब लिरोके ऊपर ही हमारा वार होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि हेनरी लिरो बिल्कुल निर्दोष हैं मैं जानता हूं कि वह बिचारा जान बूझकर एक चींटीको भी नहीं मार सकता परन्तु समझ रखो, हमारे पास ऐसा प्रमाण है, कि जब चाहें तब हम उन्हें फाँसीपर लटका सकते हैं।

सोर्बी ने सिर हिलाते और आंखें चमकाते हुए कहा—हां, आपका कहना बिल्कुल ठीक है। एक बात और मेरी समझमें नहीं आती। वह लड़की मिस कम्बरली उस स्त्रीका नाम बतलानेमें हिचकिचाती क्यों थी?

डनवर—इसमें तो मुझे कुछ भी रहस्य नहीं मालूम होता। वरन् मुझे और आश्चर्य्य ही हो रहा है कि उस बालिकाने कैसे उस स्त्रीको याद कर लिया। आप ही तो इस शहरमें हजारों आदमी रोज देखते हैं, क्या आप सभीका नाम् धाम बता सकते हैं। वैसे ही उसने भी सिर्फ एक बार दूरसे-दूर देशमें उसे देखा था। यदि आप मिस्टर भरननका नाम न पढ़ते तो स्त्रीका नाम वह कभी न बता सकती। लड़कीका कहना सच मालूम

होता है। मुझे आश्चर्य तो इस बातका होता है कि अपने पतिकी मृत्युके दिन मिसेस भरनन लिरोके घर क्यों गयी थीं। यह तो एक स्त्रीके लिये बिल्कुल अस्वाभाविक है। इसमें अवश्य ही कोई रहस्य हैं।

सोबी—और सबसे अधिक आश्चर्यकी बात तो यह है कि नशवस्त्रमें वह परपुरुषके कमरेमें गयी थी।

डनवर—यह एक तरहसे सम्भव हो सकता हैं। यदि तुम यह अनुमान करो कि इस मामलेमें प्रेमका अभिनव है तो तुम बड़ी भूल करोगे। यह विचारने की बात है, कि किसी स्त्रीका अपने स्वामीको मृत्यु शय्यापर छोड़कर परपुरुषके घर रातको जाना कैसे सम्भव हो सकता है। यदि दूसरे पहलूसे इस बातको सोचनेकी चेष्टा करो तो तुम्हारी समझमें आ जायगा कि वह स्त्री लिरोको कोई खबर देनेके लिये त्रस्त व्यस्त होकर दौड़ आयी थी। इसी रहस्यपर लिरोका जीवन-मरण निर्भर करता हैं।

सोबी—दोनों डाक्टरोंने अपनेमें मतभेद करके रहस्यको और भी जटिल बना दिया है। कम्बरली कहते हैं कि 'इनजेकशन, आठ घंटेसे पहलेका नहीं है और मिष्टर हिल्टन कह रहे हैं एक घंटेके भीतर ही इनजेक्शन हुआ है।

डनवर—परन्तु दोनों ही जोर देकर अपना मत प्रकट नहीं कर सकते हैं। दोनोंमें कोई युक्तिसंगत प्रमाण नहीं दिखलाता है। खैर, अभी इसकी विशेष जरूरत नहीं है।

सोबी—आप किस सूत्रसे इस मुकदमेकी जाँच आरम्भ करना चाहते हैं ?

डनवर—अभी मैं मिस्टर भरननके मैनेजर देवनामके पास जाना चाहता हूं । मुझे मालूम होता है कि इन दोनों स्वामी स्त्रीकी मृत्युकी जड़में कोई रहस्य छिपा है।

सोबी—पत्रोंमें आपने क्या सूचना दी है ?

डनवर—अभी विशेष कुछ नहीं है। सिर्फ सोमको गिरफ्तार करनेका परवाना निकाल दिया है।

सोबी—इतनी देरतक क्या वह बेस्ट मिनिस्टरमें बैठा होगा? वह कभी इस शहरको छोड़ कर भाग गया होगा।

डनवर—मैं ऐसा नहीं समझता। वह अवश्य ही यहीं कहीं छिपा होगा । उसके सरदारोंने उसके छिपनेका प्रबन्ध कर दिया होगा।

सोबी—सो कैसे ?

डनवर—नहीं तो क्या ? तुम समझते हो कि वह अकेला है ? नहीं, उसके और भी कितने ही साथी होंगे।

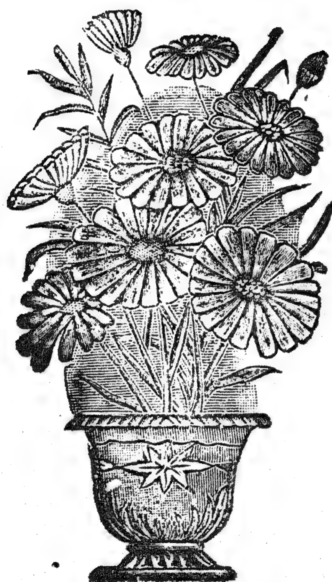
सोबी—हाँ, मेरा भी अनुमान यही है कि वह इस हत्या काण्डमें सहायकमात्र है। पैरिससे आपके तारका उत्तर आया है ?

डनवर—अभी तक तो नहीं आया। उसकी मैं बड़ी प्रतीक्षा कर रहा हूं। लिरोदम्पत्तिके प्रणयमें भी कुछ रहस्य मालूम होता है।

सोबों—प्रेमका ऐसा अलगाव तो मैंने नहीं देखा ।

डनबर—अच्छा बहुत बातें हुईं । एक बार तुम फिर टेक्सी ड्राइवरकी खबर लो ।

सोबों प्रणाम कर चले गये ।



सातवां परिच्छेद

चित्रशाला



मिस्टर भरननकी अट्टालिका एक बहुत ही ऊँचे गढ़पर अवस्थित थी। नाना प्रकारके वृक्ष और लतागुल्मोंसे ढके रहनेके कारण दूरसे देखनेपर यह एक बड़े दुर्गके समान मालूम होती थी प्रातः कालके समय कार्तिकके कुहरेसे यह अट्टालिका बहुत ही धुधली दिखलायी देती थी, मिस्टर डनवरने इस मकानके सामने जाकरबाहर लटकी हुई घंटीकी रस्सी जोरसे खींची। कुछ देरके बाद एक आदमीने आकर दरवाजा खोल दिया। डनवरने उस आदमीको अपना कार्ड देकर मिस्टर भरननके मैनेजरसे भेंट करना चाहा। उस आदमीने इन्हें एक सुसज्जित कमरेमें बैठा: कर अपने मैनेजरको खबर दी।

डनवरको अधिक देरतक मैनेजरकी अपेक्षा न करनी पड़ी। थोड़ी ही देरमें एक दुबले पतले लम्बे साहबने बाहर ही से दोनों हाथोंको फैलाये हुए हाथ जोड़ते हुए कमरेमें प्रवेश किया। डनवर समझ गये कि यही मिस्टर भरननके मैनेजर देवनाम हैं

उन्होंने अधिक भूमिका न बाँधकर पूछा—आपने मिसेस भरननकी मृत देहको देखा है न?

देवनाम—मैं तो नहीं गया था पर मेरा एक कर्मचारी देख आया है। वह कहता था कि वह लाश मिसेस भरननकी ही है।

डनवर—आजके पत्रोंमें आपने मेरी रिपोर्ट तो पढ़ी होगी?

देवनाम—जी हां, पढ़ी है।

डरवन—क्या आप बत सकते हैं, कि क्यों मिसेस भरनन अपने मुमूषु स्वामीको छोड़कर लिरोके कमरेमें उस नग्नप्राय वेशमें गयी थीं।

देवनामने अपनी कुर्सीको और भी आगे बढ़ाकर बहुत ही गम्भीर भावसे कहा—बता भी सकता हूं और नहीं भी बता सकता हूँ।

इन्स्पेक्टरने भी कुर्सी आगे बढ़ाकर कहा—अच्छा कहिये, आप क्या बता सकते हैं।

देवनाम—आप अनुमान कर सकते हैं, कि मृत्युके दिन मिसेस भरनन अपने स्वामीके यहां नहीं थीं।

डनवर—अच्छा।

देवनामने इधर उधर ताकते हुए धीरेसे कहा—वह अक्सर स्काटलैंडमें रहा करती थीं।

डनवर सीधे बैठ कर बड़े कौतूहलसे सुनने लगे।

देवनाम—पहले दूसरे हफ्ते वह वहां गयी ही रहती थीं। मिस्टर भरनन भी उनकी बहुत खोज खबर नहीं रखते थे। ये दोनों ही अपने कामोंमें बिल्कुल स्वतन्त्र थे। अब इतनेसे ही आप समझ जाइये।

डनवर—कहिये, कोई और भी कोई स्त्री इस मामलेमें है ?

देवनाम-मेरा भी यही अनुमान है-अनुमान क्या मुझे अच्छी तरह मालूम है। अच्छा जाने दीजिये, उस बातको। मिस्टर भरनन अपनी स्त्रीको प्रवासके खर्चके लिये १०००) रुपए दिया करते थे। मैं ही ये रुपये अपने हाथों चुकाया करता था।

डनवर—वह वहां किस सिलसिलेसे रहा करती थीं।

देवनाम—उन्हींके मुखसे तो सुना था कि उनकी एक बहन वहां रहती है। परन्तु असल बात क्या है, यह किसीको मालूम नहीं। व्याहके बाद दो वर्षतक श्रीमतीजीका अपने पित्रालयसे कोई सम्बन्धही नहीं था। हमें यह भी मालूम नहीं होता था कि उनके कोई है या नहीं। परन्तु पीछे न जाने किस लोकसे एक बहन आकर स्काटलैण्डकी खाड़ीमें बैठ गयी। तबसे बराबर वहां आना जाना होने लगा। परन्तु आश्चर्य्यकी बात तो यह है कि मिस्टर भरननने कोई रोकटोक न की। सम्भवतः उन्हें कुछ प्रसन्नता ही हुई।

डनवरने जल्दी जल्दी इन सभी बातोंका सारांश लिख लिया।

देवनामने थोड़ी देर रुककर कहा—अब मिस्टर भरननके वारेमें सुनिये। चार दिन हुए उन्हें मालूम हुआ, कि वह अपनी स्त्री द्वारा ठगे जा रहे हैं।

डनवर—ठगे जा रहे हैं!

देवनाम—जी हां, अन्तिम यात्राके समय ६००) रुपये माँगने

पर मिस्टर भरननने एक चेक लिख दिया। दूसरी सितम्बर मंगलवारको श्रीमतीने प्रस्थान किया।

डनवर—दासी भी कोई साथ गयी ?

देवनाम—नहीं, प्रवासके समय दासीको छुट्टी मिल जाया करती थी।

डनवर—गाड़ीपर चढ़ाने क्या कोई नहीं जाता था ?

देवनाम–नहीं, कोई नहीं।

डनवर—तब सम्भवतः वह यहीं कहीं रहा करती थीं।

देवनाम–आपका अनुमान ठीक है। मैंने स्काटलैंडमें अपने एक मित्रके पास लिखकर श्रीमतीकी बहनकी खोज लेनेको कहा था। उसका जबाब आया कि बतांये हुए पतेपर कोई भी उस नामकी स्त्री नहीं रहती और न मिसेस भरनन ही वहां हैं। परन्तु आखिरकार गत सोमवारको इस रहस्यका पर्दा हटा है।

डवनर—आज चार दिन हुए न ?

देवनाम—हां, मेरे मालिककी मृत्युके ठीक तीन दिन पहले।

रहस्यके महत्वको बढ़ानेके लिये कुछ देरतक मौन रहकर देवनामने कहा—गत सोमवारको रातको आठ बजे मिस्टर-भरनन विक्टोरिया स्ट्रीटके अपने एक मित्रके यहांसे लौटे आ रहे थे। रास्तेमें हठात् एक मोटरपर अपनी स्त्रीको देखकर चौंक पड़े।

डनवरने पहले ही इसका अनुमान कर लिया था। इस

लिये सहज भावसे उन्होंने पूछा—गाड़ीमें बत्ती जल रही थी ?

देवनाम—नहीं, रास्तेकी रोशनीके सहारे मेरे मालिकने उसे देखा था। एक एशियाई ड्राइवर गाड़ी चला रहा था। गाड़ीके भीतर उस पिशाचिनीके गलेमें बाँह डालकर एक बदमाश बैठा हुआ जा रहा था। इस रोमाञ्चकर दृश्यको देखकर मालिकके हृदयमें सांघातिक आघात पहुंचा। क्रोध और क्षोभसे वह पागलसे हो गये। किसी तरह वह घर पहुंचे और बिस्तर पकड़ा। फिर उठनेकी नौबत ही न आयी। कल शामको खून फेंककर उन्होंने इस कलंक और अपमानसे रिहाई ली।

डनवर—आपको और भी कुछ कहना है ?

देवनाम—जी नहीं, अधिक मैं कुछ भी नहीं जानता।

डनवर—एक बार मैं मिसेस भरननकी दासीसे भेंट करना चाहता हूं। वह कहाँ मिलेगी ?

देवनाम—ठहरिये अपने खानसामासे उसका ठिकाना पूछ कर बताता हूं। इतना कहकर देवनाम बाहर चले गये।

इधर डनवर एक एक करके सभी बातें बड़ी सावधानीसे लिखने लगे। थोडी देरमें देवनामने आकर कहा कि उस दासीका पता है—१३४ ए० रोबर्ट स्ट्रीट, वेस्ट मिनिस्टर।

चलते समय डनवरने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा—कि महाशय आपने मेरे ऊपर जो अनुग्रह किया है, उसके लिये मैं आपका चिरकृतज्ञ रहूंगा। आपने अपनी स्पष्ट गवाहीसे मेरा बहुत उपकार किया है। परन्तु अब रहस्य और भी जटिल हो

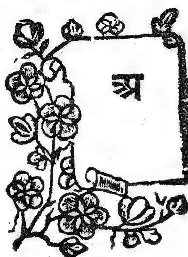
गया।" देखता हूं मिसेस लिरोका भी चरित्र ठीक मिसेस भरननसे मिलता जुलता है। मैं कह सकता हूं कि मैं ऐसे रहस्य पूर्ण मामलेमें कभी नहीं पड़ा था। देखें, ईश्वर क्या करते हैं।

इतना कह कर डनवर विदा हुए।



आठवां परिच्छेद ।

दो गाड़ीवान



अपने आफिसमें आकर इन्स्पेक्टर डनवरने देखा कि सोबीं एक मोटर ड्राइवरको धमकाकर बातें पूछ रहा है। डनवरने जाते ही मुस्कुराकर पूछा—वाह वाह ! तुमने ड्राइवरका पता लगा लिया ?

सोबीं ने मुस्कुराते हुए कहा—अभी पता तो नहीं लगा है परन्तु पता लगानेका सूत्र खोज निकाला हैं। यह बच्चा यदि उसका पता न बता देंगे तो इनका लाइसेन्स क्या रहने दूंगा ?

ड्राइवरने गिड़गिड़ाकर कहा—हुजूर धर्मावतार, मेरा कुछ भी दोष नहीं है । मुझसे कभी कोई दोष नहीं हुआ है। मैं बड़ी सफाईसे काम करता हूं । छाता, जूता, टोपी जिनकी जो चीज मेरी गाड़ीमें छूट जाती है, मैं उनके घर पहुंचा आता हूं । हुजूर गरीबपरवर, आप मां बाप हैं ।"

ड्राइवरकी सफाई न जाने कब तक जारी रहती पर डनवर ने बीचहीमें अधीर होकर कहा—चुप रह बदमाश; जो जो मैं पूछता हूं उसका ठीक ठीक उत्तर दे। नहीं तो तेरा लाइसेन्स क्या तेरी जानतक नहीं रहेगी।

ड्राइवर रोकर और भी कुछ कहने जाता था कि डनवरने डपटकर उसे चुप कर दिया और पूछा—बोल तेरा नाम क्या है ?

ड्राइ०—रिचर्ड, अम्पर, नं० ?, ब्रीमस मियुज, गाँव डलवीच

डनवर—बता कल रातको वेस्ट मिनिस्टरके सामने तुमने क्या देखा था ?

ड्राइ०-हुजूर, मैं पार्लामेण्टके मेम्बर मिस्टर हार्डिनको लेकर उनके डेरेकी ओर जा रहा था। जब मैं पैलेस मैन्सनके सामने आया तो देखा कि उद्यानके मोड़पर ब्रायान पुलिन गाड़ी लेकर खड़ा है।

डनवर—क्या तुमने और भी किसी आदमी या गाड़ीको देखा था ?

ड्रा०—जब मैं उद्यानके दूसरे किनारेपर पहुंचा था तब देखा कि एक आदमी काले रंगका चोगा—जैसा कि वकील मुख्तार लोग पहनते हैं—पहने हुए पैलेस मैंसनमें प्रवेश कर रहा है।

डवनरने सोर्वीकी तरफ देखते हुए अस्फुट स्वरमें कहा—खूब सम्भव यह एक्सेल ही थे, परन्तु वह तो कहते थे कि उन्होंने एक ही गाड़ी देखी थी !

ड्रा०—क्या कहा आपने ?

डनवर—जिस आदमीकी तुम बात कहते हो वह तो कहता था कि उसने सिर्फ एक ही गाड़ी देखी थी।

ड्रा०—हां, उनका मेरी गाड़ीको देखना असम्भव था; क्योंकि मैं उस समय उनके पीछे बहुत दूरीपर था।

डनवर—क्या ब्रायन पुलिनकी गाड़ी खाली ही थी ?

ड्रा०—जी हां, ब्रायनने वहीं सवारी उतारी थी।

डनवर—तुमने कैसे जाना, क्या उससे बातचीत हुई थी ?

ड्रा०—नहीं, पर वहां सेंट एण्ड्रूज मैंसन और पैलेस मैन्सनके सिवा दूसरा मकान ही नहीं है। इन्हीं दोमेंसे एकमें सवारी उतराना सम्भव है। परन्तु आजकल सेंट एण्डरूज मैंसन बिलकुल खाली है। इसलिये अनुमान किया जा सकता है कि पैलेस मैंसनमें ही सवारी उतरी थी।

डनवर—वाहवा तुम तो एक अच्छे जासूस बन सकते हो। अब तुम जाओ, परन्तु जरूरत पड़नेपर हाकिमके सामने तुम्हें यही कहना होगा।

ड्राइवर दोनों जासूसोंको सलाम ठोककर जाने लगा तो सोवींने कहा—असल बात तो अभी बाकी ही रह गयी। ब्रायन पुलिनका ठिकाना तुमने कहां बतलाया ?

डनवरने भी चौंककर कहा—सचमुच, मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था। आपने अच्छी याद दिलायी।

ड्राइवरने लौटकर कहा—ब्रायन पुलिन ४ नं० हेस्पर लेनमें रहता है।

डनवरने पूछा—क्या और भी कोई आदमी उस मकानमें रहता है ?

ड्रा०—नहीं वही दोनों स्वामी स्त्री रहते हैं।।

इसके बाद डनवरने उस गाड़ीवानको छुट्टी दे दी। उसके चले जानेपर उन्होंने सोबींको अपनी नोटबुक देकर कहा—आप एकबार इसे देख जाइये। आपको मिसेस भरननकी दासीके पास जाना होगा। चालाकीसे बात उसके पेटसे निकालनेकी चेष्टा करनी होगी। मालूम होता है, कि मिसेस भरननका उस पर विश्वास नहीं रहता था।

सोबीं नोटको लौटाकर दासीकी खोजमें चले गये। इधर डनवर भी कोचवानकी खोजमें बाहर हुए।

निर्दिष्ट ठिकानेपर पहुंचकर मिस्टर डनवरने देखा कि ४ नं० का मकान बहुतही छोटा परन्तु साफ सुथरा है। दरवाजेको बन्द देखकर दूर ही से वह उसकी ओर लक्ष्य करने लगे। थोड़ी ही देरमें एक दुबली पतली अधेड़ औरत एक टोकरी सिर पर रखे हुए उस चार नं० के मकानसे निकली और बड़े रास्ते से होकर चलने लगी। डनवरने भी चुपकेसे उसका पीछा किया।

इन्स्पेटर करीब दश मिनिट तक उसके पीछे पीछे चलते रहे। धीरे धीरे वह स्त्री बाजारमें घुसी और सौदा खरीदने लगी। सौदेसे जब उसकी टोकरी भर गयी तब वह एक शराबकी दुकानमें घुस गयी। वहीं एक पोस्ट आफिस भी था। इस लिये चिट्ठी छोड़नेके बहाने डनवर भी धीरे धीरे उसी मकान गये। औरतने कई तरहकी शराबें खरीदकर टोकरी सिरपर रखी

और घरकी ओर चली। डनवरने भी दूर ही से उसका पीछा किया।

औरत जब अपने दरवाजेके पास पहुंची तब डनवरने आगे बढ़, अपनी टोपी उतार कर सलाम किया और पूछा—क्या आपही का शुभ नाम मिसेस ब्रायान है?

स्त्रीने ठमक कर उनकी ओर देखा और बोली—हां। मेरा ही नाम है। क्या आप मुझे ही खोजते हैं?

डनवर—जी हां, मुझे आपसे विशेष काम है।

औरत उन्हें इशारेसे बुलाकर ऊपर ले गयी, और एक साफ सुथरे कमरेमें बैठाकर बोली—कहिये, आपको मुझसे क्या प्रयोजन है?

डनवरने पूछा—आपके मालिक घरही पर हैं न?

औरत—हां, वह सो रहे हैं।

डनवर—आप कृपया उन्हें उठा दीजिये और यह कार्ड उन्हें दीजिये।" इतना कहकर डनवरने अपने आफिसका कार्ड दे दिया।

डिटेक्टिव इन्स्पेक्टर,
सी० आई० डी०
निउ स्काट लैंडयार्ड० एस० डबल्यू

नवां परिच्छेद

अनुसन्धान



मिसेस ब्रायान चौंककर पीछे हट गयी और भयसे काँपती हुई बोली—"उन्होंने क्या किया है ? उन्होंने तो कोई कसूर नहीं किया ?

इन्स्पेक्टरने कोमल स्वरमें कहा—डरकी कोई बात नहीं। उनसे कुछ बात करनी हैं। आप जरा भेज दीजिये।

मिसेस ब्रायान चली गयी। थोड़ी देरमें एक लम्बा दाढ़ी वाला आदमी अकड़ता हुआ दरवाजे पर आकर बोला—क्या बात है ?

इन्स्पेक्टरने उसकी उद्दण्डता पर कुछ ख्याल न कर उसे इशारेसे कमरेमें बुलाया और तीक्ष्ण दृष्टिसे उसकी तरफ देखते हुए कहा—तुमसे मैं एकान्तमें कुछ बातें करना चाहता हूँ। तुम दरवाजा बन्द कर दो।

दरवाजा बन्द होनेपर डनवर ने कहा—तुम मोटर डिपोमें आज गये थे ?

ब्रायान—नहीं, आज तो सारा दिन यहाँ सोया ही रह गया हूं।

डनवर—आज वहां पुलिसकी तलाशी हुई है।

ब्रायान भय और आश्चर्य्यसे बोल उठा—क्यों ?

डनवर—इ क्यों का उत्तर पूछनेके लिये ही तो मैं तुम्हारे पास आया हूं। गत रातको, बारह बजे जो सवारी तुमने पैलेस मैन्शनपर उतारी थी, उसे तुमने कहाँसे चढाया था ?

ब्रायानने जरा पीछे हटकर भौंहें सिकोड़ कर कहा—पैलेस मैंशन ! पैलेस मैंशनसे क्या मतलब ?

डनवरने अपनी अंगुली उठाकर कड़ी आवाजमें कहा—खरबदार ! ठीक ठीक बताओ ! यह जीवन-मरणका प्रश्न है। कहो, तुमने पैलेस मैंशनके पास सवारी उतारी थी या नहीं ?

ब्रायानने डरसे काँपते हुए कहा—जी हाँ उतारी तो थी।

डनवर—क्या वह पुरुष था ?

ब्रायानने एक बार डनवरकी ओर देखा। उनकी आंखें उसके चेहरेपर इतने जोरसे गड़ी हुई थीं मानों वे ऊपरके चमड़ेको छेद कर दिलकी बात जाननेकी चेष्टा कर रही थीं। अतः ब्रायानको धोखा देनेका साहस न हुआ, उसने कहा—नहीं, वह स्त्री थी।

डनवर—उसने कैसे कपड़े लत्ते पहने थे ?

ब्रायान—रोयेंके लहंगेकी तरह कुछ होता है वही ?

डनवरका चेहरा खिल गया। उन्होंने आग्रहसे पूछा—रोएंका चोगा तो नहीं ?

ब्रायान—जी हां, चोगा ही था। इसके सिवा उसके शरीर पर और कुछ भी न था।

डनवर—क्या वह अकेली ही थी ?

ब्रायान—जी हाँ।

डनवर—उसने कितना भाड़ा दिया था ?

ब्रायान—मिटर तो आठही पेंसका खर्च हुआ था, परन्तु उसने आधा काउन दिया ।

डनवर—क्या वह बीमार मालूम होती थी ?

ब्रायान—सख्त बीमार थी। मोटरसे उतरते समय वह गिरते गिरते बची। परन्तु किसी तरह सम्हल कर पीछे ताकती झटपट पैलेस मैंशनमें घुस गयी।

डनवर—क्या उसने तुम्हें ठहरनेको कहा था ?

ब्रायान अब हिचकिचाहटमें पड़ गया। वह नीचे ऊपर देखने लगा। थोड़ी देरतक चुप रहकर उसने कहा—हां, कहा तो था ।

डनवरने मुस्कुराकर कहा—परन्तु तुमने घूस खाकर वहां से गाड़ी हटा ली थी ? क्यों ? देखो, ठीक ठीक बताना, नहीं तो याद रहे, ब्रिक्स्टन. जेलकी हवा खानी होगी।

ब्रायानने लड़खड़ाती हुई आवाजमें धीरेसे कहा—माफ कीजिये, आपका अनुमान ठीक है ।

डनवर—किसने घूस दी थी ?

ब्रायान—एक आदमी बराबर मेरी गाड़ीके पीछे पीछे एक दूसरी गाड़ीमें आ रहा था। उसीने दी थी।

डनवर—उसका वर्णन करो।

ब्रायान—माफ कीजिए ! मैं नहीं वर्णन कर सकता। आप जान ले लें तब भी नहीं। मैं उसका चेहरा देख ही नहीं पाया

था। वह पीछेसे झट मेरे सामने आया और हाथमें एक गिनी थमाकर चलता बना।

डनवर तीक्ष्ण दृष्टिसे उसकी ओर देख कर समझ गये कि सीधी तरहसे काम न बनेगा। उन्होंने कहा--उसका कपड़ा कैसा था।

ब्रायान—काला। बस, इतना ही मैं बता सकता हूँ।

डनवर—तुमने घूस ली थी?

ब्रायान—हां, लीया था।

डनवर—उसने क्या कहा?

ब्रायान—सिर्फ कहा—'हट जाओ।

डनवर—बोलचालसे क्या तुमने उसे अंग्रेज अनुमान किया था?

ब्रायान—नहीं, उसकी आवाज विदेशीकी तरह मालूम होती थी

डनवर—फ्रांसीसी?—जर्मन?

ब्रायान—नहीं—एशियाई मालूम हुआ!

डनवर स्थिर हो कर बैठ गये और बोले—क्या तुम ठीक कह रहे हो?

ब्रायान—जरूर। मैं एक बार पूरबमें गया था, इसलिये उनकी बोलचालसे मैं अच्छी तरह परिचित हूं।

डनवर—क्या और भी सूक्ष्म रूपसे उसका परिचय नहीं बता सकते?

ब्रायान—नहीं, निरे अनुमान पर कुछ कहनेका साहस नहीं होता। यदि मुझे बाध्य होकर कहना पड़े तो कहूंगा कि वह "चीना" था।

डनवरने उत्तेजित होकर कहा,—चीना?

ब्रायान—मेरा अनुमान तो ऐसा ही है।

डनवर—अच्छा, आगे क्या हुआ, कहे चलो।

ब्रायान—इसके बाद मैं गाड़ी लेकर चला गया।

डनवर—अच्छा, अब यह बताओ कि तुमने सवारी कहां चढ़ायी थी?

ब्रायान—नार्स पोकूरके अस्पतालसे।

डनवर—नार्स पोकूर कौन हैं?

ब्रायान—वह एक धाई है। उसने स्त्रियोंका एक अस्पताल खोल रखा है।

डनवर—किसने तुम्हें बुलाया था?

ब्रायान—उसी रोएंवाली स्त्रीने। धीरे धीरे गाड़ी चलाता हुआ जब मैं अस्पतालके फाटकके सामने आया, तब वह स्त्री धड़ाकेसे दरवाजा खोलकर हाँफती हुई आयी और गाड़ीमें बैठते ही बोली—'पैलेस मैंशन। वेस्ट मिनिस्टर!

डनवर—कहां आनेपर तुमने देखा कि कोई पीछा कर रहा है?

ब्रायान—नाट्य मंदिरके सामने आया ही था कि मैंने पीछे फिर कर देखा। वह स्त्री बहुत ही उत्तेजित होकर पीछेकी ओर

ताक रही थी। उसकी उत्तेजनाका कारण मेरी समझमें आ गया। पीछे कुछ दूरीपर एक बड़ी मोटर गाड़ी आ रही थी। उसका ड्राइवर भी पूर्वी ही मालूम पड़ता था। परन्तु उसकी पोशाक परिच्छेदको भी मैं नहीं देख पाया था।

डनवर—कहांतक वह गाड़ी तुम्हारे पीछे पीछे आयी थी?

ब्रायान—बागीचेकी मोड़पर आकर न जाने वह किधर चली गयी, फिर मैं नहीं देख सका।

डनवर—तुमने क्या उस मकानसे और भी कोई सवारी कभी ली थी?

ब्रायान—हां, दो बार उस अस्पतालकी दो औरतोंको मैंने गाड़ीपर चढ़ाया था। परन्तु दोनों ही बार मैंने देखा कि वे स्त्रियां उस मकानके सामनेसे न चढ़कर कुछ दूर हट कर गाड़ीपर चढ़ी हैं।

डनवर—इसमें कुछ रहस्य मालूम होता है। क्या तुमने उन दोनों स्त्रियोंको फिर कभी देखा है?

ब्रायान—नहीं, परन्तु मैं जोर देकर कह सकता हूं कि वे स्त्रियां अच्छे घरकी थीं।

डनवर—तुमने उन्हें कहाँ पहुंचाया था?

ब्रायान—एकको सेंट क्रासपर और दूसरेको वाटरलू स्टेशनपर।

डनवर—शायद रेलगाड़ीपर चढ़ने गयी थीं?

ब्रायान—रेलगाड़ीपर चढ़ने तो नहीं गयी थीं परन्तु आप

कह सकते हैं, कि रेलगाड़ीसे उतरने गयी थीं।

डनवर—तुम क्या कहते हो, कुछ समझमें नहीं आता।

आयान—मैं ठीक ही कहता हूँ। दोनो ही बार मैं उन्हें जब स्टेशनपर ले गया तब वे रेलगाड़ीसे उतरनेका बहाना कर अपने घरकी गाड़ीमें बैठकर शायद अपने घर चली गयीं।

डनवरने अपनी नोटबुक और फाउनटेन पेन लेकर लिखते हुए कहा—"क्या तुम इसे जोर देकर कह सकते हो?"

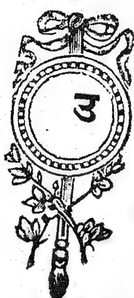
आयान—जी हां, मुझे अपनी आंखोंपर पूरा विश्वास है।

आयानने एक पेनी हाथमें देते हुए कहा—तुमने बड़ी अच्छी गवाही दी है। इस लिये मुझसे इनामके तौरपर यह लो। जल-पान करना।



दशवाँ परिच्छेद ।





अद्भुत जोड़ी ।

उल्लिखित लोमहर्षण हत्याकाण्डके दूसरे दिन यदि कोई सूक्ष्मदर्शक लन्दन नगरीके चारिङ्गक्रास घाटपर खड़ा होकर जहाजसे उतरते हुए यात्रियोंपर नजर दौड़ाता तो, हमें पूरा विश्वास है कि उसकी दृष्टि सबसे पहले दो यात्रियों पर पड़ती जिनमें एक पुरुष था और दूसरी स्त्री ।

पुरुषका कद लम्बा, छाती चौड़ी और ललाट ऊँचा था। शरीर माँसबहुल होनेपर भी भरा और कसा था, जिससे उसके बलका विशेष परिचय मिलता था। चमकती हुई काली काली आंखोंसे एक ऐसी तीक्ष्णदर्शिता टपकती थी जो हृदयके अन्तस्तलको भेद कर देख सकती थी। दमकते हुए चेहरेपर संसार भरका अनुभव दृष्टिगोचर हो रहा था! उम्र तीसको पार कर गयी थी। वेशभूषासे वह यात्री फ्रान्सीसी प्रतीत होता था।

रमणीकी अवस्था २५ के लगभग थी। अपरूप सुन्दरी न होनेपर भी उसकी गणना सुन्दरी रमणियोंमें हो सकती थी। स्त्रीजन सुलभ कोमलता, लज्जा और मधुरता आदि गुण लुक-छिप कर झलक रहे थे। देखनेमें स्त्री कुमारी

ही प्रतीत होती थी। उसके वस्त्राभूषण भी फ्रान्सीसी ही जान पड़ते थे।

पुरुषने पहले जहाजसे उतर, रमणीको हाथ बढ़ाकर उतारा और एक कुलीके सिरपर मोट रखकर स्त्रीका हाथ पकड़े हुए जेटीके बाहर आया। ये फ्रांसीसी पोशाकमें होते हुए भी अंग्रेजी हीमें बातचीत कर रहे थे। इससे जान पड़ता था कि कोई इनमें विदेशी जरूर है। पुरुषकी ही विदेशी होनेकी अधिक सम्भावना थी। क्योंकि वह उच्च श्रेणीकी लच्छेदार भाषामें बातचीत कर रहा था और उसका उच्चारण भी बहुत कुछ अंग्रेजी सीखे हुए अमेरिकनोंका सा था।

जेटीसे बाहर निकल पुरुष यात्रीने स्त्रीके मोटको एक मोटरगाड़ीपर रखवाया और उसके ड्राइवरको एक ठिकाना बताकर गाड़ी चलानेकी आज्ञा दी। स्त्री जब गाड़ीपर चढ़ कर चलने लगी तब उसने मुस्कुराकर विनयसे कहा—महाशय इस अल्प-परिचयको बढ़ानेका भार आपके ऊपर है। आप तो मेरा पता जानते हैं। समय समय पर —

पुरुषने टोपी उतार कर विनयसे कहा—आपको कहना न होगा। मैं कल ही आऊँगा।

ड्राइवरने गाड़ी चला दी। जब तक गाड़ी आंखसे ओझल न हुई वह आदमी टोपी हाथमें लिये एकटक उसकी ओर देखता रहा फिर एक दूसरी गाड़ी मँगाकर उसने अपना बड़ा बेग उसपर रखा और एक अमेरिकन होटलका नाम बतलाकर

उसपर जा बैठा।

पाठक! कुछ देरतक इस सज्जनको अमेरिकन होटलमें आराम करने दीजिये। आइये, हम रमणीका अनुसरण करें।

निर्दिष्ट होटलमें पहुंचकर रमणीने अपना माल असवाब, हिफाजतसे रखवा दिया और जलपान आदि कर तुरत ही होटलसे बाहर निकल एक टैक्सी ड्राइवरको पैलेस मैन्सन, वेस्ट मिनिस्टरका पता बता कर उसपर जा बैठी।

जिस समय वह फ्रांसीसी रमणी होटलसे बाहर हुई। उस समय हेलन कम्बरलीने एक लम्बी सांस भरकर कलमको टेबुलके ऊपर रख दिया, मुँह पर लटके हुए केशोंको पीछे फेरकर उठ खड़ी हुई और खिड़कीका पर्दा हटाकर कुछ देरतक वह खड़ी खड़ी बागीचेकी ओर ताकती रही फिर लिखनेके टेबुलपर आ बैठी।

इस समय इस बालिकाका हृदय बहुत ही व्यथित और अवसन्न हो रहा था। हृदयमें व्याकुलता छायी हुई थी। आंखें आसुओंसे डबडबाई हुई थीं। यदि कोई ध्यान देकर देखता, तो देख पाता कि सामने लिखे हुए पत्रके ऊपर मोतीके सदृश कई एक अश्रुकण चमक रहे थे।

कितने ही युवक हेलनके रूप-गुणपर मुग्ध होकर उससे पाणिग्रहण करनेको लालायित रहते थे परन्तु उस बालिकामें अपनी स्वर्गीय माता और पिताका दृढ़ बिचार और आत्मनिर्भरता इतनी कूट कूटकर भरी थी कि अबतक उसने किसीको भी

आत्मसमर्पण नहीं किया था। वह जिस पुरुषको अपने हृदयका आराध्य देव बनाना चाहती थी वैसा कोई भी देवचरित्र युवक उस प्रार्थी युवकमंडलीमें उसे दृष्टिगोचर नहीं हुआ। खैर, अब प्रसङ्ग पर आना चाहिये।

करीब पाँच मिनटतक बालिका चुपचाप खड़ी रही फिर आंसुओंको पोंछकर उठ खड़ी हुई और आईनेके पास जाकर एक बार बालोंको सम्हाल लिया। इस समय कोई नया विचार उसके दिलमें उठ खड़ा हुआ, जिससे सहसा उसका कुम्हलाया हुआ मुख खिल उठा। वह बत्तीको बुझाकर कमरेसे बाहर निकली और लिरोके कमरेमें आनेके लिये सीढ़ीसे उतरने लगी।

नीचे जाकर उसने देखा कि लिरोके खानसामा और दासी गठरी बाँध कर बाहर जानेके लिये तैयार हैं।

उसने पूछा—मेरी! क्या तुम लोग यहांसे काम छोड़ कर जा रही हो?

धाईने बेअदबीसे कहा—हाँ, जा तो रही हूं।

हेलन—सो क्यों? मिस्टर लिरोका काम कैसे चलेगा?

धाई—जैसे उनकी खुशी हो। टाम भी तो जा रहा है।

हेलन—बावर्ची भी जा रहा है? मामला क्या है।

उन दोनोंने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। हेलन विस्मयसे अभिभूत होकर उनकी ओर ताकने लगी। थोड़ी देरके बाद वह बोली—अच्छा लिरोको खबर दो, मैं भेंट करना चाहती हूं।

उन दोनोंने हेलनकी बातपर कान ही न दिया और गठरी मोटरी उठाकर चलनेको तैयार हुए।

हेलनने अपने आप जाकर लिरोके दरवाजेकी रस्सी खींची। भीतरसे आवाज आयी—चली आओ।

हेलनने कमरेमें प्रवेश किया। भीतर बिल्कुल अंधकार छा रहा था। उसने बत्ती जलाकर देखा कि लिरो अपने लिखनेके टेबुलके पास कुर्सीपर मन मारे बैठे हुए हैं। कमरेकी चीजें इधर उधर बिखरी हुई हैं। मालूम होता था, कि पुलीसकी तलाशीके बाद घरमें झाड़ू नहीं पड़ी है।

हेलनने लिरोके निकट जाकर देखा तो उनका चेहरा बिल्कुल बदला हुआ था। बाल बिखरे हुए, मानों कितने ही दिनोंसे उनपर कंघी ही न फिरी हो। आंखोंमें खुमारी छायी हुई थी। थोड़ा बिसकुट और शराब टेबुलपर रखी हुई है।

हेलन सहानुभूतिपूर्ण गद्गद कण्ठसे बोली—क्या लिरो! तुम मुझसे बोलना नहीं चाहते?

लिरो—क्या तुमसे मेरी दुश्मनी है? किन्तु—

हेलनने जोर देकरकहा—हां, देखती तो हूं। तुम दिन दिन गम्भीर होते जा रहे हो। तुम्हारी इस एकान्तप्रियताको देखकर सचमुच, मुझे डर हो रहा है। अभी तुमने इन नौकरोंको जवाब क्यों दे दिया है?

लिरोने उदास भावसे कहा—जाने दो, कोई जरूरत नहीं! मैं उन्हें नहीं चाहता। तुम कुछ भी चिन्ता न करो, मुझे कोई

तकलीफ न होगी।

हेलन—नहीं, तुम ऐसा पागलपन न करो। मैं सलाह देती हूं ? तुम कुछ दिनके लिये इस घरको छोड़ दो।

लिरो—कभी नहीं, मैं इस जगहसे कहीं भी न हटूंगा। मैं प्रति मुहूर्त्त हीराके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। न जाने किस घड़ी वह आ जाय।

इतना कहकर उन्होंने घड़ीकी सूईसे दिनके अवसानका अनुमानकर एक लम्बी आह भरी! हेलनने भी मुख फेरकर वैसा ही किया और बोली—गार्न हमको मैं भेज देती हूं। वह कमरा साफ कर देगा। आज तुम हम लोगोंके साथ ही भोजन करोगे। क्यों ठीक है न ?

लिरो—नहीं नहीं, कोई जरूरत नहीं। मैं तुम्हें तकलीफ देना—

हेलन बीच ही में आदेशके ढंगपर बोल उठी—बस, मैं अभी गर्नहामको भेजती हूं! घर झाड़-बुहार कर साफ कर दे। तबतक तुम भोजनके लिये तैयार हो लो।

इस समय हेनरी लिरो एक हाथ टेबुलपर रखे हुए लज्जासे फर्शकी ओर दृष्टि गड़ाये बैठे थे। बहुत दिनोंसे उन्हें किसी चीजका अभाव अनुभव हो रहा था। संसारमें उन्होंने अपने पौरुषसे, विद्या-बुद्धिसे पर्य्याप्त उन्नति की थी। इस समय वह धन-मान और यशसे गौरवान्वित हो रहे थे। तथापि इन सब चीजोंके होते हुए उनके अन्तःकरणको पूर्ण शान्ति और सन्तोष

नहीं मिलता था। पारिवारिक सुख उनका बिलकुल दिखावटी था। दाम्पत्य प्रेम लालसामय और कापट्यपूर्ण का रूपांतर था। उन्होंने पहले यह समझनेकी चेष्टा की थी कि मेरी प्रकृति निर्जनता प्रिय है। इस विश्वासके वशवर्त्ती होकर उन्होंने अपना व्याह ऐसी युवतीसे किया जो उनसे कुछ भी प्रत्याशा न रखे, जो अपने सुख-दुख आराम-चैनका अपने आप प्रबन्ध कर ले। थोड़े ही दिनोंमें उन्हें यह अनुभव हुआ कि नहीं मैं अपनी स्त्री को प्यार करता हूं। इस विश्वासके कारण कभी कभी उन्हें उसकी खबर न मिलनेपर उत्कण्ठा भी कम न होती थी परन्तु पीछे उनकी धारणा और बिश्वासमें एक अपूर्व परिवर्त्तन हो गया। उन्हें अपनी भावुकता और चिन्ताप्रणालीपर पूरा सन्देह होने लगा। उनके मनमें अब यह प्रश्न उठने लगा कि, मेरो मानसिक उदासीनताका कारण यशोलिप्सा तो न थी? क्योंकि 'मार्टिन जिदाका चरित्रचित्रण करनेमें माथापच्ची करते हुए मैंने अपनी सारी जीवन-धाराको ही मार्टिन जिदा की तरह काल्पनिक और निःसार बना डालने की चेष्टाकी है। यही कारण मेरी मानसिक अशान्तिका तो नहीं है? फिर कभी कभी उनके मनमें प्रश्न उठता—मेरी प्रकृति और मनोवृत्ति ही में तो कोई ऐसा अभाव नहीं है जिसको यह धन-सम्पत्ति समाजिक गौरव और स्त्री इनमेंसे कोई भी पूरा नहीं कर सकता ?

हेलन कम्बरलीके स्वरमें आज कुछ नवीनता थी। इतने दिनके परिचित स्वरसे यह स्वर बिल्कुल भिन्न था। उसने

आज जिस उत्कण्ठापूर्ण, सहानुभूतिपूर्ण मधुर स्वरमें उनको उनकी उदासीनताके लिये भर्त्सना की थी, उसको सुनते ही उनके उत्कण्ठित और उद्विग्न हृदयकी प्रत्येक शिरायें, प्रत्येक मर्मस्थल वीणाके तारकी भांति झंकरित हो उठे। उनका शरीर कंटकित हो गया और ललाट पसीनेसे भर गया, लज्जासे उनकी आंखें ही न उठीं।

हेलनने मृदु स्वरमें पूछा—क्या इसमें भी दर दाम होगा ?

हेनरी लिरोका गला रूँध गया, एक शब्द भी मुखसे न निकला। पीछे धीरे धीरे जब उन्होंने सिर उठाया तो दोनोंकी आंखे चार हुईं। बालिकाके बढ़े हुए हाथोंको अपने हाथोंमें लेकर लिरो मुस्कुराये, बालिकाने भी मुस्कुरा दिया परन्तु तत्क्षण वह चौंक पड़ी। लज्जासे मुख लाल हो गया। उसने आंखें मूँद लीं।

इस समय लिरो मन्त्रमुग्धकी तरह बालिकाके आरक्तिम मुखकी ओर एकटक देख रहे थे। उनके लालसामय, आकांक्षा-मय नेत्रोंमें लज्जा और संकोच लेशमात्र भी न था। उसके हाथोंको अपनी हथेलीपर लेकर उन्होंने कहा—हेलन! ईश्वर तुम्हारा भला करे, मैं तुम्हारे कहनेसे बाहर न हो जाऊँगा ?

हेलन तुरत अपने हाथोंको छुड़ाकर कमरेसे भाग गयी। जब तक वह सीढ़ीपर न पहुँची, उसने पीछे फिर कर देखा भी नहीं। वहींसे उसने पुकारकर कहा—"गानहम अभी नीचे आता है। तुम आनेमें देर न करना।" इतना कहती हुई वह दौड़कर अपने कमरेमें घुस गयी।

ग्यारहवां परिच्छेद ।

मिस्टर गैस्टोन मैक्सकी नियुक्ति



हेलन हाँफती हुई जाकर अपने बिछौनेपर पड़ रही और लगी सिसक सिसककर रोने। करीब १५ मिनिटतक बिछौनेको अपने आंसुओंसे भिगोकर वह आंखें पोंछकर उठ खड़ी हुई। उसने दासीको पुकारा। उसके आनेपर उसने गार्नहमको नीचे भेज देनेके लिये कह दिया। दासी जब चली गयी तब उसने बत्ती जलायी। परन्तु अब भी उसे अपना मुख शीशेमें देखनेका साहस न हुआ। वह कुर्सीपर बैठकर मन ही मन लिरोकी कितनी ही भर्त्सना करने लगी।

पाँच मिनिटतक इसी तरह सन्नाटेमें बीतनेके बाद एक दासी किवाड़ खोलकर टेबुलपर एक कार्ड रख गयी। उसमें लिखा था

डैनिस रिलैंड

एटेलियर ४, रो० डू० काक डी आर

मोण्टमार्टर

पैरिस।

उपरोक्त कार्डको देखकर हेलन एकाएक चौंककर उठ खड़ी हो गयी और अस्फुट स्वरमें बोली—डेनिस रिलैंड! वही न जिसके साथ श्रीमती लिरो पेरिसमें रहती? वह यहां आयी हैं

इसका क्या मतलब ? इसी समय दासीने फिर आकर पूछा—क्या मैं उन्हें ले आऊं ?

हेलनने कहा—हां, यहीं लाओ।

थोड़ी देरमें एक फ्रान्सीसी महिलाने मुस्कुराते हुए कमरेमें प्रवेश किया और हेलनको गलेसे लगा लिया।

यद्यपि इन दोनों रमणियोंमें कोई घनिष्ट परिचय न था परन्तु श्रीमती लिरो द्वारा दोनों ही एक दूसरेसे परिचित हो गयी थीं। श्रीमती लिरोके मुखसे एक दूसरेकी प्रशंसा सुनकर दोनों ही में परस्पर सख्य भाव उत्पन्न हो गया था। चाक्षुष परिचय प्राप्त कर दोनोंको ही इस समय अपार आनन्द हुआ।

हेलनने अपनी सखीका उचित आतिथ्य सत्कार करके कहा—मैं बहुत दिनोंसे विचार कर रही थी, कि एक वार पैरिस चलकर अपनी नयी सखीसे भेट कर आऊं परन्तु मेरे भाग्यमें यह नहीं बदा था। खैर, आपने कृपाकर मेरी अभिलाषा पूरी कर दी। परन्तु क्या बात है कि श्रीमती लिरो आपके साथ नहीं आयीं।

श्रीमती डेनिसमें एक बड़ा मुद्रा दोष था। वह अपने प्रत्येक शब्दको तौल तौलकर—रुक रुककर—उच्चारण करती थीं। उन्होंने अपनी स्वाभाविक भाषण प्रणालीमें धीरे धीरे कहना शुरू किया—मैं...विशेषकर......तुम्हींसे......भेट......करने......पैरिससं......आ रही ......हूं। ......श्रीमती लिरोसे......तुम्हारे विषयमें......सुनकर......मुझे......तुमसे

......मिलनेकी......बड़ी उत्कण्ठा हुई थी। सचमुच...तुमसे... मिलकर......मुझे......बड़ा......आनन्द मिला......है।

हेलनने मुस्कुराते हुए कहा—हम लोगोंका सुख इस समय सर्वाङ्ग-पूर्ण होता, यदि तुम अपनी सखीके साथ यहां आयी होतीं। इस समय हम लोग उसके लिये बहुत चिन्तित हैं। मैं रात दिन उसीकी चिन्तामें रहती हूँ कि वह क्यों ऐसी हो गयी!

फ्रांसीसी महिलाने तनिक उत्तेजित होकर कहा—इसमें... उसका......क्या दोष है......? सारा दोष तो उस—हिजड़े ...स्वामीका है कि उसने अपनी युवती स्त्रीको पैरिस जैसे शहरमें सैर करनेके लिये छोड़ दिया है। तिसपर भी ऐसी स्त्रीके साथ जिससे कि उसकी जरा भी नहीं पटती।

हेलन विस्मयसे बोल उठी— यह क्या। मिस्टर लिरोसे आपकी नहीं पटती? मुझे तो विश्वास नहीं होता।

डेनिस,—अच्छा अभी...तुम विश्वास......कर लो।

हेलन—इसका कारण यही होगा कि वह अच्छी तरह आपको जानते नहीं।

डेनिस—वह जानना...चाहते......भी नहीं......और न मैं ही वैसे मनुष्यसे मित्रता करनेको लालायित हूँ।

लिरोकी आलोचना होते समय कई मिनिट पहलेकी लज्जा-कर घटना स्मरण होनेके कारण हेलनके चेहरेपर फिर लज्जा-का भाव आ गया। झटपट इस भावको छिपानेके लिये वह टेबलके ऊपर झुक पड़ी और सम्हलकर बहुत जल्दीसे

बोल उठीं—इस अभागेकी मूर्खताको देख कर, सचमुच, मुझे भी बड़ा भय और आशंका होती है।

डेनिसने धीरेसे कहा—हेलन, तुम्हारी आशंका बिल्कुल निराधार नहीं है। इस समय सचमुच जीवन-मरणका प्रश्न है।

हेलन शिहर उठी। वह काँपती हुई अस्फुट स्वरमें भुनभुनाने लगी—ओः मुझे मालूम है! मुझे मालूम है।

डेनिसने आश्चर्यसे पूछा—तुम जानती हो?

हेलन—"हां, उन लोगोंको मैंने देखा है। मैं जानती हूं। पुलीस भी ऐसा ही—"

डेनिस—पुलीस! तुम किसके बारेमें कहती हो? पुलिस क्या?

हेलनने मुख उठा कर काँपते हुए कहा—खून......

डेनिस एकाएक पीछे हट गयी। भयसे उसकी घिग्घी बँध गयी। इस समय ऐसा मालूम हुआ मानों कोई प्रेतमूर्ति उसका गला घोंटनेके लिये हाथ फैला रही है।

उन्होंने हिचकिचाते हुए अपनी साधारण भाषण प्रणालीमें कहना शुरू किया—हेलन, मैंने तो पहले ही कह दिया है कि मैं सीधी पेरिससे आ रही हूं। क्या बात है, मुझे समझा कर कहो।

हेलनने अपने स्वरको संयत करके कहा—आपने नहीं सुना है क्या? यहां एक खून हो गया है। और लिरोके ही कमरेमें हुआ है।

डेनिसने अपनी जेबसे एक तारका लिफाफा निकालते

हुए कहा—आज सवेरे सवेरे ही लिरोका भेजा हुआ मुझे यह तार मिला। यद्यपि उन्होंने यह तार अपनी स्त्रीके नाम भेजा था परन्तु मैंने उसकी सखी होनेकी हैसियतसे इसे खोल कर पढ़ा। मैं तुमसे सच कहती हूं, श्रीमती लिरो मेरे यहां सिर्फ दो दिन रही है।

हेलन चौंककर बोल उठी—सिर्फ दो दिन!

डेनिसने दृढ़तासे कहा—हां, दो दिन। आज पूरे एक बरस हुए उससे मेरी न तो भेंट हुई है और न उसका कोई पत्र पाया है। इस लिये इस तारको पाकर मैं तुरत यहाँ दौड़ आयी हूं। क्योंकि तुम्हारे और तुम्हारे पिताके सम्बन्धमें जहांतक मुझे मालूम हुआ है, उससे मैंने सोचा है, कि तुम्हींसे चलकर परामर्श लूं।

हेलनने अस्फुट स्वरमें कहा—आपने एक बरससे उसे नहीं देखा है?

डेनिस—हां, बहन, मैं बिल्कुल सच कहती हूं। अब तुम्हीं बताओ उनसे क्या कहना चाहिये?

यह एक ऐसा प्रश्न था जिसकी मीमांसाके लिये डेनिसको पेरिससे कूच करना पड़ा था। इसलिये कैसे सम्भव था कि हेलन बात कहते उसका जवाब दे देती। वह अवाक होकर एकटक अपनी सखीकी ओर देखने लगी।

आइये पाठक, इन युवतियोंको एक दूसरेके चन्द्रमुखको देखते छोड़कर हम एक बार स्काटलैंड याडमें डनवर साहबसे

भेंट करें। देखें, उन्होंने कहां तक क्या किया है।

डनवरने ब्रायानके यहांसे लौटकर सोर्बीसे मिसेस भरननकी दासीके बारेमें पूछा था। उन्हें सोर्बीसे इतना ही मालूम हुआ था कि दासीसे उसकी मालकिन अपने मनकी कोई बात खोल कर नहीं कहती थी। स्काटलैंड जाते समय, वह अपने साथ कोई बिशेष सामान नहीं ले जाती थी। इन्स्पेक्टर साहब इसी अकिञ्चितकर समाचारको अपनी डायरीमें दर्जकर रहे थे कि एक सिपाहीने दरवाजा खोलकर एक लिफाफा टेबुलपर रख दिया।

उस लिफाफेकी ओर देखकर सोर्बीने भौंहें सिकोड़कर कहा—कमिश्नरकी चिट्ठी है?

डनवरने उस लिफाफेको ले लिया और उसे खोलकर एक छोटीसी चिट्ठी निकाली। उसमें लिखा था:—पैरिसके पुलीस इन्स्पेक्टर एम० गैस्टोन मैक्स, पैलेस मैन्सनके हत्या-व्यापारमें आपके साथ काम करना चाहते हैं। उपरोक्त तारीखसे आप उनसे मिलकर कार्य कर सकते हैं।

डनवरने आश्चर्य्यसे अपने सहयोगीकी ओर देखते हुए कहा—मैक्स!

मैक्सका नाम सुनकर डनवरका आश्चर्य्यान्वित होना बिल्कुल अस्वाभाविक न था; क्योंकि उस समय मैक्सका नाम यूरोपके जासूसी विभागमें गूँज रहा था।

सोर्बीने स्तम्भित होकर कहा—इस मामलेमें फ्रेंच पुलीससे क्या मतलब?

सिपाही जो कि चला गया था, फिर कमरेमें प्रवेश कर बोला—मिस्टर गैस्टोन मैक्स डिटेक्टिव इन्स्पेक्टर डनवरसे भेंट करना चाहते हैं।

दरवाजेपर एक मूर्त्ति नम्रतापूर्वक नमस्कार करती हुई खड़ी हुई। इस मूर्त्तिके आकार प्रकारमें एक ऐसी आकर्षण शक्ति थी कि एक बार देखकर कोई आदमी इन्हें कभी भूल नहीं सकता था। उस सज्जनने विशुद्ध अँगरेज़ी भाषामें कहा—लण्डनके विख्यात जासूससे साक्षातकर मैं अपनेको कृतार्थ समझता हूं।

डनवरने आगे बढ़, हाथ बढ़ाकर नवागत अतिथिसे करमर्दन किया, और सोर्बीसे उनका परिचय कराते हुए कहा—डिटेक्टिव सार्जण्ट सोर्बीसे आपका परिचय कराते हुए मैं अपनेको अधिकतर कृतार्थ समझता हूं।

इस परिचयके उत्तरमें मिस्टर मैक्सने सिर झुकाया।

इस आमायिक शिष्टाचारके बाद नये जासूसने कमरेका दरवाजा बन्द कर दिया। डनवरने पहले निस्तब्धता भंगकरके कहा–मिस्टर मैक्स, आपके सहयोगसे मैं बहुत सन्तुष्ट हुआ हूँ। क्या मैं पूछ सकता हूँ, कि एकाएक लन्दनमें आपका आगमन क्योंकर हुआ है?

मिस्टर मैक्सने सिर हिलाकर गम्भीरतासे कहा—"इसका कारण है—हत्या और राजा साहब!"

बारहवाँ परिच्छेद ।

मिस्टर गैनापोलीस ।



आइये पाठक, जिस अवसरको पुलिसने हाथसे खो दिया है, उसीसे लाभ उठाकर हम लोग हेनरी लिरोके नौकर मिस्टर सोमका पीछा करें ।

सोम बड़ा ही असन्तोषी स्वभावका आदमी था। वह सदा इसी फिक्रमें लगा रहता था, कि किसी उपायसे मैं रातोरात बड़ा आदमी हो जाऊँ—सभी मुझे सम्मानकी दृष्टिसे देखने लगें। उसने पहले सदुपायसे धनोपार्जनकी चेष्टा की परन्तु थोड़े ही दिनोंमें उसे अनुभव हुआ कि इस पथका अवलम्बन करनेपर उन्नति करना तो दूर रहा, मैं दिनों दिन अवनतिके गढ़ेमें गिरता जा रहा हूं। सदुपायसे बड़ा आदमी होना मेरे समान परिमिति योग्यताके आदमीके लिये एकबारगी असम्भव है। अतः दूसरी चेष्टा देखनी चाहिये ।

अपनी महत्वाकांक्षाको कार्य्य रूपमें परिणत करनेके अभिप्रायसे सोमने कितने ही सेठ साहूकारोंकी तावेदारी की, परन्तु कहीं भी अपने योग्य कार्य्य क्षेत्र न पाया। हाँ, उसे नौकरियोंके इस धर-पकड़से कितने ही कार्य विभागोंका ज्ञान अवश्य प्राप्त हो गया ।

सोमने बहुत कुछ रुपये बैंकमें जमाकर लिये थे परन्तु वे उसकी आकांक्षाकी तुलनामें बहुत ही तुच्छ थे। अतः उसने एक काम जुटानेवाली एजेंसीकी उम्मीदवारीमें नाम लिखा दिया। नाम दर्ज होनेके कुछ ही दिन बाद सोमको अपने एजेण्टका पत्र मिला। उसमें उस एजेण्टने उसे गैनापोलीस नामक एक सज्जनके यहाँ जानेका परामर्श दिया था। सोम तुरत उठ खड़ा हुआ और गैनापोलीसकी खोजमें चला।

निर्दिष्ट पतेपर मिस्टर गैनापोलीससे सोमकी भेंट हुई। वह महाशय कदके ठिगने परन्तु बुद्धिके तीक्ष्ण, शौकके पूरे और रोबदाबके आदमी थे। उन्होंने सोमसे बड़ी आव-भगतसे भेंट की, मानों वह उनका बरसोंका परिचित हो। कुछ देरतक शिष्टाचार और आदर-आप्यायन होने बाद कामकी बात छिड़ी। गैनापोलीसने अपनी भविष्यत् कार्य्य-प्रणालीके विवरण, अपने उद्देश्यकी महानता और भावी उन्नतिकी आशाका एक ऐसा खाका खींचा कि सोमकी आँखें खुशीके मारे उज्ज्वल हो गयीं।

अन्तमें उन्होंने कहा—“मिस्टर सोम! इतने दिनके बाद मैंने अपने पसंदका आदमी पाया। तुम विश्वास रखो, कि यदि तुम मेरे यहां बरस दिन भी रहे तो मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा। लोग कहते हैं कि “व्यवसाये बसते लक्ष्मी” सो बिल्कुल ठीक है। हम लोगोंने भी एक नये ढंगका व्यवसाय खोल रखा है। खैर, पीछे तुम्हें सब मालूम होगा। मैं तुम्हें एक अच्छा काम देनेको तैयार हूं; परन्तु तुम्हें कई एक शर्त्तें माननी होगीं।

फिलहाल तुम्हें औपन्यासिक हेनरी लिरोके परिवारमें नौकरी करनी होगी। काम बहुत थोड़ा रहेगा। तुम्हें दरवाजेपर पहरा देना होगा, चिट्ठी-पत्री ले आना। ले जाना होगा और मालिकके छोटे बड़े हुक्म बजाने होंगे। अभी तुम्हारा वेतन ३० डालर रखा जाता है, फिर काम देखकर बढ़ा दिया जायगा।

बेतनके परिमाणको सुनकर सोमने ऐसा मुँह बनाया मानो कोई उसकी धरोहर लूट रहा हो।

गैनापोलीसने सोमकी पीठ ठोककर कहा—देखो, मैं अभी तुम्हें वेतन अधिक दिलवा देता परन्तु लिरो साहब अधिकका नौकर नहीं रखना चाहते। इसलिये तुम्हें इतनेपर ही राजी हो जाना चाहिये। तुम्हें चिन्ता क्या है? मैं तुम्हारी आमदनीका रास्ता निकाल दूंगा। वह मैं आगे कहता हूँ।

आमदनीका नाम सुनते ही सोमकी आंखें चमक उठीं। वह उत्सुक होकर सुनने लगा।

गैनापोलीसने फिर कहा—वेतनके अलावे मैं तुम्हें अपनी गांठसे एक पौंड महीनेमें दिया करूंगा। परन्तु इसके लिये तुम्हें मेरा एक काम कर देना होगा। तुम्हारी मालकिन श्रीमती लिरो अक्सर पैरिस जाया करती हैं। उनके पास जो कोई पत्र भेजनेको हो, पैरिससे जो कोई पत्र लिरोके पास आवे, उन सबको तुम मेरे हाथमें दे दिया करना। सभी चिट्ठी-पत्री तुम्हारे ही हाथमें पड़ेगी। जब कभी तुम ऐसा पत्र पाना तो मुझे टेलीफोनसे खबर देना मैं विक्टोरिया स्ट्रीटकी मोड़पर

जाकर खड़ा होऊंगा, तुम वहीं पत्र लाकर मुझे दे देना।

सोमने अच्छी तरहसे समझ लिया कि यह काम मेरे अनुभव और उद्देश्यके अनुकूल है। अतःउसने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

गैनापोलीस फिर कहने लगे—"अपनी यात्रा करनेके पहले श्रीमती लिरो तुम्हें पारसल लगानेको अपना सामान दिया करेंगी। वह भी मेरे ही हाथ पड़ना चाहिये। और यह भी तुम जान रखो, कि श्रीमती लिरो हम लोगोंसे मिली रहेंगी। तुम्हें उनसे कोई डर नहीं पर खबरदार, उनके सिवा दूसरा कोई भी तुम्हारे कामपर सन्देह न करने पावे।

सोमने कहा—मैं सब समझ गया। आपको अधिक कुछ कहनेकी जरूरत नहीं।

गैनापोलीस—अच्छा तो तुम आज ही श्रीमान् लिरोके पास जाओ। वह तुम्हें नौकर रख लेंगे। तुम कलसे काम आरम्भ करो। सोमवारको मैं तुमसे मिलूंगा और आगे जो सलाह करनी होगी की जायगी।

सोम—यदि आपसे भेंट करना हो तो कहाँ मिलूंगा?

गैनापोलीस—१८६४२ पूर्वी दरवाजाके पतेसे तुम टेली-फोन करना और राजा साहबको बुलाना। नहीं, लिखनेकी कोई जरूरत नहीं, इसे याद कर लो। मैं टेलीफोनके पास आ जाऊंगा। और कहाँ मिलना होगा सो ठीक कर लूंगा।

गैनापोलीससे बिदा होकर सोम श्रीमती लिरोसे मिलनेके लिये पैलेस मैन्सनमें जा पहुंचा।

एक दुबली पतली औरतने सोमका स्वागत किया; जिसको अनुमानसे सोमने समझ लिया कि यही श्रीमती लिरो हैं।

श्रीमती लिरोको अपरूप सुन्दरी कहनेमें कोई आपत्ति न थी। यदि उनका मुख पीला न पड़ गया होता, बड़ी बड़ी काली काली आँखें धस न गयी होतीं और कृष्ण विकचावली आलुलायित न हो गयी होती। सारांश यह कि श्रीमती लिरोको प्रकृतिने सुन्दर बनाकर भेजा था परन्तु संसारके दुःख-ताप और अत्याचारके कारण उनकी कान्ति अकाल हीमें नष्ट हो गयी थी और उसपर काले पीले धब्बे लग गये थे।

सोमको मानव प्रकृतिका जहांतक अनुभव था, उससे उसने थोड़ी ही देरके वार्त्तालापसे मालूम कर लिया कि वह इन स्वामी-स्त्रीपर शीघ्र ही अपना सिक्का जमा सकेगा, क्योंकि श्रीमतीकी तो कोई बात ही नहीं, वह तो अपने हाथमें हैं ही, श्रीमान भी पूरे असावधान और भोले-भाले हैं। ऐसा न होता तो क्या श्रीमतीको इस प्रकार आनन्द करनेका मौका मिलता।



तेरहवां परिच्छेद

पैरिसके पत्र



आज एक महीना हुआ सोम बड़े उत्साहसे हेनरी लिरोके परिवारमें काम कर रहा है। इस बीचमें उसने यह जाननेकी बहुत चेष्टा की है कि श्रीमती लिरो पहले भी पैरिस जाया करती थीं या नहीं परन्तु उसे कुछ भी पता नहीं लगा है। धाई बावर्चीसे पूछनेपर इतना ही मालूम हुआ है, कि लिरो साहबने थोड़े ही दिन हुए पैरिससे आकर इस मकानको किरायेपर लिया हैं। तभीसे ये नौकर चाकर भरती हुए हैं। लिरोको यह भी मालूम हुआ कि थोड़े ही दिनोंमें श्रीमती लिरो फिर पैरिस लौट जानेवाली हैं। परन्तु अभी दिन निश्चित नहीं हुआ है।

धाईने सोमके कानमें कह दिया कि—"मालिकको यह छोकड़ी (श्रीमती लिरो) क्या कुछ चीज समझती है? उसने तो केवल रुपयेकी लालचसे इनसे व्याह किया है। मैं बाजी रखकर कह सकती हूं कि पहले वह पैरिसमें जरूर किसी न किसीसे प्रेम करती थी। उसीके लिये आज कल तड़प तड़पकर सूखती जा रही है। (इन छे महीने) जबसे (धाई बीबीका पदार्पण हुआ है) इस छोकड़ीका चेहरा इतना बदल गया है, कि

पहलेका कोई परिचित आदमी हठात् इसे पहचान ही नहीं सकता ! मुझे एक और शक होता है। शायद चुपके चुपके यह कोई नशा करती है।"

हेनरी लिरो थोड़े ही दिनोंमें अपने नौकरोंकी दृष्टिसे गिर गये ? सोम तो उन्हें पुस्तकोंका कीड़ा और बेहाथ-पाँवका लूला आदमी समझने लगा। उसने सोचा—मालकिनका दोष ही क्या है ? पुरुषकी अयोग्यता और असावधानीके कारण एक युवतीको स्वच्छन्दता पूर्वक बिचरनेकी सुविधा मिलती है तो वह क्यों न उससे लाभ उठावे। इस काममें उसे सहायता देना—अभागिनीको इस मूर्खके पिण्डसे छुड़ाना इस दासका एक पुण्य कर्म है! इस पुण्य कर्मके अवसरके लिये सोम चुपचाप प्रतीक्षा करने लगा, परन्तु सप्ताहपर सप्ताह बीतने लगे श्रीमतीकी यात्राका कोई निश्चय ही नहीं हुआ। घरपर कोई ऐसा अवसर भी नहीं मिलता था कि वह श्रीमतीजीसे इस बारेमें कुछ पूछता। एक दिन दुस्साहस करके मुँह खोला भी था परन्तु उन्होंने घुड़ककर—आंखके इशारेसे चुप कर दिया।

दिनभर तो श्रीमतीजी अपने घरसे बाहर ही नहीं निकलती थीं सन्ध्या समय सान्ध्य-भ्रमणके लिये बाहर निकलती थीं। श्रीमान को कभी भी सेवामें हाजिर रहनेका सौभाग्य नहीं प्राप्त होता था। अधिक रात गये घर लौटने पर कुछ कैफियत भी लेनेका साहस और समय नहीं मिलता था।

एक दिन नित्य नियमानुसार जब श्रीमती जी सान्ध्य-भ्रमणको तैयार हुईं; तो इधर उधर देखकर सोमने उनके पास जाकर पूछा—"कब तक जाना होगा ?

श्रीमती समझ गयीं। सिर उठा कर मुस्कुराती हुई बोलीं—"हां, सोम, अब अधिक देर नहीं है। परन्तु फिर तुम कभी इसका नाम भी न लेना।" इतना कहकर वह चली गयीं।

इतनेसे सोमको मालूम तो हो गया कि गैनापोलीस धोखा नहीं देता था परन्तु इससे भी उसको पूरा सन्तोष नहीं हुआ। एक दिन जब मिस्टर लिरो घरसे बाहर चले गये थे और नौकर चाकर भी जब इधर उधर चले गये थे तब सोम लिरोके पाठागारमें चुपचाप गया और टेलीफोनके बैलको घुमाकर उसने यन्त्र कानमें लगाया। थोड़ी देरमें तार आफिससे उत्तर आने पर उसने १८६४२ का नं० दिया। उत्तरमें एक सानुनासिक आवाज सुन पड़ी—आप कौन हैं ?

सोम—राजा साहबसे भेंट करना चाहता हूं।

सोमको मालूम हुआ कि उत्तर देनेवाले आदमीको आश्चर्य्य हुआ है। कुछ देरके बाद आवाज आयी—क्या नाम बताया ?

"सोम"

"पकड़े रहो"

थोड़ी देरमें दूसरी आवाज आयी—"हैलो सोम"

"हां,—मैं अभी क्या मि० गैनापोलीससे बातें कर रहा हूं ?

"हां,—सोम, क्या बात है ? कुशल तो है ?"

"सब कुशल है; परन्तु पूछता हूँ कब तक मुझे इस तरह दिन बिताना होगा ?

"वेतनकी बात कहते हो ? अच्छा, कल तुम्हें एक महीनेका वेतन मेरी ओरसे मिल जायगा और वहां का वेतन तो तुम अपने मालिकसे पाते ही होगे ? कल मैं विक्टोरिया स्ट्रीटके मोड़पर मिलूंगा।

सोम—अच्छा, यही पूछना था।

गैनापोलीस—हां, एक बात और है, मैं अभी तुम्हें टेलीफोन करने जाता था। वहां कोई हैं ?

सोमने कुछ भयभीत होकर कहा—यहाँ तो कोई नहीं है। परन्तु जब आप कल मिलते ही हैं तो कल ही बातें होंगी।

गैनापोलीस—अच्छा यही सही। नमस्कार।

सोम—नमस्कार।

सोम एक लम्बी सांस लेकर धीरे २ अपने कमरेमें जाकर अपने काममें लगा।

सोमका आन्तरिक विचार चाहे कैसा ही हो; अपने बाहरी व्यवहार और आचरणसे लिरो साहबका वह एकान्त विश्वास-भाजन हो गया था। कई एक अवसरोंपर उसने अपनी साधुताका परिचय देकर उनके ऊपर अपने विश्वासका सिक्का जमा लिया था।

सोमकी साधुतासे सन्तुष्ट होकर लिरोने उसीके ऊपर

बैंकका काम छोड़ दिया था। जब कभी कोई चेक भुनाना या रुपये जमा करना होता था तो सोम पर ही यह भार पड़ता था। बैंकसे मालिकका सम्बन्ध नाममात्रका था, वह कभी वहां आते जाते न थे। बैंकके कर्मचारी सम्भवतः दो ही अवसरोंपर उनके दर्शन कर पाये होंगे। एक बार जब कि बैंकसे कारबार आरम्भ हुआ। दूसरी बार जब कि सोमका परिचय कराया गया।

निर्दिष्ट समयपर गैनापोलीससे मुलाकात करनेके लिये सोम विक्टोरिया स्ट्रीटकी ओर चला। वहाँ पहुँचकर एक सीटीकी आवाज देते ही गैनापोलीस सामने आ खड़े हुए!

गैनापोलीसने पार्कमें जाकर बात चीत करनेका प्रस्ताव किया। सोमने डरते हुए एक बार स्काट लैंडयार्डका संकेत करके कहा—आज कल रातके समय शैतानोंकी पार्कपर कड़ी नजर रहती है। वह रोज एक दो बार इधर घूम जाया करते हैं।

गैनापोलीसने उसे साहस देते हुए कहा—नहीं नहीं, चलो अभी कोई उधर नहीं आयगा। और यदि कोई आये भी तो हम लोग क्या चोरी करने जा रहे हैं?

इसके बाद अधिक आपत्ति न करके दोनों बागीचेमें जाकर एक बेंचपर बैठ गये।

गैनापोलीसने पहले एक महीनेका वेतन चुकाकर रसीद लिखा ली। इसके बाद काम की बात छिड़ी। गैनापोलीसन

सोमकी ओर सरक कर कहा—कल लिरो तुम्हें भुनानेके लिये एक चेक देंगे !

सोम सिर हिलाकर उत्सुकतासे सुनने लगा।

गैनापोलिस कहने लगे—श्रीमती लिरो भी तुम्हारे साथ जायंगी। तुम्हारे मालिक चाहते हैं; कि चेकका रुपया पैरिसमें ही तुम्हारी मालकिनको मिले। इसलिये मैनेजरके सामने अपना हस्ताक्षरकर देनेसे तुम्हारी मालकिनको एक आर्डर मिल जायगा, जिसके दिखानेसे वह पैरिसके बैंकसे रुपये पा सकेंगी। तुमने मेरी बात समझी न?

सोमने अपनी समझदारीका परिचय देते हुए जोरसे सिर हिलाया।

गैनापोलीसने आगे झुककर और भी धीरेसे कहा—अब सुनो, श्रीमती लिरोको न तो पैरिसके ल्युनिस बैंकका कोई कर्मचारी पहचानता है, और न लण्डनके सुबरबन बैंकका ही कोई पहचानता है। इस विषयमें हमने बड़ी सावधानीसे काम लिया है। इसीलिये चालाकीसे बैंकका कारबार तुम्हारे हाथमें दिलाया गया है। खैर तुम अपने गाड़ीवानसे आगेसे कह रखना कि वह गाड़ी बैंकके सदर फाटकपर न खड़ीकर बगलके फाटक के सामने खड़ी करे। उस दरवाजेके सामने ही श्रीमती लिरोकी शक्ल सूरतकी, ठीक वैसे ही कपड़े लत्ते पहने हुई, एक औरत मिलेगी। गाड़ीसे उतरकर श्रीमती लिरो सीधे दक्षिणकी ओर चली जायंगी। तुम खड़ी हुई औरत को बुलाकर बैंकके

भीतर ले जाना और उसीसे मीरा लिरोका दस्तखत करवाना।"

एकबार गैनापोलीसने सोमके चेहरेकी ओर देखा। वह इस समय डरके मारे थर थर काँप रहा था। उसकी घबड़ाहट देख कर गैनापोलीसने कहा—नहीं, नहीं, इसमें कुछ भी डरकी बात नहीं है। उस औरतका हस्ताक्षर तुम्हारी मालकिनके हस्ताक्षरसे बिल्कुल मिलता जुलता होगा। सुबरबन बैंकके कर्मचारीको कोई शक न होगा, क्योंकि तुम लोग रुपये जमा करने जाते हो, उतारने तो जाते नहीं। फिर उसे क्या गरज पड़ी है कि झूठ ही झमेला करने जाय परन्तु पेरिसके बैंकमें यह बात नहीं रहेगी। वह तो जालसाली पकड़नेके लिये तैयार रहेगा। पर वहां भी रुपये निकालते समय वही औरत हस्ताक्षर करेगी इससे जाल पकड़ा जानेका कोई रास्ता ही न रहेगा। पीछे यदि सुबरबन बैंकको कुछ शक भी होगा तो वह कुछ नहीं कर सकता।

सोम बोल उठा—अब मैं समझ गया। मालिक यदि अपना रुपया पानीमें फेंक दे तो कौन मना कर सकता है। मालकिन ही जब······

गैनापोलीस—ठीक यही बात है। अच्छा, आगे सुनो। जब बैंकका सब काम हो चुके तो तुम उस औरतको लेकर उसी बगलके दरवाजेपर लौट आना। वह औरत किसी ओर निकल जायगी और उसी समय तुम्हारी मालकिन बैंकसे

निकल कर गाड़ीमें बैठ जायँगी। तब तुम गाड़ी हँकवा देना। सब समझे तो?

सोम—हां, अब कुछ कहना न होगा।

परन्तु घर लौटकर आध घंटेके बाद ही सोमको सब प्रबन्ध गोलमाल हो गया। वह बड़ी फिक्रमें पड़ गया कि कौन काम पहले करना चाहिये और कौन काम पीछे। इसी उधेड़ बुनमें पड़ा हुआ था कि लिरोने उसके कमरेमें आकर कहा—सोम तुम्हें एक बार बैंक जाना होगा। मैं स्वयं जाता परन्तु किसी काममें व्यस्त रहनेके कारण नहीं जा सकता हूं। तुम्हारी मालकिन पैरिस जाना चाहती हैं इस लिये उनके खर्चके लिये मैं सुबरबन बैंकके नाम एक चेक काट देता हूं। तुम उनके साथ बैंक जाकर चेक को जमा करवा आओ, जिससे ठीक समय पर रुपये वहां मिल सकें। मैं मैनेजरको एक पत्र भी लिख देता हूं। सब तैयार है। तुम अभी गाड़ी जुतवा कर उनके साथ चले जाओ।

रुपयेकी संख्या जाननेकी उत्सुकतासे सोम बड़ा व्याकुल हो रहा था परन्तु किसीसे पूछनेका उसको साहस नहीं हुआ। इस लिये वाध्य होकर उसे अपना कौतूहल रोक रखना पड़ा।

थोड़ी देरमें श्रीमती लिरो गाड़ीमें आकर बैठ गयीं और गाड़ी चल पड़ी। निर्दिष्ट स्थानपर दूसरी औरतसे भेंट हुई। इसके बंद गैनापोलीसने जैसे जैसे कहा था, वैसे ही सभी काम पूराकर श्रीमती लिरोके साथ सोम घर लौट आया।

इसके कुछ ही दिन बाद सोमको पता लगा कि श्रीमती

लिरोकी पैरिस-यात्राका दिन निश्चित हो गया है

एक दिन श्रीमती लिरोने उसे बुलाकर एक पत्र देते हुए अपने स्वाभाविक स्वप्नाविष्ट भावसे कहा—राजा साहबके पास।

सोमने लक्ष्य करके देखा था कि उस दिन उनका स्वास्थ्य पहलेसे भी खराब हो गया है।

आखिर यात्राका दिन आ गया। श्रीमती लिरोने अपना आवश्यक सामान एक बड़े बैगमें भरकर पारसल करनेको सोमके हाथ दे दिया, सोम उधर उस सामानको अपने सरदारके यहां ले चला और मालकिन इधर गाड़ीपर चढ़कर स्टेशन चली गयीं। उनके साथ कोई भी नहीं गया।

श्रीमतीके जाने बाद एक सप्ताहके भीतर लिरो साहबने तीन पत्र लिखे और वे गैनापोलीसके हाथमें पहुंचे। सभी पत्रों पर यही पता देखनेमें आता था:—

मिस डेनिस रिलैंड
पटेलियर ४, रो० डू० कक डी, आर,
माउंट मार्टार
पैरिस

इन दिनों टेलीफोन आफिसमें १८६४२ पूर्वी दरवाजेकी अधिक मांग थी, और विक्टोरिया स्ट्रीटकी मोड़पर दिनमें आठवार सोम और गैनापोलीसमें साँय साँय फिस फिस होती थी।

इस प्रकार दोहरी नौकरी करते करते मिस्टर सोमने लिरो

साहबके यहां एक साल बिताया। इसी बीचमें यदि वह शोक पूर्ण दुर्घटना न हो जाती तो सम्भव था कि मिस्टर सोमके और भी कितने साल बड़े मौजसे कट जाते।

सोमने कौतूहलवश टेलीफोन गाइडिंगको आदिसे अन्ततक छान डाला परन्तु उस पुस्तकमें १८६४२ नं० का कहीं पता ही न लगा। राजा साहब का पूरा पता लगानेकी उसने अनेकों चेष्टायें कीं, परन्तु कुछ भी सफलता न हुई। गैनापोलीससे पूछनेपर वह भी कहते थे कि मैं भी तुम्हारे ही समान उनका एक क्षुद्र कर्मचारीमात्र हूं। वास्तवमें आज कल सोम रहस्य-पूर्ण राजा साहब और गैनापोलीसका भय करने लगा था। उसके डरका एक कारण यह था कि इस समय उसने बैंकमें बहुतसे रुपये जमा कर लिये थे। वह सोचा करता था कि ऐसा न हो कि राजा साहब मुझपर भी हाथ साफ कर दें।

निदान भीषण रजनीकी वह अभूतपूर्व घटना आयी जिसने उसको रोमाञ्चित और स्तम्भित कर दिया। सन्ध्या समय १८६४२ नं० के पते पर टेलीफोन करके सोमने गैनापोलीसको विक्टोरिया स्ट्रीट के मोड़पर बुलाया था। उसने कह दिया था कि श्रीमती लिरोके कुछ पत्र देने हैं।

निर्दिष्ट स्थानपर पहुंच कर उसने देखा कि गैनापोलिस नदारत! यह पहला ही अवसर था, कि गैनापोलीसने नियम भंग किया।

करीब बीस मिनिटतक अपने सरदारकी अपेक्षा कर वह धीरे धीरे घरकी ओर लौटा। इसी समय रास्तेमें वेस्ट मिनि-स्टरकी ओरसे घबड़ाये हुए गैनापोलिसको आते देखकर उनसे मिलनेके लिये वह आगे बढ़ा परन्तु क्या आश्चर्य्य! गैनापोलिसने इस तरह घृणासे एक ओर हट गये मानों वह उसे जानते ही न हों। जब वह उसके पाससे होकर चला तो सोमके कानमें सिसकारीकी तरह यह आवाज आयी—

"मेरे पीछे पीछे विक्टोरिया स्ट्रीटके पोस्ट आफिसतक आओ। वहां लेटर बक्समें चिट्ठी छोड़नेका बहाना कर अपने हाथकी चिट्ठी मेरे हाथमें थमा दो।"

इतना सुनते ही सोमने फिर कर देखा—उनका कहीं पता ही नहीं था।

आजकी तमाम घटनाओंसे सोमका सिर चक्कर खा रहा था। वह दौड़ा हुआ डाक घर गया। वहां जाते ही उसने देखा कि लेटर बक्सके सामने खड़े होकर गैनापोलिस जेबसे बहुतसी चिट्ठियाँ निकाल रहे हैं। उसी समय सोमने भी वहाँ जाकर चिट्ठी गैनापोलीसके हाथमें थमा दी।

गैनापोलीसने एक बार उसकी ओर तिरछी निगाहसे देखा और धीरेसे कहा—"घर जाओ।—सावधान!"

चौदहवां परिच्छेद

१८६४२ पूर्वी दरवाजा ।


सोम जब डाकघरसे लौटा तो उसके मनमें तरह तरहकी आशंकायें उठ रही थीं। उसने गैना-पोलीसको विक्टोरिया स्ट्रीटकी ओर दौड़ते हुए देखा था। अतः उसे आशंका हुई, कि जरूर ही कुछ न कुछ दालमें काला है।

सोमने जबसे होश सम्हाला था तबसे ही उसके मनमें पुलीसके प्रति एक हार्दिक घृणा और द्वेष था जो अन्ततक बना हुआ था। सोमका सिद्धान्त था कि—जासूस और शैतानमें कुछ भी अन्तर नहीं है। उसी पुलीस और जासूसको सशरीर अपने घरमें देख कर वह सन्न हो गया।

सिर्फ एक बार—एक दौड़ती हुई नजरसे सोमने घरके भीतर देखा ही था कि जासूसने उसको पुकारा। मालूम हुआ कि दूरातिदूर लोकान्तरसे यमराज उसे पुकार रहा है। इसके बाद यमराजकी आज्ञा पाते ही वह अपने कमरेमें चला गया। इस समय उसकी छातीकी धड़कन बेतरह बढ़ गयी थी अतः वह एक प्रकारसे बेहोशीकी दशामें अपने बिछौनेपर जाकर गिर पड़ा!

आज फैसला हो गया—इतने दिनोंसे सोमके मनमें जो

पाप-पुण्यका एक द्वन्द्व चल रहा था, उसका आज फैसला हो गया। इतने दिनके बाद उसे मालूम हुआ कि गैनापोलीससे साक्षात् करनेके समय उसके भीतर—उसके अन्तस्तलमें—जो एक आवाज उठी थी और जो समय समयपर पाप-कर्मसे निवृत्त होनेके लिये उसे सावधान किया करती थी, वह एकबारगी कायरतापूर्ण निस्सार कल्पना न थी बल्कि उसमें संसारकी सभी विद्वत्ता और बुद्धिमत्ता भरी हुई थी।

परन्तु अब क्या! अब तो जो होना था, सो हो गया। उसने मन ही मन कहा-अच्छा, यह किस स्त्रीकी लाश है, मैंने तो अच्छी तरह देखा भी नहीं है। वह श्रीमती हीराकी तरह मालूम हुई। बेशक वही हैं। हा ईश्वर! यह क्या हुआ? सम्भवतः साहबने अपनी औरतको मार डाला है। शायद उनके विरुद्ध साहबको कोई प्रमाण मिल गया है! हा! भगवन! क्या मेरा भण्डा भी फूट जायगा? मेरे गलेपर भी छूरी चल जायगी?

परन्तु वास्तवमें सोमकी बुद्धि इतनी मोटी नहीं थी कि आज की सम्भाविक घटनाका ध्यान उसे पहले कभी न आया हो। बहुत दिनोंसे इस आफतसे बचनेका प्रबन्ध उसने कर लिया था। इस समय जो वह चुपचाप पड़ा था, उसका यह कारण नहीं था, कि वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया था, बल्कि वह अपनी उत्तेजनाको दमन करनेकी चेष्टा कर रहा था।

आपद् विपद्में घरसे भाग निकलनेके लिये सोमने अपनी खिड़कीके नीचे एक सीढ़ी लगा रखी थी। आज उसने घरका

दरवाजा बन्दकर चटपट अपना आवश्यक सामान बाँध लिया और उसे एक रस्सीसे पहले नीचे लटकाकर आप उतर गया और गठरी-मोटरी लेकर रफू-चक्कर हुआ।

सामनेकी तरफ बड़े रास्तेसे न जाकर पीछेकी ओर एक सँकरी गलीसे होता हुआ वह चट पोलास्ट्रीटमें जा पहुँचा। इस प्रकार पुलीसको धता बताकर वह निकल भागा।

निकल तो भागा परन्तु अब इतनी रातको जाय कहाँ? यही प्रश्न अब दुसाध्य हो गया। अब उसके मनमें बार बार यही प्रश्न उठने लगा—अब जाऊँ कहाँ?

बहुत देरके बाद वह बोल उठा—"अच्छा, कमसे कम इस शहरमें एक आदमी ऐसा है जिसके जीवनसूत्रसे मेरा जीवन-सूत्र दृढ़ रूपसे बँधा है। इससे मेरे विषयकी उसे विशेष चिन्ता होगी। क्यों न मैं टेलीफोनकर उससे सलाह लूं? पर इतनी रातको टेलीफोन कहां मिलेगा? रास्तेके टेलीफोन को व्यवहार करना मेरे लिये निरापद नहीं।"

बहुत सोच-विचारके बाद वह दौड़ा हुआ मोटरडिपोमें गया और बहुत कुछ कहकर टेलीफोन करनेका उसने हुक्म ले लिया। घंटी दबाकर टेलीफोनसे उसने १८६४२ नं० मांगा।

करीब एक सेकण्डके सन्नाटेके बाद सानुनासिक आवाज कानमें पड़ी—"हेलो, आप कौन हैं?"

"सोम। राजा साहबको चाहता हूँ।"

सोमने अपनी आवाज धीमीकर नाम बताया था इससे

उसे शक हुआ कि उस आदमीने बात सुनी है या नहीं। इतना तो सोमको मालूम हो गया था कि उत्तर देनेवाला वही आदमी है जो हर बार दिया करता है!

अबकी बार फ्रांसीसीकी आवाज आयी—"सोम हो?"

"जी, हां।"

"कहां हो?"

"मोटर-डिपोमें।"

"क्या वे तुम्हारा पीछा कर रहे हैं।"

"ऐसा तो नहीं मालूम होता है, मुझे क्या करना होगा? कहाँ जाना होगा?

"ग्लोबरोड पकड़कर सीधे स्ट्रेट फोर्ड ब्रिजपर चले जाओ। परन्तु सावधान, देखना कोई तुम्हारा पीछा न करता हो। ब्रिजके निकटसे जो रास्ता स्टेशनको चला गया है, उसीसे होकर तुम जल्दी स्टेशनके पास पहुँचो! यदि ट्राम मिल जाय तो चढ़ लेना, नहीं, तो पैदल ही जाना! परन्तु खबरदार घोड़ा गाड़ी या टेक्सी गाड़ीपर कभी न चढ़ना। स्टेशनकी उत्तर ओर जाकर खड़े होकर देख लेना, कि कोई तुम्हारा पीछा करता है या नहीं। फिर पीछे लौट पड़ना और स्टेशनके दक्खिन ओर आकर धीरेसे सीटी बजाना। समझे न? अब जाओ। देर न करो।"

टेलीफोनको रखकर सोमने एक आरामकी साँस ली और जमादार साहबको उनकी मेहरबानीके के लिये धन्यवाद देकर वहांसे चल पड़ा।

सोमके लिये यह सौभाग्यकी बात थी कि ग्लोब रोडमें उतरते ही उसे एक ट्रामगाड़ी मिल गयी और वह अपने बैग लेकर एक सज्जनकी तरह पहले दरजेकी गाड़ीमें जा बैठा।

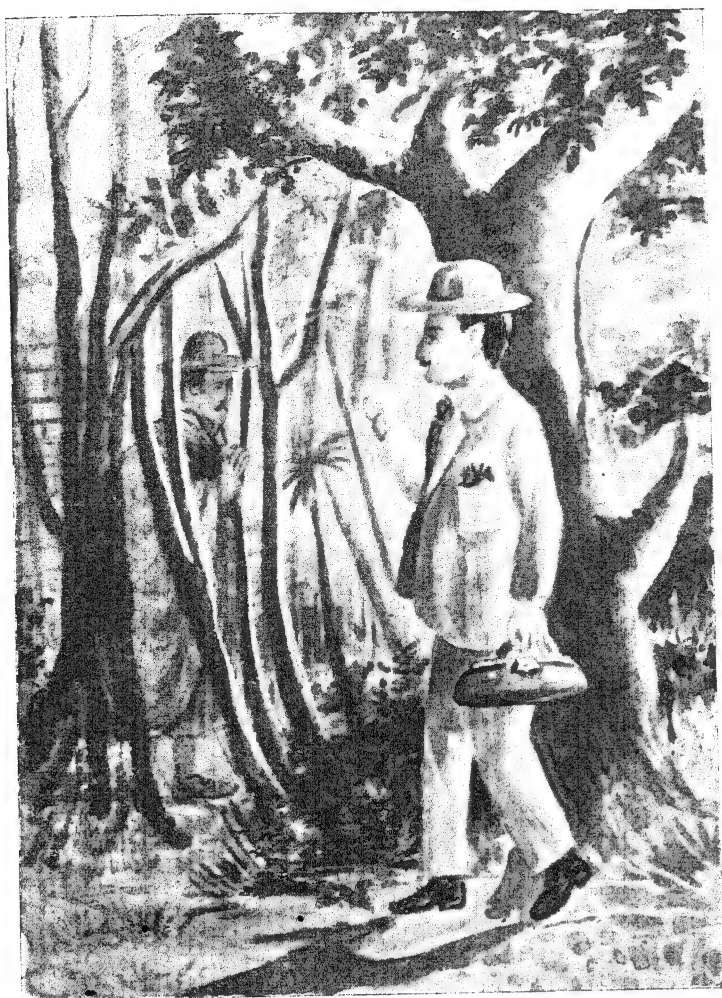
अपने सरदारका आश्वासन पाकर सोम एक प्रकारसे निश्चिन्त हुआ था। आध घंटे पहले पुलीसके भयसे जो आदमी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहा था, वही इस समय कल्पना पटपर भविष्य जीवनके कितने ही उज्वल चित्र खींचने लगा। वह सोच रहा था—अब मुझे कौन पाता है! जितने रुपये मैंने इकट्ठा किये हैं, उनसे मैं स्वच्छन्दतापूर्वक अपना एक स्वतन्त्र कारबार खोल सकता हूँ! अब मुझे लिरो साहब की चिट्ठी ढोनेसे क्या मतलब! पर हां, एक बात है। अभी गैनापोलीससे मुझे मिलकर रहना चाहिये। उनसे उपकारके सिवा मेरा अपकार कुछ भी नहीं। पर मुझे उस पर्दा-नशीन राजा साहबका बड़ा भय है। उसने छिपे छिपे ऐसा तिलिस्म रच रखा है कि कोई उसका पता ही नहीं पाता। गैनापोलीसके समान उसका विश्वासी कर्मचारी और कौन होगा परन्तु वह भी उसका कोई परिचय नहीं जानता! हा भगवन्! इस इन्द्रजालिकसे मुझे बचाना!

इस प्रकार चिन्ता सागरमें गोते लगाता हुआ एक प्रकार से बाह्य ज्ञानशून्य होकर वह ट्राम गाड़ीमें बैठ रहा। गाड़ी जब पूलके सामने जाकर हिल-डोलकर खड़ी हुई, तब वह चौंककर

उठ खड़ा हुआ और गाड़ीसे उतर पड़ा। यहां कोई गाड़ी मिलनेकी आशा न देखकर वह पैदल ही आगे बढ़ा। जब वह अपने गन्तव्य स्थानपर पहुँचा तब उसने देखा कि वहां न कोई मकान है न दूकान। आस-पास कोई बत्ती भी नहीं जलती—चारों ओर भयंकर निर्जनता और घोर अन्धकारका अखण्ड साम्राज्य है। आधी रातको उस जन-मानव-शून्य स्थानमें आकर वास्तवमें सोमको बड़ा भय हुआ। उसने धीरेसे सीटी बजायी। सीटीकी आवाज हवाकी "सायँ सायँ" में विलीन हो गयी। कुछ ही देर बाद हवाकी रूखसे सोमके कानमें एक आवाज आयी। परन्तु वह निर्णय न कर सका कि वह शब्द 'सायँ सायँ' या "सोम!" "सोम!" था। डरके मारे वह एक वृक्षसे सटकर खड़ा हो गया। फिर वही आवाज! परन्तु इस बार उस आवाजकी ओर लक्ष्य करके उसने देखा कि एक छायामूर्त्ति एक खण्डहरके पास खड़ी होकर हाथ हिलाती हुई उसे बुला रही है।

भीषण अन्धकारको चीरता हुआ, उस छायामूर्त्तिको लक्ष्य करके सोम आगे बढ़ा। इस समय उसे कितनी ही रुकावटें पड़ीं—कितनी ही लुड़कचियाँ खानी पड़ीं परन्तु उसकी दृष्टि छायामूर्त्तिसे न हटी। पास पहुँचनेपर गैनापोलीसके परिचित स्वरने उसके मनको आश्वास्त कर दिया। सोमने आरामकी एक साँस ली और दौड़कर अपने सरदारसे लिपट गया।

अनुसरण करनेका संकेतकर गैनापोलीस आगे बढ़े और खण्डहरके भीतरसे होते हुए वह दोतल्ले मकानके दरवाजेपर



एक छायामूर्त्ति एक खण्डहरके पास खड़ी होकर हाथ हिलाती हुई उसे बुला रही है ।

आये। दरवजा खटखटानेपर एक लड़केने आकर किवाड़ खोल दिया। दोनों सीढ़ीसे होकर दोतल्लेपर पहुँचे। एक कमरेमें जाकर गेनापोलिसने बत्ती जलायी और सोमको बुलाकर दरवाजा वन्द कर लिया।

इतनी देरके वाद गूंगेके मुखसे वात निकली—गैनापोलीस बोले—"अब कहो। मालिकके मकानमें तुमने क्या देखा? पोस्ट आफिससे जानेके वाद जो जो देखा, एक एक करके कह जाओ।" सोम भी विह्वल भावसे सारी कथाको क्रमानुसार सुना गया। कहानी समाप्तकर उसने पूछा—अब आप बताइये, वहां क्या हुआ है? मैं क्या करूँ और कहाँ जाऊं?

गैनापोलिस—"तुम्हें क्या करना होगा यह प्रश्न तो सिर्फ राजा साहवसे ही हल हो सकता है। परन्तु तुम्हें कहाँ जाना होगा, यह प्रश्न अभी हल हो जाता है। इतना मैं कह सकता हूं कि तुम्हें यहीं रहना होगा।"

सोम डरकर बोल उठा—यहीं, इसी खण्डहरमें?

गैना—इसी खण्डहरमें नहीं परन्तु इसी शहरमें। नदीके किनारे लाइम हाउस नामक कारखानेको तो तुमने देखा होगा? उसमें हमारे कुछ ऐसे गुप्त स्थान हैं, जिनमें कोई भी आदमी निश्चिन्त होकर छिप सकता है। वहाँसे किसीको ढूंढ़ निकालना आदमीका काम नहीं है।

सोमने गिड़गिड़ाकर कहा—कृपया मुझे यह वता दीजिये कि मेरी मालकिनको क्या हुआ है?

गैनापोलिसने आश्चर्य्यसे देखकर कहा—तुम्हारी मालकिन को!

सोम—हाँ, हाँ, श्रीमती लिरोको।

गैना०—श्रीमती लिरोको क्या हुआ है?

सोम—क्या वह मरी नहीं हैं?

गैना०—तुम क्या पागल हुए हो? लिरोके कमरेमें तुमने जो लाश देखी है वह श्रीमती लिरोकी नहीं है।

सोम—तब किसकी है?

गैनापोलीस—इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं। तुम्हें और मुझे अब यही ध्यानमें रखना चाहिये कि पुलीसकी नजर हमपर न पड़ने पावे। यह घटना बिल्कुल आकस्मिक और अनिच्छित हो गयी है। इस घटनाके हो जानेसे अब तुम्हारा कोई काम नहीं रहा। परन्तु हम तुम्हारी रक्षाका प्रबंध कर देंगे।

इतना कहकर उन्होंने टेलीफोन उठाया और १८६५२ का नम्बर मांगा। फिर पूछा—क्या आप कनसेशनसे बोलते हैं? अच्छा सैय्यदसे अभी गाड़ी भेज दीजिये—बस।

टेलीफोनको रखकर गैनापोलीस फिर सोमसे बातचीत करने लगे। उन्होंने बातों ही बातोंमें उसे समझा दिया कि इस समय तुम्हें सम्पूर्ण रूपसे हमारी बुद्धिपर निर्भर रहनेकी जरूरत है। तुमने जरा भी अपनी बुद्धिसे काम लेनेकी चेष्टा की कि पुलीसके द्वारा गिरफ्तार हुए।

पुलीसकी हथकड़ी अपने हाथमें पड़ी हुई कल्पनाकर सोम

थर-थर कांपने लगा और गिड़गिड़ाकर बोला—विश्वास रखिये। आप लोग जो कहेंगे मैं वही करूंगा।

पन्द्रहवां परिच्छेद।

नागराज़की गुफा



थोड़ी देरतक बन्द गाड़ीमें चलकर जब सोम नीचे उतरा तब उसके आगे पीछे चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ था। रास्तेभर गाड़ीकी खिड़की और दरवाजे बन्द रहनेके कारण उसको कुछ भी मालूम न हुआ कि गाड़ी किधरको जा रही है। ज्यों ही उसने गाड़ीसे नीचे पैर रखे, त्योंही अपनेको एक मकानके फाटकपर पाया और फाटकको पार करते ही उसकी आँखोंके सामने अन्धकारका मोटा पर्दा पड़ गया। बहुत चेष्टा करनेपर भी वह निश्चय न कर सका कि मैं कहाँ हूँ। हतबुद्धिसा होकर थोड़ी देरतक वह जहाँका तहाँ खड़ा रहा। जो गाड़ी उसे इस अपरिचित स्थानपर उठा लायी थी, वह भी उसको निराशकर धड़-धड़ाती हुई धीरे धीरे चली गयी। अब अन्धकार और सन्नाटेके सिवा वहाँ कुछ भी न रह गया। थोड़ी देरमें दरवाजा बन्द

हुआ। इसके बाद ही गैनापोलीसकी मीठी आवाज़ उसके कानमें पड़ी—सोम, मेरा हाथ पकड़ लो!

सोमने धीरेसे पूछा—मेरा बैग कहाँ है?

गैनापोलीस—तुम चलो, बैग तुम्हें कमरेमें रखा हुआ मिलेगा।

गैनापोलीसने सोमका हाथ पकड़ लिया और एक प्रकारसे खींचते हुए उसको आगे ले चले। थोड़ी देर चलनेके बाद सोम एक सीढ़ीसे नीचे उतरने लगा। अकस्मात् गैना-पोलीसके ठहरते ही उसकी गति रुक गयी। सामने एक लोहेका छोटासा दरवाजा था। सरदारने किसी जगह हाथसे दबा दिया और दरवाजा तुरन्त खुल गया। सामनेसे एक धुंधली बिजली बत्तीकी रोशनीने आकर जब सोमकी आँखोंका पर्दा हटा दिया तब उसने सिर उठाकर देखा कि आगे एक लम्बा पतला 'हाल' है—ठीक 'हाल' नहीं—एक गुफा है!

सोम गुफाको देखकर स्तम्भित रह गया। ऐसी गुफा उसने आजतक कभी न देखी थी। पौराणिक कालके देव-मन्दिरोंकी तरह इसकी दीवालें काले पत्थरोंकी चट्टानोंसे बनी हुई थीं। गुफाके बीचोबीच बराबरकी दूरीपर पत्थरोंके खम्भे थे, जिनपर सोनेका पानी फेरा हुआ था। उन खम्भोंके ऊपर एक गोलाकार चाँदवा लटक रहा था, जिसके मध्य भागसे बिजलीबत्तीकी रोशनी सारे कमरेमें प्रकाश फैला रही थी।

पथरीली दीवारोंमें जगह जगह ताख थे जिन-

पर नाना प्रकारकी मूर्त्तियाँ सजाकर रखी हुई थीं परन्तु गुफाकी जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु थी, वह एक स्वर्ण-मय नागकी मूर्त्ति थी, जो गुफाके बीचमें, एक वेदीके ऊपर छड़ोंके घेरेमें रखी हुई थी। उस पवित्र वेदिकाके ऊपर नाना प्रकारके सुगन्धित फूल, कस्तूरी और गुलावके पौधे, रेशमी कपड़ेके ऊपर सजाकर रखे हुए थे।

गुफाका दरवाजा जिसके चौकठपर वह चढ़ा था, इतना नीचा था कि सोमको डर हुआ कि भीतर प्रवेश करते समय सिरमें कहीं चोट न लगे। परन्तु नीचे देखनेपर मालूम हुआ कि दरवाजेकी असली सतहपर पहुँचनेमें अभी दो गज बाकी है। गुफाकी दाहिनी बगलमें काठका एक काला दरवाजा था जिसके ऊपर मोतीका पानी फेरा हुआ था। बायीं बगलमें भी एक दरवाजा ठीक दीवारके रंगसे मिला हुआ दिखलायी पड़ रहा था।

गैनापोलीसके पीछे पीछे सोमने दोनों सीढ़ियोंको तयकर गुफामें प्रवेश किया और सामने ही एक स्थूलकाय, दृहन्नासिक, चीना साहबको देखकर भयसे पीछे हट गया और अपने सरदारके कन्धेपर झुककर खड़ा हुआ।

चीना गैनापोलिसकी ओर प्रश्न-सूचक दृष्टिसे देखता हुआ मुस्कुरा रहा था।

गैनापोलीसने कहा—यही आदमी पैलेस मैन्सनसे आया है। अब इसके सम्बन्धमें जैसा समझिये कीजिये।

फिर सोमकी ओर फिरकर उन्होंने कहा—सोम, होपीन साहब अबसे तुम्हारे नये मालिक हुए। अब इन्हींकी अधीनतामें तुम्हें काम करना होगा।

होपीनने अपने स्वाभाविक सानुनासिक स्वरमें सोमको सम्बोधनकर मुस्कुराते हुए कहा—मिस्टर सोम, मैं तुम्हे सलाह देता हूं, कि जबतक तलाशी बन्द न हो तबतक यहीं छिप कर रहो। फिर जहाँ तुम्हारी इच्छा हो चले जाना। तुम्हें कोई रुकावट न रहेगी।

सोमको अपने आँख-कानोंपर विश्वास ही नहीं होता था कि वह जागृत अवस्थामें इस अभिनव मूर्त्तिके सामने खड़ा है या मृत अवस्थामें। वह चारों ओर आंखें फाड़ फाड़कर देखता हुआ अपनेको होशमें लानेकी चेष्टा करने लगा!

होपीन फिर कोमल स्वरमें कहने लगे—"सोम, सैयद अभी तुमको ले जाकर तुम्हारा बेश परिवर्त्तन कर देता है जिससे एकाएक कोई तुम्हें पहचान न सके!" इतना कहकर उन्होंने तीन बार ताली बजायी।

गुफाके अन्तका दरवाजा खुल गया और एक ठिगना अरबी नौकर सिरपर टर्की टोपी और बदनमें एक खाकी कोट पहने हुए कमरेमें घुस आया!

सोमने इसको पहचान लिया। यही उस गाड़ीको हाँकने वाला था, जो इस अद्भुत स्थानपर सोमको उठा लायी थी।

होपीनने आगन्तुककी ओर गम्भीरतापूर्वक देखते हुए

कहा—"आदू हिना—लूकस एफिन्दी—मिस्टर लूकस। वाड्डी-एल-शैन्ता इला बेटा ओडा। फेहिम्त ?"

सैयदने सिर झुकाकर कहा—"फेहिम्त एफिन्दी।"

"मा फिश—"

सैयदने फिर सिर झुकाकर कोर्निश की और सोमकी ओर फिरकर बोला—"ता आला वाय्याया।"

सोम अकचकाकर गैनापोलीसकी ओर देखने लगा—उन्होंने दरवाजेकी ओर जानेका इशारा कर दिया।

सोम उस अरबीके पीछे पीछे चलने लगा। बहुत देरतक छोटे बड़े बहुतसे कमरोंको पारकर सैयद एक कोठरीके दरवाजेपर खड़ा हो गया। इसके बाद साँकल खोलकर उसने भीतर प्रवेश किया। कमरा बहुत ही साफ सुथरा और रमणीक था। बीचमें एक बिजलीबत्तीकी रोशनी लटक रही थी और उसके ठीक नीचेकी ओर एक लोहेकी चारपाई रक्खी हुई थी। कमरेकी सजावट बहुत ही साधारण थी। देखने हीसे मालूम होता था कि साधारण नौकर-चाकरोंके लिये वह निर्दिष्ट है। उसमें सिर्फ एक दरवाजा था जो बन्द था। कोठरीसे लगा हुआ एक स्नानागार भी था।

सोमने कमरेमें चारों ओर नजर दौड़ाकर देखा कि उसका बैग कमरेके एक कोनेमें रखा हुआ है। वह समझ गया कि मुझे यही कमरा रहनेको मिला है। इस बार साहसकर उसने सैयदकी ओर देखते हुए पूछा—मुझे क्या यही कमरा मिला है?

सैयद् बड़बड़ाने लगा—मालिश ! उसने सोमकी नकटाईको पकड़कर उसे खोल देनेका इशारा किया और उसको वहीं खड़े रहनेका इशाराकर नहानेवाले कमरेमें चला गया। वहाँसे एक गिलासमें पानी भरकर ले आया।

सोमने इतनी देरमें अपनी कोट उतारकर नकटाई खोल दी थी। सैयद् आते ही बोल उठा—"कुर्सी ! आः आना नेसित ! मालिश !"

सोम गूँगेकी तरह चुपचाप सैयद्का मुख ताकता रहा। इसलिये सैयद्को स्वयं जाकर बाहरसे एक कुर्सी लानी पड़ी। कुर्सीको स्नान-गृहमें रखकर उसने सोमको इशारेसे उसपर बैठनेको कहा। सोम समझ गया, कि मेरी हजामतकी तैयारी कर रहा है। क्योंकि पास ही छूरा कैंची साबुन आदि नाइयोंके सामान रखे हुए थे।

उसने आज्ञाकारी बालककी तरह कुर्सीपर बैठकर अपना सिर झुका दिया। इस समय उसके मनमें नाना प्रकारके प्रश्न उठ रहे थे, परन्तु यह जानकर कि सैयद् अँग्रेजी नहीं जानता उसे चुपचाप अपना मुख बन्दकर आज्ञा-पालन करना पड़ा।

आखिरकार जब वह किसी तरह अपना कौतूहल न रोक सका, तब अस्फुट स्वरमें अपने आप बोल उठा—"यह सब क्या कर रहा है ?"

सैयद् भुनभुनाने लगा—"असकत ! असकत !"

सोमने तो कुछ समझा नहीं परन्तु फिर भी उसे कुछ

पूछनेका साहस नहीं हुआ।

सैयद्ने अब अपना काम आरम्भ कर दिया। तरह तरहके मसाले लगाकर राजसी भावसे सोमकी हजामत बनाने लगा। बहुत देरके बाद जब उसका काम खतम हुआ तब वह उठ खड़ा हुआ और बोला—"इन किश मुन।" सोमने सिर उठाकर उसकी ओर देखा। सैयद्ने इशारेसे आँखें मूँदनेको कहा। सोमके आज्ञा पालन करनेपर सैयद् शीघ्रतापूर्वक उसकी भौंहों और मूँछोंपर कैंचीके साथ हाथ फेरने लगा। पाँच मिनिटके बाद वह अपना हाथ हटाकर बोला—"खालास!"

सोमने धीरे धीरे आंखें खोल दीं। भौंहोंपर हाथ फेरकर देखा तो वे अभी गीले थे! आंखें दर्द कर रही थीं।

सैयद् अपना काम पूराकर सभी औजार लेकर कमरेसे बाहर चला गया।

सैयद्के बाहर निकलनेपर सोमने दरवाजा बन्द कर लिया। अब वह धीरे धीरे कुर्सीसे उठा और अपने सोनेके कमरेमें जाकर एक आईनेके सामने खड़ा हो गया। उसने आँखें उठाकर जैसे ही शीशेकी ओर देखा वैसे ही वह चौंककर पीछे हट गया और बोल उठा—"हा भगवन! मैं कौन हूँ?"

वास्तवमें इस समय सोमके रङ्ग-रूपमें बहुत कुछ परिवर्त्तन हो गया था। स्वभावतः सोमके बाल भूरे रंगके थे परन्तु इस समय वे एकदम काले हो गये थे। उसके बदनका रंग सफेदी लिये हुए था परन्तु इस समय वह ठीक जापानि-

योंकी तरह पीला हो गया था! सारांश यह कि, अब वह सोम न रह गया था। दूसरा ही कोई एशियाई प्राणी हो गया था।

सैयद्ने फिर दरवाजा खोलकर प्रवेश किया और बोला—"ता आला वाय्याया।"

सोम उसकी ओर देखने लगा। परन्तु कोई उत्तर न दे सका अब उस अरबीने फिर उसी शब्दको दुहराकर कहा—"होपीन एफिन्दी!"

सोम अपना सिर खुजलाने लगा। वह कुछ बोलना ही चाहता था कि सैयद फिर बोल उठा—"ता आ वाय्याया!"

सैयद् उसको आनेका इशाराकर कमरेसे बाहर निकला। सोमने भी हिचकिचाहट दूरकर उसका पीछा किया और बड़ी दालानको पारकर दोनों गुफामें आये! होपीन अपने निर्दिष्ट स्थानपर एक कुर्सीपर बैठे हुए थे—सोमके पहुँचते ही उन्होंने कहा—राजा साहब तुम्हें देखना चाहते हैं।

इतना कहकर उन्होंने ठीक अपने पीछे दीवारपर एक धक्का दिया। आश्चर्य! जहां दरवाजेका नाम निशान भी न था वहां एक छोटा सा पत्थरका दरवाजा निकल आया! सामने एक काली कोठरी थी; होपान सोमको अनुसरण करनेका आदेश कर उस अन्धेरी कोठरीमें घुस पड़े और सोम भी उनके पीछे जाकर उनसे सटकर चलने लगा। जब दोनोंने कमरेमें प्रवेश किया तब सैयद्ने दरवाजा बन्द कर लिया।

घने अन्धकारमें होपीनकी सानुनासिक आवाज आयी—मेरे पीछे पीछे चले आओ। डरना मत !

सोमने आगे हाथ बढ़ाकर उनका कन्धा पकड़ लिया और अन्धेकी तरह टटोलता हुआ चलने लगा। दाहिने बायें कितने ही दरवाजोंको पार करते हुए दोनों आगे बढ़ते गये। इसी तरह बहुत देरतक असीम पथकी यात्राकर होपीन सहसा खड़े हो गये और बोले—सीधे खड़े रहो।

सोमको मालूम हुआ कि पास ही कहीं कोई दरवाजा है सहसा उसके सिरके ऊपर ही बिजली बत्ती जल गई। चारों ओर प्रकाश फैल गया ! दृष्टि फेरते ही उस समय सोमने अपनेको एक पुस्तकालयमें पाया !

पुस्तकालयकी चारों दीवारें, ऊपर कड़ीतक, पुस्तकोंकी आलमारियोंसे भरी थीं। फर्शपर एक लाल शतरंजी बिछी हुई थी और छतके बीचोंबीच बिजली बत्तीकी लाल रोशनी लटक रही थी। एक किनारे तीन टेबुल आस पास रखे हुए थे जिनमेंसे एकपर लिखनेके सामान, दूसरेपर अतर गुलाब और एसेन्स तथा तीसरेपर शीशे और चीना मिट्टीके बर्त्तन रखे हुए थे ! कमरेमें कोई अंगीठी न थी तिसपर भी वहाँ बहुत गरमी थी।

सोमने चारों ओर फिरकर देखा। कमरेमें एक भी दरवाजा न था। यहाँतक कि जिस दरवाजेसे उसने अभी प्रवेश किया था उसका भी कहीं चिह्न न था !

सोमने भयसे आंखें मूँद लीं और चिल्ला उठा—हा ईश्वर मैं कहाँ हूं।

थोड़ी देरमें एकाएक कमरेमें घड़घड़ाहट हुई जिससे सोमकी आंखें खुल गयीं।

सोमने देखा—चन्दन काठके पर्देके पास एक रमणी खड़ी मुस्कुरा रही है। वेशविन्याससे तो रमणी एशियाई प्रतीत होती थी, पर शरीरका रंग और गठन इसका विरोध कर रहा था। उम्र अभी २४ को पार नहीं हुई थी।

वीणाझंकारके समान सोमकी हृदय-तन्त्रीको सहसा झंकरित करके रमणी बोल उठी—"नमस्कार मिस्टर सोम, तुम यहाँ मिस्टर लूकासके नामसे परिचित होओगे। राजा साहब मुझे कहनेको कहते हैं, कि तुम्हें दो पाउण्ड हफ्तेमें तलब दी जायगी। तुम ब्लाक रूम नं० १ के कमरोंकी रखवाली करोगे, और अतिथि अभ्यागतोंकी सेवा-टहल भी किया करोगे!"

रमणी खिलखिलाकर हँस पड़ी। परन्तु तुरत गम्भीर भाव धारणकर एक अलमारीकी ओर कान लगाकर सुननेकी चेष्टा करने लगी! आड़से किसीकी सायँ सायँकी आवाज आ रही थी।

रमणी फिर सोमकी ओर देखकर कहने लगी—"राजा साहब तुमसे कहना चाहते हैं कि तुम किसी तरह बाहर निकलनेकी चेष्टा न करना! कुछ दिनमें विपद टल जानेपर तुम्हें छुट्टी मिल जायगी, तुम्हारी जहाँ खुशी हो चले जाना।

कहो तुम राजी हो न ?"

सोमके मुखसे अनायास निकल पड़ा—मैं राजी हूं, मुझे कोई आपत्ति नहीं।

रमणीने फिर कुछ सुनकर कहा—राजा साहब आज तुम्हे छुट्टी दे रहे हैं। तुम जा सकते हो।

कमरेकी वत्ती बुझ गयी।

सोमने भयसे आँखें मूंद लीं और थरथर काँपने लगा। उसे प्रतीत होने लगा मानों जहांजके तख्तेकी तरह पैरोंके नीचे जमीन हिल रही है।

सहसा किसीने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और उसको एक प्रकारसे खींचकर ले चला।

कुछ देर मौन भावसे चलकर सहसा उसका परिचालक ठहर गया और सानुनासिक आवाजमें बोल उठा—ठहरो।

सोम पीछे हटकर ठहर गया। हठात् उसके कानमें तीन तालियोंकी आवाज आयी और सामने एक दरवाजा खुल गया। सोम इस समय अपने कमरेके दरवाजेपर खड़ा था और होपीन कमरेके अन्दर पहुँच चुके थे!

उन्होंने मुस्कुराकर कहा—यही तुम्हारा कमरा है, अब तुम आरामसे सोओ। मैं जाता हूँ!

सोलहवां परिच्छेद.



होपीनकी पातालपुरी ।



मिस्टर सोम अब मिस्टर लूकासके नामसे परिचित होकर गुफावासी योगियोंकी तरह होपीनके उस तिलिस्म-राज्यमें विचरण करने लगा है, जहाँ न सूर्योदय होता है न सूर्य्यास्त, जहाँ दिनका प्रकाश और रातका अन्धकार एक समान है।

दूसरे दिन सवेरे बिछौनेके पास रखी हुई बिजली-घंटीकी घड़घड़ाहटसे जब लूकासकी नींद टूटी तब वह चौंककर उठ बैठा और अकचकाकर नये कमरेकी चीजोंको देखने लगा। नींदकी खुमारीमें सहसा वह यह ठीक न कर सका कि मैं कहां हूँ और यहाँ कैसे आया ? इस समय भी उसकी देहपर बाहर निकलनेके वस्त्र लदे हुए थे और दरवाजेके पास, सामने ही उसका बैग रखा हुआ था। रातको राजा साहबसे भेंटकर लौटनेपर वह इतना व्यस्त और भयभीत हो गया था, कि घरमें आते ही बिछौनेपर चुपचाप पड़ रहा। उस समय जोरसे साँस लेनेका तो उसे साहस ही नहीं होता था फिर कपड़े उतारना और बैगको सम्हालना तो दूरकी बात थी। निद्रादेवी यदि अतर्कित और अयाचित भावसे उसकी आंखोंपर विस्मृतिका

हाथ न फेर देतीं तो उसकी क्या अवस्था होती, इसका अनुमान करना भी कठिन है।

बिजलीकी रोशनी अब भी जल रही थी क्योंकि सोते समय वह उसे बुझाना भूल गया था। उसने उठकर चारों ओर नजर दौड़ायी तो पास ही एक टेलीफोनकी कल रखी हुई दीख पड़ी जिसकी घंटी इस समय जोर जोरसे बज रही थी। उसने टेलीफोनको उठाकर काँपती हुई आवाजमें 'हेलो' की आवाज दी।

उत्तरमें होपीनका परिचित सानुनासिक स्वर कानमें पड़ा। "अपने कामपर जानेके लिये तय्यार रहो। अभी आध घण्टेमें तुम्हारा भोजन जायगा।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। चारों ओर शून्यदृष्टिसे ताकता रहा। उसके मनमें अब नाना प्रकारके विचार उठने लगे—"क्या रातकी सभी बातें सच हैं? क्या सचमुच मैं लन्दन जैसी सभ्यनगरीके किसी कब्रस्तानमें जीता हुआ दफनाया गया हूँ? यदि यह सच हो तो नागराजकी गुफा—द्वारहीन पुस्तकागार—वह रहस्यमय राजा साहब और हास्यमुखी रमणी—सब कुछ भी सच होगा! हा ईश्वर! रक्षा करो!"

झटपट अपने बैगको खोलकर सोम अपनी तौलिया और साबुन लेकर स्नान करने चला गया। इस समय उसे यह भय हुआ, कि देर होनेसे होपीन कहीं रंज न हो जायँ।

लूकासने बहुत चेष्टा की कि मैं कृत्रिम रंग छुड़ाकर एक बार

फिर सोम बन जाऊँ। परन्तु उसका सारा प्रयत्न विफल हुआ। उसका रंग कालाका काला ही रहा। आईनेके पास जाकर उसने देखा कि वह एक खासा काला आदमी हो गया है।

इसी समय सैयद कमरेमें आ पहुंचा। इस समय उसकी देहपर नाईकी पोशाक न थी। वह बावर्चीकी पोशाक पहने हुए, हाथमें भोजनकी थाली लिये दरवाजा खोलकर भीतर घुसा और थाली टेबुलपर रखकर बोला—"जल्दी करो।"

इतना कहनेके साथ ही वह कमरेसे बाहर निकल गया। सोम टेबुलके सामने टूलपर बैठ गया। मानसिक उत्तेजनाके कारण यद्यपि उसकी भूख एकदम मन्द पड़ गयी थी परन्तु स्वादिष्ट और चटकीले भोजनसे हाथ हटानेकी मूर्खता वह कभी भी नहीं करता था, यहांतक कि लूकस बननेपर भी उसकी यह विशेषता न गयी थी।

जलपान कर लेनेपर सैयद फिर आकर बोला-"ता आला।"

सोमने पहलेके शब्दके अनुभवसे जान लिया था कि यह बुलानेके अर्थमें प्रयुक्त होता है। इसलिये कुछ भी न कहकर वह उसके पीछे हो लिया।

कलके परिचित कमरोंसे होते हुए दोनों उसी नागराजकी गुफामें उपस्थित हुए। होपीन सवेरेकी पोशाकमें सुसज्जित होकर एक बेतकी कुर्सीपर बैठे हुए सिगरेट पी रहे थे। सोमको देखते ही वह मुस्कुराते हुए बोल उठे—"आओ! आओ! सोम, कहो, ब्यालू तो अच्छा हुआ है न?

सोमके मुखसे आप ही आप निकल गया—जी हाँ बहुत अच्छा था !

होपीन बोले—सैयद अभी तुमको एक कमरेमें ले जायगा। वहां एक आदमी बिछौनेपर सोया हुआ तुम्हें दिखायी देगा। उसे उठाकर उसके नहाने-धोनेका प्रबन्ध तुम्हें कर देना होगा। उसके चले जानेपर नहाने और सोनेके कमरोंको झाड़-पोंछकर साफ कर दोगे। आजसे तुम्हें रोज यही काम करना होगा। साथ ही याद रखना, आजसे तुम्हें मिस्टर लूकसके नामसे अपना परिचय देना होगा और यदि कोई आदमी तुमसे कोई बात पूछे तो उसका उत्तर देनेकी चेष्टा न करोगे।

चीनाको देखते ही सोमका होश-हवास उड़ गया था। उसको मालूम हो रहा था कि यह सानुनासिक आवाज बहुत दूर किसी मैदानसे आ रही है अथवा वह स्वयं किसी सन्दूकमें बन्द है और बाहरसे कोई बोल रहा है। होपीनकी बात पूरी होनेपर उसने बहुत ही धीमे स्वरमें कहा—बहुत अच्छा।

अब सैयदने दाहनी बगलका पीला दरवाजा खोलकर उसे बुलाया। लाचार सोम उसके पीछे रवाना हुआ। एक कमरेसे दूसरेमें, दूसरेसे तीसरेमें, इसी तरह दश पन्द्रह मिनिटतक सैयद चक्कर लगाता रहा। ये सभी कमरे विचित्र ढंगके थे। किसीमें भी दरवाजेका नाम-निशान न था। सोम किसी कमरेमें प्रवेशकर जब आगेकी ओर देखता था तो कोई दरवाजा उसे दिखायी न देता था, जब पीछे फिरकर देखता तो पीछेका दर-

वाजा भी गायब! जब वह अकचकाकर चारों ओर देखने लगता तो सैयद दीवालमें कहीं अंगुलियोंसे दबा देता और तुरन्त ही एक छोटा सा दरवाजा निकल आता। ऐसे ही छः अद्भुत दरवाजोंको पारकर सातवेंके सामने आकर सैयद खड़ा हो गया और जेबसे चाबी निकालकर उसने दरवाजा खोला।

सोमने डरते हुए कमरेमें प्रवेश करके देखा कि वह कमरा भी उसके निजके कमरेसे मिलता जुलता है। उसकी बगलमें भी वैसा ही एक स्नानागार है।

परन्तु इस कमरेकी सजावटमें विशेषता है। बीचमें एक लोहेकी चारपाईपर गद्दी बिछी हुई है जिसे देखकर अस्पतालके रोगियोंकी चारपाइयाँ याद पड़ जा सकती हैं। फर्शपर बहुकार्य्यखचित एक शतरंजी बिछी हुई है। दीवालोंपर रंगबिरंगे कागज चिपकाये हुए हैं और नाना प्रकारकी खूबसूरत सींगों, बहुमूल्य मूर्त्तियों और चित्रोंसे कमरेकी शोभा बढ़ रही है। यद्यपि सोमने पहले ऐसी सजावट कहीं नहीं देखी थी, परन्तु सामानोंकी कारीगरीसे उसने अनुमान कर लिया कि ये सभी सामान चीनी ढंगपर बनाये और सजाये गये हैं।

इस कमरेतक पहुंचकर जब सैयद लौट गया तो प्रायः आध घंटेतक सोम उस दुग्धफेननिभ शय्यापर सोये हुए अजनबीकी ओर टकटकी बाँधकर देखता रहा।

इस सोये हुए आदमीकी उम्र चालीसके लगभग थी।

सिरके बाल काले और घने थे। शरीर दुबला पतला और कोमल था। चेहरेपर इतनी सफेदी छायी हुई थी कि देखनेसे मुर्देका भ्रम होता था। तेजहीन आँखें और मुर्झाए हुए शरीरको देखकर उसे जादूघरकी मूर्त्ति समझ लेना कुछ असंगत न था।

सोम अब अधिक देरतक इस अवस्थामें रहनेका साहस न कर सका। उसने मानों जानपर खेलकर उस कमरेकी भयङ्कर निस्तब्धताको भंग करते हुए कहा—आदाब जनाब आली, सुबह हुई, अब नहाने-धोनेका इन्तजाम करूं तो?

सोमको जब उस मनुष्यसे कोई उत्तर न मिला तब उसने साहसकर उसकी बाँहको पकड़कर जोरसे हिलाया।

इस बार मुर्देने अपनी बाँह एक बार उठाकर फिर बिछौनेपर पटक दी और धीरे धीरे भुनभुनाने लगा—"वे लोग छिपे हैं······उसी·········बागमें······स्टीमरके ······बढ़नेपर ······ वह········भी········चल········पड़ेंगे·········"

उन प्रलापोंको सुनकर सोमने जोरसे उस सोये हुए आदमीको हिलाया और चिल्ला उठा—"उठिये साहब, मैं नहानेके लिये पानी गर्म करने जाता हूं।"

उस आदमीने इधर उधर आँखोंकी पुतलियाँ घुमाते हुए कहा—"देखना······वे भागने······न······पावें—मैं भी······ आता हूं।"

अब उस आदमीकी खुली हुई पुतलियाँ इस भावसे सोमके

सामने नाचने लगीं जिससे उसको अनुमान करना कठिन न हुआ कि वह आदमी अकचकाकर मेरी ओर देख रहा है।

सोम अब कुछ शान्त होकर धीरेसे बोला—मैं आपके नहानेके लिये जल गरम करने जाता हूं, आप जल्दी उठिये।"

अपनी खुरहरी दाढ़ीपर हाथ फेरते हुए वह आदमी भुन भुनाने लगा—"गधा, तेरा नाम क्या है?"

सोम उसके पाजीपनसे ऊबकर जोरसे बोल उठा—मेरा नाम लूकस है। आपकी ताबेदारीमें हाजिर हूं। नहानेका पानी गरम करूं?

वह आदमी अकबकाकर उठ बैठा और बोला—"पानी? हाँ हाँ,...जरूर...बेशक।"

इस समय उसकी आँखोंमें रोशनी, चेहरेपर सूर्खी और शरीरमें गतिका संचार हो चला था उसने सोमको सिरसे पैर-तक देखकर कहा—"सैयद नहीं आया? तू कौन है?

"लूकस हुजूर! मैं ही ताबेदारीमें हाजिर हूँ।"

"ओ समझा! तू यहाँ नया भर्ती हुआ है न?"

"जी हजूर [illegible]नी गरम करूँ तो?"

"हां, जा[illegible] आज बुधवार है न?"

"जी हाँ, [illegible]वार ही है।"

"तुमने [illegible] नाम क्या बताया?"

"लूक[illegible]

अब [illegible] देरतक प्रश्नोत्तरकी अपक्षा न कर सोम तुरत

स्नानागारमें चला गया। वहाँ आवश्यकीय सभी सामान यथास्थान मिल गये। उसने पानी गरम करते हुए अपने अतिथिको पुकारकर पूछा—"पानी अधिक गरम करना होगा साहब?"

अपनी चारपाईसे उठते हुए अतिथिने उत्तर दिया—"नहीं, नहीं ज्यादे गरम न हो।"

सोमने बड़े कमरेमें आकर कहा—"साहब आइये, पहले आपकी दाढ़ी बना दूं। तब आप स्नान करने जाइयेगा।"

इतना कहकर छूरा कैंची लेकर वह दाढ़ी बनाने बैठा। इस कामके हो जानेपर, उधर वह आदमी नहाने चला गया और इधर सोम उसके कपड़े लत्तेको ब्रशसे साफ करने लगा।

जब वह इस तरहसे अपने काममें लगा हुआ था तब सैयदने धीरेसे दरवाजा खोलकर कहा—"गज्म" और कमरेके भीतर ब्रश किया हुआ एक जोड़ा बेशकीमत जूता रखकर, दरवाजा बन्द करके चला गया।

स्नानागारसे लौटनेपर अतिथिने अपनी सारी पोशाक तैयार पायी। इस समय उसका चेहरा बहुत कुछ हरा-भरा हो गया था। यद्यपि अब भी उसके चेहरेका पीलापन दूर नहीं हुआ था तथापि उसमें सजीवता और चमक आ गयी थी।

जब अतिथि कपड़े लत्ते पहनकर तैयार हुआ तब सोमने पूछा—बाकी सामानको आपके बैगमें भर दूं न?

अतिथिने सिर हिलाकर सम्मति दी।

जानेके लिये तैयार होकर उसने सोमके हाथमें एक क्राउन थमा दिया। फिर दरवाजेके पास लटकती हुई रस्सीको खींच कर कमरेसे बाहर निकला। इसी समय सयद आ पहुंचा और उसे अपने साथ लेकर चला गया।

अब सोमपर कमरेकी सफाईका काम पड़ा। थोड़ी ही देरमें सैयद लौटकर सफाई करनेके सामान दे गया। सोम अब निश्चिन्त भावसे अपने काममें लगा हुआ, कमरेको बारीकियोंको देखने लगा। देखते देखते उसने कितने ही आश्चर्यजनक रहस्योंका उद्‌घाटन किया।

सोम दीवालके जिस अंशपर भी कुछ देरतक स्थिरदृष्टिसे देखता रहा, थोड़ी देरमें वही अंश वायसकोपके चित्रपटके रूपमें परिणत हो गया और उसके ऊपर खींचे हुए चित्र और मूर्त्तियाँ स्पष्ट और सजीव आकारमें उसकी आंखोंके सामने नाचने लगीं। मालूम हुआ, मानों कमरेकी सभी चीजें, जो श्रेणीवद्ध भावसे रखी हुई थीं एक दूसरेके पीछे चल रही हैं। इस रहस्यको देखकर सोमको कँपकपी सी आ गयी। उसकी सुध-बुध जाती रही—दीवालें चलें! काठकी मूर्त्तियां चलें! हा भगवान! यह भी क्या सम्भव है! जरूर कोई न कोई जादू—तिलिस्म—धोखेकी टट्टी है!

सतरहवां परिच्छेद



कनकुश-कनशेसन।



मका स्वभाव बहुत चंचल था, इसलिये थोड़े ही दिनोंमें इस नवीन जीवनधाराका वह पूरा अभ्यासी हो गया। होपीन साहबके दैत्योंके साथ अब उसके दिन एक प्रकारसे सुखसे ही कटने लगे-—दिन क्यों कहें, रात ही कहना अधिक उपयुक्त होगा क्योंकि होपीन साहबके कार्य्यालयमें दिन रातका निर्णय करना जरा टेढ़ी खीर थी।

सोमके काम भी बहुत साधारण थे। उसके ऊपर छः छोटे बड़े कमरोंकी देखरेखका भार पड़ा था। होपीनकी गुफा, उसके अपने दो कमरे अतिथियोंके रहनेके दो कमरे और सबके बीचमें एक बड़ा हाल। इन सभी कमरोंको एक शब्दमें ब्लाक ए० के नामसे पुकारा जाता था। इसके सिवा सोमके ऊपर अतिथियोंके आदर सत्कारका भार था; परन्तु यह काम नियमित और व्यवस्थित न था। कभी सवेरे ही कोई अतिथि आ जाता तो कोई शामको। कभी दश पाँच अतिथि एक साथ ही आ जाते तो कभी दो तीन दिनतक किसीका पता ही न लगता था। इस नियमहीनताके कारण सोमको कभी कभी असुविधा भी उठानी पड़ती थी।

बहुत चेष्टा करनेपर भी सोम इन अतिथियोंके सम्बन्धमें कोई रहस्य न जान सका। रोज रोज दलके दल नरकंकाल होपीनके कार्य्यालयमें आते और चले जाते। परन्तु किसीका नाम धाम जाननेका उसे मौका न मिलता था।

प्रथम सप्ताहमें सोमने दो ऐसे अतिथियोंको अपनी देखरेखमें पाया जिन्हें उसने वहि:संसारमें देखा था। एक दिन रातको दस बजे जब एक म्रियमाण अतिथि, अतिथि-शय्यापर आकर धड़ामसे गिर पड़ा तो सोम भयसे अपने आप बोल उठा—"ये तो सर ब्रायान मालपास हैं! क्या यह वही विख्यात मेधावी राज-नीतिज्ञ हैं जिन्हें देशके समस्त नेताओंने एकमत होकर पार्ला-मेंटके केविनेटमें अपना नेता माना है? क्या यह वही महापुरुष हैं जो समाजके सिरताज गिने जाते हैं? इन्हींके साथ डियूक आव बरगंडीकी कन्याका विवाह-सम्बन्ध ठीक हुआ है? क्या ही लज्जाकी बात है! अद्वितीय राजनीतिज्ञका ऐसा घोर अध:पतन!

इतने दिनोंके भीतर सोमने एक वार भी सूर्य्यका प्रकाश नहीं देख पाया था और न उसे कोई समाचार पत्र ही पढ़नेको मिलता था। उसे यह जाननेका बड़ा कौतूहल हो रहा था कि श्रीमती भरननकी हत्याके सम्बन्धमें आजकल शहरमें न जाने कितने ही गुल खिलते होंगे, कितनी ही अफवाहें उड़ती होंगी! इस चिररात्रिमयी गुफामें बिना संगी साथीके मुर्दोंके बीच रहनेसे उसका अब मन ऊबता जाता था। इसके अलावे उसकी

उद्विग्नताका एक और भी कारण उपस्थित हो गया था। एक तो वह, अपने ही परिमित बुद्धिका आदमी था तिसपर नित्य प्रति रहस्यमय—जादूमय—दृश्य उसकी आंखोंके सामने नाचते रहते थे। इससे उसकी बुद्धि और भी चकरा गयी थी—भय भी कुछ कम न होता था।

बहुत दिनोंतक तो उसे यह भी पता नहीं लगा कि होपीन कौनसा कारोबार करता है, पीछे मालूम हुआ कि वह एक अफीमखानेमें नौकर है। परन्तु यह रहस्यभेद करनेसे उसकी उद्विग्नता और भी बढ़ गयी। उसे अब डर होने लगा कि ऐसा न हो कि कोई जाना-सुना आदमी इस अफीम-खानेमें आ जाय और मुझे पहचान ले। यह सोचते ही वह भयसे काँप उठा। परन्तु यह सोचकर उसे कुछ ढाढ़स बंधा कि जितने ग्राहक आते हैं किसीमें भी आते समय ज्ञानका लक्षण नहीं दीख पड़ता। यदि कोई आयेगा भी तो सामनेसे टल जाऊंगा। गैनापोलीसने आगा-पीछा खूब सोच-समझकर ही तो मुझे यहां रखा है। यही मेरे लिये सबसे निरापद स्थान है।

इस प्रकार प्रतिदिन कौतूहल और सुविधा-असुविधाके ऊपर विपदकी आशंकाकी विजय हो जाती थी। अपनी रक्षाका कोई दूसरा उपाय न देखकर सन्तोषके साथ वह गुफावासको ही अपनी प्रकृतिके अनुकूल बनानेकी चेष्टा करता था।

इस प्रकार दिनके बाद रात और रातके बाद दिन अतर्कित

और अनापेक्षित भावसे बीतने लगे। प्रथम सप्ताहके अन्तिम दिन सैयद, सोमके वेतनस्वरूप दो रुपये दे गया। थोड़ी ही देरके बाद वह फिर लौट आया और सोमको उद्देश्य करके बड़बड़ाने लगा—"आह्न हिन्दा ग्नापलीज एफिन्दी"

इतना कहकर जब वह चला गया तो कमरेका दरवाजा फिर खुला और गैनापोलीसने प्रवेश किया।

अपने फ्रान्सीसी मित्रको देखकर सोमको अपनी निर्जनता-का वास्तविक अनुभव हुआ! इस समय उसके सारे कौतूहल, सारी चिन्तायें और समस्त असुविधायें एक साथ उमड़ उठीं। आंखोंसे झरझर आँसुओंकी धारा बहने लगी।

गैनापोलीस अपनी स्वाभाविक पोशाकमें आये थे। उन्होंने आते ही मुस्कुराकर कहा—वाह सोम, तुम जापानी कबसे हुए? बैठो, बैठो, कुछ देरतक बातें करें।

सोम गैनापोलीसके लिये कुर्सी सरकाकर आप बिछौने-पर जा बैठा और आंसुओंको पोंछकर मुस्कुरानेकी चेष्टा करने लगा।

गैनापोलीस कहने लगे—मिस्टर सोम,—नहीं नहीं, मिस्टर लूकस, उस दुर्घटनाकी रातको मैंने जो जो बातें कही थीं, वे सब याद हैं न?

सोमने तुरत उत्तर दिया—जी हाँ, मुझे सब याद हैं।

"अच्छा! वे सभी ठीक उतरी हैं। हमारा कारबार जैसे पहले चलता था वैसे ही अब भी चल रहा है। हमारे

कार्य्यालयपर किसीका भी सन्देह नहीं हुआ है और न हमारे दलके किसी आदमीपर ही पुलीसकी नजर पड़ी है। हाँ, सोमको लेकर—"

सोम चौंक उठा और उत्कण्ठित होकर सुनने लगा।

"सोमको लेकर यद्यपि आजकल शहरमें बड़ी उथल-पुथल मँची है, तो भी सभीका यही अनुमान है कि सोमने स्वयं हत्या नहीं की है, वह हत्यामें सहायकमात्र है।

सोम भयसे काँपते हुए लड़खड़ाती आवाजमें बोला—"मुझपर—मुझपर सबका सन्देह हो गया है?"

गैनापोलीस—नहीं नहीं, तुमपर किसीका सन्देह नहीं हुआ है। एक डाकृरने कहा है कि विषसे उसकी मृत्यु हुई है, परन्तु पैलेस मैन्सनमें जो डाक्टर रहता है, उसने कहा है कि नशाका उसे अभ्यास पहलेसे था।

सोमने उत्कण्ठासे कहा—क्या नशा—अफीम न?

गैनापोलीसने मुस्कुराकर कहा—हाँ, तुमने ठीक अनुमान किया है। तुम्हें तो अब मालूम ही हो गया होगा कि होपीनकी गुफा अफीम-देवीका पवित्र मन्दिर है। कितने ही कर्मश्रान्त चिन्ताक्रान्त अतिथि यहाँ आकर अपने हृदयको शान्ति दिया करते हैं। क्या तुमने अफीमका स्वाद नहीं चखा है?"

सोमने जोर देकर कहा—"नहीं—कभी नहीं।"

गैनापोलीस—तब तो तुम एक सुखसे अभी वञ्चित हो। हम लोगोंने क्यों इस पेशेको चलाया है, क्या तुमने कभी इसका

अनुमान किया है ? नहीं, तुम क्या जानो। अच्छा सुनो—चण्डूका जिसने एक बार मजा लूटा है, उसे फिर चण्डू न मिलने से बड़ी तकलीफ होती है। गाँजा भाँग आदिका भी यही हाल है। कष्टसाध्य होते हुए भी चेष्टासे इन नशोंकी आदत छुड़ायी जा सकती है। परन्तु जिसने एकबार अफीमकी गोली चखकर या अफीमकी पिचकारी (Injection) लेकर उस कल्पनामय जादूपुरीमें पदार्पण किया कि संसार भूलकर—समाज भूलकर—लोक-लाज स्त्री पुत्र, सब कुछ भूलकर अहिफेन देवीका अनन्य सेवक बन जाता है—फिर उसे न देवी छोड़ती है और न वह देवीको छोड़ता है।

यह वक्तृता सोमको खाक समझमें आती थी! परन्तु कान लगाकर अक्षर अक्षर वह बड़ो उत्सुकतासे सुनता जाता था। इधर गैनापोलीस वक्तृता करते हुए देवीकी कल्पनामें इतने विभोर हो गये कि सोमको उद्देश्य न कर एक प्रकारसे अपनी देवीकी स्तुतिमें ही लीन हो गये।

वह फिर कहने लगे—"हमारी देवीमें एक बड़ी विशेषता यह है, कि वह अपने भक्तको अर्घ्य देनेके लिये वाध्य करती है। इस देवीकी पूजामें थोड़ी देर लीन रहनेके बाद मनुष्य जब उठ बैठता है, तब उसे जो आनन्द और आराम प्राप्त होता है उसकी स्मृति भक्तको घर-बार छुड़ा देती है। वह रात दिन उसीकी सेवामें दिन बितानेको लालायित रहता है! लण्डन ऐसी महानगरीमें हमने इस देवीके लिये यह उपयुक्त मन्दिर तय्यार

किया है और सौभाग्यसे तुम्हारे ही ऊपर उसके भक्तोंका सेवा-भार पड़ा है।"

थोड़ी देर रुककर वह फिर कहने लगे—"हमने इस मन्दिर-की अनेकों शाखायें खोली हैं जिससे देवीके उपासकोंको बहुत दौड़ धूप न करनी पड़े परन्तु दुर्भाग्यसे पुलीसने एक शाखा-मन्दिरमें पदार्पण करके हाल ही उसे अपवित्र कर दिया है!"

इस 'पुलीस' शब्दके उच्चारणके साथ साथ, मालूम हुआ कि, गैनापोलीसका ध्यान भी पृथ्वीपर लौट आया। अब वह अलङ्कारशून्य शब्दोंमें कहने लगे—"परन्तु हमने ऐसा इन्तजाम कर रखा था कि एक भी कर्मचारी कार्य्यालयसे नहीं पकड़ा गया और किसी प्रकार इस कार्य्यालयका रहस्य भी न खुलने पाया। खैर, अब तुम्हारे विषयमें बातचीत हो। तुम्हें अब रोज शामको कुछ देरतक बाहर जानेकी छुट्टी मिल सकती है। क्यों जाना चाहते हो न?

इतना कहकर उन्होंने सोमकी ओर देखा। और फिर कहने लगे—मैंने राजा साहबसे हुक्म ले लिया है। आज ही से तुम्हें यह अवसर मिल जाया करेगा। परन्तु सावधान, भूल-कर भी कभी अपने किसी परिचित स्थानपर मत जाना!

राजा साहबका नाम सुनते ही सोमके रोंगटे खड़े हो गये परन्तु उसने अपनी चञ्चलताको बड़े कौशलसे छिपा लिया।

गैना०—इसीलिये अभी मैं तुम्हारे पास आया हूँ कि वह गुप्त पथ तुम्हें बता दूँ जिससे तुम रोज आया जाया करोगे।

परन्तु जाते समय तुम्हें मिस्टर होपीनसे हुक्म ले लेना होगा ।"

इतनी देरके बाद सोमका मुख खुला । उसने अपनी खुशी प्रकट करते हुए कहा—"आपने बड़ी दया की है। मैं बाहरका हाल-चाल जाननेके लिये बड़ा ही उत्सुक हो रहा था ।"

गेनापोलीसने मुस्कुराकर कहा—"यह मैं जानता हूं । अच्छा, मेरे साथ आओ, तुम्हें रास्ता दिखा दूँ ।" फिर धीरेसे अस्फुट स्वरमें कहा—"राजा साहबने बड़ी बुद्धिमानी की थी कि तुम्हें इतने दिनोंतक रोक रखा था क्योंकि तुम्हारे विषयमें पुलीसको कुछ सन्देह हो गया था ।

फिर वही शब्द 'पुलीस'!—सोम चञ्चल हो उठा; परन्तु गेनापोलीस उसपर ध्यान न देकर दरवाजा खोलकर आगे बढ़े । वह पीछे पीछे चला ।

उन्हीं छोटी बड़ी पहलेकी कोठरियोंको पार करते हुए वे दोनों नागराजकी गुफामें आये। सोमने देखा कि होपीन साहब ठीक अपनी पुरानी पोशाकमें एक आरामकुर्सीपर बैठे हुए सिगरेट पी रहे हैं। इन दोनोंके जानेपर उठनेकी चेष्टा न कर बैठे ही बैठे उन्होंने गेनापोलीसको सिर झुकाकर नमस्कार किया और सोमकी ओर देखकर मुस्कुरा दिया।

दरवाजा खोलकर वे दोनों कमरेसे बाहर निकल गये और सीढ़ीसे ऊपर चढ़ने लगे। यह वही सीढ़ी थी जिससे होकर सोमने इस "अलादीन" की गुफामें प्रवेश किया था। सोम अपने सरदारका अनुसरण करता हुआ सहसा एक ऐसे कमरेमें

आ गया जहाँसे आगे कोई रास्ता ही न था। कमरेकी दीवारें नाना रङ्गके पत्थरोंकी बनी हुई थीं। छतमें सफेदा की हुई थी।

गैनापोलीसने सोमकी ओर घूमकर कहा—"देखो तो यहां कोई दरवाजा है?

सोम बहुत देरतक आँखें फाड़ फाड़कर देखता रहा परन्तु किसी दरवाजेका नाम निशान भी न पाया। तब गैनापोलीसने एक जगह हाथ रखकर कहा—"यहाँ तो देखो।"

इतनी देरके बाद सोम आश्चर्य्यसे चौंक उठा। जो देखनेमें पहले चार रङ्गके चौकोन पत्थरोंके टुकड़े मालूम होते थे, वे वास्तवमें काठके दो किवाड़के पल्ले साबित हुए। वे दोनों पल्ले दीवालके रङ्गमें इस तरह मिल गये थे कि क्या मजाल उन्हें कोई परख ले।

उस गुप्त दरवाजेको पारकर दोनों एक गड़सालमें पहुंचे। गड़सालमें एक बड़ा एम्बूलैंस रखा था। उसको पार करते ही दोनों एक लोहेके दरवाजेपर पहुंचे। वहाँ पहुंचकर गैनापोलीसने कहा-"रोज शामको सैयद यहांतक तुम्हें पहुंचा जाया करेगा। लौटते समय अर्थात् ठीक दश बजे तुम इस दरवाजेपर न आकर गड़सालके पास जो छोटीसी खिड़की देखते हो, उसीके पास जाना। वह उस समय खुली ही रहेगी। भीतर घुसकर बायीं बगलं बत्तीकी "स्विच" दबा देना, प्रकाश हो जायगा। प्रकाश होते ही सैयद गुप्त दरवाजेको खोल देगा, फिर तुम उसके

साथ अपने स्थानपर चले जाना। समझा न ?

इसके बाद लोहेके फाटकको खोलकर गेनापोलीस आगे बढ़े और सोम उनके पीछे पीछे चला। अब वह दोनों एक पतली सी गलीमें चल रहे थे। बहुत दिनोंके बाद आज पहले पहल सोमको खुला आकाश और खुली हवा उपभोग करनेको मिली। भूलोकसे मानों वह स्वर्गमें आगया !

इस समय सोमके आगे कुछ दूरीपर बागीचेकी ओर एक ऊँची दीवार थी—पीछे होपीनका कारखाना--दाहिने भी बहुत दूरतक एक लम्बी चौड़ी दीवार चली गयी थी। बायें झाऊका जङ्गल था जिसके उस पार थेम्स नदी कल कल ध्वनिसे वह रही थी।

दीवालके नीचे नीचे चलते हुए दोनों एक मालगुदामके दरवाजेपर पहुंचे। उसको पार करनेपर एक छोटा सा दफ्तर-घर मिला। दफ्तर-घरके बाद वे गुदामघरके आँगनमें आये जहाँ बहुतसी सन्दूकें रखी हुई थीं, सोमने साथीसे पूछा—"इस स्थानका नाम क्या है ?"

गेनापोलीस—अदरखका यह एक छोटासा कारखाना है। इसका प्रधान दफ्तर चीनमें है। वहींसे इसमें अदरखकी आमदनी की जाती है। इस कारखानेका नाम है कनकुश कनशेसन !

गेनापोलीसने फिर कहा—"अभी इस कारखानेका दफ्तर यहां नहीं आया है, परन्तु उसके मैनेजर मिस्टर होपीन पहले

ही से यहां आ गये हैं। जिस गलीमें इस कारखानेका फाटक है, वह लाइम हाउस कज़वेसे जाकर मिल गयी है। हम लोगोंके कारखानेमें जानेके लिये इसी कारखानेके भीतरसे रास्ता गया है। इस गलीसे होकर कोई आता जाता नहीं है। क्योंकि इस गलीमें इस कारखानेके सिवा दूसरा कोई मकान नहीं है। यद्यपि इन दोनों कारखानोंका स्वार्थ एक ही है परन्तु इनमें तनिक भी लगाव नहीं रहता है। इन दोनों कारखानोंके कर्मचारियोंमें परस्पर किसी तरहका भी सम्बन्ध नहीं रहने पाता है। इस लिये मैं भी इस कारखानेसे कोई सम्बन्ध नहीं रखता हूँ। तुम्हें भी ऐसा ही करना होगा। एक बात बहुत ध्यान देनेकी यह है कि, इस कारखानेमें ढुकते और बाहर होते समय तुम्हें बड़ी सावधानीसे चारों ओर देख लेना चाहिये जिससे तुम्हें कोई देख न ले।

इस नये रहस्यको जानकर सोम फिर नागराज गुफाको लौट आया और उस दिनके कामको बड़ी फुर्त्तीसे समाप्त करके आदेशकी प्रतीक्षा करने लगा।

शामको जब सैयद उसके लिये ब्यालू लाया तब उसने सोमके हाथमें एक कागजका टुकड़ा थमा दिया। उसमें सिर्फ इतना ही लिखा था—"६॥ बजे जाना और ठीक दश बजे लौटना।"

ब्यालूको चटपट समाप्त करके सोम भ्रमणके लिये तैयार हुआ।

अठारहवां-परिच्छेद

वहिर्जगत् ।



सन्ध्याका निविड़ अन्धकार क्रमशः बढ़ता ही जा रहा है। आकाशमें काली घटा छायी हुई है। टिप-टाप पानीकी बूँदें भी पड़ रही हैं, जिससे रास्ते कीचड़से भर गये हैं। ऐसे समय किसी भी शौकिये जवानके ऊपर यह शौक सवार न होगा कि चलें एक बार इण्डियन ड्रक रोडकी सैर कर आवें। पर हाँ, गुफावासी सोमकी बात दूसरी थी!

वह वर्षामें भीगता और कीचड़में पाँकता हुआ चला जा रहा है। घोर अन्धकारके कारण, उसे इतना भी पता नहीं कि वह किधर पैर बढ़ा रहा है। नीच-ऊँचका विचार न कर, एक प्रकारसे आंख मूंदकर ही थोड़ी देरतक चलनेके बाद सोमको एक बिजलीबत्ती दिखलायी पड़ी, जहां पहुंचनेपर उसे मालूम हुआ कि, वह एक होटल है। वह तुरत उसमें घुस पड़ा।

होटलके लम्बे हालमें एक टेबुलपर कुछ समाचार पत्र रखे थे। सोम अन्यमनस्क भावसे एक कुर्सी खींचकर टेबुलके पास बैठ गया और एक दैनिक पत्र पढ़ने लगा। थोड़ी देरके बाद होटलका बावर्ची आकर उसके भोजनका प्रबन्ध कर गया। भोजनके उपरान्त सोमने सोचा—अभी तो मुझे चार घण्टेकी

छुट्टी है, यहाँ बैठे रहनेसे क्या फायदा। चलूं एक बार घूम फिरकर शहरके रंगढंग देख आऊं। ऐसा सोचकर वह चट उठ खड़ा हुआ और टोपी सिरपर रखकर होटलसे बाहर हो गया। परन्तु उसके दुर्भाग्यसे इस समय पानी जोरोंसे पड़ रहा था। वर्षाके आगे उसका सारा कौतूहल हवा हो गया। अब वह सोचने लगा—कहाँ बैठकर इस अमूल्य अवकाशोंका सदुपयोग किया जाय?

कुछ दूर जाते ही सामने बिजली बत्तियोंसे जगमगाता हुआ एक थियेटर-घर दिखलायी पड़ा। मनकी फुर्तीमें सारी चिन्तायें भूलकर वह थियेटर देखने चल पड़ा। वहाँ पहुंचकर वह "गैलरी" का एक टिकट खरीदकर बैठ गया।

खेल आरम्भ हो गया था। थोड़ी देरतक वह बड़े आग्रहसे उसे देखता रहा; परन्तु 'खेल' का "प्रोग्राम" दुःखान्त होनेके कारण शीघ्र ही उसका मन उधरसे ऊब गया और वह रंगमंचसे दृष्टि हटाकर इधर उधर दर्शकोंको देखने लगा। देखते देखते उसकी नजर एक कोनेमें दो आदमियोंके ऊपर जा पड़ी जो उसीकी तरह अभिनयसे अधिक आकृष्ट न होकर किसी विशेष उद्देश्यसे दर्शक-मंडलीकी ओर देख रहे थे। ये दोनों अन्य-मनस्क सज्जन उसकी बेंचके आगेकी बेंचपर कुछ दाहिने हटकर बैठे थे। इसलिये उनकी बातें उसे साफ सुनायी पड़ती थीं। वह कान खड़ेकर उनकी सन्देहपूर्ण बातें सुनने लगा।

एकने कहा—"लन्दनमें तो हजारों राजा साहब हैं।"

राजा साहबका नाम सुनते ही सोम सिमटकर बेंचके ऊपर बैठ गया। इस समय भयसे उसके रोंगटे खड़े हो गये थे। उसने बैठे बैठे ही दूसरेको बात सुननेकी चेष्टा की।

दूसरा—यही तो मुश्किल है। तुम तो जानते ही हो, मैक्सकी इस मामलेके सम्बन्धमें एक दूसरी ही धारणा है। वह एक दूसरे ढंगसे इस मुकदमेकी जाँच करना चाहते हैं। पर मेरा ख्याल है, कि यदि हम सोमको पा गये—और मैं जोर देकर कह सकता हूँ कि वह लन्दन छोड़कर कहीं नहीं गया है—तो राजा साहबको खोज निकालना हमारे लिये कठिन न होगा।

इसी समय खेल खतम हो गया और दर्शक-मण्डलीकी तालियोंसे रंगालय गूँज उठा। सोमका सारा बदन इस समय पसीनेसे तर हो रहा था। उसने धीरे धीरे अपना सिर उठाया। सौभाग्यसे इस समय बत्तियोंकी रोशनी धीमी कर दी गयी थी, इसलिये सोमको अपने दोनों शिकारियोंकी नजर बचाकर भीड़में मिल जानेमें अधिक सुविधा हुई।

भीड़में घुसकर असीम साहससे उसने एक बार अपने शत्रु-ओंकी ओर देखा—हाय वह लम्बा आदमी तो वही शैतान जासूस है जिसने लिरो साहबकी कोठरीमें तलासी लेते समय उसे बैठनेकी आज्ञा दी थी।

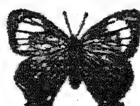
सोमके सामने ऐसी भयङ्कर अवस्था कभी न आयी थी; यहांतक कि राजा साहबकी मुलाकात भी इसके सामने

बहुत ही तुच्छ और तुलनामें, सुखकर थी। इस समय अपने वेश-परिवर्त्तन करनेकी बात याद पड़ जानेसे उसके हृदयमें कुछ आशा बँधी। उसने सोचा—क्या चिन्ता है, सैयदने मेरा रंग बदलकर मुझे जापानी बना दिया है। किसकी सामर्थ्य है जो मुझे पहचान सके ? परन्तु दूसरे ही क्षण उसे आशंका हुई—नहीं, नहीं, "स्काटलैंड यार्ड" के जासूस इतने धूर्त्त होते हैं कि रङ्गके धोखेमें वे कभी नहीं पड़ते। वे लोग चेहरेके रङ्गसे आदमीकी परख न कर शरीरके किसी ऐसे स्वाभाविक चिह्नको लक्ष्य कर लेते हैं जिसका बदलना सम्भव नहीं। कौन जानता है, इस शैतानने मेरी कौनसी बारीकीपर ध्यान दिया है ? हा ईश्वर ! मैं क्या करूं ! किधर जाऊँ ?"

इसी समय उस नाटे जासूसने धीरेसे कहा—"मैंने अच्छी तरह देख लिया। यहाँ कोई नहीं हैं—अब चलिये, निकल चलें।

दूसरा—"हां चलो, डकगेटसे हम दोनों होते चलें। वहाँ नौ बजे मुझे स्टींजर साहबसे भेंट करनी है।"

इतना कह स्काटलैण्ड यार्डवाले थियेटरसे बाहर निकल गये।



उन्नीसवां परिच्छेद

जीवन्मृत



अपने शत्रु, शैतान जासूसोंके दर्शनमात्रसे ही मिस्टर सोमका सारा उत्साह और कौतूहल हवा हो गया। नगर-परिदर्शनकी अतृप्त आकांक्षाको लेकर वह चुपचाप कारखानेकी ओर रवाना हुआ। उसे अब निश्चय हो गया कि नागराज गुफाके सिवा समस्त संसारमें मेरे लिये जाल बिछा हुआ है। मैं बाहर निकला कि फँसा! ऐसा सोचकर वह थियेटरसे निकला और कीचड़ भरे रास्तेमें पाँकता अदरखकी गुदामकी ओर चला।

सोमके लिये अभी पूरे एक घंटेकी छुट्टी थी। यदि वह चाहता तो इस अवकाशको स्वच्छन्दतासे बाहर बीता सकता था। परन्तु वह आदमी स्वतन्त्रतासे क्या लाभ उठा सकता है जिसे प्रति पदविक्षेपपर शत्रुओंके आक्रमणका भय लगा हुआ हो, जो प्रति क्षण गली-कूचे और बाँस-झाड़ीमें छिपे हुए जासूसोंके आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहा हो, जिसके कान प्रति मुहूर्त्त धोखा दे रहे हो, कि उसके कंधेपर हाथ रखकर कोई कह रहा है—"सोम! मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया!"

ऐसी ही नाना प्रकारकी कल्पना और आशंकाओंके कारण

भयचकित-नेत्रोंसे चारों ओर देखता हुआ वह पैर बढ़ाये गुफाकी ओर अग्रसर होने लगा—इस समय मानों अदरखकी गुदाम भी उसके विरुद्ध होकर पीछे हटती जाती थी—रास्ता खतम होनेका नाम ही न लेता था। जब वह थेम्स नदीके निकट-वर्त्ती हुआ तब झिल्लीके झनकार और नदीकी कल कल ध्वनिने उसको जरा जीवनकी आशा और भरोसा दिया; क्योंकि इस स्थानपर आलोक-स्तम्भ दैत्योंकी तरह मुंह बाये उसे निगल जानेके लिये खड़े नहीं थे और न शैतान जासूसका हाथ ही यहाँ उसकी गर्दनतक पहुंच सकता था। यह स्थान घोर अन्धकार-सागरमें डूबा हुआ था। सोमने भी अपनी प्रेतात्माको इसी अन्धकारमें डूबो दिया!

अन्धकारमें लुढ़कता हुआ वह किसी तरह गुदामके पास पहुंचा परन्तु अब खिड़कीका पता लगाना ही उसके लिये कठिन हो गया। बहुत देरतक दीवाल पकड़कर टटोलनेके बाद उसे खिड़की मिली और किवाड़ें खोलकर वह भीतर घुसा।

इस स्थानका रास्ता उसे मालूम न था इसलिये जेबसे दियासलाई निकालकर उसने जलायी और उसकी धीमी रोशनीमें चारों ओर नजर दौड़ानेपर उसे मालूम हुआ कि वह नागराज गुफाके पास है। इसके सिवा उसने जो दृश्य अपनी आंखोंके सामने देखा उससे उसके भय और आश्चर्य्यकी मात्रा और भी बढ़ गयी!

नागराज गुफाके गुप्त द्वारको सैयद्के खोलनेकी बात थी परन्तु क्या आश्चर्य ! यह तो अपने आप खुला हुआ है !

गैनापोलीसके कहनेके अनुसार वह खिड़कीके पास लगी हुई बत्तीकी 'स्विच' को दबानेके लिये हाथ बढ़ाया ही था कि, इस अद्भुत दृश्यको देखकर वह ठिठक गया। इस समय दियासलाईकी बत्ती जलकर अंगुलियोंतक आ गयी थी इस लिये उसे बुझाकर उसने पैरोंसे दबा दिया। अब उस घोर अन्धकारमें उसने देखा कि गुप्त दरवाजे वाले कमरेमें नीचेसे एक पतली रोशनी आती हैं।

सोमने कमरेके दरवाजेपर जाकर एक और भी आश्चर्य्य-जनक रहस्यका आविष्कार किया—कमरेके बीचमें चार पत्थ-रोंके टुकड़े अगल बगल हटे हुए थे और उसी छेद्से होकर नीचेसे बत्तीकी रोशनी आ रही थी। छेद्के नीचे देखनेपर मालूम हुआ कि गभीर-सलिला थेम्स कल कल ध्वनिसे मधुर संगीत गाती हुई वही चली जा रही है। यह क्या! नदीके ऊपर यह जहाज कैसा! इसका क्या अर्थ! नागराज क्या नदी गर्भपर बसते हैं ?

नहीं, नहीं, भयसे मेरी बुद्धि मारी गयी है। वह नीचे सोढ़ीके पासके कमरेमें मेरी श्वेत-फेननिभ-शय्या लगी हुई है। यह जरूर ही मेरा भ्रम है। परन्तु चुप! जहाजसे यह बात चीतकी आवाज आ रही है न ? अच्छा जाने दो—मैं आगे बढ़ूं।"

उस जादूपूर्ण कमरेसे निकलकर सोम सीढ़ीसे धीरे धीरे नीचे उतरा और नागराज गुफाके पास जाकर देखा कि उसका भी द्वार खुला है और भीतर बिल्कुल सूनसान पड़ा है। यहाँतक कि उस विस्तीर्ण दालानके चिर-अधिष्ठाता होपीन साहबका भी पता नहीं है!

दालानमें चारों ओर ध्यान देकर देखनेपर सोमको निश्चय हो गया कि यही नागराजकी गुफा है, इसमें जरा भी शक नहीं, क्योंकि ठीक सामने नागराजकी मूर्त्ति रखी हुई है। अगल बगलमें वही दरवाजे, वही खम्भे और वही पथरीली दीवालें सब कुछ वही है! परन्तु आदमी तो वही नहीं हैं!

इसके अलावे जो कुछ कमरेमें नवीनता है वह भी वही नहीं है। बायीं बगलमें दीवालके रंगसे मिला हुआ जो दरवाजा उसने पहले देखा था और जो आजतक कभी भी खुला न था वह आज एकदम खुला हुआ है! उस दरवाजेसे भीतर झाँकनेके कौतूहलको वह दमन न कर सका। पैर दबाकर ज्योंही वह उस दरवाजेके पास गया कि भीतरसे एक विचित्र गंध—अफीम जैसा—उस कमरेके भीतरसे आकर उसकी नाकोंमें भर गया। ध्यानसे देखनेपर उस कमरेमें एक विशेषता और भी मालूम हुई। यह कमरा भी ठीक वैसा ही था जैसा कि नाग राजकी गुफासे ब्लाक ए० में जाते समय मिलता है।

क्षणभर वह वहीं खड़ा रहा। फिर चौंककर पीछे हट गया।

"ऐं! यह चीत्कार कैसा? यह तो किसी रमणीका करुण

क्रन्दन—मर्मभेदी अस्फुट क्रन्दनध्वनि प्रतीत होती है ! हा भगवान यह ध्वनि तो आगेके कमरेसे नहीं आती है ! यह तो कहीं पीछेसे आती है—ठीक ब्लाक ए० की ओरसे !"

चुप ! सुनो—"दुहाई तुम्हारी ! ईश्वरके नामपर—धर्मके—नामपर—एक बार दया करो—मुझे छोड़ दो !"

आवाज क्षीणतर—अस्फुटतर होकर विलीन हो गयी—"मुझे—जाने दो !!!"

सोमके पैर, भयसे इतने काँपने लगे कि खड़ा होना उसके लिये कठिन हो गया। उसने दौड़कर चट दीवाल पकड़ ली। दीवालके सहारे ब्लाक ए०का दरवाजा खोलकर वह भीतर घुसा और अपने दरवाजेके पास जाकर धीरेसे दरवाजा खोलने लगा। इसी समय पीछेसे आवाज आयी—"हीना एफिन्दी—हीना।"

यह तो सैयदकी आवाज मालूम होती है।

सोमने गिड़गिड़ाकर कहा—"भाई ! ईश्वरके नामपर मेरी रक्षा करो—"

"इमस्किक !"

पत्थरकी सीढ़ियोंसे पैरोंकी आहट आने लगी। कोई गुदामकी ओरसे जल्दी २ नीचे उतरकर आ रहा था। फिर वही स्त्रीका करुण रुदन ! अब नहीं, अब सोमके लिये इस तिलिस्म-जालमें रहना असह्य हो गया—उसके ललाटसे पसीना छूटने लगा—सिर चक्कर खाने लगा—वह लुढ़ककर धड़ामसे जमीनपर गिर गया। फिर उठा और अपनी सारी शक्ति लगा

कर जल्दी जल्दी दरवाजा खोलने लगा।

अब होपोनकी आवाज बहुत ही निकटसे आयी—"इकफिल पल-बाब !"

"मुझे जाने दो—जाने दो—मैं एक बात भी न कहूंगी—ऊः ऊः ऊः अब सूई अधिक न घुसाओ—ओः तुम तो मुझे मार रहे हो—नहीं—अब मत !"

किसी तरह दरवाजा खोलकर लुढ़कता हुआ सोम अपने कमरेमें घुसा और धड़ामसे फर्शपर गिरकर लोट गया। ठीक इसी समय नागराज गुफाके दूसरे किनारेसे एक और आदमीके गिरनेकी धीमी आवाज आयी।

पतन शब्दके साथ साथ एक और चीख हृदयके मर्म—अभेद्य—स्थानसे निकलकर बन्दूककी गोलीकी तरह सनसनाती हुई आकर सोमके कानोंमें घुस गयी। सारे बदनको बिछौनेमें समेटकर उसने जोरसे अपने कान बन्द कर लिये। आजतक सोमको कभी गश नहीं हुई थी उसके लक्षणोंसे वह बिल्कुल अनभिज्ञ था। तो भी, इस समय उसे प्रतीत हुआ कि उसकी चेतना क्षीण होती जा रही है, पैरोंके नीचेसे पृथ्वी हटी जा रही है, आँखोंके सामने लाल पीला कुहरा छा गया है और चलते हुए जहाजके तख्तेकी तरह घरकी सारी फर्श हिल रही है।

उसी क्षीण—विगतचेतन अवस्थामें सोमको आभास हुआ, कि कई आदमी मिलकर किसीको घसीटे लिये जा रहे हैं, जिसकी काँपती हुई लम्बी सांसें मर्मभेदी उच्छ्वासोंमें विलीन

होकर फिर अस्फुट क्रन्दनमें परिणत होती हैं। नागराजके परवर्त्ती प्रकोष्ठमें ले जानेपर रमणी पुनः विलीयमान स्वरमें बोली—"नहीं राजा साहब, अब नहीं! ईश्वर देखता है—दया करो अब भी जान—"

इस मर्मभेदी करुण क्रन्दनसे अपनी जान बचानेके लिये सोमने चाहा कि दरवाजा बन्द कर लूं। इस मतलबसे वह धीरेसे दीवाल पकड़कर उठा और दरवाजेको बन्द करके उसीके सहारे खड़ा हो गया और अपनेको सम्हालनेकी चेष्टा करने लगा।

दरवाजेके बन्द करते ही रमणीका व्यथित स्वर विलीन हो गया। अब सोमके कानोंमें ऊपरसे हड़हड़-भड़भड़ और सायँ सायँ फिस-फिसकी आवाज आने लगी। उसने ऊपर नजर उठाकर देखा तो नागराज गुफाकी ओरका उसका जंगला खुला मिला। यह क्या! यह जंगला तो कभी खुला नहीं रहता था! जरूर, इसी जंगलेसे होकर उस कमरेकी आवाज सुनायी पड़ती है।

ब्लाक ए० का कार्य्य भार सोमको देते समय उसे बता दिया गया था कि कमरोंमें जितने जंगले-दरवाजे और असबाब-पत्र हैं वे सभी "शब्द निरोधक" हैं अर्थात् उनके प्रभावसे, एक कमरेकी आवाज पासके ही दूसरे कमरेमें नहीं सुनी जा सकती। परन्तु जब दोनों कमरोंके दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द रहेंगी तभी ऐसा होना सम्भव है, नहीं तो यदि एक भी

दरवाजा या खिड़की खुली रहेगी तो पासका शब्द सुना जा सकता है।

इसलिये सोमको अनुमान करनेमें देर न लगी कि होपीन साहबकी सतर्कतापूर्ण व्यवस्थामें जब आज अस्वाभाविक व्यतिक्रम हुआ है तब अवश्य ही कुछ न कुछ दालमें काला है।

तो क्या वह सायँ-सायँ फिस-फिसकी आवाज ब्लाक बी० की ओरसे आ रही है? ऐं! यह आवाज तो भगदड़की सी मालूम होती है—मानों सभी व्याकुल होकर इधर उधर दौड़ धूप कर रहे हैं—खानातलासी तो नहीं होती है?

सोम धीरे धीरे आकर बिछौनेपर आँखें मूँदकर लेट गया, नाना प्रकारकी आशंकायें समुद्रकी लहरोंकी तरह एक एक करके उसके मनमें उठने लगीं—पुलीसने होपीनके कार्य्यालयका पता तो नहीं लगा लिया? नहीं, जासूसोंके हाव-भावसे तो ऐसा नहीं प्रतीत होता था। तब क्या सारी करामात इन्हीं लोगोंकी है? जरूर! मैं अपनी भूलसे इस रहस्य जालमें आ पड़ा हूं! अपनी छुट्टीके एक घंटे पहले ही मैं लौट आया हूं इसीलिये ये नयी नयी आश्चर्य्यजनक घटनायें मुझे देखनेमें आती हैं। सम्भवतः इन सारी घटनाओंको मुझसे गुप्त रखने हीके मतलबसे इन लोगोंने मुझे बाहर निकाल दिया था। यदि यही बात है तब तो होपीन, यह रहस्यभेद करनेके कारण मुझे बहुत तंग करेंगे! हाय भगवान! मैं इस चीना शैतानसे कैसे जान बचाऊँगा! ओः! कोई चिन्ता नहीं! उसको झूठमूठ बहाना

करके धोखा दे दूँगा ! बस ! अच्छा, किवाड़के सहारे ऊपर चढ़कर झरोखेसे झाँकनेसे तो मैं इनकी सारी करामात देख सकता हूं । पर नहीं, खतरेके काममें हाथ डालना अच्छा नहीं । यदि इसी बीचमें कोई आकर पकड़ ले तो मुझे जीता न छोड़ेगा अच्छा चलूँ, एक बार दरवाजेके पास चलकर सुनूँ तो सही ।"

इस तरह सोच विचार करता हुआ सोम फिर साहस करके उठा और दरवाजेके सहारे पीठ करके खड़ा हुआ।

खिड़कीसे फिर रुँधे गलेकी आवाज आने लगी। उसके रुकते ही कमरेको गूँजाती हुई एक आवाज उठी परन्तु वह होपीन साहबकी नहीं थी।

फिर निस्तब्धता छा गयी। दो मिनिट–तीन मिनिट— चार मिनिट–देखते देखते पाँच मिनिट बीत गये। वह ज्योंका त्यों किवाड़के सहारे हतचेतन भावसे खड़ा रहा ।

फिर एक क्षीण शब्दसे उसका ध्यान झरोखेकी ओर आकर्षित हुआ।

उसने देखा कि अभिनयपूर्ण प्रकोष्ठसे नीलवत्तीकी रोशनी झरोखेको पार करती हुई, उसके कमरेकी दीवालपर पड़ती है। उसी रोशनीपर नजर रखकर वह उन लोगोंकी फिस-फिसाहट सुननेकी चेष्टा करने लगा। हठात् उस रोशनीपर एक मनुष्यकी छाईं पड़ते ही वह चौंक पड़ा—ऐं ! यह तो किसी औरतका मुखड़ा है ! इसे तो मैंने कहीं देखा है !

सामने लपककर बिछौना पकड़ना चाहा परन्तु हाय ! पैरोंके

नीचेसे पृथ्वी हट गयी ! मानों वह आकाशमें उड़ा हुआ जाने लगा—धमसे जमीनपर गिरा और मूच्छित हो गया।

कबतक वह चेतनाहीन अवस्थामें रहा उसे मालूम नहीं परन्तु जब उसने बड़ी चेष्टासे आँखें खोलीं तो चारों ओर घोर अन्धकार था। अब न तो दीवालपर पड़ती हुई वह नील रोशनी ही थी और न झरोखा ही खुला था। सभी चीजें उसे बिल्कुल स्वाभाविक और नियमित मालूम होने लगीं। तो क्या इतनी देरतक वह स्वप्न देख रहा था ?

दरवाजेके पास किसीके पैरोंकी आहट हुई। किसीने धीरेसे किवाड़ खोलकर बत्तीकी 'स्विच' दबायी। एकाएक कमरेमें रोशनी फैल गयी।

होपीन खड़े होकर आश्चर्यसे सोमकी ओर ताक रहे थे।

बिल्लीको देखकर चूहा जैसे दबक जाता है, वैसे ही सोम, चीनाको देखकर तकियेके ऊपर सिर छिपाकर पड़ा रहा। ऐसी मुद्रा बना ली मानों वह गाढ़ी नींदमें सोया हुआ है। होपीनने धीरे धीरे उसके बिछौनेके पास जाकर कोमल स्वरमें दो तीन बार पुकारा।

जब उसने कोई उत्तर नहीं दिया तब वह उसके कन्धेको पकड़कर हिलाने लगे। अब सोमने अकचकाकर तकियेसे मुख उठाया और आँखें मींचते हुए उठ बैठा।

होपीनने अपनी स्वाभाविक अमायिक मुस्कुराहटके साथ पूछा—"मिस्टर सोम ! तुम तो बहुत जल्दी लौट आये हो ?"

सोमने कातरस्वरमें कहा—"मेरी तबीयत बहुत खराब हो गयी थी। इसलिये······"

"इसलिये तुम अपनी छुट्टीसे पहले ही लौट आये हो?"

अपने ललाटपर हाथ रखकर दबाते हुए सोमने कहा—"जी हाँ।"

"अच्छा, मिस्टर सोम! तुमने यहां लौटकर कोई नयी बात तो नहीं देखी थी?"

सोमकी छाती धड़कने लगी। उसने बड़ी चेष्टासे कहा—"जी नहीं—मैं तो यहाँ आते ही सो गया था?"

होपीनने धीरेसे सिर हिलाया परन्तु उनकी तीक्ष्ण दृष्टि सोमके चेहरेसे न हटी। अपनी आवाजको यथासाध्य कोमल बनाकर उन्होंने फिर पूछा—"तुमने कुछ भी नहीं देखा है?"

"जी नहीं।"

"सुना भी कुछ नहीं है?"

"जी नहीं, मुझे आँखें खोलनेकी तो ताकत ही न थी फिर देखता और सुनता कैसे?"

हांपीनने फिर धीरेसे सिर हिलाया और सहानुभूतिके स्वरमें कहा—मिस्टर सोम! तुम्हारे लिये अभी कोई दवा भेजता हूँ। तुम चुपचाप पड़े रहो। इसके बाद धीरे धीरे दरवाजा बन्दकर वह कमरेसे बाहर चले गये;

———

बीसवां परिच्छेद ।



पैरिसका रहस्य ।

बहुत रात गये जब हेलन कम्बरली और डेनिस रिलैंड नैश-भ्रमण करके लिरो साहबके साथ घर लौट रही थीं तो रास्तेमें अकस्मात् एम० मैक्ससे उनकी भेंट हो गयी। बहुत कन्नी काटनेपर भी जब डेनिसने उनका पिण्ड न छोड़ा तब मैक्सको भी बाध्य होकर उन लोगोंके साथ पैलेस मैन्सनतक आना पड़ा। रास्तेमें मिस डेनिसने अपने नवपरिचित मित्रका लिरो और हेलनसे परिचय करा दिया। मैक्सकी वाक्चातुरीको देखकर हेलनको पहले तो उनपर कुछ सन्देह हुआ था परन्तु थोड़ी ही देरके आलाप परिचयसे वह उनपर मुग्ध हो गयी।

दरवाजेतक आकर जब एम० मैक्स अपने साथियोंसे विदा होने लगे तब डेनिस रिलैंडने बड़े आग्रहपूर्वक कहा—"क्या आप डाक्टर कम्बलीसे बिना भेंट किये ही चले जायँगे? दरवाजेसे आपका लौट जाना सुनकर डाक्टर साहब सचमुच बड़े ही दुःखित होंगे।"

मैक्स अब कोई प्रतिवाद न कर सके। उन्होंने अपने साथियोंके साथ पैलेस मेन्सनमें प्रवेश किया।

डेनिस रिलैंडसे नवागत अतिथि एम० गैस्टोन (जितना वह जानती थी) का परिचय पाकर डाक्टर कम्बरलीने उन्हें बड़े आदरसे बुलाकर उनकी बड़ी आवभगत की और एक चेयर पर बैठनेका अनुरोध करके सिगरेटका एक वाक्स उनके सामने रख दिया ! अभ्यागत भी निःसंकोच भावसे धीरे धीरे वाक्सका भार हलका करनेकी चेष्टा करने लगे।

उसके बाद जब महिलायें अपना वस्त्र बदलनेके लिये अपने अपने कमरेमें चली गयीं, तब एम० गैस्टोनने चारों ओर देखकर कहा—"डाक्टर कम्बरली, क्या मैं आपसे किसी अनुग्रहकी आशा कर सकता हूँ ?"

डाक्टरने समझा, कोई चिकित्सा-सम्बन्धी परामर्शकी बात होगी। उन्होंने आग्रहसे कहा—"जरूर मिस्टर गैस्टोन मैं हरघड़ी तैयार हूं। कब ?

मैक्स—कल सबेरे यदि आप हालीं होटलमें मिलें तो मैं बहुत ही अनुग्रहीत होऊंगा।

डाक्टरने विस्मयसे उनकी ओर देखा। फिर बोले—"कोई चिन्ताकी बात तो नहीं है ?"

मैक्सने मुस्कुराकर कहा—"नहीं साहब, व्यवसाय-सम्बन्धी कोई बात नहीं है। इसे आप अर्द्ध व्यावसायिक प्रसङ्ग कह सकते हैं। अर्थात् इसमें केवल मेरा ही स्वार्थ है। क्या आप दश मिनटका समय मुझे दे सकेंगे ?"

डाक्टरने भौंहें सिकोड़कर सोचते हुए कहा—"शायद कल

सवेरेके लिये कितनी ही जगहोंसे बुलाहट आयी है। रहिये, एक बार अपनी डायरी देख लूं—हार्लो होटलकी ओर सम्भवतः कल मेरी बुलाहट नहीं है। अच्छा, हम लोगोंका भोजन क्या एक साथ यहीं नहीं हो सकता ?

मेक्सने सिगरेटका एक लम्बा दम खींचकर कमरेको धुएंसे भरते हुए कहा—कई कारणोंसे मैं चाहता हूं कि हमारा साक्षात् व्यवसायिक हो।

अपने अतिथिकी बातें सुनकर डाक्टर साहबको बहुत आश्चर्य हुआ, परन्तु उन्होंने यह भी सोचा कि अपरिचित मनुष्यकी इस सम्बन्धमें आपत्ति होनी स्वाभाविक ही है ?

अपनी डायरी देखकर डाक्टर साहबने पूछा—क्या आप हार्लो होटलमें ६॥ बजे मिल सकते हैं ? क्योंकि मुझे जितने बुलावे हैं, वे सभी दश बजेके बादके हैं। इसमें आपको कोई असुविधा तो नहीं होगी ?

मैक्स—कुछ भी नहीं; इससे मुझे फायदा ही होगा।

इसी समय हेलन और उसकी फ्रांसीसी सखीके आ जानेसे वह प्रसङ्ग यहीं बन्द हो गया। अब दोनों युवतियोंने उस दिनके खेलकी चर्चा छेड़ दी। नाटकके सम्बन्धमें सभी अपना अपना व्यक्तिगत मत प्रकट करने लगे।

वहाँसे विदा होकर एम० मैक्स ह्वाइट हालकी ओर चले। निशीथ कालके घोर अन्धकारमें लन्दनके इस मुहल्लेमें बहुधा ऐसे नाटकीय दृश्य देखनेमें आते हैं जिन्हें वहांके निवासी भले

ही अवहेलनाकी दृष्टिसे देखते हों पर एक सूक्ष्मदर्शी अनुभवी जासूस परिव्राजककी दृष्टिमें वे कभी तुच्छ नहीं प्रतीत हो सकते। इस मुहल्लेमें कोई ऐसा स्वाभाविक आकर्षण था जो एम० मैक्सको समय असमय इधर ही खींच लाता था। वहाँ उन्हें आलोचनाकी सामग्रियोंका अभाव नहीं होता था।

उनकी अनुभवसिद्ध दृष्टिमें चोर-साधु—नीर-क्षीरको बिलगानेकी विचित्र शक्ति थी इसलिये इन दृश्यावलियोंसे उन्हें विशेष आनन्द मिलता था।

दूसरे दिन अपनी नित्यक्रियासे छुट्टी पाकर एम० मैक्सने अपनी फ्रांसीसी पोशाक धारण की। (जासूसकी मातृभूमि चाहे जो हो लन्दनमें उन्होंने एम० मैक्स फ्रान्सीसीके नामसे ही अपना परिचय दिया था।) नव बजेके भीतर कितने ही आवश्यक कार्य्योंको पूराकर और कितने ही परिचित अभ्यागतोंको कुशल प्रश्नसे सन्तुष्टकर वह हार्लो होटलकी ओर चले।

ठीक ६॥ बजे एम० मैक्सने उक्त होटलके फाटकपर पहुँचकर देखा कि गार्नहाम दरवाजेपर खड़ा है। गार्नहाम डाक्टर साहबका बड़ा विश्वासी नौकर था। मैक्सके पहुंचते ही वह उन्हें ऊपर ले गया और एक कमरेके दरवाजेतक पहुंचाकर अपने स्थानपर लौट आया।

कम्बरलीने उठकर एम० मैक्ससे हाथ मिलाते हुए कहा—"नमस्कार, मिस्टर गैस्टोन, बैठिये, हम अपने कामकी बातें करें। मैं आपको पूरा आध घण्टेका समय दे सकता हूँ।

मैक्सने प्रत्युत्तरमें, अपनी जेबसे कार्डोंका एक बण्डल निकाला और उनमेंसे एकको चुनकर टेबुलपर रख दिया। कम्बरली उस कार्डपर नजर रखते ही चौंककर मैक्सको सिरसे पैरतक आश्चर्यसे देखने लगे। मानों उनकी देहसे वह कोई नया रोग खोज निकालनेकी चेष्टा कर रहे थे!

कुछ देरके बाद अपनी नीली आँखें अभ्यागतके चेहरेपर रख डाक्टरने कहा—"आप एम० गैस्टोन मैक्स हैं! मेरी लड़की तो कहती थी कि आप—"

मैक्सने हाथ जोड़कर नम्रतासे कहा—मैं इसके लिये क्षमा चाहता हूँ। मैंने आपकी लड़की और मिस डेनिसको झूठा परिचय दिया है। किसी विशेष कारणसे ऐसा करनेको मैं बाध्य हुआ हूं। परन्तु आपके साथ ऐसा कपट-व्यवहार करना मैंने उचित नहीं समझा है।"

कम्बरली—"ओ! समझा! परन्तु—"

मैक्स बीच हीमें बोल उठे—हाँ मैं मानता हूं, कि मेरा यह व्यवहार बहुत ही आपत्तिजनक हुआ है परन्तु मेरे व्यवसायमें यह अपराध क्षम्य है।

कम्बरली—परन्तु आप तो उन दोनोंसे मित्रवत् व्यवहार करते हैं।

मैक्स—यह ठीक है, परन्तु मित्रतामें भी कभी कभी ऐसे कपट व्यवहारोंकी आवश्यकता पड़ जाया करती है। थोड़े दिनोंके लिये मुझे यह कपट व्यवहार करना ही पड़ेगा। इसके लिये आप मुझे क्षमा करें।

कम्बरली—अच्छा, इस बातको जाने दीजिये। आपने अभी पेशेका जिक्र किया है, तो क्या आप लन्दनमें किसी मुकद्मेकी जाँच करने आये हैं? मुझे आप निसंकोच भावसे बता सकते हैं। आपके पेशेको मैं बहुत ही आदरकी दृष्टिसे देखता हू।

मैक्स—सुनकर मैं खुश हुआ कि आप जैसा विख्यात चिकित्सक मेरे पेशेका हिमायती और पृष्ठपोषक है। परन्तु आपको यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि यह पेशा बहुत ही दायित्वपूर्ण और विपदसङ्कुल है। हरघड़ी मुकद्मे और चोर डाकुओंकी चिन्ता बनी रहती है। यही देखिये न, मैं एक मुकद्मेको लेकर आज दो बरससे परेशान हो रहा हूँ—देश विदेश मारा मारा फिरता हूं परन्तु उसका कोई फैसला ही नहीं होता। इस बार इसी नगरीमें मुझे कुछ आशा दीख पड़ी है। इसलिये आज-कल मैं यहीं जमकर बैठ गया हूं। उस दिन आपके मकानमें जो खून हुआ था उसका विवरण जाननेके लिये मैं व्याकुल हो रहा हूँ, इसी लिये मैंने आपको कष्ट दिया है।

कम्बरलीने अपनी कुर्सी आगे बढ़ाकर जासूसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टिसे देखते हुए कहा—आपने समाचार पत्रोंमें मेरी गवाही पढ़ी होगी। मैं समझता हूं कि उसकी अपेक्षा उस विषयमें अधिक कोई सहायता मैं आपको न दे सकूंगा। मैंने सुना है कि आपने इस मुकद्मेका भार अपने ऊपर लिया है। मैं पूछ सकता हूं कि किस उद्देश्यसे आप लन्दनकी पुलीसके काममें सहायता दे रहे हैं?

मैक्स अपनी आरामकुर्सीपर आरामसे लेटकर बोले—डाक्टर साहब, कुछ ही दिन पहले यदि आप पैरिस गये होते तो आपको एक बहुत ही विचित्र तमाशा देखनेको मिलता। ऐसी चीजें बहुत ही कम देखनेको मिलती हैं। आप पैरिसमें क्लाउड स्ट्रीटके मोड़पर तो कभी न कभी जरूर ही गये होंगे। वहाँ केग्लियो नामक एक विख्यात जादूगर रहता था। उसका नाम तो आपने सुना होगा ?

कम्बरली—मैं इधर दो बरसोंसे पैरिस नहीं गया हूं और केग्लियो कैसा जीव था इसका भी मुझे कोई पता नहीं। कहिये तो क्या बात है ?

मैक्स—अच्छा, सुनिये, यह कहानी आपको सुनानेके लिये मैं तैयार होकर आया हूं। उपरोक्त मोड़पर कई मकान पुराने हो जानेके कारण म्युनिसिपेलीटीने आजकल उन्हें गिरवा दिया है। एक दिन मैं मारक्कोस स्ट्रीटसे घूमता हुआ उसी मोड़पर जा निकला। सामने विख्यात तिलस्मी केग्लियोंके १ नम्बरवाले मकानको गिरा हुआ देखकर मुझे बड़ा कौतूहल हुआ—मैं बेकार तो था ही उस मकानके खण्डहरमें घुस गया। और नाना रहस्योंके रङ्गमञ्च उस जादूघरको घूम घूमकर देखने लगा। देखते देखते मेरी नजर पासवाले मकानके एक कमरेमें जा पड़ी। जहां मैं खड़ा था, वहीं उस मकानका एक झरोखा था। उसीके जरिये मुझे कुछ देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इक्कीसवां परिच्छेद.

सेंट क्लाउडकी तलाशी।



वस कहने लगे—"पापका बोझ हलका करनेके अभिप्रायसे सम्भवतः किसी नौकरने भूलसे वह खिड़की खुली छोड़ रखी थी। खैर, जो हो मैंने जो देखा था वही कहता हूं। जिस कमरेमें मेरी दृष्टि गयी थी वह बहुत ही विचित्र सामानोंसे सजाया हुआ था, इसीसे उस ओर मेरा ध्यान बहुत जल्द आकर्षित हो गया। वह कमरा जहाजके केबिनोंसे बहुत कुछ मिलता जुलता था। दीवारोंपर रङ्ग बिरंगे कागज चिपकाये हुए थे और फर्शपर बहुतसे चीनी मिट्टीके बने वर्त्तन रखे थे। जब मेरी पहले फेरी दृष्टि उस कमरेमें पड़ी तो वहां कोई आदमी न था परन्तु थोड़ी ही देरमें एक चीना आकर झट दरवाजा बन्दकर चला गया।

मैं समझ गया कि कल्पना देवीका कोई स्वर्गदूत मेरे आगमनको ताड़ गया है—मैं यहां आपसे कह रखता हूं कि कई महीने पहलेसे मैं अफीमके अड्डोंके पीछे पड़ा था। उस दिन मैंने उनके कार्य्यालयको अपने सामने देखा।

क्रावरली चौंककर उठ बैठे। वह कुछ बोलना चाहते थे परन्तु मैक्सने इशारेसे उन्हें मनाकर अपना वक्तव्य जारी रखा—

"मैं बहुत दिनोंसे अफीमके अड्डों और अफीमचियोंकी खोजमें लगा हुआ था परन्तु मुझे किसी तरह भी सफलता न मिलती थी। इस विषयकी पूरी जानकारी प्राप्त करनेके लिये मैंने एक साल अफीमकी जन्मभूमि चीनमें भी बिताया। वहां रहनेसे इस नशाके विषयमें मुझे पूरी जानकारी प्राप्त हो गयी। चीनसे लौटनेपर मैंने शान फ्रान्सिस्कोके एक नामी मामलेको अपने हाथमें लिया। अमेरिकाकी पुलीसके साथ मिलकर मैंने उस मामलेके सम्बन्धमें जो नये नये अद्भुत आविष्कार किये उन्हें मैं कभी नहीं भूल सकता। तबसे मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि इस भीषण नशाखोरीको यूरोपसे निकाल बाहर करूंगा। उस मामलेके थोड़े ही दिनों बाद मुझे पता लगा कि पैरिसमें अफीमका एक बड़ा भारी कारखाना खोलनेकी चेष्टा हो रही है। मैं इस षड्यन्त्रको निष्फल करनेके लिये कमर कस कर तैयार हो गया। मैंने सोचा—साँपके बच्चेको जन्मते ही मार डालना अच्छा है।

मैं अपनी आशङ्काको बहुत दिनोंतक पोसनेवाला आदमी नहीं हूं। जैसे ही मुझे चीना साहबकी कुटिया मिल गयी और अफीमके कारखानेका सन्देह हुआ मैंने चट पुलीसको खबर देकर मकानको घेर लिया और तलाशी आरम्भ कर दी।

कम्बरलीने पूछा—आप लोगोंको क्या क्या मिला था?

मैक्स—"हमने उस मकानके सभी कमरोंको बहुमूल्य सामग्रियोंसे सजा हुआ पाया परन्तु वे सभी चीजें अमेरिकन

ढङ्गपर सजायी हुई थीं, इससे मुझे विश्वास हो गया कि यह दफ्तर अवश्य ही किसी बड़े कार्य्यालयसे सम्बन्ध रखता है। मैंने यह भी अनुमान किया कि हो न हो शान फ्रान्सिस्कोके प्रधान अफीम-कारखानेसे ही इस ब्रेचका सम्बन्ध है। मैंने एक ऐसा ही ब्रेच न्युयार्कमें भी देखा था। हमने आठ दश आदमी भिन्न भिन्न कमरोंसे गिरफ्तार किये, परन्तु, क्षमा करेंगे, मैं उनका नाम नहीं बता सकता, क्योंकि उनमेंसे कई एक समाजमें बड़े प्रतिष्ठित गिने जाते हैं।

कम्बरली आश्चर्य्यसे बोल उठे—आप कहते क्या हैं?

मैक्स—जी हां, मैं बिलकुल सच कह रहा हूँ। इन आठ अफीमचियोंमें केवल दो नीच श्रेणीके मालूम होते थे जो चपरासी और खानसामाका काम करते थे। उनका पूरा विवरण मेरी डायरीमें लिखा हुआ है। इन दोनोंके सिवा एक औरत थी। वह भी नीच जातिकी ही मालूम हुई। परन्तु इनके सिवा हमें जो पात्र मिले वे बड़े प्रतिष्ठित गिने जाते हैं। उनमें 'सेन' जातिका एक चीना था वही उस दफ्तरका मैनेजर था। और जीन नामकी एक बहुत ही सम्भ्रान्त महिला थी। वह उस दफ्तरकी मालकिन, संरक्षिका या जो कहिये, सब कुछ वही थी।

कम्बरली बोल उठे—एक स्त्री ही उतने बड़े कारबारका परिचालन करती थी?

मैक्स—हां, स्त्री ही करती थी। आपहीके समान मुझे भी

पहले आश्चर्य्य हुआ था; परन्तु पूरी जाँच करनेपर पता चला कि जीन नामकी वह स्त्री ही दफ्तरकी मालकिन थी। यहां मैं कह देना चाहता हूँ कि हमने रातको ही खानातलाशी की था और उसे बिलकुल ही गुप्त रखा था! ऐसा करनेमें हमारा एक विशेष अभिप्राय था जो कि पीछे आपको मालूम होगा। परन्तु दुःखके साथ कहना पड़ता है हमारा सभी प्रयत्न निष्फल हुआ।

कम्बरली—आपके प्रयत्न निष्फल हुए? सो कैसे?

मेक्स--जी हां, हमारा काम अधूरा ही रह गया। यद्यपि वह दफ्तर सदाके लिये बन्द हो गया है परन्तु उसकी धन-सम्पत्ति कुछ भी हाथ नहीं लगी है। जीनकी रोकड़-बही और कागज-पत्रोंसे हमें प्रधान कार्यालयका कोई पता भी नहीं चला। बहुत चेष्टा करनेपर भी जीनने अपना असली परिचय नहीं बतलाया। उसने सिर्फ इतना ही कहकर टाल दिया कि "मैंने यहां एक होटल खोल रखा है जिसकी खुशी होती हैं वह अफीम भी लाकर यहां खा सकता है—मेरी ओरसे कोई मनाही नहीं रहती।" चीना सेनने तो नखड़ा कर लिया कि वह चीना भाषाके सिवा दूसरी कोई भाषा जानता ही नहीं। इसलिये उससे भी हमें कोई लाभ न हुआ।

कुछ देरतक दम लेकर मेक्स फिर कहने लगे—इस निष्फलताके कारण मुझे बहुत दुःख हुआ। इसका प्रधान कारण यह था कि थोड़े दिन पहले पेरिसके एक विख्यात धनकुबेरको--

अफीमसे मृत्यु हो गयी थी। सर्व-साधारणने तो समझ लिया था कि उसने आत्महत्या कर ली है परन्तु मुझे पूरा विश्वास था और अब भी है कि उस मृत्युमें उक्त दफ्तरका अवश्य ही हाथ था—

डाक्टर: कम्बरली आगे झुककर उत्कण्ठासे बोले—क्या ये लोग खून भी करते हैं ?

मैक्स—मैं जोर देकर नहीं कह सकता। यह मेरा अनुमान-मात्र है। परन्तु इतना मैं कह सकता हूँ कि उस धनिकका दफ्तरसे अवश्य ही सम्बन्ध था। मकानकी तलाशीमें मुझे एक पत्र मिला था उसीको मैं सबसे मूल्यवान समझता हूं। उस पत्रको जीन अपने दुर्भाग्यवश नष्ट करनेको भूल गयी थी। उस पत्रपर लन्दनकी छाप थी और जीनके नाम वह लिखा गया था। उसमें उस मृत धनपतिका भी उल्लेख किया गया था। उस पत्रसे मुझे एक नई बात मालूम हुई। मैंने पहले सोचा था कि इस दफ्तरका प्रधान आफिस अमेरिकामें है परन्तु उस पत्रको पढ़नेसे मुझे निश्चय हुआ कि इसका प्रधान आफिस इसी लन्दनमें ही है और यहीं संसारके सभी अफीम-कारखानों और दफ्तरोंका संरक्षक और संचालक रहता है।

कम्बरली चौंककर बोल उठे—इसी लन्दनमें ?

मैक्स—धीरेसे बोलिये, दीवारोंके भी कान होते हैं। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि यहीं इसी लन्दनमें ही सब रहस्य छिपा हुआ है। पत्रके ऊपर भेजनेवालेका पता ठिकाना

और तारीख कुछ भी न थी सिर्फ एक कोनेमें लिखा था—"राजा साहब !"

कम्बरली उठकर सीधे खड़े हो गये और आश्चर्य्यसे जासूसकी ओर देखकर बोले—"राजा साहब ?"

मैक्सने मुस्कुराते हुए कहा—डाक्टर साहब, आपको कौतूहल हो रहा है ? होनेकी बात ही है। अच्छा, आगे सुनिये, उस पत्रको पढ़कर मैंने एक और भी रहस्यका आविष्कार किया। उस पत्रसे मुझे मालूम हुआ कि आपके मित्र हेनरी लिरोने अपनी स्त्री हीराके नाम पेरिसके ल्युनिस बैंकमें हजार रुपये जमा कर रखे थे।

डाक्टर साहबने अपने सिरपर हाथ रखकर सोचते हुए कहा—हाँ, यह मेरी जानी हुई बात है। उसने हजार रुपये ल्युनिस बैंकमें जमा किये थे।

मैक्स—हां, यही बात है। परन्तु बैंकमें जाँच करनेपर पता लगा कि वे कुल रुपये उतार लिये गये हैं।

डाक्टर—उतार लिये गये हैं ! किसने उतारा ?

मैक्स—श्रीमती जीनने ! बैंकके कर्मचारीकी गवाहीसे मालूम हुआ कि उसने श्रीमती लिरोको कौड़ी कौड़ी सभी रुपये चुका दिये हैं। उसने जीनको पहचान कर कहा था कि यही श्रीमती हीरा हैं।

डाक्टर चिल्ला उठे—हैं ! आप क्या कहते हैं !

मैक्सने डाक्टरके विस्मय-विह्वल मुखको देखकर मुस्कराते

हुए कहा—हां, मैं बिल्कुल ठीक कहता हूं। जीन ही ल्युनिस बैंकमें श्रीमती हीराके नामसे परिचित थी।

ल्युनिस बैंकने उनका जो हस्ताक्षर लिया था उससे लन्दनके सुवरवन बैंकके श्रीमती लिरोके हस्ताक्षरसे मिलाकर देख लिया था। दोनों अक्षर बिलकुल मिलते जुलते थे। उस बैंकमें मुझे यह भी मालूम हुआ कि यह पहली ही जाल-साजी नहीं है। कई वार ऐसा ही लेनदेन हो गया हैं।

डाकृर साहबका हृदय अपने भोलेभाले मित्रके लिये भर आया। उन्होंने बड़ो उत्कण्ठासे पूछा—इसके लिये ल्युनिस बैंक क्या जिम्मेदार नहीं है ?

मैक्स—"बिल्कुल नहीं, यह तो एक प्रकारसे निश्चित है कि दोनों एक ही आदमीके हस्ताक्षर हैं। अब सुनिये, मैं सब समझा-कर कहता हूं। मुख्य दो उद्देश्योंको लेकर मैं लन्दन आया हूं—एक तो सुबरबन बैंककी जाँच और दूसरा राजा साहबका रहस्य भेद। पहला काम तो एक प्रकारसे पूरा हो गया है परन्तु दूसरेका अभी—"

इतना कहकर वह चुप हो गये और शून्यदृष्टिसे कम्बरली-की ओर ताकने लगे।

इतनी देरतक डाक्टर साहब बड़े उद्विग्न हो रहे थे। वह उठकर कमरेमें टहलने लगे और धीरे धीरे आप ही आप भुन-भुनाने लगे—बेचारा लिरो कहीं का न रहा!"

मैक्स बोल उठे—वास्तवमें मिस्टर लिरो बुरी आफतमें फँसे

हैं। यह तो निश्चय है कि आजकल इनका नाम भी राजा साहबके शिकारोंमें दर्ज हो गया है।

डाक्टर साहब खड़े होकर बोल उठे—ऐसे और भी अभागे हैं क्या ?

मैक्सने गम्भीरतापूर्वक कहा—डाक्टर साहब, आप अरबके वालुकाकणको भले ही गिन सकें परन्तु राजा साहबके शिकारोंकी गिनती आपसे नहीं हो सकती।

कम्बरली बोल उठे—हा भगवन! रक्षा करो!

मैक्स—पेरिसकी तलाशीके बाद तुरत ही मैं लन्दन चला आया। यहां आते ही पहले मैं "स्काट लैण्ड" के आफिसमें गया। वहां मुझे मालूम हुआ कि मिस्टर लिरोके कमरेमें उसी रातको एक बहुत ही भयङ्कर हत्याकाण्ड हो गया था। मुझे वहीं यह पता लगा कि इस दुर्घटनामें राजा साहबका भी हाथ है—मृत स्त्रीके हाथसे एक फटे कागजका टुकड़ा मिला है जिसपर राजा साहबका नाम लिखा है।

डाक्टर—हां, उस समय मैं वहां उपस्थित था।

मैक्स—मुझे मालूम है। राजा साहबके नामसे ही मैंने निश्चय कर लिया है कि पैलेस मैन्सनका मामला मेरा मामला है और इसका निपटारा मेरे कार्यका निबटारा है। कल मैं सुवरवन बैंकमें गया था। वहाँ मुझे सारा रहस्य मालूम हो गया है। असली श्रीमती लिरो उस बैंकमें कभी नहीं गयी हैं। जीन ही श्रीमती लिरोका वेश धारणकर सोम नामक नौकरके

साथ बैंकमें जाकर दस्तखत कर आयी थी।

डाकृर कम्बरली सिरपर हाथ रखकर बोले—ओ: मालूम हुआ! इसीलिये वह शैतान लापता हो गया है।

मैकूस—आपने ठीक कहा है, वह शैतान ही है। शैतानोंका शैतान राजा साहब अपना काम बनानेके लिये कितने ही ऐसे शैतानोंको फँसाये रहता है। उसके रोएँ रोएँमें ऐसे ही कितने शैतान चींटियोंकी तरह रेंगते रहते हैं। पैरिसमें भी इन शैतानोंकी कमी नहीं है! ओ: यह मुकदमा बहुत ही जटिल है—मिस्टर लिरोने आँख मूँदकर पड़े पड़े सोने और उपन्यास लिखने हीमें अपना समय खो दिया है। उन्हें इस सुस्तीका फल जरूर ही भोगना पड़ेगा। उनके लिये वास्तवमें मैं बहुत ही दु:खित हूं। मैं इन्स्पेकृर डनवरके साथ कल लिरोके कमरेमें जाकर घटनास्थलको अच्छी तरह देख आया हूं। डनवरकी डायरीसे मुझे यह पता लगा है कि श्रीमती लिरोके पैरिस जाने पर—जो अनुमान मात्र था—लिरो दूसरे तीसरे दिन उनके यहां पत्र भेजते थे। पैरिससे उन पत्रोंके उत्तर भी आते रहते थे। मैंने श्रीमती लिरोके पत्रोंको जाँचकर देखा, उसमें किसीपर भी तारीख न थी। मैंने सोचा कि किसी स्त्रीके लिये ऐसी भूल कर बैठना कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है परन्तु एक पत्रको देखकर मुझे सचमुच आश्चर्य्य हुआ। यह देखिये, लिफाफा सहित वह पत्र है। इसमें सन्देह नहीं कि पेरिसके पोष्टकी इसपर छाप है। परन्तु यदि आप अनुवीक्षण यन्त्रकी सहायतासे इस छापके

नीचे देखनेकी चेष्टा करें तो आपको साफ दीख पड़ेगा कि वो इष्टकी भी मुहर इसपर लगी हुई है।

"वो इष्टकी मुहर ?"

"आपने समझा नहीं, अच्छा तो सुनिये। ये सभी पत्र वो इष्ट पेरिस भेजे गये थे; यह काम मिसेस लिरोका है। उन्होंने पेरिस जानेके पहले ही इन पत्रोंको लिखा था। सोमके ऊपर इन पत्रोंके छोड़नेका भार पड़ा था, उसने डाक वाक्समें न छोड़कर राजा साहबके किसी प्रतिनिधिके पास इन पत्रोंको पहुंचाया था। उस प्रतिनिधिके द्वारा ये पत्र श्रीमती जीनके पास भेजे गये थे। अब आप अनुमान कर सकते हैं कि ये शैतान कोई साधारण जाली नहीं हैं। ये सब कुछ कर सकते हैं। इस मुहरसे तो मैं इसी सिद्धान्तपर पहुंचा हूं। अब देखना है कि मेरा अनुमान कहांतक ठीक उतरता है।

कम्बरलीने एक लम्बी साँस लेकर कहा—तब तो यह एक प्रकारसे निश्चित है कि बेचारा लिरो सपरिवार इन बदमाशोंके चङ्गुलमें फँस गया है। उसका उद्धार होना अब बहुत ही कठिन मालूम होता है।

मैक्सने चिकित्सककी ओर सहसा दृष्टिपात करके पूछा—क्या मिस्टर लिरोको अपनी स्त्रीके बारेमें असली बात मालूम नहीं है ?

कम्बरली—कौन बात ?

मैक्स—यही कि श्रीमती लिरो पेरिसमें नहीं रहती हैं ?

कम्बरली—मिस डेनिस और अपनी लड़कीके परामर्शसे मैंने ही पहले यह समाचार उन्हें दिया था। इस धोखेसे उन्हें सावधान कर देना ही मैंने अपना कर्त्तव्य समझा था। परन्तु अब मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने बड़ी भूल की थी। इसी शोक समाचारके कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया है।

मैक्स—समाचार पत्रोंको मिसेस लिरोकी अनुपस्थितिका असली कारण आजतक नहीं मालूम हो पाया है, इससे हम लोगोंके हकमें अच्छा ही हुआ है। यदि समाचार पत्रवालोंको यह मालूम हो गया होता कि मृता स्त्रीके हाथसे कागजका टुकड़ा निकला है तो आजतक श्रीमती लिरोके बारेमें खोजकी धूम पड़ गयी होती। इससे हमें लाभके बदले हानिको ही सम्भावना अधिक थी।

कम्बरली—लन्दनके समाचार पत्रोंको यह समाचार मालूम होना कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु मैं अब अच्छी तरह समझने लगा हूं कि ऐसा न होनेसे आपके हकमें अच्छा ही हुआ है। गुप्त भावसे अनुसन्धान कार्य चलानेमें आपको सुविधा होगी।

मैक्स—श्रीमती लिरोकी शुश्रूषाका भार क्या आपके ऊपर नहीं था?

कम्बरली—जी, नहीं, सच कहिये तो इसका कारण जाननेको भी कभी मेरे मनमें कौतूहल नहीं हुआ है।

मैक्स—इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। आपने

पुलीसके सामने आपने जो गवाही दी है वह मैंने पढ़ी है। क्या आपका विश्वास है कि श्रीमती भरनन अफीमका व्यवहार किया करती थीं ?

कम्बरली—"यह तो साफ प्रकट होता था। दुःखके साथ कहना पड़ता है कि इसमें जरा भी मुझे सन्देह नहीं है। परन्तु मैं जोर देकर कह सकता हूं कि उनकी अकस्मात् मृत्यु इस नशाखोरीसे कोई सम्बन्ध नहीं रखती है। सिर्फ—"

मैक्स—ओ! समझा—आपका अब भी वही विचार है, जो सरकारी चिकित्सकके विरोधमें आपने प्रकट किया था। यह एक बहुत मार्केकी बात है। हाँ, तो आपका कहना है कि स्त्रीकी बाँहमें जो नस्तर किया गया था वह उसकी इच्छाके विरुद्ध था।

कम्बरलीने टोककर कहा—नस्तर द्वारा वह स्त्री कभी अफीमका व्यवहार नहीं करती थी। वह अफीमका धुआँ ही पीया करती थी।

मैक्स—अच्छा, बिल्कुल ठीक, आपने बात और भी साफ कर दी। आपके कहनेका यही न मतलब है कि स्त्रीके मरनेके आठ घण्टे पहले उसकी बाँहमें नस्तर किया गया था ?

कम्बरली—जी हाँ, कमसे कम आठ घंटे।

मैक्स—ऐसे नस्तरका आपको पहलेका अनुभव है ?

कम्बरली—हाँ, बहुतसे ऐसे रोगी मेरी नजरोंमें पड़े हैं। परन्तु मुझे एक ऐसे ही रोगीसे पाला पड़ा था जो अफीमका व्यवहार किया करता था—"

"नश्तरसे ?"

"कभी कभी नश्तरसे भी करता है परन्तु अफीमका धुआँ ही वह अधिक पीता है।"

मैक्स—ओ! समझा—वह शायद कोई रईस आदमी है ?

कम्बरली—वह पार्लामेंटके सदस्य हैं, परन्तु यह आपके प्रश्नका ठीक उत्तर नहीं हुआ। मुझे कहना चाहिये कि वह एक बहुत ही संभ्रान्त वंशकी सन्तान हैं और आजकल एक पीयर (सामन्त) की कन्यासे उनके व्याहकी बातचीत चल रही है।

मैक्सने गम्भीर भाव धारणकर कहा—अच्छा, डाक्टर साहब, क्या आप अपने विपन्न मित्रकी रक्षाके लिये व्यवसायिक प्रश्नको हटाकर, रोगीका गुप्त रूपसे, परिचय बतानेमें विशेष आपत्ति समझते हैं।

यह एक ऐसा प्रश्न था जो एक ओरसे डाक्टरकी व्यवसायिक साधुता, धर्मभाव और विवेकपर आघात करता था दूसरी ओर विपन्न मित्रको रक्षा और शुभाकांक्षाकी प्रेरणा करता था। डाक्टर साहब बड़े असमञ्जसमें पड़ गये। खिड़कीके बाहर रास्तेकी ओर शून्यदृष्टिसे देखते हुए उत्तर सोचने लगे।

मैक्स उनकी कठिनाईको समझ गये और कूटनीतिकी सहायता लेकर बोले—खैर, मुझको बतानेमें यदि आपको आपत्ति हो तो मैं अधिक अनुरोध न करूंगा। परन्तु इन्स्पेक्टर इनवर यदि यह प्रश्न साक्षीके तौरपर पूछेंगे तो आपको बताना ही होगा। मैं इसी उपायका अवलम्बन करूंगा।

कम्बरलीने मुस्कुरानेकी चेष्टा करते हुए कहा—जबतक मैं कठघरेपर खड़ा नहीं होता हूं तबतक अस्वीकार करनेकी मुझे पूरी स्वतन्त्रता है।

मैक्स—इसका परिणाम यह होगा कि आप न्यायकी मर्य्यादा नष्ट करके निरपराधीके प्राणदण्डमें सहायक होंगे।

कम्बरली—सचमुच मैं बड़े संकटमें पड़ गया हूं। आप ही सोच सकते हैं आपका अनुरोध माननेमें मुझे एक आदमीसे झूठा बनना पड़ेगा—परन्तु यदि आप बचन दें कि यह बात किसीसे न प्रकट करेंगे तो मैं उस सज्जनका नाम बतानेको तैयार हूँ। उस सज्जनका नाम है—सर ब्रायान मालपास !

मैक्स—"डाक्टर साहब, धन्यवाद ! इस अनुग्रहके लिये मैं आपका ऋणी रहूंगा।"

मैक्स शून्यदृष्टिसे ऊपर ताकते हुए अपने आप भुनभुनाने लगे—मालपास ! मालपास ! यह नाम तो इस मामलेके सम्बन्धमें कहीं आया है न ?

कम्बरलीने याद दिला दिया—इन्स्पेक्टर डनवरने आपसे कहा होगा। जन एक्सेलने अपनी गवाही देते समय मालपासका उल्लेख किया था।

मैक्स—हाँ, याद पड़ा। घटनाको रातको मिस्टर एक्सेल मालपाससे रास्तेमें विदा होकर अपने घर आये थे। क्यों यही बात है न ?

कम्बरली—सचमुच आपकी स्मरण शक्ति बहुत तेज है।

मैक्स—अच्छा, तो मिस्टर एक्सेलकी मालपाससे व्यक्तिगत मित्रता है। क्यों ?

कम्बरली—मैं भी तो ऐसा ही समझता हूं।

मैक्स—आज आपने मेरा बड़ा उपकार किया। मैं आपके पास आया था कि मिसेस लिरोके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें आपसे कोई गुप्त बात मालूम होगी। परन्तु इस विषयमें मुझे निराश होना पड़ा है। परन्तु आपने मुझसे एक ऐसे मनुष्यका पता बता दिया है जिसके सहारे मैं अफीम के प्रधान कार्य्यालयको ध्वंश कर सकता हूं।

कम्बरली—क्या आप सोचते हैं कि मालपास यहींके कारखानेसे नश्तर लेते हैं। ऐसा तो मुझे विश्वास नहीं होता। मैं तो समझता हूं कि इस शौकको पूरा करनेके लिये वह शहरसे बाहर कहीं जाया करते हैं।

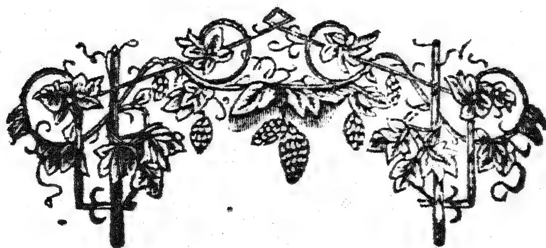
मैक्स—नहीं मेरा ही अनुमान ठीक मालूम होता है। अभी मैं उनसे गुप्तवेशमें एक बार भेंट करना चाहता हूँ। क्या ऐसा कोई आदमी है जो उनसे मेरा परिचय करा दे ? अच्छा, डाक्टर साहब, मिस्टर एक्सेल क्या यह उपकार नहीं कर सकते हैं ?

कम्बरली—एक्सेलसे आपका परिचय करा देनेका भार मैं खुशीसे अपने ऊपर लेता हूं।

मैक्स—आपको धन्यवाद, जितनी जल्दी आप उनसे मुझे मिला दें उतना ही अच्छा हो। याद रहे, मिस रिलैंडसे मैं जिस

नामसे परिचित हूं, उसी नामसे एक्सेलसे भी परिचित होना चाहता हूं—अर्थात् एम० गैस्टोन! अब दश बज गये। देखिये, नीचे कोई रोगी आपके लिये घण्टी बजा रहा है। नमस्कार, शामको ६ बजे मैं मिलूंगा।

जासूसने दरवाजेके बाहर पैर रखा ही था कि पीछेसे डाकृरकी आवाज आयी—"मिस्टर मैक्स!" उन्होंने पीछे फिरकर देखा, कि कम्बरली बड़े उत्कण्ठित भावसे कुछ पूछनेके लिये हिचकिचा रहे हैं। चतुर जासूसने उनके भावको ताड़ लिया और पूछा—श्रीमती लिरो कहां हैं, यही तो आप पूछना चाहते हैं? मेरे मित्र—यदि आप मित्र कहनेका अधिकार दें—मैं नहीं कह सकता कि श्रीमती लिरो जीवित हैं या मृत। मेरा अनुमान है कि अब वह इस संसारमें नहीं है—



बाईसवां परिच्छेद

अफीम ।



पहरको जब डाकृर कम्बरली अपनी कन्या हेलन और मिस रिलैण्डके साथ भोजनपर बैठे तो नियमानुसार उस दिन भी हतभाग्य लिरोका प्रसंग छिड़ा ।

आसनपर बैठते ही डाकृरने कहा—मैं अभी लिरोको देखने गया था। उससे कह आया हूं, कि कलसे वह भी तुम लोगोंके साथ सवेरे-शाम घूमनेके लिये बाहर जाया करेगा। अभी तो वह चल न सकेगा। इसलिये गाड़ीपर ही कलसे तुम लोग जाना। मैं उसे कोठरीमें बन्द कर रखना अब अच्छा नहीं समझता। बाहर खुली हवा लगनेसे उसकी तबीयत भी हलकी होगी और मन-बहलाव भी होगा। मैंने परीक्षा करके देखा है, उसका रोग मानसिक है। इस समय उसे एक ऐसे साथीकी जरूरत है, जो उसका मन बहलाव किया करे। हेलन, कुछ दिनके लिये क्या यह भार तू अपने ऊपर ले सकती है ?

हेलनने अपने पिताकी ओर देखते हुए गम्भीरतापूर्वक कहा—हाँ, बाबूजी, मैं खुशीसे यह काम कर सकूंगी। मिस रिलैण्ड भी मेरा साथ देंगी—क्यों मिस रिलैण्ड ठीक है न ?

डेनिस रिलैंएड अपने अभ्यासके अनुसार प्रत्येक शब्दपर जोर देती हुई धीरे धीरे कहने लगीं। तुम्हारे प्रस्तावमें तो मुझे आपत्ति नहीं है पर "रिलैंएड" शब्दमें मुझे विशेष आपत्ति हैं। मैं अपनी मित्रमण्डलीमें ईसाई नाम "डेनिस" से ही पुकारी जाती हूं। चूंकि श्रीमती हीरासे मेरी बहुत दिनोंकी मित्रता है और तुम दोनों भी आपसमें मित्र होती हो, इसलिये मैं आशा कर सकती हूं कि तुम भी मेरे साथ मित्रताका व्यवहार करोगी और उसके प्रमाण स्वरूप "रिलैंएड" नामको भूलकर "डेनिस" नामसे पुकारनेकी कृपा करोगी?"

हेलनने मुस्कुराकर कहा—खैर, यह नाम भी मुझे बहुत अच्छा लगता है। आपसे पहले भेंट होनेपर मैं उस नामका प्रयोग करना चाहती थी—परन्तु भूलकर "रिलैंएड" ही निकल पड़ा। मुझे मालूम है, हीरा भी आपको डेनिस नामसे ही पुकारती थी।

डाक्टर कम्बरलीने गम्भीरतापूर्वक कहा—क्या मैं इस अनुग्रहसे लाभ नहीं उठा सकता? मैं आशा करता हूं कि आप भी मुझे निपुच्छ नामसे ही पुकारनेकी कृपा करेंगी।

डेनिस रिलैंएडने जोर देकर कहा—आपके बारेमें यह बात लागू नहीं हो सकती। एक डाक्टर 'डाक्टर' के सिवा किसी दूसरे नामसे पुकारा ही नहीं जा सकता। यदि मैं 'जान' यह 'हांग' नामसे किसी डाक्टरका परिचय सुनूँ तो निश्चय है, कि उसकी चिकित्सासे मेरा विश्वास ही उठ जायगा।

इसके बाद डाक्टर साहबने गम्भीर भाव धारणकर अपने भोजनमें मन लगाया—परन्तु मन भोजन-पात्रकी ओर था या किसी गूढ़ चिन्तामें गोते लगा रहा था, सो ईश्वर जाने। तथापि इतना तो साफ मालूम होता था कि अब वह दोनों कुमारियोंके रहस्यालापकी ओर ध्यान नहीं दे रहे थे। बहुत देरतक मौन रहनेके बाद वह अकस्मात् बोल उठे—हेलन, मैं स्वीकार करता हूं, कि लिरोके हृदयपर सबसे कड़ी चोट पहुंची है, हीराकी प्रतारणासे !”

डेनिस रिलैंडने घृणासूचक शब्दमें कहा—और उस प्रतारणाका कारण है उनकी अक्षम्य असावधानी !”

हेलनने डेनिसकी ओर आँखें फेरकर तिरस्कारपूर्ण स्वरमें कहा—छिः आप ऐसा क्यों कहती हैं—इस समय वह—”

डाक्टरने बातको पूरा करते हुए कहा—वास्तवमें वह दयाका पात्र है। अब हमारा कर्त्तव्य है कि उसे सच्ची खबर बता दें। परन्तु आशङ्का यही है कि इससे उसका उपकारके बदले अपकार न हो जाय।

मिस डेनिस आश्चर्य्यसे डाक्टर साहबकी ओर ताकने लगीं।

हेलनने पूछा—कैसी खबर सुनानेको कहते हो बाबूजी, क्या तुम्हें मालूम हुआ है कि कहाँ वह रहती हैं ?

डाक्टर—वह कहां रहती थीं, यह मुझे मालूम है। और मुझे विश्वास है कि थोड़े ही दिनोंमें पैलेस मैन्सनकी घटनाका

हाल सभीको मालूम हो जायगा। परन्तु अभी मैं इतना ही तुम लोगोंको इशारा कर सकता हूं कि मिसेस लिरोकी अनुपस्थितिका कारण प्रेमसम्बन्धी नहीं है!

डेनिस रिलैंड बोल उठीं—क्या! आप कहना चाहते हैं कि इस मामलेमें किसी दूसरे पुरुषका सम्बन्ध नहीं है? मैं इसे किसी तरह भी माननेको तैयार नहीं हूं।

कम्बरली—आपको मानना ही होगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

हेलनने उत्कण्ठित होकर कहा—परन्तु तुमने तो उनसे इसके बिल्कुल उलटा कहा है। क्या तुमको मालूम नहीं है कि इसी शोकके कारण वह मृत्यु—"

डाक्टर—मृत्युकी ओर अग्रसर हो रहा है! क्यों यही न! इसीलिये तो मैं सोच रहा हूं कि मैं उसका यह भ्रम दूर कर दूं या नहीं। डर होता है कि यह खबर ओषधिके बदले विषका काम न कर बैठे।

डेनिस—यह आपके समाचारपर निर्भर करता है।

डाक्टर—मैं समझता हूं, कि यह खबर छिपाना हमारा धर्म नहीं है। इसलिये आज मैं उससे कह दूंगा। यद्यपि इस खबरसे उसका मन एक ओरसे निश्चिन्त होगा परन्तु इससे भी उसका अपकार ही होगा।

कुर्सीको आगे हटाकर अब डाक्टर साहब कुछ निम्न स्वरमें कहने लगे—"आज सवेरे मुझे कुछ ऐसी बातें मालूम हो गयीं हैं

जिन्होंने मेरी आँखें खोल दी हैं। यदि मैं पहले ही बुद्धि खर्च करके कुछ सोचनेकी चेष्टा करता तो यह रहस्य मुझे कभीका मालूम हो गया होता। अब मैं जोर देकर कह सकता हूं कि मृता स्त्रीके हाथसे जो कागजका टुकड़ा मिला है, वही इस रहस्यभेदका सूत्र है।

डेनिस बोल उठीं—सूत्र है ?

डाक्टर—हाँ, वह सूत्र है जिससे मिसेस भरनन और मिसेस लिरोका भाग्य एकमें बँधा हुआ है। अच्छा, तुम्हें क्या कभी मालूम हुआ है कि वे दोनों आपसमें परिचित थीं ?

हेलनने उत्सुकतासे कहा—तो क्या वे एक दूसरेको जानती थीं ?

कम्बरली—यह तो एक प्रकारसे निश्चय है कि वे एक दूसरेसे परिचित थीं। श्रीमती लिरोके रूप-रङ्गको देखकर मुझे बहुत दिनोंसे एक प्रकारका सन्देह हो रहा था परन्तु मैं उसपर विशेष ध्यान न देता था। आज मुझे यह समझमें आया है कि मिसेस भरनन अपने 'सतीर्थ' की सहानुभूतिसे प्रेरित होकर यहाँ जान देने आयी थीं—सतीर्थ इसलिये कहता हूं कि दोनों ही "चोर-चोर मौसेरे भाई" होती थीं—अर्थात् दोनों ही—"

इतना कहकर डाक्टर साहब हिचकिचाते हुए डेनिस और हेलनकी ओर ताकने लगे जो इस समय बहुत उत्कण्ठित होकर वक्ताकी ओर झुकी हुई थीं।

डाक्टर साहब सहसा बोल उठे—अफीमका व्यवहार करती थीं ।

हेलन भयसे शिहर उठी और डेनिस आश्चर्य्यचकित होकर डाक्टरकी ओर ताकने लगी। किसीके मुखसे बात न निकली।

डाक्टर साहब कहने लगे—इन्सपेक्टर डनवरके अनुग्रहसे मुझे इस मुकदमेके बारेमें बहुत जानकारी हो गयी है! वह कहते थे कि मिसेस भरनन हर-बार स्काटलैंडके लिये ठीक उसी तारीखको प्रस्थान करती थीं जिस तारीखको श्रीमती लिरो पैरिसके लिये यात्रा करती थीं। प्रमाणस्वरूप उन्होंने पिछली यात्राकी तारीख दिखलायी थी। इन दोनोंके रङ्ग-ढङ्गमें भी बहुत कुछ समानता थी। ये सब बातें मृत मिष्टर भरननके मैनेजर देवनामसे मालूम हुई हैं।

हेलनने बाधा देकर कहा—डनवरकी रिपोर्टसे तो मालूम होता था कि देवनामकी धारणा अपनी मालकिनके प्रति बहुत ही जघन्य है, तुम क्या समझते हो?

डाक्टर—हाँ, उसने कहा है कि श्रीमती भरनन लिरोके पास आया करती थीं। परन्तु हमलोग ऐसा जानते हुए भी, कि यह धारणा बिल्कुल निर्मूल है, अदालतमें खड़े होकर इसकी झुठाई साहित नहीं कर सकते हैं।

हेलन उत्तेजित होकर बोल उठी—सचमुच यह कलंककी बात है! देवनामको क्या यह कहते लज्जा न आयी!

डाक्टरने मुस्कुरानेकी चेष्टा करके कहा—संसार देवनाम

जैसे लोगोंसे भरा है। यदि हम अपने व्यक्तिगत चरित्रकी पवित्रताको न्यायतः सिद्ध करनेकी चेष्टा करें तो कभी सफल नहीं हो सकते, परन्तु कहते खुशी होती है कि डनवरने इस धारणाको विलकुल उड़ा दिया है।

हेलन बोल उठी—डनवरको धन्यवाद है! इस बातसे उनके नैतिक वल और साहसका परिचय मिलता है।

डेनिसने अपना कोई मत प्रकट न किया। वह उत्सुकता पूर्वक हेलनकी ओर ताकने लगी।

डाक्टर फिर कहने लगे—मिस्टर डनवर और मैं दोनोंहीने इस मुकदमेको एक दूसरी ही दृष्टिसे देखा था। खुशीकी बात है कि इतनेहीमें देवनामका सिद्धान्त एकवारगी बेजड़ साबित हो गया है। यह दुर्घटना साधारण कारणसे नहीं हुई है, इससे किसी गम्भीर और महत्वपूर्ण विषयका सम्पर्क है। किसी विशेष सूत्रसे मुझे पता लग गया है, कि मिसेस भरनन और मिसेस लिरो दोनों ही अफीमका व्यवहार करती थीं!

हेलन अस्फुटस्वरमें बोल उठी—हा भगवान! कैसी भयानक बात है!

डाक्टर कहने लगे—किसी बेईमान नमकहराम आदमीकी सहायतासे—"

डेनिस बोल उठ—सोमकी वात कहते हैं न? जबसे मैंने उसका नाम सुना है, तभीसे उसे एक शैतानका बच्चा समझ लिया है! उसके आकार-प्रकारके सम्बन्धमें मेरी काल्पनिक

दृष्टि ऐसा घृणित चित्र खींच रही है, जिसे यदि मैं शब्दोंमें प्रकट करने लगूँ तो हँसते-हँसते आप लोटपोट हो जायँगे।

डाक्टरने मुस्कुराकर कहा—इसमें शक नहीं कि सोम भी उस दलमें है। मैं जिनकी बात कहता हूं, वे संख्यामें बहुत अधिक हैं और उनकी कार्य्यप्रणाली भी बहुत कौशलपूर्ण और सुश्रृङ्खलित है। परन्तु अभी मैं जिस आदमीका उल्लेख कर रहा था वह सोम न होकर उससे कहीं हजार गुना शक्तिशाली है! वह राजासाहबके नामसे परिचित है!

हेलन बोल उठी—यही नाम तो कागजपर लिखा था! परन्तु पुलीस तो इस राजा साहबकी शुरूसे ही खोज कर रही है!

डाक्टर—साधारणतः देखनेपर ऐसे राजा साहब इस शहरमें हजारों मिलेंगे। इसलिये असली राजासाहबको खोज निकालना जरा टेढ़ी खीर है। आज सवेरे मैंने जो खबर पायी है उससे अनुसन्धानका क्षेत्र कुछ संकुचित हो जाता है। क्योंकि इस समय वह राजा साहब अफीमके कारखानेका मालिक या सरदार है। यहाँतक पता लग जाता है कि वह एक चीना है।

डेनिस और हेलन दोनों एक साथ ही चिल्ला उठीं—चीना!

डाक्टर—यह अभी निश्चय नहीं कहा जा सकता है। परन्तु बहुत सम्भव है। कहनेका तात्पर्य्य यह है कि श्रीमती लिरो किसीके प्रेममें नहीं फँसी हैं। वह अभी राजासाहबके किसी अफीमके कारखानेमें पड़ी हुई हैं।

हेलनने पूछा—तुम्हारा अनुमान है कि किसीने उन्हें वहाँ रोक रखा है !

कम्बरली—हाँ, मुझे तो ऐसा ही मालूम होता है, मुझे पता लगा है कि पहलेसे ही मिसेस लिरो और मिसेस भरननका वहाँ आवागमन होता था। अफीमके कर्मचारी इन अबूझ अबलाओंको अपने जालमें फंसाकर कुछ दिनोंके लिये उन्हें अफीमके नशेमें चूर कर रखते हैं, तुम समझ सकती हो कि ऐसा करनेमें उनका जरूर कोई गूढ़ उद्देश्य होगा—वह उद्देश्य है—धन शोषण करना। ये अफीम व्यवसायी इसी बीचमें लिरोके हजारों रुपयोंपर हाथ फेर चुके हैं !

डेनिस रिलैंड चिल्ला उठीं—हजारों रुपयेपर ! आप क्या कहते हैं, डाक्टर साहब ? यह मूर्ख जाहिल, जिसका नाम लिरो है—क्या आँखें मूंदकर इतने दिनतक सोता था कि ये बदमाश इतने रुपये हड़प गये ?

कम्बरली—चाहे जो हो, परन्तु यह तो निश्चय है कि इतने रुपये लिरोके हाथसे निकल गये हैं। इसने पेरिसके बैंकमें अपने स्त्रीके नाम हजार रुपये जमा किये थे जिन्हें राजा साहबके कर्मचारियोंने उतार लिया है।

हेलन बोल उठीं—यह तो बड़ा अन्धेर है !

कम्बरली—अन्धेर तो जरूर है परन्तु इसका प्रतीकार भी तो नहीं सूझता। सभी जानते हैं कि लन्दनमें भी और बड़े-बड़े शहरोंकी तरह अफीमका अड्डा बना है। और यहं भी

किसीसे छिपा नहीं है कि इन सभी कारखानोंका परिचालक और संरक्षक राजासाहब नामका कोई गुप्तवेशी रहस्यमय जीव है—परन्तु सब कुछ जानते हुए भी पुलीस धूर्त्त राजा साहबका बाल भी बांका नहीं कर सकती है। निःसन्देह यह आश्चर्य्यकी बात है कि ये धूर्त्त शैतान कैसे इतने बड़े कारबारको गुप्तरूपसे चला रहे हैं। मुझे सन्देह होता है कि हो न हो इन लोगोंने समाजके भीतर ही रहकर यह जाल बिछा रखा है! और शहरोंके इनके सहायक दफ्तर तो बन्द कर दिये जा चुके हैं परन्तु लन्दनके दुर्भाग्यसे स्काटलैंड "यार्ड" की पुलीस इस काममें अभी बिल्कुल असफल हो रही है!

डेनिस बोल उठी—परन्तु पुलीस भी इस काममें धींगाँ-धींगी कर रही है। यदि वह पूरी चेष्टा करती तो आजतक अफीमके ग्राहकोंका पीछा करके उसके दफ्तरका पता लगा लिये होती।

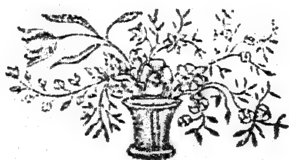
कम्बरली—परन्तु उन ग्राहकोंको पहचानना भी तो कठिन है। अफीमका व्यवहार करना एक प्रकारका दुर्व्यसन गिना जाता है, जिसको सभी लोग छिपा रखनेकी चेष्टा करते हैं। इसलिये दश आदमीको दिखाकर जैसे कोई आदमी सभा सोसाईटीमें जाता है वैसे ही प्रकाश्य भावसे वह अफीमके अड्डे पर जानेका साहस नहीं करता। सामने ही तो दृष्टान्त पड़ा है। सोचो तो, श्रीमती लिरो और भरनन कितनी सतर्कतासे काम लेती थीं! अफीमके बहुतसे रोगियोंको देखकर मुझे अच्छी

तरह अनुभव हो गया है कि अफीमका नशा स्त्रियोंको जितनी जल्दी अपने कब्जेमें कर लेता है पुरुषको उतनी जल्दी नहीं कर पाता। इस अफीमके मायाकुहुकमें पड़कर स्त्रियोंकी अवस्था इतनी असहाय और सोचनीय हो जाती है कि एक क्षण भी उसके बिना उन्हें संसार सूना प्रतीत होता है—संसारके सभी नियम और बंधन ढीले पड़ जाते हैं। राजा साहबको अफीम देवीके ये गुण मालूम हैं इसीसे उन्होंने इस कारबारमें हाथ डाला है।

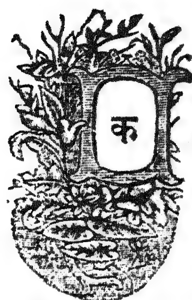
कम्बरली उठ खड़े हुए और बोले—मैं अभी नीचे जाकर यह खबर लिरोको सुना देना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि इस नये समाचारसे उनका कोई विशेष उपकार न होगा; परन्तु स्त्रीके प्रति उनकी भ्रान्त धारणा तो इससे दूर हो जायगी। मेरे जानेके दश मिनट बाद तुम लोग आना! क्यों तुम लोग क्या कहती हो?

हेलन—अच्छा यही करो।

कम्बरली उठकर लिरोके कमरेकी ओर चले।



तेईसवां परिच्छेद.



डाक्टरकी सलाह ।

करीब दश मिनटके बाद हेलन और मिस रिलैंडने हेनरी लिरोके कमरेमें प्रवेश किया। औपन्यासिक इस समय अपने पाठागारमें बाहरी पोशाकमें सजधजकर एक कुर्सीपर बैठे थे और डाक्टर कम्बरली उनके पीछे खड़े होकर पीछे हाथ बाँधे शून्य दृष्टिसे खिड़कीसे बाहर देख रहे थे।

लिरोके चेहरेमें आज बहुत परिवर्त्तन दीख पड़ता था। मुख रूखा-सूखा और आंखें ज्योतिहीन हो गयी थीं। एक विषाद और रुक्षताका भाव निश्चेष्ट भावसे पलकोंपर विराज रहा था।

आगन्तुकोंको देखते ही लिरो उठ खड़े हुए और एक निरानन्द मुस्कुराहटके साथ हेलनकी ओर हाथ बढ़ाया! हेलनने आग्रहसे उस हाथको पकड़ लिया परन्तु अपने पिताको सामने खड़ा देखकर चट उसे छोड़, उनकी ओर हटकर खड़ी हो गयी।

लिरोने कहा—हेलन, मैंने सोचा था कि तुम अब मुझसे भेंट ही न करोगी।

हेलन बड़ी चेष्टाके बाद मुख खोलकर बोली—ऐसी कोई

बात नहीं—बाबूजीने कहा था कि निर्जनता ही तुम्हारे लिये उपकारी होगी। इसीलिये इधर नहीं आती थी।

डेनिस भी सिर हिला कर इसी बातका समर्थन करके कहने लगीं—“परन्तु आज यह लोग आपको इस पुस्तकावृत कोठरीकी बद्धवायुसे निकालकर मैदानकी खुली हवामें खींच ले जाना चाहते हैं। यदि यह अत्याचार आपको सह्य हो तो भले आदमीकी तरह चटपट कपड़े पहनकर तैयार हो जाइये।”

डाक्टर कम्बरलीने उनकी ओर फिरकर कहा—हाँ, लिरो, मैंने अभी परामर्श दिया है, कि तुम लोग रोज सवेरे-शाम एक आध घंटे इस स्कायारके चारों ओर घूम फिर आया करो इससे तुम्हें विशेष उपकार होगा। यदि ऐसे न जा सको तो गाड़ी कर लेना।

हेनरी लिरो उत्सुकतापूर्वक हेलनकी ओर देखते हुए उत्तर-की अपेक्षा करने लगे। उन्हें आशंका होती थी कि हेलन इस प्रस्तावको अस्वीकार कर देगी।

हेलनने पूछा—बाबूजी, क्या तुमने मुझे इस प्रस्तावसे अलग रखा है?।

डाक्टर—नहीं, तू ही तो इस प्रस्तावका मुख्य अंश है।

हेलन—मैं तो यही चाहती हूं। इससे मुझे बड़ा आनन्द मिलेगा।

लिरोने मुस्कुराकर हेलनकी ओरसे मुख फिरा लिया और कुर्सीपर सम्हलकर आरामसे बैठ गये।

एक क्षणिक निस्तब्धताको भंग करके डेनिस :रिलैंडने कहा—डाक्टर साहबने क्या आपसे कोई बात कही है ?

लिरोने दोनों हाथोंसे मुख ढकते हुए पोछे कुर्सीपर हटकर कहा—हाँ, मुझे सभी बातें मालूम हुई हैं। मेरे समान अभागा इस संसारमें और कौन होगा ? कहते छाती फटती है कि इसमें सारा दोष मेरा अपना है। हीरा न जाने अभी किस विपत्तिमें फंसी है ! ईश्वर उसकी रक्षा करे !

उनके अनुतापको देखकर डेनिसको एक प्रकारका सन्तोष हो रहा था। परन्तु हेलन यह दृश्य देख न सकी उसने अपना मुँह फेर लिया।

लिरो आवेशपूर्ण स्वरमें फिर कहने लगे—मैं व्यर्थ अपनी स्त्रीको प्रतारणाका दोष लगा रहा था। सारा दोष मेरी उदासीनता और असावधानीका है। मैं इसे स्वीकार करता हूं और इसका समुचित दण्ड भी भोगनेको तैयार हूं। परन्तु इस समय मुझे दुःख इस बातका होता है कि मैं अपनी स्त्रीके प्रति अन्याय दोषारोपण करके निश्चेष्ट होकर बैठा हूं और वह न जानें अभी किस विपत्तिमें फँसी हुई है।

कम्बरली बोले—फिर मैं कहता हूं लिरो, अभी तुम्हें इतना हताश होनेकी आवश्यकता नहीं। इस बातपर मुझे स्वयं विश्वास नहीं होता है ! इतने दिनोंतक श्रीमती हीराके साथ मेरा उठना-बैठना रहा है, परन्तु मेरे मनमें तो यह आशंका भूलकर भी कभी नहीं उठी है कि वह अफीमका व्यवहार करती हैं। तुम

कहते हो, हीराकी अब मुर्दोंमें गिनती करनी चाहिये, मेरे पास ऐसा कोई शब्द नहीं है जिससे मैं तुम्हें दिलासा दे सकूँ और विश्वास दिला सकूं कि तुम्हारी स्त्री अभी जीवित है। क्योंकि तुम स्वयं सोच सकते हो कि जिसने एक बार इस पापकुण्डमें पैर बढ़ाया उसकी गिनती मुर्दोंमें हो जाती है वल्कि मुर्दे उनसे हजार गुने वेहतर होते हैं क्योंकि वे निश्चिन्त, और सुख-दुःखके परे होते हैं।

लिरो—हाँ, आपका कहना बिल्कुल ठीक है।

डाक्टर फिर कहने लगे—जहाँतक मैं सोचता हूं, असल बात यह मालूम होती है। दैवात् अफीमके कारखानेके एक शिकारकी मृत्यु तुम्हारी कोठरीमें हो गयी है। अफीमके कर्मचारियोंने समझा होगा कि इस मुकदमेकी जाँच करते समय मिसेस लिरोसे अफीम कार्य्यालयके सम्बन्धका विल्कुल रहस्य खुल जा सकते हैं इसलिये वाध्य होकर उन्होंने उन्हें रोक रखा है।

लिरो आवेशके साथ बोल उठे—कहाँ है वह स्थान ? मैं उन लोगोंकी शैतानी अभी दूर किये देता हूं।

डाक्टर साहबने दोनों हाथ लिरोके कन्धोंपर रखकर प्यारसे कहा—लिरो यही प्रश्न तो सबके मुखपर है। तुम्हें सुनकर खुशी होगी कि इस समाजके कंटकको ढूंढ़कर निकालनेके लिये एक बड़ा अनुभवी तीक्ष्णदर्शी वीर तैयार हुआ है अब आशा है, कि तुम्हारे विषादमय दृष्टान्तके बाद समाज इस

विपत्तिके सदाके लिये मुक्त हो जायगा। अब तुम इन दोनोंके साथ टहलने बाहर जाओ मुझे भी एक जगह जाना है। परन्तु तुम निश्चिन्त रहो दिनपर दिन राजा साहब जालमें फँसते जा रहे हैं।

लिरो बोल उठे—क्या ! राजा साहब।

डाक्टर—हाँ, राजा साहबके परिचयका विस्तार अब दिन दिन संकुचित होता जा रहा है। यूरोपका सर्वश्रेष्ठ जासूस आज-कल रात दिन इसी चिन्तामें अपना सारा समय लगा रहा है।

हेलन और डेनिस बड़े आग्रहसे डाक्टर साहबकी बातें सुन रही थीं परन्तु लिरो आँखें मूँदकर अर्थहीन मुद्रामें सिर हिलाते जाते थे। थोड़ी ही देरमें डाक्टर साहब जब कमरेसे बाहर हो गये तब डेनिस और हेलनने लिरोको सम्बोधन करके कहा—लिरो साहब, मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि कुछ दिनोंके लिये आप अपना परिश्रम कम कर दीजिये। सुनती हूं, "मार्टिन जिदा" में आजकल आप बड़े लवलीन हो रहे हैं परन्तु स्वास्थ्यकी दृष्टिसे इससे हानि पहुँचनेकी सम्भावना है। यदि आपको साहित्यिक आलोचनामें ही समय बीताना है तो सरल और मनोरंजक पुस्तकें लेकर पढ़ा कीजिये।

लिरोने मुस्कुरानेकी चेष्टा करके कहा—नहीं नहीं, आज-कल तो मैंने लिखना छोड़ दिया है। हाँ, "मार्टिन जिदाका" थोड़ा 'प्रूफ' देख लेना पड़ता है, परन्तु यह तो कोई कठिन काम नहीं है। इससे मन बहलाव ही कर लेता हूं परिश्रमके बिना भी तो शरीरके कब्जे खराब हो जाते हैं।

हेलन बोल उठी—हाँ, मैं भी इसका अनुमोदन करती हूं। डेनिस, तुम क्या उनसे अधिक जानती हो कि—"

लिरो हेलनकी ओर मुखकर बोल उठे–मैं देखता हूँ नटखट लड़केकी तरह तुमलोग मुझे बिछौनेपर जबर्दस्ती सुला रखोगी।

हेलन—आजका दिन बहुत ही साफ है। चलो, हम लोग जरा टहल आयें।

लिरो—सचमुच मेरे भाग्यसे आजका दिन ऐसा सुहावना हुआ है। यदि ऐसे ही दो चार दिन और रहा तो मैं बिल्कुल चंगा हो जाऊँगा।

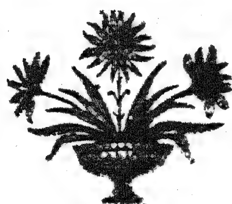
लिरोकी स्वस्थ और सबल होनेकी उत्कण्ठा और उसके गूढ़ अभिप्रायको समझकर हेलनके मनमें बड़े ही करुण भावका उदय हुआ। उसकी आँखोंमें आँसुओंकी बाढ़ उमड़ आयी। परन्तु उसने अपनी कमजोरीको छिपाते हुए कहा—ओः मैं तो एक जरूरी काम बिल्कुल ही भूल गयी थी। आज मुझे एक बार ओलाफ वान नूरकी चित्रशालामें जाना होगा। प्लेनेटमें मुझे एक लेख देना है। चित्रशालामें जाती हूं, यदि कोई लिखनेका विषय मिल जाय। अच्छा, मिस डेनिस क्या आपने कभी इस जगत-प्रसिद्ध, अद्भुतकर्मा चित्रकारकी चित्रशाला देखी है? आज कल इसके नामकी धाक सारे संसारपर जम गयी है। जिस घरमें देखिये, उसी घरमें इसके अभिनव चित्र दीवारकी शोभा बढ़ा रहे हैं। मैंने तो सुना है कि वह कोई आसुरी विद्या जानता है!

डेनिस रिलैंडने मुस्कुराकर कहा—ऐसी बात! मैं तो समझती थी कि वह एक पागल है। अभी उसने पेरिसमें एक प्रदर्शनी की थी उसके कारण उसकी बड़ी हँसी उड़ी थी;

हेलन बोल उठी—परन्तु उस प्रदर्शनीमें, सुनती हूं, इसे बड़ा आर्थिक लाभ हुआ था।

डेनिस उत्तेजित होकर बोल उठीं—तुम क्या कहती हो? आर्थिक प्रश्नपर ही तो किसीके कामका फलाफल निर्भर नहीं करता है। दश आदमी जिसे अच्छा कहें वही अच्छा और जिसे बुरा कहें वही बुरा है। पैरिसमें सभी लोग इसे कौतुकप्रिय धूर्त्त और चालबाज आदमी समझते हैं।

हेलन—आप जो चाहें कहें? मैं तो उसे बुरी दृष्टिसे नहीं देखती। अच्छा, जाने दीजिये इस प्रसंगको। नूरको लेकर हमें आपसमें तर्क वितर्क करनेकी कोई जरुरत नहीं। मि० लिरो, क्षमा करना, आज विशेष कारणवश मैं तुम्हारा साथ नहीं दे सकती परन्तु मैं विश्वास दिलाती हूं कि कल मैं कहीं न आऊंगी।



चौबीसवां परिच्छेद ।

अहिफेन देवी ।



जिस समय हेलन और डेनिस रिलैंडने ओलाफ वान नूरकी अभिनव चित्रशालामें पदार्पण किया उस समय वहाँ दर्शकोंकी खासी भीड़ जम गयी थी । दर्शकमण्डलीमें अधिकांश अहिफेन देवीके भक्तों और उपासकोंकी ही संख्या थी । इसलिये चित्रशालामें सन्नाटा और गम्भीरताका अटल साम्राज्य था । ऐसा प्रतीत होता था कि सभी दर्शक अहिफेन देवीकी आराधनामें मग्न होकर कल्पना-राज्यमें प्रवेश करनेको प्रबल चेष्टा कर रहे हैं । इस शुद्धहृदय दर्शकमण्डलीके बीच प्रेसके दो चार सम्वाददाता और पुलीसके कर्मचारी वैसे ही खटकते हैं जैसे स्वर्गमें नरकके कीड़े और हँसोंमें कौवा !

ओलाफ वान नूर अपनी उपासक-मंडलीसे कुछ फासलेपर एक आरामकुर्सीपर बैठे हुए सिगरेट-पाइपसे अधाधून्ध धूआँ खींचकर चित्रशालाको भर रहे थे । इस अद्भुतकर्मा मेधावी शिल्पीके अङ्गप्रयङ्गसे हास्यरस और प्रहसनशास्त्रकी प्रवीणता झलकती थी । यहाँतक कि प्रकृतिने भी उनके शारीरिक गठनमें भी इन्हीं भावोंका अधिक समावेश कर रखा था— शिरके केश काले-पीले और सफेद इन तीनरङ्गोंके मेलसे

अद्भुत छटा दिखला रहे थे। लम्बी मूँछ, खड़ी हुई भैंसकी सींग-से बराबरी कर रही थी और पतली तथा फफरी दाढ़ी ठुड्डीका दिवाला निकाल रही थी। रक्तशून्य उत्कट श्वेत रंगको देखकर श्वेतकुष्टकी कल्पनाकर काँप उठना कोई बड़ी बात न थी। यह विचित्र मनुष्य साहबी पोशाकसे जो शोभा दे रहा था उसका सविस्तर उल्लेख निष्प्रयोजन है!

इस अभिनव मूर्त्तिने हेलन और डेनिसका सादर स्वागत किया और व्यवसायिक शिष्टता और नम्रता दिखलाते हुए उनके आगे दो सिगरेटके बाक्स रख दिये। हेलनने सिर हिलाकर अपनी अनिच्छा प्रकट कर दी परन्तु मिस डेनिस तो पक्की पियक्कड़ थीं वह कब माननेवाली थीं। उन्होंने एक सिगरेटको जलाकर तुरत पीना शुरू कर दिया। पीते पीते भौंहें सिकोड़कर वह एकाएक बोल उठीं—यह सिगरेट बहुत कड़ा है, इसमेंसे किसी नशीली चीजकी तासीर आती है।

ओलाफ वानने हिचकिचाते हुए कहा—जी हां, मैं ऐसे ही सिगरेटोंका व्यवहार करता हूं। खासकर अपने लिये मैंने इन्हें स्मार्नासे अभी हाल ही मंगवाया है। इनमें अफीमका कुछ अंश मिला हुआ है।

नूरकी ओर तीक्ष्ण दृष्टिसे देखकर डेनिस बोल उठी—"अफीमका!" फिर वह हेलनकी ओर इस भावसे देखने लगी मानों चित्रकारके अपराधके लिये वही जवाबदेह है।

नूरने साँस भरकर सिर्फ कहा—"हाँ" और बाक्समें

सिगरेटको रखकर दूसरे आगन्तुककी अभ्यर्थनाके लिये दौड़ गया।

डेनिस रिलैंडने अपने चारों ओर देखकर कहा—क्या तुमने कभी अपने जीवनमें ऐसे भौतिक-काण्ड देखे हैं ?

डेनिस रिलैंडके ऐसा प्रश्न करनेका एक विशेष कारण था। चित्रशालाकी कारीगरी और सजावट सचमुच शुरूसे आखिरतक दुर्बोध्य और जादूभरी मालूम होती थी। दीवारोंपर जगह जगहपर ऐसे विचित्र तैलचित्र टंगे हुए थे जिनका कोई अर्थ ही समझमें नहीं आता था। किन्तु सबसे आश्चर्यजनक और महत्वपूर्ण जो चित्र था वह लम्बे हालके बीचमें एक खम्भेके सहारे टंगा हुआ था। ये दोनों सखियाँ भी उधर ही बढ़कर ध्यानसे उसे देखने लगीं।

जहां ये दोनों जाकर खड़ी हुईं, वहीं एक सम्पादक विस्मयसे अवाक होकर चित्रकी ओर एकटक देख रहा था। हेलनको देखते ही उसने उसकी तरफ बढ़कर धीरेसे कहा—आप क्या इस चित्रको गम्भीर भावसे देखनेकी चेष्टा कर रही हैं ? अगर आप मुझसे पूछे तो मैं इस चित्रको कोई महत्व ही नहीं देना चाहता। मैं इसे प्रहसन चित्रके सिवा अधिक कुछ नहीं समझता हूं। इसपर लेख लिखना अपने अमूल्य समयका दुरुपयोग करना होगा।

डेनिस रिलैंड सम्पादककी ओर देख अधीर भावसे बोल उठीं—आप सच कहते हैं, इस चित्रका गूढ़ तत्व तो मेरी

समझमें भी नहीं आता है—आप जानते हैं, नूरने इस चित्रका क्या नाम रक्खा है ?

सम्पादक—वे इसे अहिफेन देवीके नामसे पुकारते हैं परन्तु इससे भी तो कोई गूढ़ अर्थ नहीं निकलता है। आप क्या समझती हैं ?

यह प्रश्न इतना सहज न था कि बात कहते इसका उत्तर दिया जा सके। चित्रमें जो दृश्य चित्रित किया गया था वह अद्भुत होते हुए भी उसको काल्पनिक या निराधार नहीं कहा जा सकता और यह भी जोर देकर नहीं कहा जा सकता था, कि यह मनुष्यके हाथकी कारीगरी है, चर्मचक्षुओंके स्थान कल्पना-चक्षु ही इस चित्रका अधिक विचार कर सकते थे।

यह हमारे नागराज गुफाका बारीक नकशा था। सोमने नागराजकी गुफामें प्रवेश करके पहली रातको जो जो दृश्य देखे थे, उन्हीं दृश्योंका इस चित्रमें सूक्ष्म विश्लेषण किया गया था। नागराजकी गुफासे शुरू करके रहस्यमय पुस्तकालयतकका दृश्य आँखोंके सामने नाचता था! नागराजकी मूर्त्ति ज्योंकी त्यों पड़ी हुई थी—होपीन साहब अपनी कुर्सीपर बैठे सिगरेट पी रहे थे, पुस्तकालयमें हास्यमुखी रमणी एक कुर्सीपर बैठी हुई हाथमें एक फूल लेकर क्रीड़ा रही थी! सभी दृश्य पाताल-पुरीके थे। दर्शक मंडली आग्रह और कौतूहलसे इस रहस्यमय चित्रको देखती थी और इसको हृदयंगम भी कर लेती थी परन्तु फिर भी किसीको इसकी सत्यतापर विश्वास नहीं होता था।

डेनिस रिलैंडने भी नागराज गुफाके खिंचे हुए उस तैल-चित्रको अच्छी तरह समझ लिया था परन्तु उसकी सत्यतापर विश्वास न होनेके कारण उन्होंने भी अन्यान्य समालोचकोंकी तरह इसे प्रहसन-चित्र कहकर हँसीमें उड़ा दिया था। यह स्वाभाविक बात है कि जिसकी एक बार निन्दा हो जाती है फिर यदि वह कोई अच्छा भी काम करता है तो कोई उसकी प्रशंसा नहीं करता।

परन्तु हेलनने पहलेहीसे उस चित्रको अच्छी दृष्टिसे देखा था। यद्यपि वह भी उसके वास्तविक तत्वको समझ नहीं सकती थी तो भी उसे समझ न सकनेमें वह अपनी ही अयोग्यता मानती थी—चित्रकी झुठाई नहीं! निन्दा-स्तुति करती हुई दर्शक मंडलीसे विलग होकर उसने चित्रकारके पास जाकर पूछा—नूर साहब, यह चित्र किसका है? और इस अहिफेन देवीका क्या अर्थ है?

चित्रकारने अन्यमनस्क भावसे कहा—यह एक पुजारिन हैं?

हेलन—पुजारिन क्या?

नूर—एक मन्दिरकी पुजारिन हैं।

हेलनने फिर एक बार चित्रकी ओर आश्चर्यसे देखा और पूछा—क्या आप कहना चाहते हैं कि इस चित्रका कोई मौलिक आदर्श है?

नूरने सिर हिलाकर सम्मतिसूचक उत्तर दिया और तुरत

ही, चित्रशालामें प्रवेश करते हुए एक नवागत अतिथिकी अभ्यर्थना करनेके लिये आगे बढ़े। इस नवागत अतिथिकी मूर्त्तिमें कुछ ऐसी आकर्षणी शक्ति थी जिससे उसके चित्रशालामें प्रवेश करते ही सभी दर्शकोंकी दृष्टि उधर ही आकर्षित हो गयी। यह अतिथि एक एशिआई महिला थी!

यह वही महिला थी जिसका चित्र सभी लोग बड़े आग्रहसे देख रहे थे। वेश-विन्यास, रंगरूप सब कुछ वही था। रमणी धीरे धीरे आकर चित्रशालाके बीचमें एक कुर्सीपर बैठ गयी। अब किसीको चित्रकी सत्यताके विषयमें सन्देह नहीं रहा। नूर अपने चित्रके प्रधान अंशकी सत्यताको सिद्ध करके ही चुप नहीं रहे। उन्होंने एक एक करके दृश्यके प्रत्येक पात्रको ही दर्शक मंडलीके सामने उपस्थित किया। अहिफेन देवीके थोड़ी देर बाद ही होपीन साहब अपने जातीय-परिच्छदमें सजे हुए सिगरेट पीते चित्रशालामें उपस्थित हुए। उनके पीछे-पीछे गैनापोलीस मुस्कुराते और ऐंठते हुए आये। गैनापोलीसके पीछे सैयद और सैयदके पीछे मिस्टर लूकस! नूर साहबने सजीव-पात्रोंकी सत्यता तो अच्छी तरहसे साबित कर दी परन्तु निर्जीव दृश्यावलीको उठा लाना कठिन जानकर ही शायद उन्होंने इसके लिये चेष्टा नहीं की।

सभी सजीव पात्रोंके उपस्थित हो जानेपर नूरने उठकर एक एक करके अपने सभी पात्रोंका दर्शकमंडलीसे परिचय करा दिया। हेलेनसे नूरका पहलेसे परिचय था इसलिये उन्होंने

हेलनका भी परिचय दर्शक मण्डलीको बता दिया।

गैनापोलीसने अपनी वाक्पटुताके प्रभावसे थोड़ी ही देरमे हेलन कम्बरली और मिस डेनिससे अच्छी घनिष्ठता उत्पन्न कर ली और वार्तालापका सिलसिला जोड़ दिया।

मिस डेनिसको चित्रकी सत्यतापर अब भी पूरा विश्वास नहीं हुआ था। इसलिये गैनापोलीससे इस चित्रके रहस्यको पूछनेके कौतूहलको वह रोक न सकी।

उसने पूछा,—"अच्छा, मिस्टर गैनापोलीस, आपको इस चित्रकी सत्यतापर विश्वास होता है?

गैनापोलीने पूछा—आप अहिफेन देवीके चित्रकी बात पूछती हैं न? अच्छा बताइये तो सही आपको इसपर सन्देह क्यों होता है? चित्रके आदर्श तो आपके सामने उपस्थित हैं। इतने से यदि आपको सन्तोष न हो तो अभी आप अपने कौतूहलको दबा रखिये, एक दिन मैं आपलोगोंको यह रहस्यपूर्ण स्थान दिखला देनेकी चेष्टा करूँगा। यहीं लन्दनमें ही आपको यह रहस्यपूर्ण स्थान देखनेको मिलेगा।

डेनिसने उत्साहपूर्वक कहा—आपको धन्यवाद! यदि आप दिखला सकें तो मैं आपकी चिरऋणी रहूंगी।

इसके बाद दोनों सखियाँ चित्रशालासे निकलकर घरकी ओर रवाना हुईं!

पच्चीसवां परिच्छेद.

मैक्सकी जासूसी।



गिरजा घड़ीमें जैसे ही रातके ग्यारह बजे वैसे ही चार सज्जनोंने एकएक करके रेडिकल क्लबके पाठागारमें प्रवेश किया। यदि इसी समय किसी आदमीकी कौतूहली दृष्टि क्लबके हाजिरी-रजिस्टरपर पड़ती तो खुले हुए पन्नेकी आखिरी दो सतरें अवश्य ही उसे उन चार सज्जनोंका परिचय बता देतीं। वे सतरें इस प्रकार थीं :—

अतिथिका नाम	निवासस्थान	स्वागतकारी
डा० ब्रूस कम्बरली	लन्दन	जन एक्सेल
एम० गैस्टोन	पैरिस	ब्रायान मालपास

पाठागार अध्ययननिरत सज्जनोंसे भरा हुआ था। एक भी टेबुल खाली न था जहाँ ये नवागत सज्जन बैठते। परन्तु सौभाग्यसे जैसे ही इन्होंने प्रवेश किया कि कोनेका एक गोल टेबुल खाली हो गया। हमारे परिचित सज्जनोंने उसपर दखल जमाकर अपना वार्तालाप शुरू किया।

वार्तालाप किसी एक प्रसङ्गपर केन्द्रीभूत न होकर बहुत

देरतक भिन्न भिन्न धाराओंसे बहता रहा। एम० मैक्स भी इस बातचीतके सिलसिलेको किसी एक दिशामें फेरनेकी कोई चेष्टा नहीं करते थे। ऐसा न करनेका भी सम्भवतः उनका कोई गूढ़ अभिप्राय था क्योंकि मैक्सकी प्रकृतिके लोग बिना कामके एक मिनट भी व्यर्थ नहीं गँवाते। शायद वह इस विभिन्न धारा प्रवाही वार्तालापसे अपने साथियोंकी मनोवृत्तियोंका अध्ययन करनेकी चेष्टा कर रहे थे।

कुछ देरके बाद बातचीतके सिलसिलेको बदलते हुए एक्सेलने कहा—डाक्टर साहब, आज प्लेनेटमें मिस कम्बरलीका एक लेख छपा है। उसमें उन्होंने ओलाफ मान नूरके चित्रका बहुत ही अच्छा वर्णन किया है।

सर ब्रायान मालपासका ध्यान अकस्मात् इधर आकर्षित हो गया। उन्होंने बड़े आग्रहसे पूछा—उस चित्रकी बात कहते हैं जिसमें मिस्टर नूरने अहिफेन-देवीका चित्रण किया है?

एक्सेल—जी हाँ, परन्तु मैं तो नहीं जानता था कि आप नूर साहबसे इतना परिचित हैं?

सर ब्रायान-अभी तो उनसे मेरा परिचय नहीं हुआ है परन्तु उनसे भेंट करनेकी मेरी बड़ी इच्छा है जब उनका चित्र छप गया है तो मैं भी उसे बिना खरीदे न रहूँगा। आज ही मैं उसके लिये दो आना खर्च कर डालूंगा।

एक्सेल—मैंने तो समझा था कि मिस कम्बरलीका लेख, चित्र और चित्रकारसे अधिक सुन्दर और मनोहर है। सच

कहता हूं, उस लेखको पढ़कर मुझे बड़ी इच्छा हुई है कि मैं अभी जाकर अपने नेत्र सफल कर आऊँ पर देखता हूं, मेरी अभिलाषा पूरी होनेकी नहीं है। वह कल्पना मात्र है।

कम्बरली बोल उठे—लेखकी वास्तविकतापर सन्देह करना तुम्हारी भूल है तुम जानते हो हो, हेलन चित्रकारीके प्रति बहुत ही उत्साहशील है और चित्रोंके भले-बुरेको जाँचनेकी उसमें योग्यता भी है। इसके अलावे उसके साथ मिस डेनिस नामकी जो बालिका गयी थी, वह भी एक बड़ी समालोचक है। वह किसीकी खातिर रखनेवाली नहीं है। उसने भी लेखकी सत्यताको स्वीकार किया है।

मैक्स इतनी देरतक चुपचाप सर ब्रायान मालपासकी ओर देख रहे थे। अब उन्होंने कहा—सचमुच, लेखको पढ़कर मुझे भी चित्रको देखनेकी बड़ी इच्छा हुई है। सर ब्रायान मालपास! क्या आपकी भी उस चित्रको देखनेकी इच्छा है? तो चलिये न हम दोनों आज ही एक साथ चलें। क्या मैं चलनेकी तैयारी करूं?

सर ब्रायानने अन्यमनस्क भावसे कहा—चित्रशाला तो अभी भी खुली होगी परन्तु रातको ही चलना अच्छा होगा। मैं आफिसमें ऊपर ही रहूँगा आप जाते समय मेरे घरकी घंटी बजाइयेगा, मैं आपके साथ हो लूंगा।

एमॅ० मैक्स—आपके काममें कोई बाधा तो नहीं पड़ेगी?

सर ब्रायान—काम मेरे आमोदमें बाधा नहीं दे सकता।

यह वाक्य बहुत ही विलक्षण प्रतीत हुआ; परन्तु वास्तवमें इसके प्रत्येक अक्षरोंमें सचाई थी। सर ब्रायान मालपासने जो राजनैतिक प्रभाव विस्तार किया था, वह परिश्रम और अध्यवसायका फल न था। उसका सारा श्रेय उनकी अपार्थिव प्रतिभाका था। अपने पदके दायित्व और कर्त्तव्यके गुरुत्वको समझनेकी वह कभी चेष्टा नहीं करते थे। गम्भीरसे गम्भीर विषयपर तर्क और विवाद करके वह विजय प्राप्त कर सकते थे परन्तु प्रजाके साधारणसे साधारण दायित्वकी रक्षा उनके द्वारा असम्भव थी। लोगोंका कहना था कि यदि उनकी अलौकिक प्रतिभाको तनिक भी कर्त्तव्यज्ञानका सहारा होता तो आज वह इंग्लैंडके मंत्री-पदको सुशोभित करते होते।

सभी उनके नाम और कामको देख सुनकर हैरान करते थे। कभी कभी वह पार्लामेंटमें ऐसी ओजस्विनी और सारगर्वित वक्तृता देते थे जिससे सारे देशमें उनका प्रशंसावाद फैल जाता था और कभी वह अपनी वक्तृतामें ऐसे उजड्डपन और कर्त्तव्यहीनताका परिचय दे देते थे जिससे उनकी निन्दा होने लगती थी।

पाठकोंको यह मालूम ही है कि एम० मैक्स चित्रशाला परि-दर्शनके लिये उतना उत्कण्ठित न थे जितना वह उस राजनीतिज्ञसे घनिष्ठता बढ़ानेकी चेष्टामें लगे थे। अपने अमायिक स्वभाव और व्यवहार-कुशलताके कारण उन्हें अपनी सफलताका प्रमाण हाथोंहाथ मिला। मित्रमंडली जब क्लबसे निकलकर

अपने अपने रास्ते जानेके लिये अलग हुई तब सर ब्रायान माल-पासने अपने नवीन मित्र एम० गैस्टोनका हाथ पकड़कर कहा—"मिस्टर गैस्टोन, जब चित्रशाला देखने हमें आज ही चलना है तो आप कष्ट करके घर क्यों जायेंगे? चलिये, हम दोनों परिषद्में चलें। खान-पान भी तो मित्रताका चिह्न ही गिना जाता है। मेरा निमन्त्रण स्वीकार करनेमें क्या आपको विशेष आपत्ति है?

जासूसको आपत्ति ही क्या थी? वरन् मैत्रीके इस नये सुभीतेसे कुछ लाभ ही होनेकी सम्भावना थी। उन्होंने अपने मित्रके साथ जाना स्वीकार कर लिया।

जासूस और राजनीतिज्ञने जिस समय क्लाबसे निकलकर परिषद् जानेके लिये पिकडेलीका रास्ता पकड़ा उस समय यदि वे लोग दाहिनी ओर नजर फेरकर देखते तो क्लाबके सामने ही उन्हें एक छायामूर्त्ति अथवा मायामूर्त्ति दिखलायी पड़ती जो उनकी ओर एकटक ताक रही थी।

इस मूर्त्तिके बदनपर एक बरसाती कोट था। कोटकी कसी बटन और उलटी नकटाई शायद उसके असली रूपको छिपा-नेकी चेष्टामें लगी थी। सिरपर एक ढीली टोपी पगड़ीकी तरह मस्तकको ढके हुई थी। अतः यह कोई मायामूर्त्ति ही थी। उसने इन दोनों व्यक्तियोंको क्लाबसे बाहर होते देख झट अपनेको एक मोटरकी आड़में छिपा लिया। जब वे निश्चिन्त मनसे वार्तालाप करते हुए पिकडेली स्ट्रीटपर चलने लगे तब इस मूर्त्तिने भी उनका पीछा किया।

अर्द्ध रात्रिकी बिखरी चाँदनीमें परस्पर वार्तालाप करते हुए दोनों मित्र धीरे धीरे परिषद्की ओर अग्रसर हुए। राजनीतिज्ञकी लम्बी कद और सैनिक वेश तथा जासूसके विचित्र सान्ध्य-परिच्छद्को दूर ही से निर्मल चाँदनीमें लक्ष्य करके वह तीसरी मूर्त्ति अनुसरण करती आगे बढ़ी। दोनों मित्र जब परिषद्के फाटकपर पहुंचे तो एक कनस्टेबुलने अपनी टोपी उतारकर उनको सैनिक-सलाम किया। और दरवाजेको खोलकर फाटककी घंटीको वजा दिया।

घंटीके उत्तरमें सीढ़ोकी बगलमें एक 'आरोहिणी' (Lift) उतर आयी और उसपर चढ़कर दोनों मित्र ऊपर चढ़ने लगे। ठीक इसी समय अनुसरणकारीने फाटकपर पहुंचकर कनस्टेबुलको पुकारा—रिबन !

कनस्टेबुलने थोड़ा देरतक तीक्ष्ण दृष्टिसे आगन्तुककी ओर देखकर जल्दीसे नमस्कार किया।

आगन्तुक बोला—नहीं ऐसा न करो, कोई जानने न पावे कि तुम मुझे पहचानते हो। ये कौन अभी ऊपर जा रहे हैं ?

कन०—सर ब्रायान मालपास।

आग०—सर ब्रायान मालपास ?

कन०—जी हाँ।

आग०—और दूसरा ?

कन०—नहीं जानता। उसे मैंने कभी नहीं देखा है।

डिटेक्टिव सार्जण्ट सोर्बी रास्तेमें आकर पाकेटमें हाथ डाले

खड़े हो गये और अपने आप कहने लगे—हाँ, समझमें आया, यह मिस्टर मैक्स ही हैं। परन्तु मालूम नहीं होता, यह चाल किस लिये चली जा रही है। तब क्या यह महाशय भी अभी डनवरकी ही तरह अन्धेरेमें टटोलते हैं?

रास्तेके किनारे परिषद्की रेलिङ्ग पकड़कर सोर्बी चुपचाप खड़े हो गये। यद्यपि वहाँ खड़े रहनेमें अब उन्हें कोई फायदा नहीं था परन्तु स्थानको निर्जन पाकर वह वहीं ठहर गये और मैक्स-की इस नवीन मैत्रीके कार्य्य-कारणकी आलोचना करने लगे! सच्ची बात यह थी कि डनवरकी तरह वह भी फ्रान्सीसी जासूसकी सफलतासे एक प्रकारकी ईर्ष्या करते थे। इन दोनों अंग्रेज जासूसोंको भय हो रहा था कि यह फ्रान्सीसी आकर 'स्काट लैंड यार्ड' का नाम न डूबा दे।

वास्तवमें मिस्टर सोर्बीका वहाँ आना बिलकुल आकस्मिक था। क्लावके फाटकसे होकर वह कहीं जा रहे थे। अकस्मात् मैक्सको एक आदमीके साथ क्लाबसे बाहर निकलते देखकर वह कौतूहलवश उनके पीछे हो लिये थे! परिषद्के फाटकपर आने-पर उन्हें पता लगा कि मैक्सके साथी विख्यात राजनीतिज्ञ मिस्टर मालपास हैं! सोर्बीको अब बड़ा आश्चर्य्य और साथ ही ईर्षा होने लगी और वह बार बार यही सोचने लगे कि इस राजनीतिज्ञसे मुकदमेका क्या सम्पर्क है!

इन्हीं बातोंकी उधेड़बुन करते हुए सोर्बी रेलिंगके छड़ोंपर धीरे धीरे हाथ फेरने लगे। एकाएक उनके हाथोंपर ऊपरसे

आती हुई रोशनीकी एक रेखा पड़ गयी। उन्होंने ऊपर सिर उठाकर देखा तो एक आदमी दोतल्लेकी एक खिड़कीको खोल रहा है। अभी दो मिनिट पहले सर ब्रायान मालपासने जासूसके साथ घरमें प्रवेश किया था; इसलिये सोर्बीको समझनेमें देर न लगी कि यह सर ब्रायानका ही कमरा है और इसीमें दोनों सज्जन आकर बैठे हैं।

उद्देश्यहीन शून्यदृष्टिसे सोर्बी उस खिड़कीकी ओर ताकते हुए उनके वार्तालापके प्रसंगकी कल्पना करने लगे। इस समय अलेकजेण्डरकी तरह उन्हें इच्छा होती थी कि यदि उन्हें सूयेका पर होता तो वह खिड़कीके ऊपर बैठकर धूर्त फ्रान्सीसी जासूसकी सारी चालबाजीको जान उसीको धत्ता बताकर दिखा देते कि "स्काटलैंड यार्ड" की नजरसे ईश्वरके सिवा और कोई नहीं छिप सकता।

खैर, इस मानसिक चिन्तासे कुछ होने जानेवाला नहीं था। इसलिये उन्होंने सोचा कि इस स्थानको छोड़ अपना रास्ता लेना ही अच्छा है। जैसे ही वह दो एक कदम बढ़े कि धड़ाकेसे उन्हें एक दूसरे जंगलेके खुलनेकी आवाज आयी।

सोर्बीने सिर उठाया तो खिड़की खोलकर पीछे लौटते हुए सर मालपास दीख पड़े।

आइये पाठक, मिस्टर सोर्बीको जहाँका तहाँ छोड़कर हम भीतर चलें और देखें कि फ्रांसीसी जासूस वहाँ क्या कर रहा है।

मैक्स एक आराम कुर्सीपर बैठे हुए अपने मित्रका दिया हुआ सिगरेट पी रहे हैं। पीते पीते उन्होंने कमरेमें चारों ओर नजर दौड़ाकर असबाव-पत्रों और उनकी सजावटको देखते हुए पूछा—सर ब्रायान, आप कभी चीनमें तो नहीं गये थे?

सर ब्रायानने आश्चर्य्यसे उनकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा—जी हाँ, कुछ दिन पेकिंगमें रहा था।

जासूसने सिर हिलाया और सिगरेटका एक ऐसा दम खींचा कि उसमेंसे लौ निकल आयी। फिर धीरे धीरे धुएंको छोड़कर बोले—मैं भी एकबार चीन गया था।

सर ब्रायान—सच कहते हैं? मुझे तो विश्वास नहीं होता!

मैक्स—जी हाँ, मैं चीनमें रह आया हूं। मैं—"

ऐं! यह क्या हुआ! सहसा जासूसका चेहरा पीला पड़ गया। हाथकी अँगुलियाँ काँपने लगीं और दोनों आँखें खुली हुई डरावनी मालूम पड़ने लगीं। वह इस तरहसे खाँसने और लम्बी लम्बी साँसें लेने लगे मानों उनका दम घुटा जा रहा था!

सर ब्रायान चिल्लाकर उठ खड़े हुए और उनके पास दौड़े परन्तु अतिथिने हाथके इशारेसे उन्हें मनाकर दिया और कहा—ओः! कुछ नहीं है, यह अपने ही अच्छा हो जायगा।

सर ब्रायानने दौड़कर पंखा खोल दिया और स्तम्भित होकर उनकी ओर ताकने लगे। मैक्स अपने सारे बदनको समेटकर आरामकुर्सीमें चुपचाप संज्ञाहीनसे पड़े रहे। सहसा सर ब्रायान चौंक उठे और अपने अतिथिके पास दौड़ गये।

जलता हुआ सिगरेट कुर्सीकी बगलमें शतरञ्जीपर पड़ा हुआ था। उसे पैरोंसे घिसकर उन्होंने बुझा दिया और तीक्ष्ण दृष्टिसे गैस्टोनकी ओर ताकने लगे। आँखोंकी पपनियाँ इस समय मिटमिटा रही थीं।

सर ब्रायानने पूछा—अब कैसा मालूम होता है?

मैक्सने धीरेसे सिर हिलाते हुए कहा—बहुत अच्छा। अब कोई चिन्ता नहीं।

सर ब्रायान—क्या आपको ऐसी कोई बीमारी है?

मैक्स—जी हाँ, जबसे मैं चीनसे लौटा हूं। परन्तु इसे मैं बीमारी नहीं समझता, इससे मुझे आराम ही मिलता है।

सर ब्रायान मूँछोंपर ताव देते हुए कुछ कहने ही वाले थे कि सहसा उन्हें कोई बात याद पड़ गयी। वह तुरत टेबुलके पास जाकर एक ग्लास ब्रान्डो भर लाये।

अतिथिने ग्लासको हाथमें लेकर कहा—आपको धन्यवाद है। अब आपको कोई तकलीफ न करनी होगी। मैं बिलकुल चंगा हो गया हूं। परन्तु मुझे एक चीज मिलती तो बड़ा उपकार होता परन्तु यहाँ तो मिलना कठिन है।"

सर ब्रायान—कौन चीज?

मैक्सने धीरेसे कहा—अफीम!

सर ब्रायान—क्या......आप......आप......"

मैक्सने अपने शब्दोंपर क्रमशः जोर देते हुए कहा—यह आदत मुझे चीनमें पड़ी। तबसे आज कई वर्ष हो गये, मैं नियम-

से इसका व्यवहार कर रहा हूं। दुर्भाग्यवश एक महीनेसे एक विशेष कार्य्यवश इस समय मुझे इंग्लैंडमें रहना पड़ता है। यहाँ अफीम न मिलनेसे मैं बड़ा कष्ट पा रहा हूं। यह तो आप मेरे चेहरेसे ही देख सकते हैं।

सर ब्रायान—आपके प्रति मेरी सहानुभूति है।

म कूस—पेरिसमें मैं एक छोटेसे क्लबका सदस्य हूं। वह क्लब सेंट क्लाउड और बोलवाड़े रोडके मोड़पर है।

मालपास—मैंने उसका नाम सुना है। सेंट क्लाउड स्ट्रीट-में तो?

म क्सने आश्चर्य्यका भाव दिखलाते हुए कहा—जी हाँ, वह मकान ठीक क्लाउड स्ट्रीटमें ही पड़ता है। क्या आप उसके किसी सदस्यका नाम बता सकते हैं।

सर ब्रायान बड़े संकटमें पड़ गये। और कोई बहाना न देखकर उन्होंने खिड़कीकी ओर बढ़कर उसे बन्द कर दिया और लौटकर अपने मित्रकी ओर देखते हुए शीघ्रतासे बोले—जब मैं पेरिसमें रहता था तब मैं भी उसका सदस्य था।

मैक्स खुशीसे बोल उठे—सर ब्रायान, हर्षकी बात है, कि हम दोनों एक ही मन्दिरके पुजारी हैं।

सर ब्रायानने भौंहों और आँखोंपर हाथ फेरते हुए अपने दिमागको ठीक करनेकी चेष्टा करने लगे। बहुत देरके बाद अपनेको सम्हालकर बोले—न जाने किस कुघड़ीमें मैंने पेकिंगमें पैर रखा था कि इस अफीमने मेरा पंजा पकड़ लिया। मैंने

चाहा था कि मैं इसे अपनी दासी बनाऊँ। परन्तु उल्टे इसीका दास—"

मक्स—क्या आप इससे घृणा करते हैं?

सर ब्रायानने अतिथिकी ओर देखकर कहा—आप क्या समझते हैं?

मैक्सने अब सम्पूण स्वस्थ होकर कहा—सर ब्रायान, अहिफेन देवीके कल्पना-राज्यमें ही मेरा वास्तव-जीवन है। इस मर्त्यलोकमें तो मेरा कंकालमात्र निवास करता है। स्वर्गके उस नन्दन-काननसे गिर जाना मैं प्राणदण्डसे भी कष्टकर समझता हूं। इन तीन महीनोंसे नियमित रूपसे वहां मेरा मानसिक गमन हुआ करता है।

सर ब्रायान भयसे काँप उठे।

मैक्स कहने लगे—उस लोकोत्तर-प्रदेशमें मेरे नयनोंकी पुतली, स्वर्गकी रानी, एक मोहिनी पूर्वी बालिका बसती है। अहा! उसका सौन्दर्य्य वर्णनातीत है! वह कल्पनाकी सामग्री है। शब्दों द्वारा उसका चित्रण करना घोर अन्याय है। एक और आश्चर्य्यकी बात यह है कि मनुष्यकी स्वभाविक अवस्थामें उसकी कल्पना करनेपर वह एक सर्पके आकारमें परिणत हो जाती है।

सर ब्रायान आश्चर्य्यके साथ बोल उठे—क्या कहते हैं? सर्पके आकारमें?

मैक्स—जी हाँ, मैं बिल्कुल ठीक कहता हूं। अहिफेन—

राज्यमें जब उसके साथ मेरा मिलना होता है तब उसके आलिंगनपाशमें बद्ध होकर मैं स्त्री-पुत्र, भाईबन्धु, यहाँतक कि उस अहिफेन राज्यको भी भूलकर अतृप्त आकांक्षाके साथ उसकी रूप-सुधा पीने लगता हूं। मुझे भास होता है, कि हम दोनों किसी पवित्र जलवाली नदीके ऊपर सुन्दर नौकेपर बैठकर पुष्पउद्यानके भीतरसे किसी अनिर्दिष्ट अपरिचित स्थानके लिये यात्रा कर रहे हैं। पार्श्वस्थित अंगूर और आमके बागसे पके और सुगन्धित फल गिरकर हमारी नौकाको भर रहे हैं। मैं नित्य नियमित रूपसे इस उद्यानकी यात्रा किया करता हूं। यदि कोई उस नन्दन-द्वारकी चाबीको त्याग देनेको मुझसे कहे तो मुझे उतना ही कष्ट होगा जितना किसी प्रेमिकको अपनी प्रेयसीके त्यागनेमें होना सम्भव है। इसीलिये कहता हूं कि उसी स्वर्गके नन्दन-कानन और कल्पना-देवीके आलिंगन पाशमें ही मेरे जीवनके समस्त आनन्द, सुख और सौन्दर्य्य-का आवास है। परन्तु दुर्भाग्यवश जब उस संजीवनी बूटी—कल्पनाकी चाबीका अभाव हो जाता है। तब वह अभिराम प्रतिमा, मेरे विकृत-मस्तिष्ककी दुर्बलताके कारण एक विषधर सर्पके रूपमें परिणत होती है।

सर ब्रायानने मुस्कुराकर करुण स्वरमें कहा—मिस्टर गैस्टोन, वास्तवमें आप धन्य हैं! आपके समान अहिफेन देवीके सच्चे और उत्साही उपासक बहुत ही कम मिलेंगे। मैंने तो समझा था कि इस देवीके सभी उपासक ही इसकी दासतासे आन्त-

रिक घृणा करते हैं !

मैक्स—सर ब्रायान, प्रार्थना करता हूं यह शब्द मेरे सामने न उच्चारण कीजिये। मैं इस कादरतासे घृणा करता हूं।

सर ब्रायान—आपकी बातोंसे मुझे बड़ा कौतूहल हो रहा है। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि आप सैंट क्लाउड स्ट्रीटके कार्य्यालयमें सदस्य रह चुके हैं और दूसरे, काल्पनिक विचार और भ्रान्त कुसंस्कारको सत्यके रूपमें मानते हैं।

पाठकोंको यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है कि मैक्सने अफीमचियोंसे हेलमेल करके इन सब काल्पनिक विचारोंकी अभिज्ञता प्राप्त की थी और इस समय उन्हीं अभिज्ञताओंको चतुराईके साथ काममें ला रहे थे। वह अफीमके कुसंस्कारोंसे अपरिचित न थे तो भी उन्होंने पूछा—आप कैसे संस्कारकी बात कहते हैं ?

सर ब्रायान—"बहुत दिन हुए मैंने एक अफीमचीसे ठीक ऐसी ही बातें सुनी थीं। वह भी मैडम जीनके कार्य्यालयका ही सदस्य था। भाई साहब, आपसे छिपाना क्या है, मैं भी यह यात्रा—"

मैक्स—ऐं ! क्या आप भी करते हैं ?

सर ब्रायान—जी हाँ; देवीसे मेरा भी साक्षात् होता है।

मैक्स—परन्तु आश्चर्य्यकी बात है कि आप इसे सिर्फ भ्रान्त कुसंस्कार और कल्पनाका विकार समझते हैं ! मेरी बातोंपर भी क्या आपको विश्वास नहीं होता ?

सर ब्रायान—यदि आपका कहना सच हो तो कहना होगा कि संसारकी आठवीं अद्भुत वस्तु यही है।

मैक्स—"नहीं, यह उससे भी बढ़कर है। अच्छा, सर ब्रायान, अफीम-कारखानेके कर्मचारियोंकी तो इसमें कोई चाल नहीं है। मैं तो समझता हूं कि वे लोग कोई जादू—"

सर ब्रायान—नहीं नहीं, ऐसी कोई बात नहीं, यदि ऐसा होता तो किसीसे उस देवीका साक्षात् नहीं हो पाता।

मैक्स—दुःखकी बात है कि बहुत समय इस बूटीके न मिलनेपर मुझे बड़ा कष्ट सहना पड़ता है। यही देखिये न, लन्दन आकर मैं जीवन्मृत सा हो रहा हूं।

सर ब्रायान—"मेरा तो काम यहाँ भी चल ही जाता है। लन्दनमें भी—"

मैक्स—क्या लन्दनमें भी कोई कारखाना है?

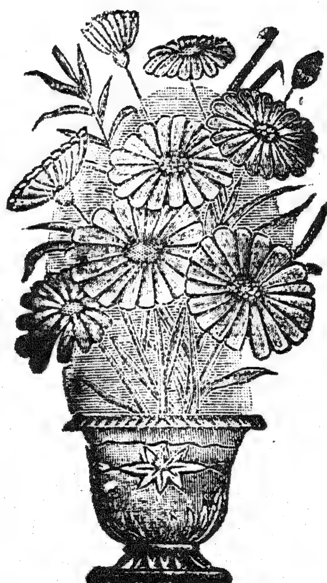
सर ब्रायान—अच्छा मिस्टर गैस्टोन, आपका यहां कुछ दिन रहनेका विचार है? यदि हो तो कहिये मैं आपका प्रबन्ध कर दूं।

मैक्स—आपको धन्यवाद। अभी मुझे दो सप्ताह यहाँ रहना पड़ेगा।

सर ब्रायान—आपको कोई कष्ट न होने पायगा। आज मैं आपसे एक आदमीकी भेंट करा दूंगा। उसके जरिये आप कल्पना-कुमारीसे साक्षात् कर सकेंगे।

मैक्स—इस अनुग्रहके लिये मैं आपका कृतज्ञ रहूंगा।

सर ब्रायान—मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं आपसे विद्वेष नहीं करता। आप यह न समझियेगा कि आपके साथ मेरे मनका मिलान है। आप अपनेको जिस देवीका अन्यन्य उपासक समझते हैं मैं अपनेको उसीका क्रीतदास मानता हूं।



छत्तीसवां परिच्छेद.

अफीमका एजेंट।



स्ट्रिया होटलके एक सुसज्जित कमरेमें मिस्टर गैनापोलीसने प्रवेश करके अफीमची गेस्टोनको सिर झुकाकर प्रणाम किया। एम० गैस्टोनने भी प्रत्युत्तरमें अपने स्थानसे उठकर सहर्ष आगन्तुकका स्वागत किया और हाथ मिलाकर कुर्सीपर बिठाया।

कुछ देरतक तीक्ष्ण दृष्टिसे अपरिचित मनुष्यकी ओर देखकर गैनापोलीसने कमरेकी निस्तब्धता भग करके कहा—महाशय, मैंने सुना है कि आप अफीम न मिलनेके कारण बहुत तकलीफ झेल रहे हैं। आपके चेहरेसे ही आपके कष्टका परिमाण अनुमान किया जा सकता है। एक सज्जनने, जिसे हम दोनों ही जानते हैं, (अफीम-परिजनमें सभी सदस्य नामहीन होते हैं) मुझे आपसे भेंट करनेका अनुरोध किया था इसीलिये मैं आपके पास आया हूं।

एम० गैस्टोन—मैं आपका स्वागत करता हूं।

मैक्स उत्कण्ठासे उठ खड़े हुए और दरवाजेको बन्द करके धीरेसे बोले—आप क्या मेरा कष्ट दूर कर सकते हैं?

गनापीलीस--सचमुच, मुझे विश्वास हो रहा है कि आप

अहिफेन देवीके उन इने-गिने उपासकोंमेंसे हैं जो संसारके सब ऐश्वर्य्यको इस देवीकी भेंट कर देते हैं। उन्हें यदि अफीमके बदले स्वर्गका राज्य भी मिल जाय तो वह लेनेको स्वीकार नहीं करते हैं। खैर, सज्जनने मुझसे कहा था कि आप पहले सेंट क्लाउड कार्य्यालयके ग्राहक थे। क्या आप मैडम जीनको जानते हैं?

गैस्टोन—क्या आप पूछते हैं? मैं जोन साहबाको ही नहीं जानता? वही तो वहाँके मन्दिरकी पुजारी थीं।

गैना०—और सेन?

गैस्टोन—भलेमानस सेन? अहा! उन्हींके कर-कमलोंसे तो मुझे उस राज्यकी चाबी मिलती थी! हाय! जबसे मैं उन-सज्जनोंका साथ छोड़कर लन्दनके लिये निर्वासित हुआ हूं तबसे मेरे ऊपर कैसी बीत रही है इसे मैं शब्दोंमें नहीं प्रकट कर सकता।

गैनापोलीसने सहानुभूति दिखलाते हुए कहा—मैं आपका कष्ट समझता हूं। मैंने भी उस मन्दिरमें उपासना की है। उसका प्रबन्ध बहुत ही अच्छा था। यद्यपि मैं आपसे जोर देकर नहीं कह सकता कि पेरिसके कार्य्यालयसे यहाँके कार्य्यालयका प्रबन्ध अच्छा है; परन्तु इतना मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि आपकी सभी आवश्यकतायें यहाँ भी पूरी हो सकती हैं। दुःखकी बात है कि इस बार पेरिस लौटकर आप वहाँके मन्दिरका अस्तित्व न देख पायेंगे!

गैस्टोन चिल्ला उठे—"क्या कहते हैं? क्या आपका मतलब—"

गैनापोलीस—महाशय, आप तो जानते ही हैं, इस देशमें अफीमके व्यौपारियोंपर पुलीसकी कड़ी नजर रहती है। अभी हालमें इन शैतानोंने सेंट क्लाउडके कारखानेको बन्द कर दिया है।

गैस्टोनने अपना सिर ठोककर कहा—हा भगवान! पैरिसमें लौटकर मैं कैसे जीता बचूँगा?

गैनापोलीसने आगे झुककर कहा—मैं आपको सलाह देता हूं कि, भविष्यमें आप समय समयपर लन्दन आकर यहाँके कारखानेसे लाभ उठाया करें। लन्दन कोई दूर नहीं है और यहाँके कारखानेके संचालक होपीन साहब बड़े ही नम्र और सज्जन आदमी हैं। इस कारखानेकी कई बड़े बड़े शहरोंमें शाखायें हैं।

मेक्सने एक लम्बी साँस लेकर कहा—आपने मुझे प्राणदान दिया। साधारण नशाखानोंसे मुझे एक स्वाभाविक घृणा है। लन्दनके कारखानेका अस्तित्व मैं जानता ही न था। शायद पैरिसमें तो अब कोई बड़ा कारखाना नहीं होगा?

गैनापोलीसने उत्साहसे कहा—मेरे मित्र, हम लोग इतने कायर नहीं हैं कि पुलीसकी धमकीसे डर जाँय। हमारा कार्य्यालय पैरिसमें नियमित रूपसे अपना काम चला रहा है। इस समय समस्त सभ्य संसारमें कोई भी ऐसा बड़ा शहर नहीं जिसमें हमारे कार्य्यालयका शाखा-कार्य्यालय न स्थापित हुआ

हो। आज समस्त संसारपर एक महापुरुषका अखण्ड प्रताप विराज रहा है।

गैस्टोन—आह! आप राजा साहबका उल्लेख कर रहे हैं! मैंने पैरिसके कार्य्यालयमें उनका नाम सुना था।

गैनापोलीसने आगे झुककर धीरेसे कहा—जी हाँ, वही। आपसे कुछ छिपाना नहीं है। परन्तु आप तो जानते ही हैं, पुलीसकी उनपर कड़ी नजर रहती है।

गैस्टोन—उन पापियोंका सर्वनाश हो!

गैनापोलीस—उनके सर्वनाशकी सचमुच हमें निहायत जरूरत पड़ गयी है! पुलीसका विश्वास है, कि अफीमके कारखानेके साथ अवश्य ही किसी न किसी गुप्त पापाचारका सम्बन्ध है! जब इस प्रकार हमारे सिरपर विपत्ति नाच रही है तब हम कुशल इसीमें समझते हैं, कि सभी ग्राहकों और कर्मचारियोंका नाम गुप्त रखें। पैरिसके कारखानेकी तलाशी इतनी अचानक हुई थी कि वहांके कर्मचारी अपने ग्राहकोंको सावधान न कर सके थे। परन्तु अपने सदस्योंकी नियमावली छिपानेमें उन्होंने जिस बुद्धिमत्ताका परिचय दिया था उसके लिये हम उनका चिर कृतज्ञ रहेंगे। उस घटनाके बाद हमें बड़ी सावधानीसे काम करना पड़ता है।

आज कल हमारे सभी कारखाने स्वतन्त्र रूपसे परिचालित हो रहे हैं। इसलिये कभी कभी दूसरे कार्य्यालयोंके सदस्योंका नाम जाननेमें हमें बड़ी असुविधा होती है। खैर, आपपर अब

हमें कोई सन्देह नहीं रहा। खुशीसे आपको राजा साहबके प्रधान कार्य्यालयसे परिचित करा सकते हैं परन्तु आपको एक शर्त्त स्वीकार करनी होगी। आप जो कुछ देखें सुनेंगे उसे बिल्कुल गुप्त रखेंगे।

गैस्टोन बोल उठे—"आप क्या कहते हैं! राजा साहबको मैं अपना इष्टदेव समझता हूँ। मैं—"

गैनापोलीस—ऐसा ही हम सभी समझते हैं।

गैस्टोनने करुण भावसे अपने साथीकी ओर देखते हुए कहा—"कितने ही दिनोंसे उस इष्टदेवके दर्शनोंकी लालसा लगी हुई है! क्या—"

सहसा गैनपोलीस काँप उठे और हिचकिचाते हुए बोले—आप राजा साहबसे भेंट करना चाहते हैं? आपकी यह इच्छा कभी पूरी होनेकी नहीं। मेरा जैसा पुराना और विश्वासी कर्मचारी शायद हो उनके पास दूसरा होगा परन्तु मैं आपसे शपथ करके कहता हूं कि आजतक मैंने भी उनके दर्शन नहीं कर पाये हैं। सम्भवतः राजा साहब नाममात्रके ही राजा-साहब हैं।

गैस्टोन—आप मुझे होपीन साहबके कार्य्यालयमें ले चलने-की बात कहते थे न?

गैनापोलीसने मुस्कुराकर कहा—आप चाहें तो अभी चल सकते हैं।

एम गैस्टोनने संकोचके साथ कहा—अभी तो मेरा हाथ

खाली है। मैं पेरिससे रुपये मँगाता हूँ तो एक दिन आपकी सहायता लूँगा!

गैनापोलीसका मुख जरा मलिन हो गया उन्होंने निरुत्साह भावसे कहा—परन्तु मेरे यहांकी फीस तो बहुत ज्यादा है। यहांके सभी सदस्य बड़े बड़े धनी-मानी आदमी हैं। ५० गिनी वार्षिक फीस देनेमें वह आनाकानी नहीं करते। प्रवेश फीस भी इतनी ही लगती है। आपको अभी १०० गिन्नियाँ पाकेटसे निकालनी होंगी।

गैस्टोन—परन्तु मैं तो यहाँ दो सप्ताहसे अधिक न रहूँगा। मुझे हाल ही अमेरिका जाना है!

गैनापोलीस—कोई चिन्ता नहीं, आप यहाँसे एक रसीद लिखा लेंगे। उस रसीदको दिखाते ही न्युयार्कके दफ्तरसे आप लाभ उठा सकते हैं। युनाइटेड स्टेटमें भी हमारा दफ्तर है!

गैस्टोन—परन्तु मैं दक्षिणी अमेरिकामें जा रहा हूँ।

गैनापोलीस—बोनोएयरमें हमारा एक कारखाना है।

गैस्टोन—परन्तु मैं बोनोएयरकी तरफ नहीं जाऊँगा। मुझे कुछ मित्रोंके साथ युकाटन जाना है।

इस बार गैनापोलीसने निरुत्साह भावसे कहा—वहाँ हम लोग आपकी कोई सहायता नहीं कर सकते। परन्तु महाशय जान-बूझकर आप अपना जीवन संकटमें क्यों डालने जा रहे हैं? यह बूटी तो वहाँ स्वप्नमे भी देखनेको न मिलेगी।

गेस्टोन—क्या करूँ, बाध्य होकर मुझे कुछ दिनोंके लिये इस देवीकी उपासनासे विरत रहना पड़ेगा।

गैना०—पर मैं तो समझता हूं कि आजकल जैसी अवस्था आपकी हो रही है, उससे थोड़े दिन भी आप अफीमके बिना नहीं जी सकते।

गेस्टोन—जीने-मरनेकी तो बात अलग है परन्तु इसके सिवा लोक-लाज भी तो कोई चीज है! आप ही कहिये, मित्रोंके साथ दिन-रात रहकर मुझे कल्पना-राज्यकी सफर करनेकी छुट्टी कब मिलेगी?

गैनापोलीस—मैं आपके लिये एक नयी प्रणाली बता दूँगा जिससे कोई सहसा आपको अफीमची न समझ सकेगा।

गेस्टोन—इसके लिये मैं आपका कृतज्ञ रहूंगा। परन्तु तो भी मुझे आपकी शर्त्तें स्वीकार करनेका साहस नहीं होता। जब मैं आपके कारखानेसे पूरा लाभ नहीं उठाता हूँ तब मुझसे इतने रुपये लेना आपको उचित भी नहीं है।

गैनापोलीस—अच्छा, आपहीका कहना सही। आप २० ही गिनी चुका दीजिये परन्तु सिर्फ दो बारके लिये।

गेस्टोन खुशीसे बोल उठे—बहुत अच्छा, क्या मैं अभी चेक लिख दूँ?

गैनापोलीस—आप भूल करते हैं, कारखानेसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। लेन-देनका काम होपीन साहबसे ही कर लीजियेगा। परन्तु इतना मैं कह सकता हूँ कि हमारे कार-

खानेमें चेकका लेन-देन नहीं होता है। इसलिये आप अभी घर जाइये। रातको ठीक नौ बजे पिकडनी स्ट्रीटके मोड़पर रुपये लेकर हाजिर रहियेगा। वहीं आपसे भेंट होगी। हाँ, एक और बात है, कल आप घरसे बाहर न हो सकेंगे। इसलिये यदि किसीके यहाँ आने-जानेकी बात हो तो तोड़ दीजियेगा।

गैस्टोन—नहीं कल मुझे किसीके यहाँ आना-जाना नहीं है। अच्छा, तो मैं ठीक नौ बजे पिकडनी रोडके मोड़पर खड़ा रहूंगा?

गैना०—जी हाँ।

अफीम एजेंटसे विदा होकर मिस्टर गैस्टोन अपने कार्य्योद्धारकी कल्पना करते हुए तेजीसे अपने होटलकी ओर चले।

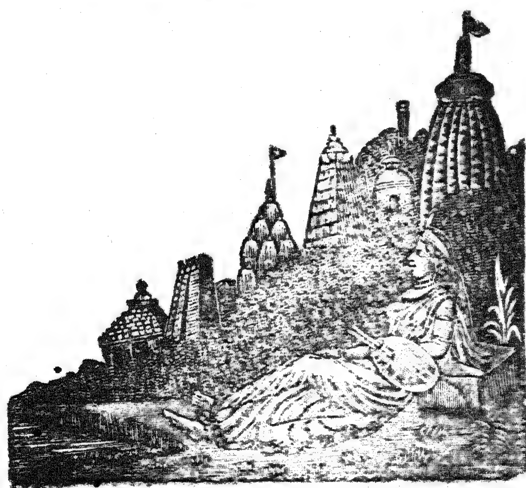
मनोविज्ञानकी अभिज्ञता और रसायनिक प्रक्रियाके प्रभावसे आज उन्होंने एजेंटके ऊपर जो विजय प्राप्त की उसके कारण गर्व और उत्साहसे उनके पैर धरतीपर पड़ते ही न थे। उन्हें स्वयं आश्चर्य्य हो रहा था कि किस जादूके प्रभावसे एक धूर्त्त और कूटनीतिज्ञ अफीमका एजेंट उनके स्वस्थ सबल शरीरको अफीमका रोगी समझ गया!

परन्तु वास्तवमें जासूसने कोई भी जादू न चलाया था। उन्होंने रसायनिक-विद्याकी सहायतासे अपने सारे बदनपर ऐसा रंग लगा लिया था जिससे वह एक पक्के नशाखोर बन गये थे। इस वेश परिवर्त्तनमें उन्हें सचमुच बहुत कष्ट हो रहा था। उस नकली रंगमें चूनेका सा एक प्रकारका कड़ुआपन था जिसके

कारण उनका सारा बदन दर्द कर रहा था। इस खुजलाहटके कारण मुखकी विकृति बनाये रखनेमें उन्हें बड़ी सहायता मिलती थी।

घर पहुंचनेपर जासूसका सबसे पहला काम हुआ नकली रंगको धोकर बदनको अच्छी तरह सुखाना। इसके बाद स्नाना-हारसे निवृत्त होकर वह निर्दिष्ट समयकी अपेक्षा करने लगे।

उन्होंने मन ही मन कहा—"अमेरिका युरोप, एशिया, अफ्रीका, सभी जगह इनके अफीमके कारखाने हैं इन कारखानों का पता लगानेमें हजारों जासूसोंके छक्के छूट जायँगे। परन्तु मैक्सने जब जड़पर ही हाथ लगाया है तब कौन जाने शाखा प्रशाखाओं समेत ही वह वृक्षको घराशायी न कर डाले।"



सत्ताईसवां परिच्छेद ।

जासूस कारखानेमें ।



इतने दिनोंके बाद फ्रान्सीसी जासूसको अपने कार्य्योद्धारकी क्षीण आशा दीख पड़ी । यद्यपि फ्रांसकी पुलीसने सेंटक्लाउडके अफीमखानेको बन्द करके उसकी सारी आमदनी-रफ्तनी बन्द कर दी थी तो भी इस प्रवीण जासूसका दृढ़ विश्वास था कि अफीमका कारबार पैरिससे जड़-मूलसे अभी नष्ट नहीं हुआ है और जबतक प्रधान कार्यालयका ध्वंस नहीं किया जाता तबतक इन शाखा-प्रशाखाओंको हिलाने-डुलानेसे सामयिक आर्थिक हानिके सिवा इस कारबारको कोई स्थायी धक्का न पहुँचेगा ! अतएव इस विख्यात जासूसने अपना प्रयत्न प्रधान कार्य्यालयके अनुसन्धानमें लगा दिया । क्लाउड स्ट्रीटकी तलाशीके समय उन्हें दो सूक्ष्म सूत्र मिले—एक राजा साहबका पत्र और दूसरा लियुनिस बैंकका जाल ! इन सूत्रोंका सहारा लेकर एक दिन चट उन्होंने एक गैस्टोनका वेश पकड़कर लन्दनकी लीलाभूमिपर पदार्पण किया । वेश-परिवर्त्तनकी असाधारण निपुणताके कारण कोई भी उन्हें पहचान न सका । हाँ, सहायताकी आशासे उन्होंने लन्दन पुलीससे अपना परिचय गुप्त रखना उचित न समझा । पुलीससे परिचित होनेपर भी मत विरोधके कारण

उन्होंने अपना अनुसंधानकार्य्य स्वतन्त्ररूपसे ही आरम्भ किया। खुबरबन बैंकके जालको उन्होंने इतनी चतुराईसे पकड़ा कि अफीमके कर्मचारियोंको उधरसे जरा भी शक न हुआ। सर व्रायान मालपाससे मिलते समय उन्हें एक डर यह हुआ था कि क्लाउडस्ट्रीटके अफीमखानेका नाम सुनकर राजनीतिज्ञ उन्हें पहचान न लें। परन्तु राजनीतिज्ञको तो बात ही नहीं कूट-नीतिज्ञ गैनापोलीसपर भी उन्होंने विश्वासका सिक्का जमाकर चक्रव्यूहके प्रवेशाधिकारका पासपोर्ट ले लिया!

उसी चक्रव्यूहका भेद करनेके लिये छद्मवेशमें सुसज्जित होकर गैनापोलीससे भेंट करनेको ६ बजेके करीब पिकडली स्ट्रीटकी ओर चल पड़े। वहाँ पहुंचते ही गैनापोलीस मिले उन्होंने उन्हें एक टेक्सी गाड़ीपर बिठा कर गाड़ी हँकवा दी।

गाड़ी जब चलने लगी तब गैनापोलीसने अपने साथीकी ओर फिरकर आश्चर्य्यसे पूछा—सांध्य-परिच्छदमें! आपको तो सवेरे लौटना होगा?

मैक्सने भय और लज्जासे सिर झुका लिया। आज वेश परिवर्त्तनमें यह बड़ी भारी भूल हो गयी। उन्होंने धीरेसे कहा—बड़ी भूल हुई!

अपने साथीका संकोच (बनावटी) दूर करनेके लिये गैना-पोलीसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया। चीनकी यात्रा, अफीमके कार्य्यालयका प्रबन्ध और पुलीसकी ज्यादती आदि विषयों-पर वह रास्तेभर एक लम्बी वक्तृता देते रहे। परन्तु मैक्सका

कान उधर था या नहीं सो तो ईश्वर ही जानें परन्तु इतना तो गैनापोलीसको भी क्षीण प्रकाशमें मालूम हो गया कि अहिफेन-देवीकी आराधनामें वह तन्मय हो रहे हैं। मिष्टर गैनापोलीस अपने वक्तृता प्रसंगमें एक बार रुककर गिनीकी बात पूछनेको न भूल सके!

विक्टोरिया स्ट्रीटके मोड़पर आकर गाड़ी रुक गयी। गैना-पोलीस गाड़ीवानको भाड़ा चुकाकर अपने मित्रके साथ उत्तर-की ओर अग्रसर हुए।

दोनों मित्र कोई ३०, ४० कदम पैदल गये थे कि अकस्मात् एक एम्बूलेंस आकर उनकी बगलमें खड़ा हो गया। गैनापोलीसने गैस्टोनका हाथ पकड़कर उस गाड़ीमें बैठाया और आप भी बगलमें बैठ गये। गाड़ी चलने लगी परन्तु किधर सो गैस्टोन बिलकुल ही न जान सके!

बन्द एम्बूलेंसके भीतर घोर अन्धकार छा रहा था। यदि जरा सी भी रोशनीको उसके भीतर प्रवेशाधिकार मिलता तो गैनापोलीसको साफ मालूम हो जाता कि बगलमें बैठा हुआ साथी भयसे काँप रहा है। तथापि गैनापोलीसने अपने कपट व्यवहारकी कैफियत देते हुए कहा—"मिष्टर गैस्टोन! क्षमा करेंगे, पुलीससे सावधान रहनेके लिये हमें हमेशा इन छोटी-मोटी असुविधाओंको बर्दास्त कर लेना पड़ता है। आप कुछ बुरा न मानेंगे।

मैक्स—आपका क्या मतलब है, मेरी समझमें नहीं आया?

गैनापोलीस—अच्छा सुनिये, आप तो जानते ही हैं, जासूस बड़े धूर्त्त होते हैं। वह अफीमचीका वेश बना आप हीकी तरह किसी किसी कारखानेके सदस्य बन कारखाने और राजा साहबके बारेमें पूछते हैं। ऐसा कितनी ही बार हो गया है। अभी न्यूयार्कमें एक जासूसने एक सदस्यका पता लगाकर उससे पूछा था परन्तु वह साफ नुकर गया था। यद्यपि मुझे आपपर संदेह नहीं है परन्तु आप ही कहिये, नियम भङ्ग करना क्या हमें उचित है ?

मैक्स—अच्छा, जब आप मुझे इस तरह बन्द करके ले जाते हैं तो फिर मैं कैसे कारखानेमें आ-जा सकूँगा ?

गैनापोलीस—कोई चिन्ता नहीं। १८६४२ नं० पूर्वी दरवाजेके नम्बरसे आप राजा साहबके नाम टेलीफोन कीजियेगा। फिर आपके जानेका प्रबन्ध हो जायगा। मैं आजकी ही तरह जाकर आपको लिवा लाऊँगा।

मैक्सको मालूम हो गया कि ये लोग कोई साधारण कार-बारी नहीं हैं। इनके रहस्यका पर्दा हटानेके लिये बड़े कौशल और बुद्धिमानीकी आवश्यकता है। जालसाजी और कूटनीतिमें चीनियोंका शायद ही कोई जाति मुकाबिला कर सकती हो। इस बार चीना जातिकी प्रतिभासे मुकाबिला पड़ा है।

एक घिरे आँगनमें आकर गाड़ी खड़ी हो गयी और गैना-पोलीसने स्वयं उतरकर साथीको उतरनेमें सहायता देनेके लिये हाथ बढ़ाया।

आँगनमें घोर अन्धकार छा रहा था। गैनापोलीस मैक्सका हाथ पकड़कर आगे आगे चलने लगे। थोड़ी देरके बाद मैक्सको मालूम हुआ कि अब वे सीढ़ीसे नीचे उतर रहे हैं।

पाठक समझ गये होंगे कि मैक्स इस समय नागराज गुफाकी ओर अग्रसर हो रहे थे। थोड़ी ही देरमें दोनोंने गुहामें प्रवेश करके देखा कि होपीन साहब स्वागतके लिये दरवाजेपर खड़े हैं।

गैनापोलीसने होपीनकी ओर संकेत करके कहा—"आपका ही नाम मिस्टर होपीन है। आप ही इस कारखानेके मैनेजर हैं।" फिर होपीनको सम्बोधन करके उन्होंने कहा—यह हमारे नये ग्राहक एम० गैस्टोन हैं!

चीना साहब अपने सानुनासिक स्वरमें करने लगे-"आपको सादर स्वागत है! मैंने सुना ही है, आप इस संस्थासे सम्बन्ध रखना चाहते हैं। आपने सुना होगा, यहाँकी प्रवेश फीस ५० गिनी—" इतना कहकर वह मुस्कुराने लगे।

गैनापोलीसने बीचहीमें कहा—"आपके साथ बीस गिनी तय हुआ है।" मैक्सने जेबसे २० गिनियाँ निकालकर टेबुलपर रख दीं। होपीन नमस्कार करके गिनियोंको गिनने लगे।

गैनापोलीस धीरेसे बोले—बोनोस्रोयर एट बोने न्युट एम० गैस्टोन।

होपीन— आ रिवायार मनसोर!

मैक्सको अनुसरण करनेका संकेत करके मिष्टर होपीन आगे

बढ़े। दो तीन कमरोंको पार करके चीना साहब सहसा एक सुसज्जित कमरेमें रुक गये। मैक्स अकबकाकर चारों ओर नजर दौड़ाकर कमरेकी अद्भुत सजावटको देखने लगे।

होपीनने मुस्कुराते कहा—आप कल्पना-राज्यकी उड़ानके लिये तैयार हो जाइये। तबतक मैं आपके लिये बूटी भेजता हूँ।

इधर गैनापोलीस नागराजकी गुफामें चुपचाप बैठे सिगरेट पी रहे थे। होपीनने प्रवेश करके तीन बार ताली बजायी।

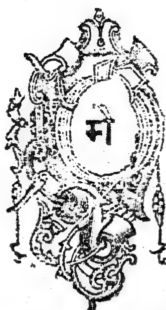
वही अरबी नौकर सैयद हाथमें एक बटुआ, एक छोटासा हाथ-बाक्स, एक जलती मोमबत्ती और एक काठकी नली लेकर हाजिर हुआ। होपीनने अपनी मातृभाषामें न जाने क्या कहा जिसे सुन बिना कुछ कहे सुने वह कमरेसे निकलकर ब्लाक ए० की ओर चला गया।

गैनापोलीसने धीरेसे कहा—आपने परीक्षागृहमें शायद उन्हें रखा है?

होपीनने सिर हिलाकर कहा—हाँ, यह ग्राहक पहले आया है। इसलिये राजा साहब इससे एक बार भेंट करना चाहते हैं।



अट्ठाईसवां परिच्छेद.



कस्तूरी और गुलाब।

मैक्स सुसज्जित प्रकोष्ठमें बैठे हुए आगेकी घटना-के लिये उत्सुकतापूर्वक अपेक्षा कर रहे थे। उन्हें मालूम हो गया था कि अबकी मेरी परीक्षा होनेवाली है! थोड़ी देरमें अफीमखोरीके सभी आवश्यक सामानोंको लाकर सैयदने टेबुलपर रख दिया और टीनके छोटेसे बाक्सको खोलकर सूईकी नोकसे कोई उज्ज्वल तरल पदार्थ निकाला और उसे मोमबत्तीकी रोशनीके ऊपर रखकर सेंकने लगा। थोड़ी देरमें जब उस उज्ज्वल पदार्थका रंग एकदम नीला हो गया तब उसे सिगरेटके नलमें उडेलकर मैक्सके हाथमें थमाया।

सैयदने सारी कार्रवाहीको अतिथिसे छिपानेकी चेष्टा की थी परन्तु मैक्सकी तीक्ष्ण दृष्टिसे उसकी चतुराई नहीं छिप सकी। जब उसने सिगरेटका नल हाथमें दिया, वह मुखमें लगा-कर झूठ-मूठ उसे खींचनेका बहाना करने लगे।

सैयद बगलमें खड़ा हुआ एकटकसे अपने अतिथिके मुखकी ओर देखने लगा। मैक्स थोड़ी देरतक बिछौनेपर पड़े हुए सिगरेट खींचनेका बहाना करते रहे फिर सहसा सिगरेटको

हाथसे छोड़कर वह बिछौनेपर पड़ रहे और दो एक वार हाथ पैर हिला, आँखें मींच चित्त होकर सो गये।

सैयदने नलको उठाकर टेबुलपर रख दिया और धीरेसे दरवाजा बन्द करके बाहर निकल गया।

मैक्स असाड़ निस्पन्द भावसे चित्त होकर पड़े रहे। सैयदके चले जानेपर आँखें खोलकर उन्होंने कमरेमें चारों ओर ताकनेकी चेष्टा की। अब वह अपनी दृष्टिकी परीक्षा करने लगे कि चित पड़े हुए पलकोंकी ओटसे वह सारे कमरेपर दृष्टि फेर सकते हैं या नहीं। एकाएक कमरेका दरवाजा खुला और होपीनने कमरेमें प्रवेश किया।

उन्होंने धीरेसे बिछौनेपर झुककर मैक्सके नेत्रोंकी पपनियों-को पकड़कर आँखकी पुतलियोंको खोल दिया। उनकी बड़ी बड़ी खुली हुई आँखे मुर्देकी तरह डरावनी मालूम होने लगीं। होपीन बहुत देरतक ज्योतिहीन आँखोंको ध्यान देकर देखते रहे फिर छातीपर हाथ रखकर उन्होंने श्वास प्रश्वासकी परीक्षा की। इस परीक्षामें भी मैक्सको मुर्देकी सार्टिफिकेट मिल गयी। अब होपीनने उनके हाथ-पैरोंको जोरसे हिलाया-डुलाया। इतने-पर भी किसी प्रकारके स्पन्दनका लक्षण न मिला तब गालोंपर एक थप्पड़ जमाकर वह उठ खड़े हुए और रेंगनीके पास आकर उनके कपड़े-लत्तेकी तलाशी करने लगे। कपड़ेके नम्बर, दर्जी और धोबीके लगाये हुए चिह्न, बटनकी बनावटको उन्होंने अच्छी तरह देखा। पाकेटोंको उलटकर उसके भीतरकी सभी चीजोंको

टेबुलपर फैलाकर अच्छी तरह उनकी जाँच की। उन्हें कई एक विज्ञापनके कागज, एक चमड़ेका छोटासा बैग और एक टीनकी डिबिया मिली।

बैगको झाड़नेपर उसमेंसे दो चार क्राउन और हाफ क्राउन निकल पड़े। डिबियामें एक छोटी सी छूरी और एक हाथ घड़ी मिली। इनमें भी कोई सन्देहजनक बात न दीख पड़ी; तब होपीन हैटको उठाकर उसका भीतरी हिस्सा ध्यानसे देखने लगे। परन्तु उसमें भी कोई सन्देहजनक चीज न मिली।

वह फिर बिछौनेके पास आये। इसलिये मैक्सको फिर मुर्दा बनना पड़ा।

अब वह मैक्सके रेशमी पैजामेको धीरे धीरे जाँचने लगे। तकिया और बिछौनेको देखना भी वह न भूले।

ये सारी परीक्षायें करके होपीन चुपकेसे कमरेसे बाहर निकल, दरवाजा बन्दकर चले गये।

इतनी देरके बाद मैक्सने एक आरामकी साँस ली। मीलोंकी सरपट दौड़ने—पानीकी लम्बी डुबकी लगाने और धुएँसे भरे हुए कमरेमें बहुत देरतक बन्द रहनेके बाद फिर खुली हवामें साँस लेनेपर जो आराम मिलता है—वही आराम इस समय उन्होंने साँस लेकर पाया। श्वास-क्रियाकी उपकारिताको वह आज अच्छी तरह हृदयंगम कर सके।

इतनी देरके बाद मैक्सने आरामकी एक लम्बी साँस ली।



इस बार एक जवान खूबसूरत चीनी औरत कमरेमें दाखिल हुई।

[देखिये—पृष्ठ संख्या [illegible]

यह एक ऐसी परीक्षा थी जिसमें पास होना बहुत कम लोगोंका काम है।

जब परीक्षासे जान बची तो स्थानकी विलक्षणतापर उनका ध्यान आकर्षित हुआ। चारों ओर घोर सन्नाटा देखकर वह सोचने लगे—क्या लन्दन जैसी कर्मकोलाहलमय नगरीमें ऐसा भी कोई स्थान है जहाँ घोर निस्तब्धताका अखण्ड साम्राज्य हो? नागराज गुफाके दरवाजेपर आते ही उन्हें यह विकट सन्नाटा खटका था परन्तु इस कमरेको विशेषताओंको देखकर उन्हें निश्चय हो गया कि दीवारोंपर शब्द निरोधक मशाला लगाया गया है। अब उन्हें बड़ी उत्सुकता हुई कि उठकर अपनी तलाशी आरम्भ कर दें, परन्तु फिर उन्होंने सोचा—नहीं, जल्दी करनेकी कोई जरूरत नहीं। अभी सारी रात सामने पड़ी है, कौन जाने इसी बीचमें फिर कोई आ जाय तो सारा बना बनाया काम मट्टी हो जायगा।

मेक्सकी आशंका एकबारगी निर्मूल न थी। क्योंकि आध घण्टा बीतते न बीतते फिर दरवाजा खुला और इस बार एक जवान खूबसूरत चीनी-औरत कमरेमें दाखिल हुई। उसके दाहिने हाथमें कस्तूरीका एक डण्ठल था। उसकी लाल लाल चमकती हुई आँखोंमें जादू भरा था। मेक्स घबड़ा गये कि होपीनको तो मैंने किसी प्रकार ठग लिया है, परन्तु इस माया कुहकिनीकी आँखोंमें कैसे धूल झोंक सकता हूं?

गत्यन्तर न देखकर अब उन्होंने आँखें मूँद लीं। इसलिये औरतकी कार्रवाईको वह आँखोंसे न देख सके परन्तु तो भी उन्होंने अनुभव किया कि वह चुपकेसे आकर उनकी बगलमें खड़ी हो गयी है। फिर, मैक्सको भास हुआ कि, वह औरत उनके मुखकी ओर झुक रही है! धीरे धीरे वह इतना समीप आ गयी कि उसके मुखके पाउडर और बालके सुवाससे उनके शरीरकी समस्त शिरायें चंचल हो उठीं, परन्तु यह तो प्रेमालापका समय न था, यह कठोर परीक्षाका समय था!

सहसा युवती जासूसके गालपर चूम्बनका एक स्पष्ट छाप लगाकर उठ खड़ी हुई और ठहाका मारकर हँसने लगी।

मैक्सकी हृदयतन्त्री बज उठी! रोमाञ्च हो आया। इच्छा हुई कि एक बार इस चपला नारीको आलिङ्गन-पाशमें वद्ध करके इस कलङ्कित—विषाक्त—चूम्बनका प्रतिशोध लें परन्तु तुरत अपनी संगीन अवस्थाका स्मरण हो आया। एक तनिकसे स्पन्दन, श्वासकी स्पष्टता और मुखकी सूखोंसे उनके जीवनका अन्त हो सकता था! अन्तमें भयके आगे पाशविक प्रवृत्तिकी हार हुई।

फिर औरत बगलमें बैठ गयी और हँस हँसकर कहने लगी—"मेरे नयनोंके तारे मतवारे नाथ! मेरे हृदयके राजा!-क्या तुम नहीं जानते मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ! जाओ जाओ! कल्पना राज्यकी सेर करो, मैं भी वहीं आती हूँ! हम दोनों वहाँ चैनसे रहेंगे। तुम मेरा मुख पकड़ पकड़कर चूमोगे और

मैं तुम्हें तरसा तरसाकर मारूँगी। जाओ मेरे नाथ! जीवन्मृत-प्रयासी!

धीरे धीरे स्त्रीका अस्फुट प्रेमालाप निस्तब्धतामें विलीन हुआ! वह चुपकेसे कमरेसे निकल गयी।

मैक्सने फिर हृदय खोलकर साँस ली। इस सुखकर श्वासक्रियामें उनके सारे शरीरने भाग लिया!

आँखें खोलकर अब निडर भावसे उन्होंने चारों ओर देखा। उन्हें निश्चय हो गया कि अब मैं विश्वविद्यालयकी सर्वोच्च परीक्षामें उत्तीर्ण हो गया हूं। अब रातमें किसी प्रकारका बाधा-विघ्न न होगा परन्तु दुर्भाग्यसे अभी बाधाओंका अन्त न हुआ था; क्योंकि थोड़ी ही देरमें ऊपरसे एक छिटकनीके खुलनेकी आहट आयी। स्थानकी असाधारण निस्तब्धतामें वह क्षीण शब्द ही बन्दूककी आवाजकी तरह प्रतीत हुआ—मैक्स चौंक पड़े।

कमरेमें ठीक उनके सिरके ऊपर बिजलीबत्ती लटकती थी। वह इस ढङ्गसे टाँगी गयी थी कि जिस स्थानपर वह सोये हुए थे, वहीं बत्तीकी सभी रोशनी पड़ती थी बाकी कमरेमें धुँधली छाईं पड़ रही थी। दीवारोंपर भी बत्तीके रंगदार ढकनेकी छाया पड़ रही थी।

देखने, देखते जासूसको मालूम हुआ कि ऊपर लटकती हुई बत्तीका रंगदार ढकना हिल रहा है जो इतनी देरतक स्थिर भावसे लटक रहा था।

मैक्सको ऊपरकी ओर सिर उठानेका साहस नहीं हुआ

अतः फिर उन्हें अपनी अन्तर्दृष्टिकी सहायता लेनी पड़ी। फिर उन्हें भास हुआ कि कोई आदमी उनकी ओर ध्यानसे निरीक्षण कर रहा है—फिर सहसा अतरका गन्ध आकर उनकी नाकोंमें भर गया। परन्तु उस कठिन अवस्थामें वह गन्ध भी अतृप्तिकर प्रतीत हुआ—उनका मन चञ्चल हो उठा।

अवस्था-विशेषपर सुखकर चीजें भी दुःखदायी प्रतीत होती हैं और बहुत समय दुःखकी बातोंसे ही अधिक आनन्द मिलता है! एक शब्दमें कहना चाहियेकी सुख-दुःखका आवर्तन, काल, पात्र और समयपर निर्भर करता है। सभी जानते हैं, कि गुलाबका गंध मनोमोदक होता है परन्तु उस मृतप्राय अवस्थामें अतरके ऊपरसे गिरनेपर मैक्सको जिस भय और विस्मयने आ घेरा उतना स्वयं रहस्यमय अमानुषिक राजा साहबके ऊपरसे कूद पड़नेपर भी नहीं होता!

परन्तु क्या यह उद्भ्रान्त मस्तिष्ककी कोरी कल्पना ही है? इन विस्मयजनक दुःखदायी परीक्षाओंके सिलसिलेसे उनका मस्तिष्क खराब हो जाना कोई बड़ी बात न थी। जिस शय्या-पर सोकर सैकड़ों—हजारों ज्ञानान्ध विषयी नरपशुओंने अफीमके नशेमें चूर होकर स्वर्गका अपूर्व आनन्द अनुभव किया है उसी शय्यापर सोकर यदि वह कोई काल्पनिक मूर्त्ति-की छाया देख पाते थे तो कोई आश्चर्यकी बात न थी। तो क्या उन हतभाग्य प्राणियोंकी कल्पनाकी चीजें कमरेकी छतसे टूट-टूटकर उनके क्लान्त मस्तिष्कमें घात-प्रतिघात कर रही

हैं? क्योंकि सुनते हैं, अखिल प्राणियोंमें अविच्छिन्न अन्त-र्सम्बन्ध हैं।

खैर जो हो, उन्हें भास हुआ कि कोई उन्हें ध्यानसे देख रहा है—क्या राजा साहब देख रहे हैं?

हाँ, राजा साहब देख रहे हैं। वही राजा साहब—जो अग-णित नरमुण्डोंका माला पहनकर यवनिकाके अन्तरालमें भैरव नृत्य कर रहे हैं। जिनके आतंकसे सारा संसार काँप रहा है। जिनके प्रतापके सामने राजशक्ति आजकल हीनबल हो गयी है!

बत्ती इधरसे उधर धीरे-धीरे हिलने लगी। कभी दाहिने जाती थी, कभी बायें। इस प्रकारके आन्दोलनसे दीवारपर नाना प्रकारके चित्र प्रतिफलित हो रहे थे। कमरेमें एक खासा बाईसकोपका तमाशा हो रहा था।

इस अद्भुत दृश्यका अवलोकनकर मैक्सका सिर चक्कर खाने लगा। बहुत चेष्टा करके उन्हें अपनी चञ्चलताको छिपाना पड़ा।

खिड़कीकी आवाज फिर सुन पड़ी।

मैक्स समझ गये कि मूर्त्ति गायब हो गयी। इस समय उनका सारा बदन पसीनेसे तर हो रहा था। कल्पनाके साथ साथ उनका सारा शरीर भी वाष्प होकर हवामें उड़ जाना चाहता था। शायद इच्छाशक्तिके प्रभावसे ही उन्होंने इस भयङ्कर मुहूर्तके समय अपनेको स्थिर रखा था।

अब बत्तीकी ओर ध्यानसे देखनेसे मालूम हुआ कि उसका

हिलना धीरे धीरे कम होता जा रहा है। थोड़ी ही देरमें वह भी अचल भावसे पूर्ववत् शून्यमें ठहर गयी।

बहुत धीरेसे अब उन्होंने साहस करके करवट बदली। इस लम्बी परीक्षाके कारण उनके सारे बदनमें दर्द हो रहा था। कहींसे तालेके बन्द होनेकी धीमी आवाज कमरेमें आयी फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया।

दश मिनिटतक इस अवस्थामें रहकर फिर वह पहलेकी तरह चित होकर सो गये। एक घण्टेतक वह इसी तरह चुपचाप पड़े रहे। इतनी देरमें जब कोई भी घटना न हुई तब उन्होंने उठकर तलाशी आरम्भ कर दी।

वह उठकर बिछौनेपर बैठ गये और चारों ओर देखने लगे। पहले पहल उनकी दृष्टि बत्तीके ऊपर पड़ी परन्तु वहाँ ऐसा कोई झरोखा या किवाड़का चिह्न न दिखलायी पड़ा जिससे शब्द आ सकता था। फिर उन्होंने उठकर पीछेकी दीवारपर हाथ फेरकर देखा परन्तु उसमें भी किसी दरवाजेका चिह्न न दीख पड़ा। फिर यह आवाज आयी कहाँसे ?

अपने मस्तिष्क और कानपर उन्हें दृढ़ विश्वास था और वह जोर देकर कह सकते थे कि मैंने जरूर शब्द सुना था और राजा साहबकी आहट भी पायी थी। परन्तु जब वह दीवारपर हाथ फेरकर देखते थे तब वह उतने ही जोरदार शब्दोंमें कह सकते थे कि यहाँ कोई दरवाजा या खिड़की नहीं है। सहसा उनके मनमें एक नयी बात सूझी—अंगुलियोंसे ठोक ठोककर

वह दीवारको अजमाने लगे। ऐसा करनेसे थोड़ी ही देरमें रहस्य खुल गया।

फर्शसे ऊपर दो हाथ लम्बा चौड़ा हिस्सा दीवारसे अलग मालूम हुआ। क्योंकि उतनी जगहका शब्द बाकी दीवारसे भिन्न प्रकारका था। यह एक खिड़की थी जिसके ऊपर मोटा कागज फैलाया हुआ था। दीवार और उस खिड़कीके ऊपर एक ही रंगका कागज चिपकाया हुआ था। यदि उन्होंने ध्यान देकर देखा होता तो पहले ही उन्हें मालूम हो गया होता कि दीवार और खिड़कीके बीचका कागज एकसे सटा हुआ नहीं है।

वास्तवमें वह खिड़की इस ढंगसे बनी हुई थी कि यदि कोई बाहर अन्धेरी जगहसे उसकी ओर देखता तो उसकी दृष्टि कमरेमें बिछौनेपर सोये हुए आदमीपर पड़ती क्योंकि उसीके ऊपर बत्तीकी सारी रोशनी पड़ रही थी।

कल्पनाकी एक बात तो सच्ची साबित हुई—राजा साहबका आकर खिड़कीसे देखना साबित हुआ—अब देखना है, गुलाबके गन्ध और बाईसकोपकी बात। इसके लिये अब अनुसन्धानकी जरूरत है।

दीवारके निम्नभागकी—(जहाँ बत्तीकी रोशनी नहीं पहुँचती थी) परीक्षा करके मैक्सको तीन बातें मालूम हो गयीं। (१) बत्तीके हिलनेका कारण (२) गुलाबका गन्ध और (३) कमरेमें नाना मूर्त्तियोंके आविर्भावका वास्तविक रहस्य। मैक्सने भी

सोमकी तरह कमरेमें नाना मूर्त्तियोंके आर्विभाव और नाच-कूद-का तमाशा देखा था---उन्हें भी मालूम हुआ था कि यह कोठरी उलट-पुलटकर बाइसकोपकी तरह घूम रही है। इस समय दीवारकी बारीकी देखनेपर असली रहस्य मालूम हो गया।

दीवारमें दो तहें थीं। पिछली तहमें नाना प्रकारकी मूर्त्तियोंका साफ चमकीला नकशा खींचा हुआ था। उस तहके ऊपर मोटे कागजका एक और तह था इसपर भी उन्हीं मूर्त्तियोंका नकशा दूसरे रङ्गमें खींचा हुआ था। जितना ही ध्यान देकर कोई इन दीवारोंकी ओर देखता, भीतरकी मूर्तियाँ उतनी ही स्पष्ट होती जाती थीं। एकके स्थानमें दोका आर्विभाव होनेसे सहज ही मालूम होता था कि मूर्त्तियाँ चलती हैं और सारा घर भी चलता है।

ऊपर जिस खिड़कीका उल्लेख किया गया है उसकी ठीक सीधमें दूसरी दीवारमें यह बाइसकोपका तमाशा था। जब कोई खिड़कीके बाहरसे उन मूर्तियोंपर रोशनी फेंकता तो उन मूर्त्तियोंपर नाना तरहके रंग प्रतिफलित होते थे इसके सिवा कमरेकी रोशनीमें भी परिवर्तन हो जाता था। बाहरकी रोशनीके हिलनेसे वह भी हिलती हुई मालूम होती थी।

इस तथ्यका आविष्कार करके वह कमरेके दूसरे भागमें परीक्षा करने लगे। बगलके दरवाजेको खोलकर उन्होंने स्नान-वाले कमरेमें प्रवेश किया उसमें कोई दूसरी खिड़की या दर-वाजा नहीं दिखलायी पड़ा।

करीब आध घंटेतक इसी तरह जाँच पड़तालमें लगे रहनेपर भी जबकोई नई बात न मालूम हुई तब अन्तमें वह अपने कमरे-में लौट आये और अपनी कोटसे छूरी निकाली। होपीन इस छूरीको जाँच करनेसे चूके न थे पर उन्हें इसका सारा रहस्य नहीं मालूम हो पाया था! उन्होंने छूरीके कलको खोलकर फिर उसे बन्द्कर रख दिया था; परन्तु मैक्सने वैसा न करके सारी छूरीके पूर्जे पूर्जे ही खोल डाले। ऐसा करनेपर छूरी एक बाक्सके रूपमें परिणत हुई! उसमें कई छोटे छोटे औजार (खासकर ताला तोड़नेके काममें आनेवाले) मिले। अपनी हाथ-घड़ी और छूरी बाक्सके औजारोंको लेकर वह दरवाजेके पास गये। दरवाजेके बीचमें एक बहुत ही मोटा विलायती ताला लटक रहा था। अब उन्हें यह आशंका हुई कि कहीं यह ताला भी नये ढङ्गका न हो। यदि यह साधारण साँचेका न होगा तो इसे खोलना मुश्किल हो जायगा।

इस आशंकाको दूर करनेके लिये उन्होंने तालेके सामने अपनी हाथ-घड़ीको रखा और उसके पेचको उलटकर घुमा दिया! क्या आश्चर्य्य! हाथ-घड़ीसे बिजली बत्तीकी रोशनी निकल पड़ी!

उस बत्तीके सहारे तालेको देखकर वह हताश भावसे बिछौनेपर जाकर बैठ गये और अस्फुट स्वरमें बोले—"यह तो एल० मार्कका ताला है, इसे औजारसे तोड़नेकी चेष्टा करनेसे कोई लाभ न होगा। बिना जोरकी चोट किये यह टूटनेका नहीं।"

उन्होंने बहुत कुछ सफलता प्राप्त की थी परन्तु अभी पूरा काम वह न बना पाये थे। बाकी काम कलपर छोड़कर वह बिछौनेपर जाकर पड़ रहे और थोड़ी ही देरमें खर्राटे लेने लगे !

* * * *

सवेरे धीरेसे दरवाजा खोलकर सैयदने कमरेमें प्रवेश किया। उसके दोनों हाथ चायके सामानोंसे बझे हुए थे।

परन्तु मैक्सने अभी मुर्देका ही भाव दिखलाया। इनको होशमें लानेमें बेचारे अरबी नौकरको बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। आखिरकार जब इनके शरीरमें कुछ सजीवता आ गयी तब उसने चायका प्याला इनके मुखमें लगा दिया। इन्होंने धीरे धीरे थोड़ा गलेके नीचेकर और थोड़ा बाहर गिराकर प्यालेको खाली कर दिया। चाय पिलाकर सैयदने चायके सभी सामानोंको टेबुलपर रखा दिया और चुपकेसे कमरेसे बाहर निकल गया।

उन सामानोंके अतिरिक्त सैयद एक और लोभनीय वस्तु टेबुलपर छोड़ गया था। वह वस्तु थी, दश बारह चाभियोंकी एक झब्बी। सभी चाभियोंकी बनावट साधारण ढंगकी थी। सिर्फ एक चाभी, जो बहुत ही लम्बी और नोकिली थी, उसपर एल० का नम्बर लिखा हुआ था। मैक्सको मालूम हो गया कि दरवाजेकी चाभी यही है।

अब बिछौनेसे उठकर वह छायाकी तरह चुपकेसे स्नानागारमें चले गये और साबुनका एक टुकड़ा लेकर फिर कमरेमें

लौट आये। एल० माकंकी चाभीसे साबुनपर तीन चार चिह्न उखाड़कर उन्होंने साबुनको अपने पाकेटमें रख लिया और चाभीको पोंछकर यथास्थान रख दिया। यह काम पूराकर वह बिछौनेपर लेट गये।

करीब दश मिनिटतक मेक्स बनावटी अर्द्ध चेतनावस्थामें पड़े रहे। इतनी देरतक दरवाजा खुला ही रहा। इसके बाद एक मोटा ताजा नौजवान बावर्ची कमरेमें दाखिल हुआ। उसके कपड़े-लत्ते और बालोंकी काट-छाँट बहुत ही बारीकीसे की हुई थी। यह बावर्ची जापानी था।

मेक्सकी मिटमिटाती हुई आँखोंको देखकर खानसामाने अनुमान किया कि वह बेहोशीकी अवस्थामें चारों ओर शून्य दृष्टि फेर रहे हैं, वास्तवमें कुछ देख नहीं पाते। परन्तु असलमें वह उन अधखुली आँखोंसे बावर्चीकी बारीकियोंको ध्यानसे देख रहे थे। उसके वेश-विन्यास और आकार-प्रकारमें उन्हें कुछ नवीनता मालूम हुई, जिससे वह उसकी ओर बड़े आग्रहसे देखने लगे। उसका सारा अङ्ग तो पीला था—जैसा जापानियोंका होता है—परन्तु आँखोंमें कुछ सफेदी लिये हुए नीलापन था।

दोनों हाथोंके तलुओंको रगड़ता हुआ बावर्ची बोला—"हुजूर सलाम!"

मेक्सने लम्बी साँस ली और शून्यदृष्टिसे एक बार आँखें खोलकर देखीं परन्तु आवाजको सुननेका कोई लक्षण न दिखलाया।

बावर्चीने उनका कन्धा हिलाकर पुकारा—हुजूर सलाम! क्या नहानेकी तैयारी करूँ ?

मैक्स भुनभुनाने लगे—"वह साँप है—बिल्कुल पीला...... पंकमें फूल होता।......हाँ नदीका......"

बावर्ची—हुजूर, आप स्नान करेंगे? पानी गर्म करूँ ? दाढ़ी बनवायेंगे?

मैक्स आँखें मींचते हुए खुँमारीमें बोले—"स्नान...दाढ़ी!"

बावर्चीने फिर सलाम करके कहा—"हाँ, दाढ़ी। बनानी होगी क्या?"

मैक्स—हाँ, बेशक......यह पेरिस है न?

बावर्ची—नहीं हुजूर, यह लन्दन है! आप गर्म पानीसे स्नान करेंगे या ठण्डेसे?

मैक्स—ठण्डेसे......हाँ, ठण्डेसे।

बावर्ची—बहुत अच्छा। क्या आप अपना छूरा लाये हैं?

मैक्स—हाँ, उस बेगमें है।

बावर्ची—अच्छा तो चटपट उठिये, मैं दाढ़ी बना दूँ।

मैक्स पहले उठकर स्नानागारमें गये और आँख मुँह धोकर लौट आये।

दाढ़ी बनाते समय बावर्चीसे बातचीत करनेकी उन्होंने बड़ी चेष्टा की परन्तु दो चार कामकी बातोंके सिवा बावर्चीके मुखसे कोई बात ही न निकलती थी।

मैक्सने सोचा कि इस अमूल्य अवसरको हाथसे न जाने

देना चाहिये। इसलिये आखिरकार उन्होंने महास्त्रका प्रयोग किया!

बावर्चीके मुखकी ओर तीक्ष्ण दृष्टिसे देखते हुए वह सहसा बोल उठे—अच्छा तुम्हें सौ पौंड पैदा करनेकी इच्छा है?

सोमके हाथसे छूरा गिरते गिरते बच गया। उस समयकी उसकी भयविह्वल अवस्था सचमुच देखने लायक थी। दाहिने बायें, नीचे, ऊपर वह अकबकाकर देखने लगा।

हिचकिचाते हुए उसने कहा—हुजूर, माफ कीजिये, मुझसे यह न होगा। मेरी समझमें कुछ भी नहीं आता।

मैक्स—बहुत सीधी बात है। मैं पूछता हूँ, क्या तुम्हें १०० पौंडकी जरूरत है? यदि हो तो कहो, मैं किसी स्थानपर यह रकम तुम्हें दे जाऊँगा।

सोमने धीरेसे कहा—माफ कीजिये, हुजूर इसका नाम भी न लीजिये!

बावर्चीके ललाटपर पसीनेके कण चमकने लगे, कुशल यही थी कि दाढ़ी बन चुकी थी, नहीं तो उसके कांपते हुए हाथोंसे जासूसका चिकना चुपड़ा गाल कभी बेदाग न बचता! औजारोंको लेकर वह निकल भागनेकी चेष्टा करने लगा परन्तु न जाने क्यों उसके पैर नहीं उठना चाहते थे! वह चारों ओर आँखें दौड़ा दौड़ाकर देखने लगा।

इतनी देरतक मैक्स चुपचाप सोचमें मग्न थे। फिर-बोले—पचास और......अच्छा सौ ही सही। क्या इतनी रकम तुम

योंही ठकरा दोगे ? यदि नहीं स्वीकार करना चाहो तो मैं अधिक आग्रह न करूँगा परन्तु याद रखो, शीघ्र ही तुम्हें यहाँसे डेरा कूच करना होगा।

सोमका गला सूखने लगा, उसने धीरेसे कहा—हा भगवान ! मैं क्या करूँ ? मैं आपको वादा नहीं दे सकता; लेकिन मैं आपसे मिल सकता हूँ—शुक्रवारको नव बजे हार्लो गलीके मोड़पर।

उसने मैक्सके सभी सामानोंको इकट्ठाकर हैण्ड बेगमें रखा और उसे बन्दकर अतिथिके हाथमें थमा दिया। इस समय मैक्स कपड़े लत्ते पहनकर तैयार हो गये थे। उन्होंने बावर्चीके आगे बढ़े हुए हाथमें एक स्वर्णमुद्रा थमाकर धीरेसे कहा—भूलना मत !

इसी समय सैयदने आकर सलाम किया।

यह पहले ही कहा जा चुका है, कि मैक्स सान्ध्य-परिच्छदमें ही आये थे। इसलिये सवेरेके समय उस पोशाकमें निकलनेमें उन्हें बहुत लज्जा मालूम होने लगी। परन्तु क्या करते, बाहरी कोटके बटनको कसकर लगा लिया और सोमके नमस्कारका प्रत्युत्तर देकर सैयदको बेग थमा, कमरेसे बाहर निकल पड़े। नागराजकी गुफामें आकर उन्होंने देखा कि होपीन साहब अपने निर्दिष्ट स्थानपर बैठे हुए लम्बे पाइपसे सिगरेटका धूआँ खींच रहे हैं। उन्होंने मुस्कुराकर प्रातःनमस्कार किया और हाथ मिला कर पहुंचाने चले। सैयद भी पीछे पीछे हाथमें बेग लेकर

चला। बाहरी अहाते पारकर जब वे लोग सदर फाटकपर आये तब बाहर दरवाजेपर पहलेका एम्बूलेंस मिला। उसको देखते ही मैक्सका कलेजा धड़कने लगा। सैयदने उनका बैग भीतर रख दिया और उनके चढ़नेपर होपीनने दरवाजा बन्द कर दिया! अभी एक जंगला खुला ही था, उसीपर झुककर होपीनने मुस्कुराकर कहा—महाशय, यदि सेवामें कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा करेंगे और कृपादृष्टि बनाये रखेंगे।

इतना कहकर उन्होंने जंगलेको भी बन्द कर दिया। अब गाड़ीमें घोर अन्धकार छा गया। थोड़ी देरमें मालूम हुआ कि गाड़ी चल रही है। दो तोन बार दाहिने बायें घूमनेकी आहट हुई इसके सिवा उन्हें कुछ भी मालूम न हुआ कि गाड़ी किधर जा रही है।

बीस पचीस मिनिट चलकर एम्बूलेंस सहसा ठहर गया और दरवाजा खोलकर गैनापोलीसने मुस्कुराते हुए कहा—मिष्टर गेस्टोन कहिये! रात कैसे कटी? इधर बैग मुझे थमा दीजिये!

मैक्स बैगको गैनापोलीसके हाथमें देकर नीचे उतरे।

गैनापोलीसने उनका हाथ पकड़कर कहा—मेरे मित्र, आइये, इधरसे रास्ता है।

जिधर मुंह करके एम्बूलेंस खड़ा था ठीक उसकी विपरीत दिशामें दोनों चलने लगे। इतनेमें सैयद गाड़ी लेकर चलता बना। मैक्सको फिर भी धोखा खाना पड़ा। क्योंकि इन दोनों

धूर्त्तोंने मिलकर गाड़ीका नम्बरतक देखनेको भी उन्हें अवसर न दिया। अब वह चौंककर चारों ओर ताकते रह गये।

गैनापोलीसने कहा—मिष्टर गैस्टोन, इस समय आप टेंपुल-गार्डनमें हैं। वह देखिये, एक खाली गाड़ी आ रही है, क्या आप अपने होटल जायँगे ?

मैक्स—हाँ, होटल ही जाऊँगा।

गैनापोलीस—अच्छा, नमस्कार। वह नम्बर मत भूलियेगा। जब कभी आपको आनेकी इच्छा हो तो टेलीफोन कीजियेगा। मैं सेवामें हाजिर होऊँगा।

मैक्स—नम्बर मुझे खूब याद है-१८६४२ पूर्वी दरवाजा तो?

गैनापोलीसने कहा—"हाँ" और जोरसे पुकारकर टेक्सी ड्राइवरको खड़ा कराया। मैक्स उसमें जाकर बैठ गये।

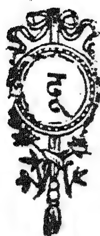
बाहरसे आवाज आयी—मिष्टर गैस्टोन, नमस्कार।

भीतरसे प्रत्युत्तर हुआ—मिष्टर गैनापोलीस, नमस्कार।



उन्तीसवाँ परिच्छेद

स्त्री-बुद्धि।



सरे दिन प्रातःकाल जब मेघशून्य सूर्य्यका गोला पूर्व क्षितिजमें चमकने लगा तब डाक्टर कम्बरलीकी मोटर गाड़ी हेलन, डेनिस और लिरोको लेकर धीरे धीरे विक्टोरिया पार्ककी ओर चली। मिष्टर लिरोके स्वास्थ्य-पर मानों तरस खाकर उस दिनका प्रभात, वसन्तकी सारी सुषमा और सौंदर्य लेकर अवतीर्ण हुआ था!

बहुत देरतक तीनों आरोही अपने वार्त्तालापसे रास्तेको मुखरित करते हुए पार्कके चतुर्दिक भ्रमण और हँसी मजाक करते रहे; परन्तु अन्तमें डेनिस रिलैंडने धीरे धीरे अपने वार्ता-लापका सारा भार हेलनके ऊपर डालकर स्वयं तटस्थ होकर अपनी चिन्तामें मग्न हो गयीं।

आजकल जिस रहस्यमय राजा साहबका नाम सारे शहरमें उथल-पुथल मचाये हुए है, वही नाम इस समय उनके दिमागमें भी खलबली मचा रहा है। खूनकी रातके बाद हफ्तेपर हफ्ते बीत गये हैं, परन्तु मुकदमेका अभीतक कोई निपटारा न हुआ। न सोम ही पकड़ा गया और न राजा साहबके शीश-महलमें ही किसीका प्रवेश करनेका साहस और सौभाग्य हुआ। जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं वैसे वैसे डेनिस रिलैंडका विश्वास भी

पुरुष जातिकी योग्यता और बुद्धिमत्तापरसे उठता जाता है। वह अब सोचने लगी हैं, कि मोटी बुद्धिवाले पुरुषोंका यह काम नहीं हैं कि वे इस रहस्यका पर्दा हटा सकें। इसके लिये किसी तीक्ष्णदर्शी बुद्धिमती रमणीकी आवश्यकता है और इस कामके लिये उसीको ईश्वरने समुद्र पारसे इङ्गलैंडमें भेज दिया है।

डेनिसने सोचा कि शायद इस रहस्यके उद्‌घाटनका श्रेय एक स्त्रीको ही मिलना बदा है; इसीलिये तो सभी पुरुषोंकी आँखें एक साफ बातपर नहीं पड़ती हैं। ओलाफ वान नूर और अहिफेन देवीसे क्या इस मामलेका कोई सम्बन्ध नहीं है? जरूर है। हेलनके लेखपर टिप्पणी करते हुए 'प्लेनेटने' भी ऐसा ही संकेत किया है और अन्यान्य सभी समाचार पत्रोंने भी ओलाफ वान नूरको ही गिरफ्तार करनेका संकेत किया है। परन्तु पुलीस क्या सोचकर इस चित्रकारको गिरफ्तार करनेमें देर कर रही है, सो कहा नहीं जा सकता।

ओलाफ वान नूरकी चित्रशालाका मानसिक भ्रमण करते हुए डेनिस रिलैंडके कल्पना-चक्षु सहसा शिल्पीके आदर्श चित्रपर आकर ठिठक गये। वह सोचने लगी—"यह चित्र भी बिलकुल अर्थहीन नहीं है। समाचार पत्र तो कहते हैं, अर्थोपार्जनका यह एक ढंग है। पर मुझे तो मालूम होता है, इसमें भी कोई रहस्य छिपा है। इन दोनों व्यक्तियोंके सिवा एक तीसरे व्यक्तिपर नजर रखना भी व्यर्थ न होगा। और सच पूछिये तो उसीको पकड़नेसे सभी पकड़े जा सकते हैं। वह है—गैनापोलीस।

बहुत देरतक अन्यमनस्क भावसे सोचनेपर डेनिस रिलैंड अन्तमें एक सिद्धान्तपर पहुंचीं। उन्होंने निश्चय किया कि गैनापोलीस ही सभी रहस्योंका मूल है। उसीको श्रीमती लिरो-का पता मालूम है, वही श्रीमती भरननके हत्याकारीका पता बता सकता है और वही पुलीसकी आँखोंमें धूल झोंककर उसे वन्दरका नाच नचा रहा है। इस विचारपर पहुंचते ही उन्होंने धीरे धीरे आँखें खोलीं और हेलनके कन्धेपर हाथ रखकर कहा—"बेशक ! सब अनर्थोंकी जड़ वही है !"

हेलन औपन्यासिककी किसी बातका उत्तर देने जाती थी, कि अपनी सखीका आकस्मिक प्रलाप सुन चौंककर बोल उठी—ऐं ! इतनेमें आप सोकर स्वप्न भी देखने लग गयीं। मैंने तो समझा था कि आपकी तबीयत अच्छी नहीं, इसीलिये आप चुपचाप बैठी हैं !

डेनिस बोल उठीं—हाँ, मैंने भयङ्कर स्वप्न देखा है। लिरो साहब, अच्छा हुआ कि मैं इङ्गलैंड चली आयी हूं।

लिरोने मुस्कुराते हुए कहा—सचमुच, मैं भी स्वीकार करता हूं ?

डेनिसने हेलनकी ओर फिरकर कहा—हेलन, तुम कहती हो कि गैनापोलीस तुमसे फिर मिला था। क्या सच है ?

हेलन—हाय भगवान ! क्या कहूं, वह बदमाश तो किसी तरह मेरा पिण्ड ही नहीं छोड़ना चाहता था।

डेनिसने उसके दोनों हाथोंको अपने हाथोंपर रखकर कटाक्ष

और मन्द स्मित करके कहा—सखी घबड़ाती क्यों हो—परिचय बढ़ाओ फिर देखा जायगा! किसी तरहसे शिकारको हाथसे जाने न देना!

हेलनने आश्चर्य्यसे अपनी सखीकी ओर देखते हुए कहा—आप क्या कहती हैं, मेरी समझमें नहीं आता?

लिरोको भी कम आश्चर्य्य न हुआ था। परन्तु उन्होंने अपने प्रश्नमें नवीनता लाते हुए कहा—मैं आपका कहना समझ गया। परन्तु मुझे यही समझमें नहीं आता कि गैनापोलीस कौन है?

डेनिसने बायाँ हाथ उठाकर कहा—आप इस मामलेसे बाहर हैं। यहाँ पुरुषोंका काम नहीं।

हेलन बोल उठी—परन्तु डेनिस आप———"

डेनिस—नहीं, मैं परामर्श देती हूँ तुम उस आदमीसे परिचय बढ़ाओ।

हेलन—क्या मैं पूछ सकती हूं, कि आप क्यों मुझे ऐसे अनुचित और लज्जाजनक कार्य्यमें प्रवृत्त होनेकी सलाह देती हैं?

डेनिस—इसमें लज्जाकी क्या बात है? मालूम होता है, वह तुम्हारे प्रेममें फँस गया है। तुम क्या इतनी निष्ठुर हो जाओगी?

हेलनने एक बार लिरोकी ओर देखकर लज्जासे मुख फेर लिया और बोली—छिः आप क्या बक रही हैं!

डेनिस—मैं व्यर्थ नहीं बकती। उसको हाथमें करना बहुत जरूरी है। क्या तुम्हें मालूम है, वह कहाँ रहता है?

हेलनने कहा—नहीं, ठीक मालूम नहीं, परन्तु मैं समझती हूं, वह फिर भेंट करेगा।

इतना कहकर हेलन लिरोकी ओर ताकने लगी। वह विस्मयसे अवाक होकर दोनोंके मुखकी ओर देख रहे थे। उन्होंने पूछा—हेलन ! क्या मैं पूछ सकता हूं, वह दुस्साहसी कौन है ?

डेनिस रिलैंड बोल उठीं—घबड़ाइये नहीं, शीघ्र ही आपको उसका परिचय मालूम हो जायगा। अभी चलिये, जल्दी घरकी राह लें भूखसे अँतड़ी जली जाती है।



तीसवां परिच्छेद.

एम मैक्सका कार्य्य विवरण।



इये पाठक ! स्काटलैंड यार्डके आफिसमें चलें और देखें कि पुलीसने कहाँतक अपने कार्य्यमें सफलता प्राप्त की है। अंग्रेज जासूसोंकी आँखोंमें धूल झोंककर सोमको नाट्यशालासे भागे आज कई दिन बीत चुके हैं। इस बीचमें पुलीसने कितने ही साहबोंको पकड़ा और छोड़ा है, कितनोंहीकी तलाशी की है, सोमके कितनेही इष्ट-मित्र आजकल जेलकी हवा खा रहे हैं; परन्तु यह सब होते हुए भी पैलेस मैन्सनका हत्याकाण्ड ज्योंका त्यों अन्धकारमें पड़ा हुआ है। आज डिटेक्टिव सार्जण्ट-सोर्वी मिष्टर डनवरके आफिसमें बैठे हुए उनसे बातें कर रहे हैं। कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि इसी मुकदमेका प्रसंग छिड़ा हुआ है।

वार्तालापके सिलसिलेमें मिष्टर सोर्वीने कहा—राजा साहबके सम्बन्धमें आपकी कैसी धारणा है?

डनवर—जबतक कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता तबतक मैं इस सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कहना चाहता। समाचार पत्रवाले तो नाना तरहके अफवाह उड़ा रहे हैं—कोई कहता है नूर ही

राजा साहब है—उसीको पकड़ो—कोई कहता है, गैनापोलीसको पकड़ो, कोई कहता है जाने हुए आदमियोंमें ही कोई राजा साहब है।

सोर्बी बोल उठे—"मैं भी यही कहता हूँ। आपको डायरीसे मालूम होता है, कि खून होने और गवाहोंके आनेके बीचमें न तो कोई मकानमें घुसा था और न बाहर हुआ था। इससे साफ मालूम होता है कि आपके गवाहोंमेंसे कोई झूठा है। वही झूठा आदमी राजा साहब है।

डनवरने मुस्कुराकर कहा—तुम्हारा अच्छा सिद्धान्त रहा। घरवालोंने चोरको भागते हुए नहीं देखा, इसलिये घरवाले ही चोर हैं, यह कहाँकी युक्ति है? वे लोग क्या दरवाजेपर खड़ा होकर पहरा दे रहे थे जिससे चोर भाग न सकता था और तुम्ही बताओ तो सही, उतनी पुलीसके रहते सोम ही भाग गया—कौन उसे पकड़ सका था?

मिस्टर सोर्बी उत्तरमें कुछ कहने ही वाले थे कि इतनेहीमें धीरेसे किवाड़का पल्ला हटाकर मैक्सने मुस्कुराते हुए कमरेमें प्रवेश करके दोनों जासूसोंको नमस्कार किया।

डनवर और सोर्बी दोनोंहीने साथही प्रत्युत्तरमें सिर झुकाकर प्रणाम किया।

सोर्बीने शीघ्रतासे उठकर अपने संभ्रान्त अतिथिके पीछे एक कुर्सी रख दी। मेक्स उनको सिर झुकाकर कुर्सीपर बैठ गये और अपने भीतरी पाकेटसे एक बड़ी सी डायरी निकालकर

खोलते हुए बोले—"मुझे इस बीचमें कई बातें मालूम हुई हैं। जिनपर मैं आप लोगोंसे सम्मति लेना चाहता हूं। आप लोगोंको क्या इस हुलियाका कोई आदमी मालूम है ?" इतना कहकर डायरीके एक पन्नेको खोलकर वह पढ़ने लगे—कद ५ फुट ७॥ इञ्च, लम्बा गठीला बदन, बातचीत करते समय दोनों हाथोंको रगड़नेकी आदत, सिरके बाल भूरे, हाथकी अंगुलियाँ फैली हुईं, दाढ़ी मूँछ बिलकुल साफ। परन्तु मूँछ पहले कभी रही होगी। आँखें छोटी और चमकीली, नाक चपटी, झुके हुए चलनेकी आदत। उमर कोई २५ की होगी।

इन्स्पेक्टर इनवर चौंककर उठ खड़े हुए और अपने मजबूत हाथोंसे टेबुलको झनझनाते हुए चिल्ला उठे—"सोम ! सोम !"

मैक्सने मुस्कुराकर नोटबुकको पाकेटके हवाले किया और टेबुलपर सिगरेटका एक बाक्स रखकर हाथके इशारेसे अपने साथियोंको उसका सदुपयोग करनेका इशारा किया।

थोड़ी देरतक सभी चुप रहे। फिर मैक्सने निस्तब्धता भङ्ग करके कहा—मैंने भी यही अनुमान किया था। यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई है।

सोर्बीने एक सिगरेट निकाल लिया परन्तु इनवरका उधर ध्यान ही न था, उनकी आँखें खुशीसे चमक रही थीं। उन्होंने टेबुलको आगे बढ़ाकर उत्सुकतासे कहा—मिस्टर मैक्स, आपकी बुद्धिको धन्यवाद है। आपने कहां उसको पकड़ा है ?

एक सिगरेट जलाकर खींचते हुए मेक्सने कहा—मैंने उसे पकड़ा नहीं हैं, परन्तु अब वह हाथमें है जब चाहें, पकड़ सकते हैं, अभी उससे एक काम लेना है इसीलिये छोड़ रखा है। मङ्गलवार रातको राजा साहबसे भेंट करा देनेका उसने वचन दिया है।

डनवर फिर चौंककर उठ खड़े हुए और बोले—आप सच कहते हैं?

मैक्सने गम्भीरतासे कहा—थोडी ही देर तो आपके सोमसे मेरा आलाप-परिचय हुआ था परन्तु उतनेमें ही मैंने उसके बारेमें बहुत कुछ बातें जान ली हैं। आजकल वह लूकसके नामसे कारखानेमें काम करता है। उसकी चाल-ढाल और हाव-भाव मुझे बड़ा ही विलक्षण मालूम हुआ। वह विचारका पक्का नहीं, उसके समान डरपोक और लालची शायद ही आपको दूसरा मिले। उसे आप पुचकारकर और समझा बुझाकर किसी काममें प्रवृत्त नहीं कर सकते। उसका स्वभाव ठीक उस आदमीकी तरह है जो डूबती हुई नावके तख्तेपर खड़ा खड़ा कूदनेमें हिचकिचाता रहे। वह तबतक हिचकिचाता ही रहेगा जबतक कोई दूसरा आदमी धक्का देकर उसे गिरा न दे। मुझे भी उसे धक्का देकर ही गिराना पड़ा था। जब मैंने देखा, कि किसी तरह वह भुलावे में न आवेगा तब मैंने एक दूसरी चाल चली। उस चालके फन्देमें तो वह आ गया, परन्तु अब भी उसपर विश्वास नहीं होता। देखें, वह दरवाजा खोलता है या नहीं।

डनवर—कौन दरवाजा ?

मेक्स—राजा साहबके कारखानेका दरवाजा।

डनवर—वह कारखाना कहां है ?

मेक्स—लाइम हाउस काजवे नामका कोई कारखाना है ? उसीके आसपास कहीं नदीके किनारे वह कारखाना होगा। मैं तो स्वयं उस कारखानेको देख आया हूं। परन्तु इससे अधिक मैं कुछ भी नहीं बता सकता।

डनवर—आप स्वयं वहां गये थे ?

मेक्स—हां, यह तो निश्चय है कि एक रातको सशरीर उस कारखानेमें गया था। परन्तु वे चीना ऐसे धूर्त्त और चालबाज हैं कि एक बात भी जाननेका मौका नहीं दिया। पहले जो मैं जानता था, उससे अधिक एक बात भी वहां न जान सका। आपको याद है न ? उस दिन श्रीमती लिरोके पत्रोंकी मुहर देखकर मैंने कहा था कि ये पत्र पेरिसकी डाकसे नहीं आये हैं; बल्कि ये बो इष्टके पोष्टसे पेरिस भेजे गये थे और वहांसे लिरोके पास आये हैं। मैंने दोनों पोष्ट-आफिसोंकी मुहरें भी दिखला दी थीं।

डनवरने सिर हिलाकर उनके कथनको स्वीकार किया और आगे सुननेके लिये आग्रहसे उनकी ओर देखते रहे।

मेक्स कहने लगे—अच्छा आगे सुनिये; उन पत्रोंको देखकर मैं समझ गया था कि इस बार हमें चीनोंसे काम पड़ा है और शहरके पूर्वी हिस्सेमें कहीं वह अपना अखाड़ा जमाये हुए

हैं। इसलिये रोज-रोज मैं पूरब तरफ ही बढ़ने लगा। कई दिन-तक घूमने-फिरनेके बाद मैंने निश्चय किया कि यदि कोई चीना ही इस रहस्यका नायक हो तो वेष्ट इण्डिया डकके उत्तर तरफ जो सूनसान पल्ली है, उसीमें वह गुप्त भावसे अपना पेशा चला सकता है।

डनवरने सोर्बोंकी ओर ताकते हुए सिर हिलाया। सोर्बोंने उनसे कहा—मैं आपसे उसी आदमीके बारेमें कहता था।

मैक्स फिर कहने लगे—एक दिन जब मैं उस पल्लीमें टहल रहा था तो मि० स्ट्रींजर नामक किसी सज्जनके साथ आप दोनों जनेको मैंने वहाँ पकड़ा था।

सोर्बों आश्चर्यसे बोल उठे—हमें पकड़ा था ! कहां ?

मैक्सने मुस्कुराकर कहा—सचमुच, आप लोगोंसे दिल्लगी करनेके कौतूहलको मैं रोक नहीं सका। क्षमा करेंगे मिष्टर सोर्बों, मिष्टर लेविन स्काईके नामसे मैंने आपको अपना परिचय दिया था। परन्तु आप तो मुझे एकबारगी पहचान न सके थे।

डनवर और सोर्बों एक दूसरेकी ओर विस्मयसे देखने लगे।

मैक्स कहने लगे—अब आप लोगोंको एक काम करना होगा। मंगल वारकी रातको एक दल कनस्टेबुलोंको लेकर आप लोग लाइम हाउसके आसपास टहलते रहियेगा। कन-स्टेबुलोंको वहाँ कुलियोंकी पोशाकमें बैठाकर आप लोग उनके सरदार बन जायंगे तो कोई आपपर सन्देह न कर सकेगा।

सम्भवतः वह स्थान नदीके ठीक किनारे है; क्योंकि जब मैं उस कारखानेसे निकल रहा था तो नदीके एक हिलोरेकी आवाज मेरे कानोंमें पड़ी थी। आप लोग तलाशीके सभी सामानोंसे सजधज कर जाइयेगा।

डनवरने उनके मुखकी ओर तीक्ष्ण दृष्टसे देखते हुए कहा—क्या सचमुच मंगलवारको आप राजा साहबके कारखानेकी तलाशी करने जा रहे हैं? आप हँसी तो नहीं करते?

मैक्स गम्भीरतासे बोले—नहीं साहब, मैं ठीक कहता हूँ। मैंने आशा की थी, कि मैं भी आप लोगोंकी तलाशीमें साथ दूँगा परन्तु किसी विशेष कारणसे मैं भी चोरोंके साथ रहूंगा।

डनवर और सोर्बो एक साथही बोल उठे—आप चोर बनेंगे!

मैक्स—जी हाँ, मैं अफीमची बनकर राजा साहबके कारखानेमें आगेसे जाकर रहूँगा। आप लोगोंके जानेपर दरवाजा खोलकर आप लोगोंको भीतर बुला लूँगा। हाँ, आप लोग बाहर पहरेका पूरा प्रबन्ध रखियेगा, जिसमें एक भी आदमी भागने न पावे क्योंकि इस बारका भागा हुआ चोर फिर कभी न पकड़ा जा सकेगा।

डनवर—आप कहते हैं कि आप कारखानेमें गये थे। आपको वहाँकी चौहद्दी कुछ भी मालूम नहीं है?

मैक्स—जाननेका कोई उपाय नहीं था। जबतक मैं उस कारखानेमें गया नहीं तबतक मेरी आँखोंके सामने मानों अन्धेरेका मोटा पर्दा पड़ा हुआ था। कारखानेमें घुसकर मैंने जो जो दृश्य

देखे वह किसी तरह बता सकता हूं परन्तु उससे भी विशेष कोई सहायता नहीं मिल सकती। वह कारखाना जमीनके नीचे है और ठीक नदीके किनारे । एक बनावटी गुफा, एक दालान, एक शयनगृह—उसको आप जादूघर, तिलिस्म या जो चाहे कहिये, ये ही तीन चार कमरे मैंने देखे। परन्तु किधरसे मैं उनमें घुसा था, वह भी मुझे मालूम नहीं। मैं एक एम्बूलेन्समें वहाँ गया था और लौटते समय भी उसीमें लाया गया था।

"उसका नम्बर क्या आपने लिख लिया है?"

"कहता तो हूं, वे बड़े चालाक हैं। उन्होंने नम्बर देखनेका मुझे अवसर ही नहीं दिया। खैर, कोई चिन्ता नहीं, उस गाड़ीको पकड़नेमें कठिनाई नहीं होगी। वह रोज विक्टोरिया स्ट्रीटमें आया जाया करती है। गाड़ी बहुत अच्छी है।

डनवर—कोचवानों और कनस्टेबुलोंको सभी गाड़ियोंका हाल मालूम रहता है। मैं अभी किसीको भेजकर इसकी खबर लेता हूं।

मैक्स—इस समय सबसे जरूरी काम है, कारखानेकी तलाशी करना। आप लोग उसके लिये तैयारी कीजिये। मैंने सोमको धोखा-पट्टी देकर बहुत कुछ काम बना लिया है; परन्तु वह बदमाशका बच्चा राजा साहबसे इतना डरता है कि उन लोगोंकी कोई भी बात बतानेको राजी नहीं होता। इसलिये तलाशीके सिवा और कोई उपाय नहीं है।

डनवर—सोमसे आपको अभी कैसी सहायता मिलनेकी आशा है ?

मैक्स—सोम उस कारखानेमें बावर्चीका काम करता है। अफीमकी पिचकारी लगाकर जो ग्राहक वहाँ रातको रह जाते हैं वह उन्हींकी सेवा-टहल करता है। मैं मंगलवारको अफीमची बनकर जिस कमरेमें बन्द रहूंगा वह उस घरकी चाभी खोल देगा।

डनवर—"आप इस विपत्तिमें न पड़ते तो अच्छा होता। यदि कोई—"

मैक्स बोल उठे—अब पीछे हटनेसे काम न चलेगा। मुझे इस मामलेमें बहुत रुपये खर्च करने पड़े हैं। मुझे कारखानेकी फीस तो देनी ही पड़ी है; इसके अलावे सोमको राजी करनेमें बहुत रुपये खर्च करने पड़े हैं। इस बार मुझे विशेष डरकी कोई बात भी नहीं है। क्योंकि मेरी पूरी परीक्षा हो चुकी है अब मुझपर उन लोगोंका सन्देह नहीं रह गया है। मैं मङ्गलवारको जरूर जाऊँगा।

डनवर—सोम आपको धोखा भी तो दे सकता है ?

मैक्स—इसका डर नहीं है, मनोविज्ञानकी मुझे कुछ-कुछ अभिज्ञता है। मुझे उसकी बदमाशीका डर नहीं है, मैं डरता हूँ उसकी मूर्खतासे। वह जैसा डरपोक है, उससे धोखा देनेका साहस उसे कभी भी न होगा। उधरसे मैं सम्पूर्ण निश्चिन्त हूं। मुझे तो सारा हाल मालूम नहीं है; परन्तु मेरा विश्वास है कि वह डर ही कर उनसे मिल गया है। फिर यदि वह पकड़ा

जायगा तो उससे राजा साहबकी सब पोल खुल जायगी। विश्वास रखिये, राजा साहबके विरुद्ध वही सबसे बड़ा गवाह होगा।

डनवर—"क्या आपने उसको छोड़ देनेका वचन दिया है? यदि वही— "

मैक्स—ऐसी बात नहीं है। मैंने पहले अच्छी तरहसे उसकी परीक्षा कर ली है। उसके स्वभावको अच्छी तरहसे तौलकर मैंने निश्चय कर लिया है कि खूनसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। पहले पहल मैंने उसको अपना परिचय नहीं दिया था। उसको अपने जालमें फँसानेके लिये मैंने कितनी ही तरकीबें सोची थीं परन्तु उसके डरपोकपनको देखकर मैंने सीधे भावसे आक्रमण करना ही अच्छा समझा। पुलिस अफसर बनकर तुरत मैंने उसके हाथमें हथकड़ी बेड़ी पहना दी और थानेकी ओर घसीट ले चला।

डनवर बोल उठे—क्या आपने उसको गिरफ्तार कर लिया था?

मैक्स—हाँ, हार्लो गली तीन नम्बरके सामने हमारे मिलनेकी बात थी। वहाँ मैंने चट उसे गिरफ्तार कर लिया। इससे फायदा भी कम न हुआ था। शायद सोमने सोचा—अब राजा साहबका सितारा डूबना ही चाहता है। अब एकमात्र मुझसे ही उसके बचनेकी आशा है। इसी कारण उसने तुरत मुझको आत्मसमर्पण कर दिया।

इनवर—परन्तु अब भी तो वह बतानेमें आनाकानी कर रहा है ?

मैक्स—उसके बतानेसे भी मुझे कोई विशेष उपकार नहीं हो सकता क्योंकि राजा साहबका असली रहस्य उसे भी मालूम नहीं है। सम्भवतः राजा साहबके सम्बन्धमें वह भी मेरे और आपके समान ही अन्धकारमें है। आपको अभी मालूम नहीं है, राजा साहब कोई साधारण आदमी नहीं हैं। जिस प्रकार समस्त संसारपर उनका आतङ्क और प्रताप छा रहा है, अपने विश्वासी और आज्ञाकारी कर्मचारियोंके लिये भी वह वैसे ही रहस्यमय और दुर्ज्ञेय अशरीरी जीव हैं! सभी उनके संकेतके अनुसार मूकभावसे काम करते जा रहे हैं, किसीकी ऐसी शक्ति नहीं कि उनको धोखा दे और उनके रहस्यको खोलनेकी चेष्टा करे। मुझे मालूम हुआ है कि सोमको भी राजा साहबका रहस्य मालूम नहीं है। वह कहाँ रहते हैं, यह भी कोई नहीं जानता। इसलिये मैंने दूसरे ही उपायका अवलम्बन करना सोचा है। राजा साहबका कमरा मुझे मालूम हो गया है। मैं पहले ही दिन कमरेकी तलाशी कर ली होती परन्तु उसका ताला बड़ा मजबूत था। उसकी चाभीका नम्बर लेकर मैंने वैसी ही कितनी ही चाभियाँ बनवा ली हैं। इस बार जानेपर उन चाभियोंकी सहायतासे उस कोठरीको खोल डालूँगा। सोमसे पूछनेपर मालूम हुआ था कि अभी उसपर उन लोगोंका पूरा विश्वास नहीं हुआ है वे लोग चाभीका गुच्छा

भूलकर भी उसके हाथमें नहीं पड़ने देते, इसलिये मुझे अपनी ही चाभीसे काम लेना होगा। दो चाभियाँ और एक पिस्तौल सोमके हाथसे आगे ही मैंने वहाँ पहुँचा दी हैं। मङ्गलवारकी रातको अन्यान्य अफीमचियोंकी तरह मैं भी अफीमची बनकर वहीं रह जाऊँगा। जब वे लोग उस जादूखानेमें मुझे ले जाकर बन्द कर देंगे तब मैं चुपचाप बिछौनेपर पड़ रहूंगा। बारह बजेके बाद सोम उस जादूखानेका दरवाजा खोल देगा। बाहर निकलकर मैं जो कुछ करूँगा वह आप लोगोंको मालूम हो जायगा।

डनवर—आप हथियार लेकर क्यों नहीं जाते ?

मैक्स—भाई साहब, वहाँ कड़ी तलाशी होती है। खैर, कोई चिन्ता नहीं, मैं उन चाभियों और पिस्तौलके सहारे सब काम कर लूँगा। मैं यही सोच रहा हूँ कि, उस दिन जादूखानेमें कोई दूसरा अफीमची न आ जुटे। ऐसा होनेपर उस दिन हमें तलाशी बन्द रखनी होगी। यदि उसी घरमें किसी दूसरे ग्राहकके रहनेका प्रबन्ध होगा तो मैं एक चाल चलूँगा।

डनवरने टेबुलपर झुककर धीरेसे कहा—किसने आपका कारखानेके मैनेजरसे परिचय कराया था, क्या उसका नाम बतानेमें आपको आपत्ति है ?

मैक्स—क्षमा कीजिये। मैं उस सज्जनका नाम नहीं बता सकता परन्तु राजा साहबका जो एजेण्ट है उसका नाम गैना-पोलीस है, उसका भी पता तो मालूम नहीं है परन्तु १८६४२ पूर्वी दरवाजेके पतेसे टेलीफोन करनेपर इससे बातचीत हो

सकती है। नाम और टेलीफोनका नम्बर आप लिख लीजिये समयपर काम आवेगा।

सोर्बीने नोटबुकमें लिखते हुए कहा—कल सवेरे ही मैं इसे गिरफ्तार करूँगा।

मैक्सने मुस्कुराकर कहा—नहीं, सार्जेण्ट साहब, आप ऐसा दुस्साहस कदापि न कीजियेगा। उस धूर्त्तका आप कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते हैं। यदि आप तलाशीके इधर ही छेड़-छाड़ कर देंगे तो सब काम मट्टी हो जायगा। इस समय हमें धैर्य्यसे काम लेना होगा। यदि हो सके तो छिपे छिपे आप गैना-पोलीसपर नजर रखिये पर सावधान, उसे जरा भी सन्देह न होने पावे।



एकतीसवां परिच्छेद।

अनुसरण।



मका कुहरा अभी मकानकी चूड़ाओं और पेड़की शाखाओंपर छाया हुआ है, हेलन और डेनिस बहुत देरसे अपने पाठागारके जङ्गलेसे रास्तेपर उत्सुकतापूर्वक देख रही हैं। बहुत देरतक एकटक रास्तेकी ओर देखकर डेनिसने कहा—मैं कहती हूं, किसी समय वह आज यहाँ आवेगा। कल नहीं आया, इसका कोई विशेष कारण होगा। आज वह बिना आये रह ही नहीं सकता।

हेलनने एक लम्बी साँस ली। डेनिसकी यह कार्य्य-प्रणाली उसे पसन्द न थी। परन्तु जब वह लिरोके करुण और चिन्तातुर मुखकी ओर देखती तो उसके हृदयमें आग लग जाती थी। इसीलिये प्रतिहिंसाके वशवर्त्ती होकर वह इस प्रेमाभिनयमें प्रवृत्त हुई थी। पहले पहल उसे इस घृणित कपटाचरणमें प्रवृत्त होते संकोच होता था, लोकापवादका भय भी उसे कम न था परन्तु डेनिस रिलैण्डकी युक्तिके सामने उसको अन्तमें हार माननी पड़ी। अब वह गैनापोलीसके साथ प्रेमाभिनय करनेको राजी हो गयी है। इसी मतलबसे दोनों सखियाँ बहुत

देरसे उत्सुकतापूर्वक गैनापोलीसकी बाट देख रही हैं—हेलन की उत्सुकता इस बातकी नहीं है कि कब मैं प्रेमिक गैनापोलीसके चन्द्रवदनको देखकर नयन तृप्त करूँगी वरन् उसकी उत्कण्ठाका कारण यह है, कि कब मैं अपनी मित्र-पत्नीका उद्धार कर लिरोके शोकको दूर करूँगी।

डेनिसने सहसा उसका हाथ दबाया और बागीचेकी ओर अङ्गुली करके बोली—"वह देखो! वृक्षोंकी आड़मेंसे एक आदमी धीरे धीरे चोरकी तरह इधर ही बढ़ता आ रहा है!"

हेलन भी चुपचाप उधर ही देखने लगी। इस समय उसका कलेजा धड़क रहा था।

डेनिस चौंककर फिर बोली—अहा! वही है! मैं कहती थी न, कि विना आये वह रह ही नहीं सकता? मैं इन जानवरोंको खूब जानती हूँ। अच्छा, तुम एक काम करो! इस समय घरमें कोई नहीं है, सब सैर-सपाटेको बाहर चले गये हैं। तुम कमरेकी बत्ती जला दो और कपड़े लत्ते पहनकर एक बार खिड़कीके पास खड़ी होओ, फिर यहाँसे हटकर बत्ती बुझा दो। ऐसा करनेसे वह समझ जायगा कि तुम बाहर जा रही हो। मैं भी यहाँसे हटकर बगलके कमरेसे उसपर नजर रखती हूँ।

हेलनका मुख लज्जा और उत्तेजनासे लाल हो गया था। सिर हिलाकर वह तुरत कमरेमें चली गयी और विजल बत्तीको जला दिया।

डेनिसके कहे अनुसार सभी कार्रवाही करके वह फिर

अपनी सखीके पास लौट आयी। इस समय डेनिस आँख गाड़कर नीचे रास्तेपर देख रही थी।

उसने धीरेसे कहा—वह समझता है, कि तुम बाहर जा रही हो! देखो, वह बागीचेसे हटकर रास्तेपर आ गया है! वह दिखाना चाहता है कि इसी रास्तेसे होकर वह गुजर रहा है। अच्छा, तुम नीचे उतर जाओ! तुम्हें क्या क्या करना होगा, याद है न?

हेलनने लज्जासे सिर झुकाकर कहा—हाँ, पर आप भी पीछे-पीछे जरूर आइये। नहीं तो मैं कहींकी न रहूँगी।

डेनिस—तुम पगली हो क्या! तुम्हारी चिन्ता क्या मुझे नहीं है? मैं क्या नहीं समझती कि डाक्टर साहबको यदि मालूम हो जाय तो वह मुझे किसी प्रकार क्षमा न करेंगे? परन्तु कोई चिन्ता नहीं, हम अपना कर्त्तव्य-पालन करने जा रही हैं। हमें इस कामसे विमुख होनेसे अच्छा न होगा।

हेलन सान्ध्य-परिच्छदमें सजधजकर अभिसार (Courtship) करने चली। नीचे उतरकर सीधे वह पार्ककी ओर अग्रसर हुई। पार्कके मोड़पर एक लेटर-बाक्स था, पाकेटसे उसने एक चिट्ठी निकालकर उसके ठिकानेको एक बार देख लिया। फिर उसको बम्बेमें छोड़कर वह पीछे लौटी, लौटनेके साथ ही उसकी नजर गैनापोलीसपर पड़ी, जो हाथमें टोपी लिये उसके सामने खड़े थे।

गैनापोलीसने मुस्कुराकर कहा—सचमुच आज कल मेरा

भाग्य चमका है! पियर चेम्बरमें मेरे एक मित्र रहते हैं, उनको ही इस भाग्यका श्रेय देना चाहिये! उस दिन जब मैं उनसे मिलने जा रहा था तो आपसे दैवात् भेंट हो गयी और आज ५ मिनिट हुए उन्हींसे विदा होकर लौटा आ रहा था कि फिर आपसे दूसरी भेंट हुई! कहिये, मिस कम्बरली, कुशल तो है न? आप किधर जा रही हैं?

हेलन आगे बढ़कर बोली—अहा! आप इधरसे कैसे टपक पड़े। मुझे तो आपसे मिलनेकी आशा ही न थी। सच कहती हूँ, आपको देखकर मुझे अपार आनन्द हुआ है।

गैनापोलीस खुशीसे कुप्पे हो गये। उन्होंने आगे बढ़कर हेलनका हाथ चूम लिया और धीरेसे बोले—प्यारी हेलन! अभी अधिक रात नहीं गयी है, क्या मैं कुछ देरतक तुम्हारे साथ सान्ध्य-भ्रमणका सौभाग्य प्राप्त कर सकता हूँ?

हेलनने एक बार उनकी ओर सन्देहपूर्ण दृष्टिसे देखा। फिर अपने कपड़े-लत्तेकी ओर देखकर बोली—देखते तो हैं, कपड़े लत्तेकी अवस्था! आपको अवश्य ही यह पोशाक पसन्द न होगी।

गैनापोलीस—नहीं नहीं, प्यारी हेलन, मैं उन्हींपर मुग्ध हूं। तुम्हारे समान परीको फिर अच्छे पोशाककी क्या जरूरत? अन्धकारमें ही बत्ती जलानेकी जरूरत होती है। सूर्य्यके प्रकाशमें कौन बत्ती जलाता है?

गैनापोलीस शिष्टताकी सीमा पार करते जा रहे थे। उनका

असली रूप प्रकट होता जा रहा था। इधर भयसे हेलनका खून सूखा जाता था। जैसी उसने आशंका की थी, अवस्था उससे कहीं संकटजनक होती जाती थी। उसने हिचकिचाकर अपने कमरेके जङ्गलेकी ओर देखा।

पर्देकी आड़से एक मनुष्यकी मूर्त्ति दीख पड़ी जो एक लम्बा सा चोगा पहने हुए कमरेमें इधरसे उधर टहल रहा था आकारसे मालूम हुआ कि वह लिरो थे। परन्तु डेनिसका कोई पता न चला।

हेलनने उन्मत्त प्रेमिककी ओर फिरकर कहा—आज मुझे बहुत काम है! मैं बहुत देरतक वाहर न रह सकूँगी!

गैनापोलोस उत्सुकतापूर्वक बोल उठे—मिस हेलन, तुम्हारे ही मनोरञ्जनके लिये तुम्हें ले चलनेका आग्रह कर रहा हूँ। मैं जानता हूं, कि तुम्हें दृश्य-चित्रणमें वड़ा आनन्द आता है। तुम्हारे दो चार लेख मैंने पढ़े हैं। ऐसा सूक्ष्म-चित्रण तो मैंने आज कलके किसी दूसरे चित्रकारमें नहीं देखता। यों तो तुम्हारे सभी लेख आले दर्जेके हैं; परन्तु उनमें तीन चित्र मुझे बहुत ही अच्छे लगे। एक लेख था 'सोहो भोज' दूसरा था "केफ-राजका आश्चर्य वृत्तान्त" और तीसरा जो अभी हाल ही प्रकाशित हुआ है—"अहिफेन देवी।" आज मैं तुम्हें एक और अद्भुत स्थान दिखलाया चाहता हूँ, जिसका वर्णन यदि तुम्हारी लेखनीसे प्रकाशित हो तो सारे देशमें उथल-पुथल मच जाय।

थोड़ी देर ठहरकर गैनापोलीस फिर बोल उठे—इसलिये मैं अनुरोध करता हूँ कि आज ही शामको तुम उस स्थानको देख आओ। यहीं पास ही है—"मेम्फोस केफ" का नाम तुमने सुना है?

हेलन—मेम्फीस केफ! नहीं ऐसा विचित्र नाम तो कभी कानमें नहीं पड़ा।

गैनापोलीस—अहा! मिस कम्बरली, मेम्फीस केफका नाम तुम्हें मालूम कैसे हो! मेम्फोस केफ एक क्लावका नाम है। आज दो बरस हुए ओलाफ भान नूरने इसकी स्थापना की थी। आज कल इसकी सदस्य-संख्या बहुत बढ़ गयी है। सभी श्रेणीके आदमी—लेखक, चित्रकार, ग्रन्थकार, वक्ता, अभिनेतासे लेकर बड़े बड़े अमीर उमरावतक इस क्लावके सदस्य हैं।

हेलनने मुस्कुराकर कहा—वहाँ शायद जुएका बाजार खूब गर्म रहता है?

गैनापोलीस बोल उठे—जुआ! छिः! छिः! इसका नाम भी तुम वहां न पाओगी! और सब क्लावोंकी तरह उस क्लावमें रुपये लुटानेकी इजाजत नहीं है। जुएके सिवा क्या शौक करनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है। चलो न मैं तुमको आज उसे दिखला लाऊं।

उस विचित्र स्थानको देखनेको हेलनके मनमें बड़ा कौतूहल हुआ—लन्दन ऐसी महानगरीमें इतना बड़ा क्लाव गुप्त भावसे चलाया जा रहा है, यह बड़े ही आश्चर्य्यकी बात है। यदि इस

स्थानका वर्णन पत्रोंमें छपे तो चारों ओर धूम मच जाय। परन्तु इस कामुकका संग तो अधिक देरतक वाञ्छनीय नहीं है। यदि पहलेसे मालूम होता कि यह इतनी नीच प्रकृतिका आदमी है तो हेलन कभी डेनिसके प्रस्तावको स्वीकार न करती परन्तु अब क्या करना चाहिये ? यदि वह इस आदमीका साथ छोड़कर चली जाती है तो डेनिस उसपर बहुत क्रोधित होगी और यदि उसके साथ रहती है—नहीं यह हो ही नहीं सकता। डेनिस चाहे कुछ भी कहे इसके साथ रहना अब किसी तरह नहीं हो सकता।

उद्भ्रान्त प्रणयीका हाथ छोड़कर हेलन सहसा बोल उठी—नमस्कार मिष्टर गैनापोलीस, क्षमा कीजिये, आज मैं आपके साथ नहीं जा सकती! कार्य्यवश आज मुझे क्लाब परिदर्शनकी इच्छा रोकनी पड़ती है परन्तु मैं वचन देती हूं कि किसी दिन अपने संगी-साथियोंके साथ आपके क्लाबमें आऊँगी। आप अपने फोनका नम्बर बता दीजिये। हम लोग उसके द्वारा जानेका कोई दिन ठीक कर लेंगे।

गैनापोलीसने सिरके बाल खुजलाते हुए कहा—"परन्तु हम लोग अपना पता———"

हेलन बीचहीमें बोल उठी—खैर, कोई हर्ज नहीं। यदि आपको फोनका नम्बर बतानेमें आपत्ति है तो मैं अधिक आग्रह न करूँगी। परन्तु इतना तो आप बता सकते हैं कि कहाँ आपसे भेंट होगी ?

गैनापोलीस—प्यारी हेलन, तुम आज मेरे साथ नहीं चलती इससे मुझे बड़ा दुःख हो रहा है, परन्तु मैं तुम्हारी इच्छापर दखल देना नहीं चाहता। तुम्हारी जैसी मर्जी हो करो। मैं कल सवेरे तुम्हारे पास टेलीफोन करूँगा। तभी कोई स्थान निश्चित किया जायगा।

"परन्तु यदि मैं घरपर न रहूँ ?"

"तुम ठीक नौ बजे रहनेकी चेष्टा करना।"

"इतनी जल्दी करनेसे तो मैं अपने साथियोंको खबर न दे सकूँगी।"

"परन्तु तुम अधिक संगी-साथी न ले जा सकोगी—तुम अपने साथ दो आदमियोंको ले जा सकती हो।"

"अच्छा यही होगा।"

"मैं कल सवेरे टेलीफोन करूँगा, तुम घरपर रहना। यदि किसी जरूरी कामसे कहीं जाना ही पड़े तो अपनी दासीसे लौटनेका समय बता जाना।"

हेलनने देखा कि यह धूर्त्त किसी तरहसे भी अपना पता और फोनका नम्बर नहीं बताना चाहता तब उसने अधिक जिद न करके कहा—"मि० गैनापोलीस, आप व्यर्थका झंझट अपने सिरपर ले रहे हैं। सिर्फ टेलीफोनका नम्बर बता देनेसे तो सब काम चल जाता। खैर, आपकी जैसी इच्छा, मैं घर ही पर रहूंगी। अब देर हो रही है—नमस्कार!"

इतना कह, उत्तरकी अपेक्षा न कर हेलन पीछे फिरी और

पैलेस मैन्सनकी ओर शीघ्रतासे चली। जब वह दरवाजेके निकट पहुँची तब जान-बूझकर उसने अपनी रूमाल गिरा दी और उसको उठानेके बहानेसे वह पीछे फिरकर देखने लगी।

गैनापोलीस मोड़से हटकर उत्तरकी ओर जा रहे थे। हेलनने पैलेस मैन्सनकी ओर एक बार फिरकर देखा—डेनिस रिलैंड ठीक दरवाजेके सामने खड़ी होकर अपनी रुमाल हिला रही थी। अपनी कार्य्यप्रणालीमें बाधा पड़ते देख वह अपनी सखीपर बहुत ही रुष्ट हुई थी। हेलन उसको इशारेसे बुलाकर वृक्षोंकी आड़में छिपी छिपी गैनापोलीसका पीछा करने लगी। कोई पचास डगके फासलेपर तीन मोटरगाड़ियाँ आगे पीछे खड़ी थीं। इन दोनों सखियोंने पहलेसे ही यह बन्दोबस्त कर रखा था, कि यदि गैनापोलीस एक गाड़ीको किराया करे और दूसरेपर हेलनको अनुसरण करनेको कहे तो डेनिस चुपकेसे तीसरीकी सहायता लेगी!

गैनापोलीस गाड़ियोंके सामने आकर ठहर गये और क्षण भर हिचकिचाहटके साथ चारों ओर देखकर आगेकी गाड़ीमें जा बैठा। ड्राइवरने गाड़ीका पेच खूब जोरसे घुमाकर अपनी जगहपर कूद बैठा और गाड़ी चला दी। ज्योंही वह गाड़ी बागीचेके मोड़से घुमी त्योंही हेलन वृक्षकी आड़से निकलकर दूसरी गाड़ीपर बैठ गयी और एक साँसमें बोली—"गाड़ीका पीछा करो, देखना, वह सन्देह न करने पावे। चलाओ, चलाओ, वह आँखसे ओझल हुआ!"

वह गाड़ी भी चल पड़ी!

हेलनने सिर उठाकर सामने देखा—गैनापोलीसकी गाड़ी इसी समय आँखकी ओटमें हुई थी। अब वह पीछे फिरकर डेनिसकी दृष्टि आकर्षित करनेके लिये जोरसे अपने हाथकी रुमाल हिलाती हुई चिल्ला उठी—"डेनिस! दूसरी गाड़ीपर मेरा पीछा करो। मैं अब ठहर नहीं सकती—वह गया!"

हेलनकी गाड़ी भी मोड़ पार हो गयी। हेलन जान न सकी कि उसकी सखीने उसकी बात समझी है या नहीं। परन्तु देर करनेसे सब काम मट्टी हो सकता था इसीलिये समझनेका काम अपनी सखीकी बुद्धिपर छोड़कर वह आगेकी ओर देखने लगी।

गैनापोलीसने गाड़ीमें आरामसे बैठकर पाकेटसे एक सिगरेट और दियासलाई निकाल ली और उसे धराकर पीते हुए हेलनके मिलनेका सुख-स्वप्न देखने लगे। आजकी चेष्टामें तो उन्हें बिल्कुल निष्फल होना पड़ा था परन्तु आगेकी आशा बँधी थी। उसी मधुर आशाकी चिन्तासे उनकी प्रत्येक शिराओंमें विद्युत्-प्रवाह हो रहा था! परन्तु यदि इसी समय उन्हें मालूम हो जाता कि दो—नहीं नहीं—तीन शिकारी उनके पीछे दौड़ पड़े हैं तो उनका सुख, दुःखमें परिवर्त्तित हो जाता।

गैनापोलीसको कुछ दिनोंसे सन्देह हो रहा था कि उनकी चाल-ढालपर कोई नजर रखने लगा है। पुलीसकी दौड़-धूपको वह कोई चीज नहीं समझते थे! वह अपना एक एक पाँव इतनी सावधानी और बुद्धिमानीसे रखते थे कि पुलीसको

उनपर नजर रखनेका मौका ही नहीं मिलता था। वह जानते थे कि सी०आई० डी० विभागकी सारी शक्ति उनके पीछे पड़ी हुई है; परन्तु इससे वह तनिक भी भयभीत नहीं होते थे। तथापि उन्हें सन्देह हो रहा था कि कोई छायाकी तरह उनका अनुसरण कर रहा है। जब कभी वह पैलेस मैन्सनकी ओर पैर बढ़ाते थे तभी उन्हें मालूम होता था मानों कोई उनका पीछा कर रहा है; परन्तु इतना उन्हें पूर्ण विश्वास था कि यह छाया-मूर्त्ति कोई पुलीसके कर्मचारीकी नहीं है।

इस छायामूर्त्तिके सम्बन्धमें उन्होंने दो सिद्धान्त निश्चित किये थे। वास्तवमें सिद्धान्त एक ही था, उसके दो पहलू थे! इन दोनों पहलुओंने कुछ दिनोंसे उनके मनको बहुत ही विचलित कर रखा था। राजा साहबकी सेवामें गैनापोलीसने अनेकों वर्ष पैकिङ्गमें बिता दिये थे। उसके बाद राजा साहबके साथ साथ उन्हें नाना देश और नाना वेशमें घूमना पड़ा था। इस बीचमें कितनी ही चिरस्मरणीय, सुखद और दुःखद घटनायें उनकी आँखोंके सामने हो गयी हैं जिनका स्मरण करके आज भी उनको रोमाञ्च हो आता है। इस पृथ्वीपर दुर्द्दान्त राजा साहबके रहस्यमय पापाचारोंके केवलमात्र वही चाक्षुष प्रमाण हैं। उनके सिवा उस रहस्यमय अशरीरी आत्माको किसीसे भी अपना रहस्य-भेद होनेका भय नहीं है।

अपने इस दायित्वको स्मरणकर अक्सर गैनेपोलीसके शरीरका रक्त सूख जाता है। कुछ दिन हुए वह एक बार अपने

मालिकके साथ बर्म्मा गये थे, वहाँ मालिक (राजा साहब) ने कोई दुष्कर्म किया जिसका पता एक बर्म्मीज सौदागरको लग गया था। उस बर्म्मीज सौदागरने अपने दुर्भाग्य बस उस रहस्यको प्रकट कर दिया था। राजा साहबने उस अपराधका जो दण्ड दिया था, उसको स्मरणकर आज भी उनको रोमाञ्च हो आता है।

मरते समय उस हतभाग्य सौदागरने कहा था कि करीब एक महीनेसे कोई छायामूर्त्ति बहुधा उसका पीछा करती रहती थी। इस समय गैनापोलीसको आशङ्का हो रही थी, कि वही परिणाम तो उनका भी न होगा? परन्तु अभीतक तो उन्होंने राजा साहबका कोई रहस्य खोलनेको कलपना भी नहीं की है!

गैनापोलीसकी गाड़ी जब ह्वाइट चैपेल स्टेशनपर पहुँची तब उन्होंने उसको बिदा किया और हवागाड़ी सिगरेट धराकर पीते हुए पैदल ही अग्रसर हुए। रात अभी बहुत अधिक न बीती थी इसलिये स्टेशनके पासकी राहमें गाड़ियोंकी रेल-पेल लगी हुई थी। इसलिये कब एक गाड़ी उनके पाससे होकर आगे बढ़ गयी, वह इसका पता भी न पा सके।

इसी बीचमें एक और भी ध्यान देने लायक चीज उनकी आँखोंसे ओझल हो गयी! जब वह लन्दन अस्पतालके सामने आये थे, उसी समय यदि वह बीच रास्तेपर दृष्टि फेरते तो उनको अपना बड़ा एम्बूलैन्स रास्तेको कँपाता हुआ जाता दिखायी पड़ता!

ईश्वरकी ऐसी ही इच्छा थी कि उनको कुछ भो न मालूम हो अतः वह चुपचाप आँख-कान-मूँदकर अपने रास्ते धीरे धीरे चलने लगे।

पाठक आइये, हम गैनापोलोसको छोड़कर माउण्ट स्ट्रीटमें फिर हेलनके पास लौट चलें।

हेलनके ड्राइवरने स्टेशनपर आकर जब देखा कि आगेकी गाड़ी ठीक उसकी बगलमें खड़ी हो गयी है, तब उसने अपनी गाड़ीको जोरसे चलाकर स्टेशनको दूसरी बगलमें ले गया। फिर दाहिनी ओरसे लौटाकर धीरे धीरे पैदल जाते हुए गैना-पोलीसका पीछा करने लगा। थोड़ी देरतक इस प्रकार चलने-पर जब गैनापोलीस सहसा एक पतली सी गलीमें घुस गये तब ड्राइवरको बाध्य होकर अपनी गाड़ी ठहरानी पड़ी।

हेलनने गैनापोलीसको गलीमें प्रवेश करते हुए देखा था, अतः तुरन्त गाड़ीसे उतरकर ड्राइवरको एक 'सवरन' (फ्रेंच सिक्का) थमा दिया और शीघ्रतासे बोली—मैं पैदल पीछा करती हूं परन्तु इधर मैं कभी आयी नहीं हूं। यदि किसी तरह तुम मेरा पीछा कर सको तो अच्छा हो। परन्तु देखना तुमपर कोई सन्देह न करने पावे!

ड्राइवरने तेजीसे कहा—मिस यह काम तो बड़ा कठिन है परन्तु जहाँतक हो सकेगा चेष्टा करूँगा।

"अपनी ओरसे उठा न रखना" यह कहती हुई हेलन गलीमें दौड़ पड़ी। उसे बहुत दूरतक दौड़ना न पड़ा। थोड़ी दूर जाते

ही वह गली कैम्ब्रिज रोडमें जाकर खतम हो गयी। बड़े रास्तेपर उतरते ही हेलनने देखा कि थोड़ी दूरपर खड़े होकर गैनापोलीस एक दूसरा सिगरेट धरा रहे हैं।

कैम्ब्रिज रोडमें कुछ देरतक चलनेके बाद गैनापोलीस फिर दाहिनी बगल एक गलीमें घुस गये। हेलन उस गलीके पास आकर ठमक गयी और पीछे फिरकर ड्राइवरको देखने लगी। परन्तु ड्राइवरका कहीं पता नहीं लगा। अन्तमें साहस करके वह अकेले ही गलीमें घुस पड़ी।

हेलन गलीकी दूसरी छोरपर आयी ही थी, कि गैनापोलीस फिर बायीं बगलकी एक और भी सँकरी गलीमें बिला गये। इसी समय पीछेसे एक बहुत चमकीले प्रकाशने आकर हेलनकी छाईंको बहुत दूरतक फैला दिया। थोड़ो ही देरमें किसी मोटरकी घड़घड़ाहट भी सुनायी पड़ने लगी—हेलनने समझा कि अपना ड्राइवर पीछा कर रहा है। इसलिये उसने पीछे फिरकर नहीं देखा। जिस गलीसे गैनापोलीस अदृश्य हुए थे उसके मोड़पर आकर देखा तो उनका कहीं पता ही न था।

रोशनीका प्रकाश और भी चमकीला होता जाता था परन्तु गाड़ीकी चाल बहुत ही धीमी मालूम होती थी। धीरे धीरे गाड़ी बहुत ही निकट; ठीक उसकी बगलमें, आ पहुंची। हेलनको अपने ड्राइवरकी मूर्खतापर कुछ रञ्ज हुआ। फिर उसने सोचा, कोई हर्ज नहीं, यहाँ कोई देखता नहीं। ड्राइवरके साथ रहनेसे, मुझे साहस बना रहेगा।"



एक दुशाला या ऐसे ही किसी रेशमी कपड़े से सहसा उसका मुख ढक गया।

[देखिये—पृष्ठ संख्या २८९

दुर्गा प्रेस, कलकत्ता]



वास्तवमें उसको इस समय डर हो गया था।

एक दुशाला या ऐसे ही किसी रेशमी कपड़ेसे सहसा का मुख ढक गया! वह भयसे चिल्ला उठी। परन्तु इसी य किसीने गरदनमें हाथ डालकर उसका मुख दबा दिया। घुटने लगा। उसके मुखपर जो रेशमी कपड़ा पड़ा था से गुलाबकी गन्ध आकर उसकी साँस रोक रही थी। ने अपना मुख खोलनेके लिये बहुत चेष्टा की परन्तु उसके को किसीने जोरसे पकड़ लिया और उसको उठाकर धीरेसे गद्दीके ऊपर बैठा दिया।

अब नीचेसे गाड़ीके चक्कोंकी घड़घड़ाहट आने लगी। उसने झा, उसे कोई उड़ा ले जा रहा है—ईश्वर जाने कहाँ!

मुख ज्योंका त्यों बन्द है। हवाके बिना दम घुटा जाता और सिर चक्कर खा रहा है—धीरे धीरे शरीर विस्मृतिके ल-समुद्रमें डूबा जा रहा है! मूर्च्छा उसको अपने गोदमें च तो नहीं रही हैं?

इस समय हेलनमें हाथ पैर हिलानेकी भी शक्ति नहीं है चुपचाप पड़ी हुई है। सहसा गाड़ी रुकी और कोई उसको दमें लेकर नीचे उतरने लगा। अब उसका दिमाग एक रगी शून्य हो जानेवाला है। ऐसे समय किसीकी आवाज नमें पड़ी—"तुम क्या ला रही हो महरा?"

बड़ी हल्की आवाजमें किसीने उत्तर दिया—"तुम्हें जाननेकी ई जरूरत नहीं! यह एक चीज है—ओः कुछ नहीं! एक चौरी

जो होनेवाली थी—सो एक न होकर दो ही सही! सैयद यला!"

"तुम्हारा पाप एक दिन हमारा सर्वनाश कर डालेगा!"

हल्की आवाज और भी हल्की होकर बोली—"मित्र, होपीन! तुम मुझसे झगड़ा करने लगे?"

"बर्म्मा नहीं—इंग्लैण्ड है! गैनापोलीस......"

"चुप—चुप—धीरे बोलो! वह सुनने न पावे!"

अब हेलन गद्दीपर सुला दी गयी। उसका बचा खुचा होश भी जवाब दे गया।



बत्तिसवाँ परिच्छेद.

स्काटलैंड यार्ड।



न्स्पेकृर डनवर अपने लिखनेके टेबुलपर बैठे हुए कलमकी घुड़-दौड़ चला रहे हैं। डाकृर कम्ब-रली, हेनरी लिरो और डेनिस रिलैंड एक एक कुर्सीपर बैठे हुए उत्सुकता पूर्वक जासूसकी कलम रुकनेकी अपेक्षा कर रहे हैं। सभीके मुखपर चिन्ताकी स्याही पड़ी हुई है। हेनरी लिरोके सदाचिन्ताक्रान्त मुखकी तो बात ही नहीं, डाकृर कम्बरलीका सदाप्रफुल्ल, सहास्यवदन और डेनिस रिलैंडका सदा गर्वभावस्फीत और तेजःपूर्ण हृदय भी आज विचलित मालूम होता है।

डनवरने धीरे धीरे अपनी कलमकी चालको रोकर सिर ऊपर उठाया और दरवाजेके पास बैठे हुए एक ड्राइवरको सम्बोधन करके कहा—देखो, तुमने क्या क्या लिखाया है, सुन लो।

"मेरा नाम फ्रेडरिक दीन, पेशा ड्राइवरी। कल शामको ६ बजे मैं गाड़ी लेकर अड्डेमें ठहरा हुआ था। उस समय अड्डेमें सिर्फ तीन गाड़ियाँ थीं। मेरी गाड़ी बीचमें थी। एक काला आदमी धीरे धीरे आकर आगेकी गाड़ीमें बैठ गया और

गाड़ी चलानेको कहा। जब गाड़ी कुछ दूर गयी तब सहसा एक युवती वृक्षोंकी आड़से दौड़कर मेरी गाड़ीमें बैठ गयी और आगेवाली गाड़ीपर नजर रखकर पीछा करनेको कहा। जिस समय मैंने पेच घुमाकर गाड़ीको चलाया उस समय वह युवती पीछे फिरकर जोर जोरसे किसी स्त्रीको अपना पीछा करनेको बुला रही थी पीछेकी स्त्रीको तो मैं देख नहीं पाया परन्तु वह युवती "डेनिस! डेनिस" करके चिल्ला रही थी। ह्वाइट चैपेल स्टेशनतक मैंने गाड़ीका पीछा किया। जब वह गाड़ी ठहर गयी तो मैंने अपनी गाड़ी माउण्ट स्ट्रीटमें बढ़ाकर खड़ी कर दिया। युवती मेरे हाथमें एक सवरन थमाकर बोली—"अब पैदल ही मुझे उस आदमीका पीछा करना पड़ेगा। यह स्थान मेरे लिये बिलकुल अपरिचित है! यदि तुम मेरे पीछे पीछे गाड़ी ला सको तो चेष्टा करो!" मैंने कहा—"चेष्टा करूँगा।" उसके पीछे पीछे अपनी गाड़ी चलाने लगा। जब वह युवती कैम्ब्रिज रोडमें जानेवाली एक सँकरी गलीमें घुस गयी तो आगे रास्ता न पाकर मैंने घुमकर कैम्ब्रिज रोडमें उतरनेके लिये गाड़ीको लौटाया। इस समय एक बड़ा एम्बूलैंस मेरी बगलसे होकर चला गया। एम्बूलैंस और मेरी गाड़ीके बीच एक ट्रामगाड़ी आ पड़ी थी। ट्राम गाड़ीके पार होते होते एम्बूलैंस किधर लापता हो गया मैं ठीक न कर सका। कैम्ब्रिज रोडमें गाड़ी ले जाकर मैंने उस युवतीको नहीं पाया। करीब आध घण्टेतक मैं अपनी गाड़ी कैम्ब्रिज और ग्लोब रोडमें

इधरसे उधर चलाता रहा परन्तु उस औरतका पता न लगा। तब मैं सीधे थानापर चला गया। थानेदारने मुझे स्काटलैंड यार्डमें आनेको कहा है; इसलिये मैं यहाँ आया हूं।"

डनवरने ड्राइवरको तीक्ष्ण दृष्टिसे देखकर कहा—तुम्हें और भी कुछ कहना है ?

ड्राइवरने उत्तर दिया—कुछ भी नहीं।

डनवर—अच्छा तो तुम इसपर दस्तखत कर दो और घर जाओ। हम तुम्हें रोक रखना नहीं चाहते। तुम्हारी बातोंपर हमें कोई सन्देह नहीं होता है।

कम्बरलीने आगे झुककर कहा—जी हाँ, इसमें तो सन्देह नहीं कि हेलनने गैनापोलीस नामक किसी आदमीका पीछा किया था और यह जो एम्बूलैंसकी बात कहता है सो यह वही एम्बूलैंस मालूम होता है, जिसकी आज कल चारों ओर चर्चा चल रही है।

इतनी देरके बाद डेनिस मुख खोलकर बोली—यदि मेरा गाड़ी-वान उल्लू न होता तो इस समय घटनाका रुख दूसरा ही होता।

डनवरने कहा—मैं किसीको दोष देना नहीं चाहता परन्तु क्षमा करेंगे मैडम, मुझे कहना ही पड़ता है कि आप लोगोंका ऐसे खतरेके कार्य्यमें हाथ डालना बहुत ही अनुचित हुआ है। आप लोगोंको जरा सोचना चाहिये था कि जिस काममें हमें इतनी सावधानी और सतर्कताकी आवश्यकता पड़ती है उसको आप अबलायें कहाँतक पूरा कर सकती हैं।

यह पहला ही अवसर था कि डेनिस रिलैंड अपनी हीनताका प्रतिवाद करनेमें असमर्थ हुई। डाक्टर कम्बरली यद्यपि एक शब्द भी उसको नहीं कहते थे परन्तु उनका उदास, पीला मुख देखकर वह उनकी ओर अपनी दृष्टि नहीं फेर सकती थी। यदि फेरती तो उसे मालूम हो जाता कि हेनरी लिरोकी तिरस्कारभरी दृष्टि बराबर उसकी ओर तनी हुई है !

जैसे ही ड्राइवर बाहर हुआ वैसे ही कमरेका दरवाजा फिर खुला और सोवोंने कमरेमें प्रवेश किया।

डनवर खुशीसे उठ खड़े हुए और टेबुलपर झुककर बोले—सोवों तुम आ गये ? कहो, ऐम्बूलैंसके बारेमें क्या पता लगाया ?

सोवोंने एक कुर्सीपर बैठकर एक दूसरी खाली कुर्सीपर अपनी टोपी रख दी और बरसाती कोटके पाकेटसे एक बड़ी डायरी निकालते हुए बोले—जिस हुलियाकी गाड़ी मैं खोजने गया था, वैसी सिर्फ एक ही गाड़ी उस मुहल्लेमें जानी-सुनी है ! यह एक हाइ-पावर फ्रेंच एम्बूलैंस है। पैरिसमें शायद इसकी रजिष्टरी हुई है। उसके बाद कुछ दिनोंतक यह काइरोमें रही है, वहाँसे लन्दन आयी है। इसका जो मालिक है उसके टेलीफोनका नम्बर १८६४२ पूर्वो दरवाजा है। उसका नाम है—मिस्टर आई गैनापोलीस। इष्ट इण्डिया डक रोडकी ओर इसके रोज आने-जानेका कारण यह है कि उधर ही लाइम हाउस काजवेके उस पार इसका अस्तबल है। काजवेके

दो पहरेदारोंसे भेंट करनेपर मुझे इतना ही मालूम हुआ है कि गाड़ीका ड्राइवर कोई अरबी है, वह अंग्रेजी बिल्कुल नहीं जानता। वे दोनों सन्ध्या समय प्रायः बाहर निकल जाया करते हैं और थोड़ी ही देरमें लौट आते हैं।

डाक्टर कम्बरली बोल उठे—जब गैनापोलीसका फोन नम्बर आपको मालूम हो गया है तब उसका पता भी तो आप जान गये होंगे ?

इनवर बीचमें बोल उठे—इस्टर्न एक्सचेंजसे हमने यह नम्बर और पता पाया है। ग्लोब रोडके एक आफिसमें यह फोन रखा हुआ था। उस आफिसके दरवाजेपर ताँबेके अक्षरोंमें सिर्फ इतना ही खुदा हुआ था।

"आई० गैनापोलीस—लन्दन और स्मार्ना।"

कम्बरलीने धीरेसे पूछा—इसका पेशा क्या है ?

सोर्बोने उत्तर दिया—इसका पूरा पता अभी हमें मालूम नहीं हुआ है परन्तु इतना कहा जा सकता है कि वह किसी प्रकारका एजेंट है और उसकी आमदनी भी बहुत अच्छी है क्योंकि जैसी ठाट-बाटसे वह रहता है उससे वह कोई साधारण आदमी नहीं प्रतीत होता। मैंने सुना है, कि यह तुर्की सिगरेटकी आमदनी किया करता है।

इनवरने बीचमें बाधा देकर आवेशके साथ कहा—नहीं, यह हाशिशकी आमदनी-रफ्तनी करता है। यदि मैं उसे एक बार देख पाता तो तुरत पहचान लेता। सोर्बो, मैं कह

सकता हूं कि परसाल यह सजा पा चुका है। अदरखकी गाठें बन्द करके इसने मिस्रके लिये रवाना की थीं परन्तु गाठोंकी जाँच की गयी तो हाशिशकी गोलियाँ मिलीं।

कम्बरली कहने लगे—तब आप लोग ——

डनवर बोल उठे—अपने उदार कानूनसे हम लोग लाचार हैं! मजिस्ट्रेटने उस शैतानको सिर्फ जुर्माना (यद्यपि वह हल्का न था) करके छोड़ दिया! इस कानूनकी लाचारीसे ही यह शैतान स्काटलैंड यार्डकी आँखोंमें धूल झोंकनेमें समर्थ होता है।

डाक्टरने पूछा—आपको कैसे मालूम होता है कि यह वही आदमी है?

डनवर—जी० ऐनागोसके नामसे उसने सजा पायी थी। मैं समझता हूँ कि उसके असली नामका यह उलटा रूप है अर्थात् जी० ऐनागीसका असल नाम आई० गैनापोलीस है या जी० ऐनागीस ही असल नाम है और गैनापोलीस उसका विकृत रूप है। जो हो, मैं उस मुकदमेमें शरीक नहीं था। मैंने गुप्त भावसे उसकी जाँच की थी—मुझे पता लगा था कि सीटी गेटके सामने उसकी एक गुदाम है। उस गुदामकी भी मैंने छिपे छिपे जाँच की थी। मैं यदि चाहता तो उसी समय उसको गिरफ्तार कर सकता था परन्तु उससे किसी विशेष उपकारकी आशा न थी। इसलिये मैं चुप लगा गया।

डाक्टर कम्बरली इस समय अधीर हो रहे थे। उन्होंने हाथ

उठाकर कहा—हम लोग व्यर्थमें समय नष्ट कर रहे हैं। आप अभी ग्लीब रोडके आफिसकी तलाशी कीजिये और जिस तरहसे हो गैनापोलीस या ऐनागीसको गिरफ्तार कर लीजिये। हाय ईश्वर! हम लोग यहाँ व्यर्थकी बातें करते हैं उधर मेरी लड़कीपर न जाने क्या बीतती होगी!

दरवाजेकी ओरसे एक आवाज आयी—कौन गैनापोलीसको गिरफ्तार करना चाहता है?

सभीकी दृष्टि दरवाजेकी ओर आकर्षित हुई। एम गैस्टोन मैक्स दरवाजा खोलकर भीतर घुस रहे थे!

डनवर उठ खड़े हुए और सरल भावसे बोले—आप आ गये, इसके लिये ईश्वरको धन्यवाद है। अब तो मेरी कोई अकल ही नहीं चलती।

डेनिस रिलैंड स्तम्भित भावसे अपने पूर्व परिचित सह-यात्रीकी ओर देख रही थी इसलिये मैक्सने अपने आगमनकी कैफियत देना उचित समझा। उन्होंने सामरिक कायदेसे नमस्कार करके कहा—मैडम, किसी विशेष उद्देश्यसे बाध्य होकर मुझे आपसे अपना असली परिचय छिपाना पड़ा था, इसके लिये आप क्षमा करेंगे। मेरा नाम एम० गैस्टोन है—यहाँतक तो बिलकुल ठीक है। इसके अलावे उसके साथ जो "मैक्स" शब्द लगा हुआ है, उसीको मैंने आपसे छिपा लिया था। आप पैरिसमें रहती हैं, आपने गैष्टोन मैक्सका नाम तो कभी सुना होगा।

डेनिस एकबारगी चौंक उठी और बोली—गैस्टोन मैक्स!

आप गैष्टोन मैक्स हैं! परन्तु गैस्टोन मैक्ससे तो आपका चेहरा नहीं मिलता!

मैक्सने मुस्कुराकर कहा—मेरा सबसे बड़ा शत्रु भी नहीं कह सकता कि किसीसे मेरा चेहरा मिलता है। परन्तु हाँ, मैं कितनोंहीसे अपना चेहरा मिला सकता हूं।

उन्होंने डेनिसको नम्रतापूर्वक नमस्कार करके डनवरकी ओर फिरकर कहा—मुझे अभी एक जगह जाना है, जल्दी कहिये, इधर कोई नई बात हुई है?

खाली कुर्सीसे सोर्वीने अपनी टोपी उठा ली और कुर्सीको आगन्तुकके पीछे हटाकर नम्रतापूर्वक बैठनेका संकेत किया।

मैक्स अपने चिर-अमायिक और नम्रप्रकृतिके अनुसार सोर्वीको नमस्कार करके कुर्सीपर बैठ गये और एक सिगरेट धराकर पीते हुए डनवरकी बातें सुनने लगे। धीरे धीरे इन्स्पेक्टरने जब सारी कहानी कह सुनायी तब मैक्स सिगरेटका एक लम्बा दम खींचकर गम्भीर भावसे कुर्सी समेत हिलने लगे। इस समय उनकी आँखें आगकी तरह धधक रही थीं और सारा वदन काँप रहा था।

सब लोग शान्त निस्तब्ध होकर आग्रहसे उनकी ओर ताक रहे थे। सभीके नेत्रोंसे साहाय्य-प्रार्थनाका भाव झलक रहा था। यहाँ क्या इन्स्पेक्टर और क्या डाक्टर—सभीने अपना सिर झुका लिया था—सभी एकही श्रेणीमें आ खड़े हुए थे। ऐसे ही समय व्यक्तित्वकी प्रधानता प्रकट हो जाती है।

मैक्सने कहा—कल रातको होपीनके कार्य्यालयकी तलाशी की जायगी। डाक्टर साहब, आपकी लड़कीकी चोरी बड़े अचकेमें हुई है। हमें इसकी स्वप्नमें भी आशंका न थी। परन्तु अब जरा भी भूल-चूक हुई कि—आपको लड़कीके लौटनेकी आशा न रहेगी।

कम्बरलीने एक लम्बी साँस ली और सिर उठाकर कहा—हा भगवन!

मैक्स फिर कहने लगे—मैं समझता हूं कि पहलेसे उन लोगोंका ऐसा कोई विचार न था—उन्हें हठात् बाध्य होकर मिस हेलनको रोकना पड़ा है। अभी मैं कह नहीं सकता कि हेलन, होपीनके कार्य्यालयमें रखी गयी है या किसी दूसरी जगह। यह भी हमें मालूम नहीं कि वह गैनापोलीसकी बन्दिनी है अथवा राजा साहबकी, परन्तु इतना मैं आपको बता सकता हूँ कि होपीनके कार्य्यालयमें अभी हालमें कोई नवीन घटना नहीं हुई है। जैसे वह पहले चलता था वैसे ही अब भी चल रहा है। अभी मैंने गैनापोलीसको फोन किया था।

डनवर बोल उठे—ग्लोब रोडके आफिसमें तो?

मैक्स—जी हाँ; ग्लोब रोडमेंही परन्तु वहाँ वे उसको नहीं रखेंगे। गैनापोलीससे मैंने उसी जादूवाले कमरेमें एक रात और बितानेका अनुरोध किया था। उन्होंने स्वीकार कर लिया है। ९॥ बजे रातको वह सरकसमें मुझसे मिलेंगे। वहाँसे हम दोनों एम्बूलैंसपर चढ़कर कारखानेमें जायँगे! इन्स्पेक्टर

साहब, आपने चारों ओर पहरेका पूरा बन्दोवस्त तो कर लिया है न ?

डनवरने जोर देकर कहा—कल दश बजे रातके बाद एक बिल्ली भी काजवे और पेनीफिल्डकी तरफसे बिना मेरे हुक्मके आने जाने न पावेगी। जैसे आप एम्बूलैंससे नीचे पैर रखेंगे वैसे आप देखेंगे, कि कोई आदमी बाइसिकिलपर चढ़कर छिपे छिपे आपका पीछा कर रहा है। उसके पीछे पुलीसका एक बड़ा भारी जत्था रहेगा। आपका सन्देह है कि वह स्थान नदीके किनारे है इसलिये जल-जहाजका भी पहरा तैनात रहेगा।

मैक्सने कहा—"यही बहुत है।" फिर डेनिस रिलैंड और कम्बरलीकी ओर फिरकर उन्होंने कोमल स्वरमें कहा—मैं समझता हूं कि आप लोग हेलनके लिये बहुत ही उत्कण्ठित हो रहे हैं और सचमुच उत्कण्ठाकी बात ही है परन्तु आज रातको तलाशी करनेसे उल्टे हानिकी ही सम्भावना अधिक है। इस समय जल्दीबाजी करनेसे कोई लाभ न होगा।

कम्बरलीने कातर स्वरमें कहा—तो क्या हेलनको आजकी रात उस घृणित स्थानमें ही बितानी होगी! हा ईश्वर! रक्षा करो! इसी बीचमें वे लोग यदि———"

मैक्सने बाधा होकर कहा—एक और बाधा है जिससे हम आज ही तलाशी करना नहीं चाहते। अभी हमको उस कारखाने-का रास्ता भी मालूम नहीं है और न यही मालूम है कि वह कहाँपर है। आपही कहिये ऐसी अवस्थामें क्या कर सकते हैं?

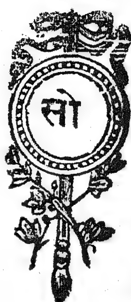
कम्बरलीने एक लम्बी साँस लेकर कहा—"यह तो साफ मालूम होता है कि आप लोग जिस कारखानेकी बात करते हैं वह एम्ब्रूलैंसके अस्तबलके कहीं आस ही पास है अस्तबलका पता तो लग ही गया है।

मैक्सने कहा—आपका कहना ठीक है परन्तु आप जानते नहीं—राजा साहबके आदमी बड़े धूर्त होते हैं। वे चीना हैं। उनके समान कपटी जाति संसारमें शायद ही कोई दूसरी हो। इनका रहस्य बाहर करना कोई हँसी-ठट्ठा नहीं है। नाग राजकी गुफाका दरवाजा गिरजाघरके फाटककी तरह लम्बा चौड़ा तो होगा नहीं कि दूरहीसे कोई उसका पता लगा ले! सोर्बीको धन्यवाद है (सोर्बीकी पीठ ठोंककर) कि अस्तबलका पता इन्होंने लगा लिया है परन्तु यहींतक। यदि हजारों आदमी रात दिन उस अस्तबलकी तलाशी करते रहें, तब भी वे गुफाका फाटक बाहर नहीं कर सकते। कल शामको मैं स्वयं उस कार्य्यालयमें रहूंगा। मैं ही पुलीसको भीतर ढुका लूँगा।

डाक्टरने फिर एक लम्बी साँस ली। मैक्स उनकी अधीरतासे बहुत ही दुःखित हुए और उनके पास जाकर कन्धेपर हाथ रखकर बोले—डाक्टर साहब, मैं समझता हूँ, कि काल क्षेप करना आपके लिये अत्यन्त मर्मान्तक है। परन्तु जानते तो हैं, कभी कभी कड़वी दवा भी खानी पड़ती है। धीरज धरिये, सब विपद टल जायगी।

तैंतीसवां परिच्छेद.

वंशी।



सोम कोटकी बटन कसकर खड़ा हो गया और अन्धेरेमें कुछ सुननेकी चेष्टा करने लगा।

पातालपुरीके निवासियोंको कानोंसे ही अधिक काम लेना पड़ता है। पैरों और नेत्रोंको कष्ट न देकर या कष्ट देनेकी सुविधा न पाकर वे लोग एक ही जगहसे अपने अभागे कानोंसे दूर दूरतककी खबर लेनेकी चेष्टा करते हैं। सोम भी इसमें अभ्यस्त हो गया था! वह अपने कमरेका दरवाजा खोलकर बैठे बैठे दालान, पासके कमरे और नागराजकी गुफातकका राई रत्ती हाल अपने कानोंसे पूछ लिया करता था। इस समय वह इसी चेष्टामें लगा था।

सोम साहस बाँधकर चल पड़ा। चलते समय उसने अपने पाकेटमें हाथ डालकर देख लिया, मैक्सकी दी हुई नयी चाबी और पिस्तौल ठीक थी। अपने कमरेको पारकर बड़ी दालानमें आया। दालान और नागराजकी गुफाके बीचका दरवाजा कभी बन्द नहीं रहता था, आज भी नहीं। दालानमें प्रकाश नहीं था तथापि उसने वहाँसे गुफाकी ओर देखनेकी चेष्टा की। दालानके दरवाजेको पारकर जब वह टटोलते हुए आगे बढ़ा तो एक प्रकारकी गैश आकर उसकी नाकके सामने लगी।

उसपर ध्यान न देकर वह कमरेको कुर्सी और टेबुल टटोलता हुआ आगे बढ़ा। कहाँ कौन चीज रखी हुई है, यह पहलेहीसे उसको मालूम था। हाथ बढ़ाकर वह एकको पकड़कर छोड़ देता था तो दूसरेपर हाथ रखता था। सहसा एक टेबुलसे पैर-की ठोकर लगी और एक भड़भड़ाहटकी आवाज हुई! सोमका सारा बदन सन्न हो गया। वह एक जगह सिमटकर बहुत देरतक खड़ा रहा परन्तु किसीकी आहट न मिली तब साहस करके फिर उठा और ब्लाक ए० का दरवाजा खोलकर आगे बढ़ा। दरवाजेको चुननेमें उसे भूल नहीं हुई थी क्योंकि वही दरवाजा अन्तमें पड़ता था। बहुत देरतक खोजते खोजते जादू-खानेका फाटक मिला—ताला भी मिला। तालेके छेदमें वह चाभी लगाने लगा परन्तु यह क्या? चाबी तो लगी ही नहीं! चाबी उलटी तो नहीं लगा रहा है? नहीं, चाबी तो ठीक ही है।

सोम फिर लगानेकी चेष्टा करने लगा पर कोई फल नहीं हुआ। उसका कलेजा धड़कने लगा। परन्तु अभी दिमाग ठीक था। उसने सोचा, मुझे दिग्भ्रम तो नहीं हो गया है?—ऐसा ही मालूम होता है।

अपनी दिशा ठीक करनेके लिये वह फिर अपने कमरेमें चला गया और नयी तैयारीके साथ वहाँसे लौटकर वह फिर गुफामें आया। मूर्त्ति, होपीनका टेबुल, सदर फाटक सबको एक एक करके उसने देख लिया। देखकर उसने अनुमान किया, कि उसे मूर्त्तिकी उत्तर तरफसे जाना चाहिये था परन्तु

वह दक्षिण ओरसे होकर ब्लाक बी० में चक्कर लगा रहा था। टेबुलकी खड़खड़ाहटसे डरकर ही वह यह भूल कर बैठा था।

इस बार उसे भूल नहीं हुई है। उसने टटोलकर दरवाजे और तालेको खोज निकाला और तालेमें चाभी लगायी। इस बार ताला खुल गया!

अब उसने एक लम्बी साँस ली और चाबीको पाकेटमें रख दरवाजेको खोल डाला।

"शोप !!" "शोप !!!"

ऐं! यह वंशीकी आवाज कैसी? हाँ, यह वंशी ही तो है! तो क्या किसीने देख लिया?

दरवाजा यद्यपि अनायास खुल गया था परन्तु उसको ठेलते समय सोमको कठिनाई मालूम हुई! उसने झाँककर बगलमें देखा तो दीवारके पास पुस्तकोंसे भरी हुई अलमारियाँ रखी थीं। कमरेके बीचमें, ऊपर एक बिजलीबत्ती जल रही थी।

उसने फिरकर पुस्तककी अलमारियोंकी ओर देखा। यह क्या? वह दरवाजा कहाँ लुप्त हो गया! अब चारों ओर पुस्तकें ही पुस्तकें दीख पड़ती हैं! कहाँ आ पड़ा? यह तो राजा साहबका खास कमरा है!

इस समय सोमके मनमें अनेकों विचार उठने लगे। उसने सोचा—पहले दिन तो अन्धेरेमें अनेकों कोठरियाँ और दरवाजे पारकर मैं इस कोठरीमें लाया गया था परन्तु आज नागराजके पासका दरवाजा खोलते ही मैं उसमें दाखिल हो गया हूँ।

मालूम होता है, इन लोगोंने उस दिन मुझको एक ही दालानमें बार बार घुमा फिराकर इस कोठरीमें दाखिल किया था। असलमें यह कोठरी गुफाके ठीक बगलहीमें है।

अब सोमको आशंका हुई कि उसकी सारी बातें शत्रुओंको मालूम हो गयी हैं। सम्भवतः उसी समय वे लोग जान गये थे जिस समय टेबुलकी ठोकर लगी थी। पाकेटसे चाभी निकालकर देखनेपर उसे मालूम हुआ कि यह वह चाभी नहीं है जिसे मैक्सने दिया था।

अब सोमकी अक्ल गुम हो गयी। वह चारों ओर मृत्युकी विभीषिका देखने लगा।

सोम अपनी जानपर खेलकर बीच कमरेमें जाकर खड़ा हुआ और पिस्तौल हाथमें लेकर कमरेमें चारों ओर आँखें दौड़ाकर देखने लगा। एक बगलमें चन्दनकाठका एक पर्दा टंगा था। उसने समझा, इस पर्देकी आड़में अवश्य ही कोई छिपा है! बस चट पिस्तौलका निशाना लगाकर दनादन—एक! दो! तीन!

पिस्तौलकी आवाज, बारूदका प्रकाश और काठके पर्देमें दो छेद एक ही साथ सोमको देख और सुन पड़े।

सोम इस समय आपेमें नहीं था—वह विभीषिकाकी उस चरम सीमापर पहुंच गया था, जब मनुष्यका मरने मारनेका भय जाता रहता है।

वह पर्देके पास दौड़ गया और उसको ठोकर मारकर गिरा दिया। सामने एक टेबुल, उसपर अतरसे भरी हुई ग्लास,

कागज, कलम और दावात थी। सबसे विभीषिकामयी मूर्त्ति जो उसने अपने सामने देखी, वह स्वयं राजा साहबकी थी!

सोमके हाथसे पिस्तौल छूट गयी—सारा शरीर सन्न हो गया! वह चुपचाप शून्य दृष्टिसे राजा साहबकी ओर देखने लगा।

उसके मुखसे सहसा एक चीख निकल पड़ी। दो मांसुल, पीले हाथ धीरे धीरे उसके गलेकी ओर बढ़ आये—एक गड़-गड़ाहटकी आवाज हुई—फिर चारों ओर निस्तब्धता छा गयी।



चौंतीसवां परिच्छेद.

रहस्य जाल।



एम गैस्टोन मैक्स होपीनकी पातालपुरीमें दुग्ध-फेन जैसी शय्यापर पड़े पड़े टेवुल-घड़ीकी सूईको एकटक देख रहे हैं। बारह बज चुके हैं परन्तु अभीतक सोमके दर्शन नहीं हुए। कितनी ही बार बत्तीकी धुँधली रँगीली रोशनीने उनकी आँखोंको धोखा दिया है, कि दरवाजा खुला है। पर ध्यानसे देखते ही वह जैसाका तैसा अचल अटल भावसे भिड़ा हुआ मिलता है!

उन्होंने गैनापोलीससे कह सुनकर पहलेहीकी कोठरीमें रहनेका प्रवन्ध कर लिया है। इसलिये कोठरी अदल बदल होनेका भी उन्हें भय नहीं है। जबसे वह कारखानेमें आये हैं तबसे उन लोगोंके शिष्टाचार और सद्व्यवहारको देखनेसे किसी प्रकारकी कपटताकी आशंका भी नहीं हुई है। उन लोगोंके मनमें सन्देह होनेका एक भी लक्षण नहीं दिखलायी पड़ता है। सभी बातें नियमित रूपसे होती जा रही हैं। आज रातको सिर्फ वही जादूका खेल नहीं हुआ है और न आज राजा साहबका ही दर्शन हुआ है। इसका कारण यह हो सकता है, कि उस दिन परीक्षाका दिन था और आज नहीं है! परन्तु घण्टेपर घण्टे बीतते जा रहे हैं; सोम आता क्यों नहीं?

तालेमें चाभी लगी—हाँ, कोई तालेमें चाबी लगा रहा है! अभी उठनेकी जरूरत नहीं, शायद दूसरा ही कोई हो, तो व्यर्थ ही आफतमें जान पड़ेगी, ऐसा सोचकर मैक्स चुपचाप लेटे ही रहे! खड़खड़ाहटकी आवाज बन्द हो गयी। परन्तु फिर भी मैक्सने कान लगाकर सुननेकी चेष्टा की!

धीरे धीरे २॥ बज गये। यदि सोम ही आया था तो लौट क्यों गया? मैक्सने चुपकेसे उठकर चारों ओर देखा। अब वह सोचने लगे—क्या करना चाहिये?

गोलीकी दो आवाजोंके साथ साथ एक चीखका शब्द हुआ—ऐसी मर्मभेदी चीख, जो सिर्फ मृत्युके मुखमें पड़े हुए जीवके मुखसे ही निकल सकती है! चिर-निर्भीक जासूसका हृदय भी भयसे दहल गया!

सहसा रूँधे गलेकी घड़घड़ाहट जैसी एक भयङ्कर आवाज हुई और फिर सन्नाटा छा गया! इसका क्या मतलब?

मैक्सने चटपट अपने कपड़े-लत्ते पहन लिये! यह पहला ही अवसर था कि भयसे उनका सारा वदन काँप उठा और अङ्ग अङ्गसे पसीना निकलने लगा। वह कपड़े पहनते हुए बार बार दरवाजेकी ओर ताक रहे थे! उन्होंने मनमें कहा—यदि वह चीख किसी अफीमचीके मुखसे नशाके झोंकमें निकली है तो गोलीकी ये आवाजें कैसे हुई?

उन्होंने अस्फुट स्वरमें कहा—ओः यह सोम था! मैंने अपनेको बड़ी विपदमें डाल दिया है। अब मैं जालमें हूं।

उन्होंने मन ही मन कहा—अब चुपचाप बैठकर सोचनेका समय नहीं है। किसी तरह यहाँसे बच निकलनेकी चेष्टा करनी चाहिये। यहाँ बन्द कमरेमें असहाय भावसे कुत्तेकी मौत मरनेकी अपेक्षा बाहर निकलनेकी चेष्टा करना अच्छा है। यहीं कहीं दश ही हाथकी दूरीपर डनवर साहब दलबलके साथ मेरी रक्षाके लिये तैयार हैं और मैं यहाँ निस्सहाय भावसे मरूँ यह नहीं हो सकता!

उन्होंने किसी हथियारके लिये चारों ओर देखा परन्तु कोई अच्छा हथियार न मिला तब उन्होंने चाहा कि चारपाईके पायाको ही उखाड़ लूँ परन्तु ऐसा कोई औजार नहीं था जिससे वह उसके 'प्रेकों' को निकालते! बहुत सोचनेके बाद उनके मनमें एक बात आयी। नहानेके घरमें एक हथौड़ी और एक छड़ था, उन्हींके सहारे इन प्रेकोंको उखाड़ना निश्चय किया। ऐसा विचारकर वह उस कमरेसे हथौड़ी और छड़ उठा लाये और अपनी सारी शक्ति खर्च करके वह 'प्रेक' निकालने लगे। बहुत परिश्रमके बाद एक एक करके उन्होंने सातों प्रेकोंको निकाल डाला और पायाको बाहर कर लिया! उस मोटे पायाको पाकर इस समय उनकी खुशीका ठिकाना न रहा।

पायाको लेकर अब वह भीम वेगसे दरवाजेपर झपटे और और कूद-कूदकर उसपर चोट करने लगे! दीवालोंपर शब्द-निरोधक मशाला लगा रहनेके कारण बाहर उसकी आवाज जानेकी सम्भावना न थी; इसलिये उधरसे वह निश्चिन्त थे।

कुछ देरतक तो उनका परिश्रम बिल्कुल निष्फल होता रहा परन्तु उनकी एक चोट एक कब्जेपर ऐसी कड़ी लगी कि वह टूटकर गिर गया। अब मैक्सको अधिक साहस हुआ। वह कब्जोंपर ही चोट करने लगे। थोड़ी देरमें कब्जे खसक गये और दरवाजा निराधार हो गया। तब उन्होंने धीरे धीरे उसको दीवालके सहारे खड़ा कर दिया। अब उनका रास्ता साफ हुआ।

दरवाजेके हटते ही आगेके कमरेमें पुस्तकोंके गिरनेकी आवाज सुन पड़ी। साथही गुलाबकी गन्ध नाकमें भर गयी!

सामने घोर अन्धकार था! वह हाथ बढ़ाकर अगल बगल टटोलने लगे। मालूम हुआ कि दरवाजेके दोनों बगल पुस्तकोंकी अलमारियाँ हैं और सामने फर्शपर कुछ पुस्तकें पड़ी हुई हैं। ये पुस्तकें शायद दरवाजेके सामने रखी हुई थीं।

पुस्तकोंके ढेरको पारकर वह बीच कमरेमें आ खड़े हुए और अपनी विचित्र घड़ीको उलटकर घुमाया। कमरेमें प्रकाश फैल गया!

मैक्सने घड़ीके प्रकाशमें देखा कि वह कमरा एक छोटासा पुस्तकागार है। बीचमें एक टेबुल रखा हुआ है, जिसपर लिखनेके सामान, कई एक ग्लास, प्याले तथा अतर और पाउडरसे भरी हुई कई एक शीशियाँ और डिबियाँ रखी हैं! टेबुलके पास जाकर उन्होंने देखा कि सभी सामान चीन देशीय हैं और विशेष करके स्त्रियोंके व्यवहारके हैं! टेबुलकी बगलमें

फर्शपर काठका एक पर्दा पड़ा हुआ था जिसको देखनेसे मालूम होता था कि यहाँ किसीसे लड़ाई हुई है। परन्तु सबसे आश्चर्य्य और चिन्ताकी बात यह थी कि कमरेमें कोई दरवाजा ही न था !

थोड़ी देरतक किंकर्त्तव्यविमूढ़ भावसे वह चुपचाप खड़े रहे ! किसी कमरेका प्रवेशद्वार बाहर करनेमें मनुष्यको भले ही कठिनाई पड़ती हो परन्तु किसी कमरेसे निकलनेका रास्ता बाहर करनेकी कठिनताका कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है !

दीवालें तो अलमारियोंसे ढकी हुई थीं अतः अलमारियोंकी बारीकीही वह सबसे पहले देखने लगे। एक एक करके चारों ओर घूम घूमकर उन्होंने प्रत्येक हिस्सेको देखा पर कहीं भी अलगाव और दूरी न दिखायी पड़ी। आखिरकार उनके मस्तिष्कमें एक उपाय सूझा। अब वह प्रत्येक पुस्तकको हटा हटाकर रखने लगे। रखते रखते सारा रहस्य खुल गया।

दो पुस्तकोंके बीचमें एक पेच था जिसके घुमानेसे एक अलमारीके दो तख्ते अलग अलग हट गये—सामने एक दरवाजा निकल आया।

दरवाजा खोलकर उन्होंने एक कमरा देखा जो ठीक उनके अपने कमरेसे मिलता जुलता था। कमरेमें एक औरत सोयी हुई थी।

औरतके शरीरमें नैश-वस्त्र थे। मुखपर सफेदी छायी हुई थी।

और बिखरे हुए सिरके बाल जमीनपर लटक रहे थे! चारपाईकी पाटीपर उसके हाथ अपने आप बराबर हिल रहे थे!

उन्होंने छातीपर हाथ देकर देखा—श्वास प्रश्वासका कोई चिह्न न दिखलायी पड़ा। शायद वह जीवित नहीं थी।

इस कमरेमें कोई विशेष बारीकी देखनेकी नहीं थी क्योंकि इसके सभी सामान उनके अपने कमरेसे मिलते जुलते थे। उस स्त्रीके कपड़े-लत्ते एक रस्सीपर टँगे हुए थे और कोनेमें एक तावेंका 'ट्रॉंक' रखा हुआ था!

मैक्सने उस ट्रांकके पास झुककर देखा। उसपर दो अक्षर खुदे हुए थे———एम० एल०।

मैक्स धीरेसे बोल उठे—ओः समझमें आया! यही मिसेस लिरो हैं! एम० से मिसेस और एल० से लिरो!

इस कमरेसे निकलते समय फिर वही बाधा उपस्थित हुई। यहाँ भी दरवाजेका पता नहीं था परन्तु इस बारका काम इस कारण जरा सहज हो गया था कि इसमें बत्ती जलती थी। उन्होंने अनुमान कर लिया कि बत्तीकी स्विचके बगलहीमें कहीं दरवाजा होगा अतः वह स्वीचकी खोज करने लगे। स्वीच शीघ्रही मिल गयी। वह दो पुस्तकोंके बीचमें एक जगह अलमारीकी पटरीके नीचे मिली। अब वह उस स्वीचके अगल बगल दरवाजा खोजने लगे। शीघ्रही दरवाजा भी मिल गया। दरवाजा खुला परन्तु सामने ही मेक्सने देखा कि मृत्यु मुख फैलाकर खड़ी है। वह चौंककर दीवालकी आड़में हट गये!

आधे-आध कमरेमें यहाँ भी चन्दन-काठका एक पर्दा टँगा हुआ था। पर्देके ऊपरसे किसीका पीला मजबूत हाथ उनके मस्तकको लक्ष्य करके गोली छोड़ना चाहता था!

यह जरा भी विचलित होनेका समय न था—बाघसे लड़ते समय जैसे पलक मारते थपेड़े लगनेकी सम्भावना रहती है वैसे ही यहाँ भी तनिकसी कमजोरी प्रकट होते ही शत्रुकी गोली सिर फोड़कर चली जा सकती थी।

मैक्स बिजलीकी तरह चमककर पर्देकी आड़में पहुँच गये और पिस्तौलके बेंटको पकड़कर झटका देकर उसे छुड़ा लिया। यह वही पिस्तौल थी जो उन्होंने सोमको दी थी!

मानसिक उत्तेजनाके आवेशमें उन्होंने इस बार मृत्युसे युद्ध करके अपनी रक्षा कर ली। उन्हें स्वयं आश्चर्य्य होता था कि ऐसा आसुरिक बल उनके शरीरमें कहाँसे आ गया है। उसी आवेशमें उन्होंने पर्देको जमीनपर गिरा दिया और भीतर कूद पड़े परन्तु क्या आश्चर्य्य! कमरा बिल्कुल खाली पड़ा था!

मैक्स चिल्ला उठे—भाग गया!

कोई भाग तो जरूर गया है। वह स्त्री है या पुरुष? या ऐसा कोई जीव है जिसका पीला हाथ उन्हें शिकार बनाना चाहता था?

वंह दौड़कर फिर मिसेस लिरोके कमरेमें आये परन्तु वह ज्योंकी त्यों पड़ी हुई थीं।

पैंतीसवां परिच्छेद.

गोरखधन्धा।



अब देर करनेका समय न था। मैक्स तुरत दरवाजेकी खोजमें लगे। पहलेके कई अनुभवोंसे उनका काम अब सरल हो गया था। उन्होंने अलमारीकी अन्तिम तीन पुस्तकोंको हटाकर अलमारीको जोरसे ठेहल दिया। उसका कुछ हिस्सा दरवाजेके रूपमें परिणत हो गया! इस बार जिस कमरेमें उन्होंने प्रवेश किया उसमें घोर अन्धकार छाया हुआ था। अपनी घड़ीकी सहायतासे प्रकाश करके देखा कि यही दालान है, जिससे होकर ब्लाक ए० में जाना होता है। दालानको पारकर वह नागराजकी गुफामें आये, परन्तु यह क्या? यह तो बिल्कुल उजाड़ पड़ा है! चारों ओर घोर अन्धकार छाया है। उन्होंने घड़ीकी सहायतासे बगलका दरवाजा खोला वह कमरा भी ठीक ब्लाक ए० के दालानकी तरह प्रतीत होता था। कमरेमें प्रवेशकर सामने उन्होंने एक और दरवाजा देखा। उसको ठेलकर खोलते ही वह फिर गुफामें आ पहुंचे!

वह घबड़ाकर चिल्ला उठे—ओः यह कैसी धोखाकी टट्टी है! फिर उन्होंने एक दूसरा दरवाजा खोला। इस बार एक

स्नानागार मिला। स्नानागारको पारकर वह एक सुसज्जित कमरेमें पहुँचे। उस कमरेमें दरवाजा ही गायब! परन्तु अब इतने अभ्याससे दरवाजेकी चोरी नहीं छिप सकती थी। दरवाजा मिला परन्तु गुफेका!

फिर वह चिल्ला उठे—असलमें ये चीना हैं!

अब उन्होंने बत्ती जला दी और स्तम्भित होकर चारों ओर देखने लगे। मन ही मन उन्होंने कहा—हाय भगवान! ये तो सभी भाग गये! मालूम होता है, ये लोग इस शहरसे भाग जाना चाहते हैं क्योंकि यदि ऐसा न होता तो ये श्रीमती लिरोको छोड़ न जाते परन्तु क्या इन्होंने उसको भी—"

हेलनका ख्याल जैसे मनमें उठा वैसे ही कहींसे रूँधे गलेकी आवाज आयी—"रक्षा करो! रक्षा करो।" वह निश्चय न कर सके कि आवाज किधरसे आ रही है, परन्तु वह पहचान गये कि यह आवाज हेलनकी है! उन्होंने हाथ उठाकर कपड़ेको बटोरते हुए अपने शरीरके बलको एक बार तौल लिया और फिर कूदकर दौड़ पड़े।

दरवाजेपर दरवाजे खोलते और कमरोंको लाँघते हुए वह दौड़ने और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे—"हैलन कम्बरली! कहो, कहो, तुम कहां हो। डरो मत मैं पहुंचता हूं।"

परन्तु कोई उत्तर नहीं। जितनी ही शीघ्रतासे वह दौड़ दौड़कर दरवाजे खोलते हैं, उतना ही शीघ्र वह फिर गुफामें आ पहुंचते हैं। अब उनका सिर चक्कर खाने लगा।

वह गुफामें ही खड़े होकर अब जोर जोरसे चिल्लाने लगे—"मिस कम्बरली, तुम मुझे बताती क्यों नहीं—तुम कहां हो ?

उत्तर मिला—इधर, गैस्टोन, तुम्हारे दाहिने दरवाजा है। फिर दाहिने—फिर दाहिने! जल्द पहुंचो! इसने मुझे मार डाला!

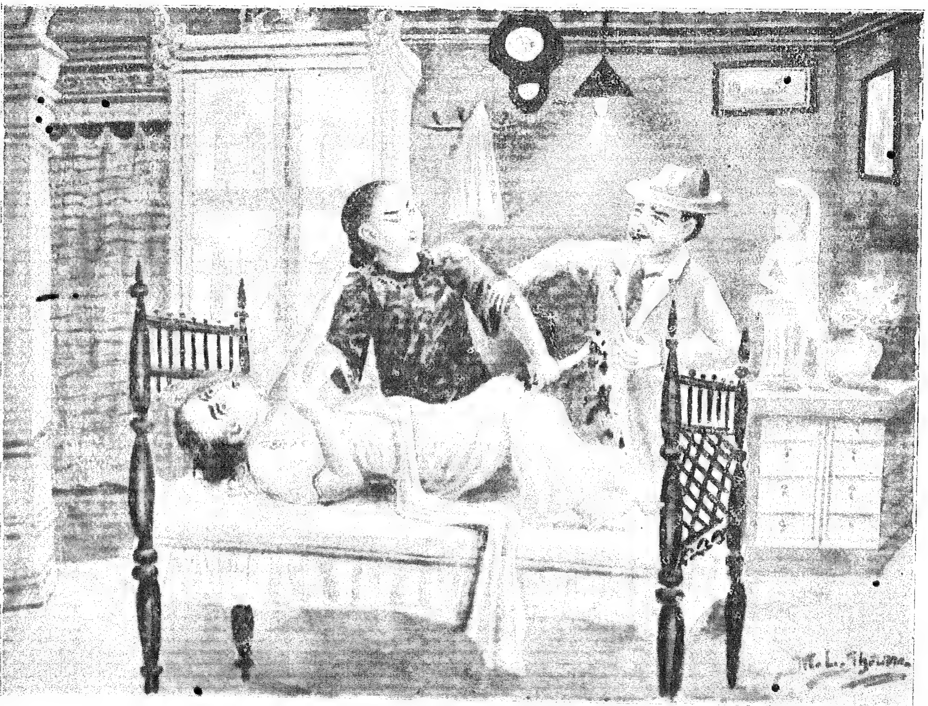
यह गैनापोलीसकी आवाज थी!

मैक्स फिर दौड़ पड़े। दाहिनेके दो तीन दरवाजोंको पार-कर उन्होंने चौथेपर जोरसे धक्का दिया। वह खुल गया!

भीतर घोर अन्धकार था। घड़ीकी सहायतासे उन्होंने कमरेकी बत्ती जला दी और आँखें फाड़ फाड़कर सामनेका दृश्य देखने लगे!

मखमली गद्दीके ऊपर भीषण मल-युद्ध हो रहा था। मल-युद्ध प्रायः दो ही मल्लोंमें हुआ करता है परन्तु यहाँ तोन तीन मल्ल एक दूसरेसे भिड़े थे। और भी आश्चर्य्यकी बात यह थी कि इनमें दो स्त्री मल्ल थीं और एक ही पुरुष। विजय-लक्ष्मी स्त्रीके ही हाथ थी।

हेलन कम्बरली बिछौनेपर पड़ी हुई अपने गलेसे चीना औरतके बायें हाथको हटानेकी घोर चेष्टा कर रही थी। बदलेमें वह औरत और भी जोरसे उसका गला दबाती जाती थी। गैनापोलीस अपना दाहिना हाथ उस औरतकी कनपटीपर लगाकर उसे दूर हटानेकी चेष्टा कर रहे थे और बायें हाथसे उसके दाहिने हाथको बड़े कष्टसे ऊपर उठा रहे थे! औरतके



औरतेके आक्रमणको अब रोक रखना दोनोंके लिये कठिन हो गया था !

दाहिने हाथका पैना छूरा उनके कोखमें घुसा हुआ था और उससे खूनका फव्वारा चारों ओर छूट रहा था। औरतके आक्रमणको अब रोक रखना दोनोंके लिये कठिन हो गया था! इतने ही में मैक्सने कमरेमें प्रवेश किया!

जैसे ही मैक्सने कमरेमें प्रवेश किया; वैसे ही गैनापोलीस चिल्ला उठे—पकड़ो इसे, नहीं तो अभी हेलनसे हाथ धो बैठना पड़ेगा। यह स्त्री नहीं बाघिन है!

मैक्सने दौड़कर औरतका पञ्जा पकड़ लिया और गैना-पोलीसको छोड़ देनेका संकेत करके उन्होंने जोरसे उस औरतको अलग हटा दिया।

औरतके हाथसे छूरा छूटकर जमीनपर गिर पड़ा। क्रोधसे भीषण गर्जन करके वह कूदकर पीछे हट गयी। मैक्सने उसकी कमरमें हाथ डालकर झिड़ककर उसे कमरेसे बाहर ठेल दिया।

हेलन लड़खड़ाती हुई बिछौनेपर उठ बैठी और हाथोंसे अपना गला पकड़कर आगेकी ओर झुक गयी। इस समय उसके गलेसे खून निकल रहा था और उसपर पाँच अंगुलियोंके दाग साफ दिखलायी पड़ते थे! मैक्सने बिछौनेपर झुककर धीरेसे हेलनका कन्धा पकड़ लिया और उसे उठानेकी चेष्टा करने लगे। सहायताके लिये उन्होंने गैनापोलीसकी ओर देखा। परन्तु उनका अङ्ग-प्रत्यङ्ग काँप रहा था। स्थिर भावसे खड़े होनेकी भी उनमें शक्ति न थी। वह धमसे जमीनपर गिरकर लोट गये।

मैक्स समझ गये, कि गैनापोलीससे सहायता मिलनेकी कोई आशा नहीं है। अतएव उन्होंने अपनी समस्त शक्ति लगाकर हेलनको उठाया और उसे लेकर दालानकी ओर अग्रसर हुए। गैनापोलीस भी बड़े कष्टसे उठ खड़े हुए और उनके पीछे पीछे धीरे धीरे चलने लगे। दालानमें आते न आते वह धड़ामसे गिर पड़े और मुँहसे खून फेंकने लगे। मैक्सने उनकी ओर फिरते ही देखा कि उनकी छातीसे खूनकी धारा वह रही हैं! अवस्था शोचनीय देखकर उन्होंने हेलनको धीरेसे दालानके चबूतरेपर सुला दिया और गैनापोलीसके पास आकर उनकी छातीपर बैंडेज बाँधने लगे।

गैनापोलीस अस्फुट स्वरमें कहने लगे—हरामजादी इसीलिये लौट आयी मुझे पता न था कि हेलन कम्बरली यहां हैं सच कहता हूं, मैंने इसकी कल्पना भी नहीं की थी परन्तु दैवात्..."

इतना कहते कहते गैनापोलीसका गला रूँध गया और वाक्शक्ति लुप्त हो गयी। मैक्स दौड़कर अपने कमरेसे एक ग्लास पानी ले आये और उनके मुखपर धीरे धीरे छींटा देने लगे। थोड़ी देरमें गैनापोलीसने आंखें खोल कर चारों ओर अकचकाकर देखा, फिर आंखे मूँद लीं। मैक्स अपनी व्यग्रताको रोक नहीं सकते थे। उन्होंने मुमुर्षु एशियाईके मुखपर झुककर पूछा—दयाकर बताइये—श्रीमती भरननको किसने मारा और क्यों?

मुमुर्षु गैनापोलीसने लड़खड़ाती हुई आवाजमें कहा—

राजा साहब ! किसी नौकरकी भूलसे एक दिन श्रीमती भरनन श्रीमती लिरोके कमरेमें चली गयीं। वहां उन्होंने जाकर देखा कि श्रीमती अफीमके नशेमें बेहोश पड़ी हैं। उनकी वह शोचनीय अवस्था देखकर उनके मनमें बड़ा अनुताप हुआ। इन्हींकी सलाहसे श्रीमती लिरो कारखानेमें भर्त्ती हुई थीं। इसलिये वह जोरसे चिल्ला उठीं और अपनी सखीसे क्षमा-प्रार्थना करने लगीं। इसी बीचमें होपीन वहां पहुंच गये और उन्होंने भरननकी बातें सुन लीं। वह कह रही थीं कि—"इस बार मिस्टर लिरोसे भेंट करके सारा हाल कह दूँगी। मैं तुम्हारी यह दुर्दशा देख नहीं सकती।" आपने समझा न ?

मैक्सने सिर हिलाकर कहा—"हां, मैं खूब समझता हूं। आप कहिये !

गैनापोलीस कहने—"होपीनको नारी-प्रकृतिकी पूरी अभिज्ञता है। वह समझ गये कि श्रीमती भरनन अवसर पाते ही सारी पोल खोल देंगी। इसलिये उनपर हम सब लोग दृष्टि रखने लगे। हम लोग अपने यहांके रोगियोंको सेंट प्रोकृरके अस्पतालमें चिकित्साके लिये भेजते हैं। नियमानुसार श्रीमती भरननको भी हमने वहाँ भेज दिया। श्रीमती लिरोकी मुमुर्षु अवस्था देखकर श्रीमती भरननको मर्मान्तिक दुःख हुआ था। वह हेनरी लिरोसे मिलनेके लिये अधीर हो रही थीं। भरननको पहुंचाते समय मैं भी उनके साथ गया था। विक्टोरिया स्ट्रीटके सामने आते हो श्रीमती भरनन बेहोश हो गयीं। इसलिये बाध्य होकर मुझे

उनको अपनी गोदमें लेना पड़ा था। मैंने सुना है, कि इसी अप्रत्याशित दृश्यको देखकर मिस्टर भरननके मनमें बुरी धारणा उत्पन्न हो गयी थी।

"इस घटनाके तीन दिन बाद ही होपीनको पता लगा कि श्रीमान भरननका स्वर्गवास हो गया है। वह समझ गये, कि श्रीमती भरननको अब किसी तरह भी रोक रखा नहीं जा सकता। इसलिये महरा और राजा साहबको लेकर वह श्रीमतीको छोड़ देनेके लिये अस्पतालके लिये रवाना हुए। उन लोगोंने अस्पतालके दरवाजेपर पहुंचते ही देखा कि श्रीमती भरनन एक टेक्सी गाड़ीपर चढ़कर पैलेस मैन्सनकी ओर जा रही हैं। अस्पतालकी नार्ससे पूछनेपर मालूम हुआ कि दो पहरको उनको नस्तर दिया गया था और वह सो रही थीं। इसी बीचमें वह कब उठकर चली गयी हैं, किसीको कुछ भी मालूम नहीं। राजा साहबने सदल-बल श्रीमती भरननका पीछा किया।"

मैक्स बोल उठे—यह हमें मालूम है, आगे कहिये।

"राजा साहबने श्रीमती भरननके कुछ पीछे मकानमें प्रवेश किया। जिस समय हेनरी लिरो कम्बरलीके कमरेमें गये थे, उसी समय महराने राजा साहबको सावधान करनेके लिये बाहर सीटी बजायी। उस समय कोई आदमी फाटकके भीतर घुस रहा था। श्रीमती भरननने जो रहस्य लिख रखा था। वह कागज राजा साहबको मिल गया। वह तुरत श्रीमती भरननका काम

तमाम करके सोमके जंगलेसे होकर नीचे उतर आये और महराको सावधान करनेके लिये सीटी बजायी। एक तरफसे वह मकानसे बाहर हुए थे, दूसरी तरफसे ठीक एक ही समय पार्लामेंटके मेम्बर मिस्टर एक्सेलने मकानमें प्रवेश किया था।

इतना कहकर गैनापोलीस हाँफकर गिर पड़े और लम्बी-लम्बी साँसें लेने लगे—इस समय हरेक श्वासके साथ उनका प्राणवायु बाहर हो रहा था।

मैक्सने अधीर होकर पूछा—सिर्फ एक बात—राजा साहब कौन हैं?

गैनापोलीसने बड़े कष्टसे सिर ऊपर उठाया और गुफाकी ओर आँख और हाथका संकेत करके धड़ामसे फर्सपर गिर पड़े। दो तीन बडी बड़ी घुटकी हुईं—शरीर प्राणहीन हो गया।

इसी समय एक विचित्र आवाज पातालपुरीकी निस्तब्धता-को भङ्ग करने लगी। मैक्सने हेलनके मुखकी ओर देखा—वह भयसे कांप रही थी। फिर उन्होंने गुफाकी ओर दृष्टि फेरी। कमरेमें नदीका मैला पानी बढ़ा चला आ रहा था।

बत्तीकी धुँधली रोशनीमें मैक्सको मालूम हुआ कि वही अमानवी चीना औरत सहसा उनके सामने आकर खड़ी हो गयी है और दोनों हाथ चमका चमका कर ठहाका मार हँस रही है। फिर वह पीछे फिरकर खरगोसकी तरह दौड़ पड़ी।

मैक्स थोड़ी देरतक हिचकिचाते रहे। फिर वह भी औरतके

पीछे दौड़ पड़े। मकानसे बाहर होकर उन्होंने देखा कि घना कुहरा छाया है और उसी कुहरेमें सिरपर पैर रखकर वह औरत दौड़ रही है। मैक्स हारनेवाले आदमी न थे। वह भी औरतके पीछे पीछे दौड़ने लगे। कभी कुहरेमें वह औरत लुप्त हो जाती थी फिर कभी बाहर निकल आती थी। इस तरह बहुत दूरतक अग्रसर होनेके बाद वह नदीकी तरफ मुड़ी। मैक्स भी कीचड़में पाँकते हुए उसका पीछा करते गये। औरत किनारेपर आकर पानीमें कूद पड़ी परन्तु उस भीषण रात्रिमें मैक्सको पानीमें कूदनेका साहस नहीं हुआ। लाचार, वह पातालपुरीमें लौट आये। वहाँ हेलन ज्योंकी त्यों चुपचाप लेटी थी। गैनापोलीसकी लाश जमीनपर पड़ी थी और नागराज गुफाका अस्तित्व लुप्त हो गया था। वह अब थेम्सके गर्भमें विलीन हो गयी थी।

मैक्सने चाभियोंका गुच्छा ढूँढ़ निकाला और श्रीमती लिरोका उद्धार करनेके लिये अग्रसर हुए। दालानमें आते ही उन्होंने देखा कि इन्स्पेक्टर डनवर अपने दलबलके साथ भीतर घुस आये हैं।



छत्तीसवां परिच्छेद.



उड़ो-चिड़िया।

डिटेक्टिव सार्जेण्ट सोबींने स्काटलैंड यार्डके दफ्तरमें प्रवेश करके इन्स्पेक्टर डनवरको नमस्कार किया और एक कुर्सीपर बैठकर अपनी बरसाती कोटके पाकेटसे एक मोटी डायरी निकालते हुए कहा—इतने दिनका हमारा सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया। आखिकार चीना औरत हमारी आँखोंमें धूल झोंककर भाग ही गयी।

डनवर व्यग्रतासे बोल उठे—तुम क्या कहते हो? इतना कड़ा पहरा रहते हुए भी एक औरत भाग गयी? और तुम लोग खड़े खड़े देखते रहे? तुम्हें क्या डूबनेको नदीमें पानी नहीं था?

सोबींने उत्तेजित होकर कहा—आप व्यर्थ हमपर आक्षेप करते हैं। हमने यथासाध्य चेष्टा करनेमें कोई त्रुटि नहीं की थी। जब आपने मकानके अन्दर प्रवेश किया था। ठीक उसी समय मैं दल-बलके साथ नदीके किनारे पहुँचा था। नदीमें कई एक बजरे तैयार रखे थे। जब हम लोग एक बजरेपर चढ़ रहे थे, उसी समय हमने देखा कि दो आदमी आगे पीछे दौड़ रहे हैं। कुहरेके कारण किनारेकी ओर साफ दिखलाई नहीं पड़ता था; तथापि मालूम हुआ कि आगे दौड़ने

वाली कोई स्त्री थी और पीछा करनेवाला पुरुष। हमने तुरत अपने सारे बजरे खोल दिये! कुछ दूरतक दोनों आगे पीछे किनारेसे होकर दौड़ते रहे। हम लोग भी उनके सामने सामने नदीके किनारे किनारे अपने बजरे चलाते रहे। आपने हमारे ऊपर सिर्फ जल मार्गका भार दिया था; इसलिये हम स्थल विभागसे निश्चिन्त थे। दौड़ती हुई रमणीमूर्त्ति एका-एक ऊपरकी ओर लौट पड़ी। हमें निरुपाय होकर अपने बजरे खड़े करने पड़े। पाँच मिनिटके बाद सहसा वह रमणी फिर किनारेपर प्रकट हुई। इस बार वह अकेली थी। किनारेपर आते ही औरत नदीमें कूद पड़ी और कुछ देरके लिये वह नदी गर्भमें विलीन हो गयी। चारों ओर सन्नाटा छा गया। हमने समझा कि अभागिनी थेम्सकी भेंट हो गयी। परन्तु दश मिनिटके बाद ही देखा गया कि दो बीघेके फासलेपर वह तैर रही है। उसको देखते ही हम सबोंने अपने अपने बजरे उसको पकड़नेके लिये दौड़ा दिये! सहायक सार्जण्ट मिस्टर स्टींजरका बजरा सबसे तेज दौड़ता था। उन्होंने पहले पहुँचकर उस औरतको अपने बजरेमें उठा लिया। औरतने किसी प्रकार भी आनाकानी न की। औरतको उठाते ही मिष्टर स्टीञ्जरने हम लोगोंसे कहा कि "कुछ बजरोंको अभी उस मकानके आसपास ही रखना अच्छा है; इसलिये आप लोग लौट जाइये! मैं इस औरतको लेकर थानापर जाता हूँ।"

हमने मिस्टर स्टीञ्जरका कहना युक्तिसंगत समझा और

उस मकानकी तरफ लौट पड़े। स्टींजरने जोरसे अपना बजरा दौड़ा दिया।

मकानके सामने आकर हमने जो दृश्य देखा उससे हम लोग स्तम्भित हो गये! नदीके किनारे एक बजरा बँधा हुआ था और उस बजरेपर हमारे सहयोगी मिस्टर स्टींजर अपनी मौतकी घड़ी गिन रहे थे! उनके हाथ पैर बँधे हुए थे और मुखमें कपड़ा ठूँसा हुआ था।

"बंधन खोलनेपर मालूम हुआ कि उनके मल्लाहों और सहयोगियोंके द्वारा उनकी वह दुर्गति हुई थी—सभी उनपर बाजकी तरह एकबारगी टूट पड़े थे और क्लोरोफार्मसे उन्हें तुरत बेहोश करके पास ही लगे हुए एक दूसरे बजरेपर चढ़ बैठे थे। ये सभी काम उन्होंने बड़ी तत्परता और सावधानीसे किये थे! निकटके अन्यान्य बजरोंको इसका जरा भी खटका न होने पाया था!

इस रहस्यके मालूम होते ही मेरा माथा ठनका। मुझे समझनेमें अब देर न लगी कि डाकुओंने मि० स्टींजरका वेश धारण करके हम लोगोंको धत्ता बता दिया है। परन्तु उस समय हम लोग क्या कर सकते थे? उतनी देरमें उनका तीव्रगामी बजरा इङ्गलैंडका सिमाना पार हो गया होगा! उनकी खोज करना व्यर्थ समझकर मैं सभी बजरोंको नदीमें नाना स्थानोंपर ठहराकर स्वयं लाइम हाउस काजवेकी ओर अग्रसर हुआ!

सैंतीसवां परिच्छेद।

पैलेस मैन्सन।



मध्याह्नका समय है। वेस्टमिनिष्टरके विस्तीर्ण जनाकीर्ण राजपथपर काम-काजकी चहल-पहल मची हुई है। कितनी ही टेक्सी और घोड़ा गाड़ियाँ उभयपार्श्वस्थित अट्टालिकाओंको कँपाती हुई रास्तेके एक छोरसे आकर दूसरे छोरमें विलीन हो जाती हैं। इसी कर्मकोलाहलमय जीवन-स्त्रोतमें यदि कोई पैलेस मैन्सनके सामने दृष्टिपात् करता तो बहुसंख्यक गाड़ियोंके जमघटको देखकर अवश्य ही अनुमान कर लेता कि पैलेस मैन्सनमें आज अवश्य ही कोई नवीन घटना घटी है। आइये पाठक! हम भी पैलेस मैन्सनके फाटकपर जमी हुई भीड़में घुसकर अपना कौतूहल दूर करनेकी चेष्टा करें।

फाटकपर पहुँचते ही हम देखते हैं कि डिटेक्टिव सार्जेण्ट सोर्बी, इन्स्पेक्टर डनवर और एम० मैक्स एक साथ ही मोटरसे उतरकर मैन्सनमें प्रवेश करनेकी चेष्टा कर रहे हैं!

दरवाजेपर उनके पहुंचते ही जनता रास्ता छोड़कर दोनों ओर हट गयी और गार्नहाम उनको सलाम करके ऊपर लिवा ले चला। सीढ़ीपर चढ़ते चढ़ते मैक्सने नौकरसे पूछा—श्रीमती लिरोकी अवस्था अभी कैसी है गार्नहाम?

गार्नहाम—सुनता तो हूँ, डाक्टर कह गया है कि १२ बजेके बाद यदि वह बची रहेंगी तो, इस बार वह बँच जा सकती हैं। अब तो समय हो आया है! अब बाहर बजनेमें सिर्फ पाँच मिनिट बाकी हैं।

सोर्बीने उत्कण्ठित होकर कहा—मिस्टर मैक्स! जल्दी दौड़ चलिये। नहीं तो राजा साहबका रहस्य सर्वदाके लिये गुप्त ही रह जायगा। राजा साहबका रहस्य एकमात्र उन्हींसे मालूम हो सकता है!

डनवरने एक लम्बी साँस लेकर कहा—ऐसी हार मुझे कभी नहीं खानी पड़ी थी। कह नहीं कह सकता; कि किस कुघड़ीमें मैंने इस मुकदमेका भार अपने ऊपर लिया था।

मैक्सने मुस्कुराकर कहा—आप लोग व्यर्थ दुःखित हो रहे हैं। हमें सब रहस्य मालूम हो गया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आजसे राजा साहबका नाम आप स्वप्नमें भी न सुनेंगे और न उनके आतंकसे जनताको अब सन्त्रस्त ही रहना पड़ेगा। मैं विना हिचकिचाहटके कह सकता हूं कि अफीमखोरीको यूरोपसे दूर करनेका श्रेय हमी तीनों जासूसोंको मिलेगा! खैर, चलिये, पीछे इसके बारेमें बातचीत होती रहेगी। अभी श्रीमती लिरा के पास चलें! यदि उनसे कोई और पक्की खबर मिल जाये!

तीनों जासूस ऊपरी दालानमें खड़े होकर आपसमें ऊपरोक्त बार्तालाप कर रहे थे। इतनेमें गार्नहाम इनके आगमनकी खबर

जनाकर लौट आया। अब तीनों जासूस गार्नहामके पीछे पीछे श्रीमती लिरोके कमरेकी ओर अग्रसर हुए। कमरेमें प्रवेश करके उन्होंने देखा कि श्रीमती लिरो एक सोफापर आँख मूँदकर पड़ी हुई मौतकी घड़ियाँ गिन रही हैं। पास ही एक धाई बैठी हुई पंखा झल रही है। सिरके पास एक कुर्सीपर बैठे हुए हेनरी लिरो अनिमेश दृष्टिसे अपनी मुमुर्षु पत्नीके मुख-की ओर देख रहे हैं! हेलन, मिस रिलैंड और डाक्टर कम्बरली अगल-बगल कुर्सीपर बैठे हुए हैं।

जैसे ही आगन्तुकोंने कमरेमें प्रवेश किया वैसे ही धाईने डाक्टरकी ओर फिरकर कहा—डाक्टर साहब, मालूम होता है कि यह जगी ही हैं!

इसी समय श्रीमती लिरोंने आँखें खोल दीं और मुस्कुराते हुए डाक्टरकी ओर देखा। ज्योतिहीन निष्प्रभ दृष्टि डाक्टरकी ओरसे फिरकर एक एक करके हेलन, डेनिस और धाई सबपर पड़ी। अन्तमें वह दृष्टि हेनरी लिरोपर जाकर निश्चल भावसे ठहर गयी। अब दोनोंकी दृष्टियाँ एक दूसरेके हृदयके मर्म-स्थानकी पीड़ाको खोदकर निकाल बाहर करनेकी चेष्टा करने लगीं। हीराने धीरे धीरे अपना हाथ हेनरी लिरोकी गोदमें डाल दिया। बदलेमें लिरोने हाथको उठाकर चूम लिया और जोरसे छातीसे लगाकर रो उठे! दोनोंकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा अविराम गतिसे बहने लगी।

हीरा धीरे धीरे अपना मुख हेलनकी ओर फिराकर

रूँधे गलेसे बोली—बहन हेलन, मैं अब चली! तुम इन्हें देखना।

इतना कहकर हीराने आँखें मूँद लीं। डाक्टर कम्बरली नाड़ी देखनेके लिये आगे बढ़े और सारी दर्शक-मण्डली निस्तब्ध भावसे रोगीकी ओर ताकती रही।

गिरजाघड़ीने दिनके बारहका घण्टा बजाना शुरू कर दिया था। हेनरी लिरो उत्कण्ठित होकर उठ खड़े हुए और इधरसे उधर टहलने लगे। परन्तु उनकी दृष्टि एक ही स्थानपर पड़ी थी।

मैक्सने धीरेसे डाक्टर कम्बरलीके कानमें कहा—फिर नहीं होगा!

डाक्टर साहब उनका संकेत समझ गये और बोले—मिसेस लिरो, एक बात जाननेके लिये सभी उत्कण्ठित हो रहे हैं क्या मैं उसे पूछ सकता हूं।

गिरजाघड़ीकी घण्टी हुई—सात!

हीराने आँखें खोलकर डाक्टरकी ओर देखा।

घंटी हुई—आठ!

डाक्टर साहबने पूछा—वह कौन है?

घंटी हुई—नौ!

हीराने पूछा—आप राजा साहबको पूछते हैं?

घंटी हुई—दश!

डाक्टर—हाँ हाँ, आप उन्हें जानती हैं?

दर्शक-मण्डली उत्कण्ठित होकर रोगिनीकी ओर देखने लगी।

हीराने अस्फुट स्वरमें कहा—हाँ, डाक्टर साहब, मैंने उन्हें देखा है? उनका नाम—"

घंटी हुई—ग्यारह!

हीरा लिरोने हेलनकी ओर देखकर मुस्कुरा दिया। मुस्कुराहटके साथ ही साथ उनका मुख बिछौनेके ऊपर गिर पड़ा। धीरे धीरे सारा वदन स्पन्दनहीन हो गया!

डाक्टरने झुककर उनकी नाड़ी हाथसे दबायी और विचलित स्वरमें कहा—"सब खतम! अब जाननेका कोई उपाय नहीं!"

परन्तु लिरो और हेलनकी मिलती हुई चार आँखोंने साफ प्रकट कर दिया कि उन्हें राजा साहबका रहस्य मालूम है!

अन्तिम घण्टो हुई—बारह!



पता—आर० डा० बाहिती एण्ड कम्पनी,

शैतानी लीला

: या :-

सुनहरा साँप

यह पुस्तक उपान्यासोंका सम्राट्, घटनाओंका घटाटोप जासूसी कलाओंका पिटारा है। इसमें नादिर नामके एक मुसलमान व्यक्तिका भीषण कार्य्य देखकर आप आश्चर्यचकित हो जायँगे। साथ ही जासूस जङ्गबहादुरकी चतुरता, कार्य्य दक्षता; साहसिकता देखकर आप मोहित हो उठेंगे। नादिरका नवाब गफ़रुद्दीनके यहाँसे अमूल्य रत्नोंसे जड़ित सुनहरा साँप चुराना, ठाकुर पालसिंहका नादिरको धोखा देकर सुनहरा साँप ले चम्पत होना, अमरनाथको सौंपना, अमरनाथका पार्सल द्वारा अपने मित्र छज्जूमलके यहाँ भेज देना, नादिरके आदमियोंका खोजकर पता लगाना, ठाकुरपालका अपरिचित व्यक्तिके हाथमें साँप देखकर आश्चर्य चकित होना और चुराना, अन्तमें जासूस जङ्गबहादुरका ठाकुरपालको गिरफ्तार करना, सुनहरा साँप नवाबको सुपुर्द करना, ऐसी ऐसी घटनाओंको पढ़कर आपका मन फड़क उठेगा साथ ही भाव पूर्ण चित्र देखकर, आपके सम्मुख समस्त घटनायें एक एक कर वायस्कोपकी तरह दिखने लगेंगी। बड़ा ही मजेदार जासूसी उपन्यास है, अवश्य पढ़िये। मूल्य १॥) रेशमी जिल्द २)

नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता।